

प्रबन्ध-सम्पादक :
श्रीचन्द्र रामपुरिया, बी० कॉम०, बी० एल०

संकलक :
आदर्श साहित्य संघ
चूरु (राजस्थान)

आर्थिक-सहायक :
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

दिसम्बर, १९६७
प्रति-संख्या
१०००

पृष्ठांक :
६३२

मुद्रक :
न्यू रोशन प्रिण्टिंग वर्क्स
३१/१, लोथर चितपुर रोड
कलकत्ता-१

मूल्य : रु० १३)

A Y A R O
Taha
A Y A R - C U L A

[THE ACARANGA AND THE ACARANGA-CULA]

Vacana Pramukha
ACARYA TULASI

Edited with

Original text, Variant readings, Alphabetical index of words,
Appendices, etc.

Editor

Muni Nathmal

(Nikaya Saciva)

Publisher

Jain Svetambar Terapanthi Mahasabha
(Agam-Sahitya Prakashan Samiti)
3, Portuguese Church Street
CALCUTTA-1 (INDIA)

First Edition 1967]

[Price : Rs. 13

Managing Editor :

Shreechand Rampuria, B. Com , B. L.

Manuscript Compiled by
Adarsha Sahitya Sangh
Churu (Rajasthan)

Financial Assistance :
Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

Copies :
1000

Pages .
632

Printer :
New Roshan Printing Works
31/1, Lower chitpur Road.
Calcutta-1

All rights reserved

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन मे ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन मे,
कालुगणी को विमल भाव से ॥

विनयावनतः
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उस और सिंचित द्रुम-निकुञ्ज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का शोधपूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में सविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक	: मुनि नथमल
	(निकाय-सचिव)
सहयोगी	: मुनि दुलहराज
पाठ-सशोधन	” : मुनि सुदर्शन
	” : मुनि मधुकर
	” : मुनि हीरालाल
शब्द-सूची	” : मुनि श्रीचन्द्र
	” : मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)

सविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुस्तर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना सविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण
अन्तस्तोष
प्रकाशकीय
सम्पादकीय
भूमिका
विषयानुक्रम

आयारो : विसय-सूची
आयार-चूला : विसय-सूची
संकेत-निर्देशिका

आयारो पृ० १-१०८

आयार-चूला पृ० १०९-३५८

परिशिष्ट ·

- १ आयारो : संक्षिप्त पाठ, पूर्ण स्थल और आधार-स्थल निर्देश
२. आयार-चूला : संक्षिप्त पाठ, पूर्ण स्थल और आधार-स्थल निर्देश
३. वाचान्तर तथा आलोच्य पाठ

शुद्धिपत्रम्

- १-आयारो मूल-पाठ
- २-आयार-चूला मूल-पाठ
- ३-आयारो पाठान्तर
- ४-आयार-चूला पाठान्तर
- ५-परिशिष्ट-२

आयारो शब्द-सूची

आयार-चूला शब्द-सूची

शुद्धि और आपूरक-पत्र

- १-आयारो शब्द-सूची
- २-आयार-चूला शब्द-सूची

प्रकाशकीय

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ पाठको के सम्मुख रखते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस ग्रन्थमाला का प्रथम ग्रन्थ 'दसवेआलियं तह उत्तरज्ज्भयणाणि' प्रकाशित हो चुका है, जिसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों आगम एक साथ हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में प्रथम अङ्ग आचारांग के दो श्रुतस्कांध क्रमशः 'आयारो' और 'आयार-चूला' के नाम से प्रकाशित हो रहे हैं।

पाठ सशोधन और निर्धारण में जो परिश्रम किया गया है, वह ग्रन्थ के प्रत्येक पृष्ठ से सहज ही समझा जा सकता है। 'जाव' और अन्य पूर्व स्थलों की बड़ी खोज के साथ पूर्ति कर दी गई है। इस तरह मूल-पाठ पाठको के लिए सरल, सुवाच्य और बोधगम्य बन गया है। 'जाव' और संक्षिप्त पाठ-पूर्ति का कार्य अद्यावधि प्रकाशित संस्करणों में उपेक्षित रहा और वह अति कठिन कार्य इस प्रकाशन में अत्यन्त अन्वीक्षा और अनुसंधान पूर्वक सम्पन्न हुआ है।

पाद-टिप्पणियों में पाठान्तरो का बोध करा दिया गया है। अन्त में तीन परिशिष्ट और 'आयारो' तथा 'आयार-चूला' दोनों की सम्पूर्ण शब्द-सूची दे दी गई है, जो अन्वेषक विद्वानों के लिए अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शब्द-सूची आज तक के प्रकाशित किसी संस्करण में नहीं है और इसी प्रकाशन में सर्व प्रथम उपलब्ध होती है।

आरम्भ में सम्पादकीय के बाद आचार्य श्री तुलसी द्वारा लिखित पाण्डित्यपूर्ण भूमिका है, जो अनेक विषयों पर नया प्रकाश डालती है। भूमिका की विषय-सूची से उसमें चर्चित विषय पहलुओं का आभास पाठको को हो सकेगा।

इस तरह दो श्रुतस्कन्ध व्याप्त सारा आचारांग आधुनिकतम प्रणाली से सम्पादित हो कर अभिनव रूप में सामने आया है।

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला का मूल उद्देश्य है विद्वानों के सम्मुख जैन-आगमों के सुन्दर और प्रामाणिक संस्करण उपस्थित करना, जिससे भावी शोध-खोज का मार्ग प्रशस्त हो। इसी दृष्टि से उक्त ग्रन्थमाला का यह द्वितीय ग्रन्थ अवश्य ही विद्वानों का आदर प्राप्त करेगा।

(ख)

आचार्यो तह आचार-चूला

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन-जिन विद्वानों एवं प्रकाशन संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनों का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं ।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि

आचार्य श्री के तत्त्वावधान में सन्तो द्वारा प्रस्तुत पाण्डुलिपि को नियमानुसार अवधार कर उसकी प्रतिलिपि करने का कार्य आदर्श साहित्य संघ, चुरू द्वारा सम्पन्न हुआ है, जिसके लिए हम संघ के संचालको के प्रति कृतज्ञ हैं ।

अर्थ-व्यवस्था

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का व्यय विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा द्वारा श्री हंसराजजी हुलासचन्दजी गोलछा की स्वर्गीया माता श्री घापीदेवी (धर्म-पत्नी श्री रामलालजी गोलछा) की स्मृति में प्रदत्त निधि से हुआ है । एतदर्थ इस अनुकरणीय अनुदान के लिए गोलछा-परिवार हार्दिक धन्यवाद का पात्र है ।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति की ओर से उक्त निधि से होने वाले प्रकाशन कार्य की देख-रेख के लिए निम्न सज्जनों की एक उपसमिति गठित की गई है :

- (१) श्रीमान् हुलासचन्दजी गोलछा
- (२) " मोहनलालजी बाँठिया
- (३) " श्रीचन्दजी रामपुरिया
- (४) " गोपीचन्दजी चौपड़ा
- (५) " केवलचन्दजी नाहटा

सर्व श्री श्रीचन्द रामपुरिया एवं केवलचन्दजी नाहटा उक्त उपसमिति के संयोजक चुने गये हैं ।

आगम-साहित्य प्रकाशन-कार्य

महासभा के अन्तर्गत गठित आगम-साहित्य प्रकाशन समिति का प्रकाशन-कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों हृदय में आनन्द का पारावार नहीं । मैं तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते देख रहा हूँ । इस अवसर पर मैं अपने अनन्य बन्धु और साथी सर्व श्री गोविन्दरामजी सरावगी, मोहनलालजी बाँठिया एवं खेमचन्दजी सेठिया को उनकी मुक्त सेवाओं के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ ।

आभार

आचार्य श्री की सुदीर्घ-दृष्टि अत्यन्त भेदिनी है। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक नैतिक आन्दोलनों में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर आगम-साहित्य-गत जैन-संस्कृति के मूल-सन्देश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य और स्तुत्य है। जैन-भाग्यों को अभिलषित रूप में भारतीय एवं विदेशी विद्वानों के सम्मुख ला देने की आकांक्षा में वाचना प्रमुख के रूप में जो अथक परिश्रम आचार्य श्री तुलसी ने अपने कन्वो पर लिया है उसके लिए जैनी ही नहीं अपितु सारी भारतीय जनता उनके प्रति कृतज्ञ रहेगी।

निकाय सचिव मुनि श्री नयमलजी का सम्पादन-कार्य एवं तेरापन्थ संघ के अन्य विद्वान् मुनिवृन्द के सक्रिय-सहयोग भी वस्तुतः अभिनन्दनीय है।

हम आचार्य श्री और उनके परिवार के प्रति इस जनहितकारी पवित्र प्रवृत्ति के लिए नतमस्तक हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१
१ दिसम्बर, १९६७

श्रीचन्द्र रामपुरिया
संयोजक
आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

सम्पादकीय

नाम-परिचय

प्रस्तुत ग्रन्थ आगम-ग्रन्थ-माला का द्वितीय ग्रन्थ है। इस माला के प्रथम ग्रन्थ में दो मूल सूत्र सम्पादित हुए थे। इसमें पहला अंग सम्पादित है। शताब्दियों पूर्व जो स्थान आचारांग का था, वह स्थान वर्तमान में मूलसूत्रों का है। इसलिए मूलसूत्र और आचारांग निकट सम्बन्धी हैं।

आचारांग के दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध में मूल आचारांग और दूसरे श्रुतस्कन्ध में आचारांग की चार चूलिकाओं का समावेश है। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'आयारो' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'आयार-चूला' है। इसीलिए प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम 'आयारो तह आयार-चूला' रखा गया है।

ग्रन्थ-बोध

प्रस्तुत ग्रन्थ में पाठान्तर सहित मूलपाठ है। प्रारम्भ में भूमिका और अंत में पाँच परिशिष्ट हैं—

- (१) आयारो संक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
- (२) आयार-चूला संक्षिप्त पूर्ति-स्थल और उसका निर्देश।
- (३) आयारो शब्द-सूची।
- (४) आयार-चूला शब्द-सूची और
- (५) शुद्धि-पत्रम्।

नामानुक्रम

आयार-चूला और निशीथ में प्रयुक्त विशेष नाम प्रायः सट्श हैं, इसलिए आयार-चूला के विशेष नामों का अनुक्रम निशीथ के नामानुक्रम के साथ ही किया जाएगा।

पाठ-सम्पादन में हमने अनेक संकेत-चिन्हों का प्रयोग किया है, उनका स्पष्टीकरण 'संकेत-निर्देशिका' में किया गया है।

प्रस्तुत पाठ और पाठ-सम्पादन की पद्धति

आचारांग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नहीं है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णों और वृत्तों के संदर्भ में समीक्षा-पूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देशक के तीन सूत्र (२७-२९)

शेष पाँच उद्देशको में भी प्राप्त होते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारांग वृत्ति में यह प्राप्त नहीं है। आचारांग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुढोपास' (आयारो, सूत्र १६, पृ० ४) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, सूत्र २६, पृ० ६) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है।^१

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक में प्राप्त तीन सूत्र (२७-२९) शेष पाँचो उद्देशको में स्वीकृत किए हैं।

आठवे अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि^२ में 'कुभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'सवट्टणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, ततुवायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जचियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ।' ^३

यहाँ प्रतीत होता है कि 'कुभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दों से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना संभव नहीं, इसलिए उसे मूलपाठ में स्वीकृत नहीं किया गया।

हमने संक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० वेचरदास दोशी ने ८-१२-६६ को आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने लिखा है—“प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरंभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने के आरम्भ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझ कर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पड़े उतना अच्छा, ऐसा समझ कर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहाँ तक कम आरंभ करना पड़े, ऐसा रास्ता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दों की सहायता से हजारों श्लोक वा सैकड़ों वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हुई।”

१. देखे—आयारो, पृ० ८ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० ११ पादटिप्पण सख्याक २; पृ० १४ पादटिप्पण सख्याक १, पृ० १६ पादटिप्पण सख्याक ३, पृ० १९ पादटिप्पण सख्याक ४।

२. आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३. वही, पृ० २६१।

श्रुत को कण्ठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा ओर कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-संक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य हैं। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रन्थ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयाँ भी बढ़ी हैं। जिन मुनियों के समय आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्ण' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्ण' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौन्दर्य की दृष्टि से हमारे वाचना प्रसूख आचार्यश्री छलसी ने चाहा की संक्षेपीकृत पाठ की पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकांश स्थलों में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए विन्दु-संकेत दिया गया है। आयारो तथा आयार-चूला के पूर्ति-स्थलों के निर्देश की सूचना प्रथम और द्वितीय परिशिष्ट में दी गई है।

पं० वेचरदास दोशी के अनुसार पाठ का संक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—'देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमो को ग्रन्थ-वद्ध करते समय कुछ महत्त्वपूर्ण बातें ध्यान में रखीं। जहाँ-जहाँ शास्त्रों में ममन पाठ आए वहाँ-वहाँ उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवाण' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ में वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः-पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णाग कुमारा जाव विहरंति', 'वेणं कालेणं जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि।'^१

इस परम्परा का प्रारम्भ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तरवर्ती-काल में भी होता रहा है। वर्तमान में उपलब्ध आदर्शों में संक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई मत्र संक्षिप्त है तो दूसरे में वह समय रूप से लिखित है। टीकाकारों ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइं वा" तथा 'अयबंधणाणि वा जाव अण्णयराइं वा'—ये दो पाठाश मिलते हैं। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमें ये दोनों संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये समय रूप में भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है।^२ लिपिकर्ता

१. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।

२. औपपातिक वृत्ति, पत्र १७७

पुस्तकान्तरे ममग्रमिद सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

अनेक स्थलो में अपनी सुविधानुसार पूर्वागत पाठ को दूसरी बार नहीं लिखते और उत्तरवती आटशों में उनका अनुसरण होता चला जाता । उदाहरण स्वरूप— रायपसेणइय सूत्र में 'सन्विद्धीय अकालपरिहीणा' (स्वीकृत पाठ—हीण) ऐसा पाठ मिलता है ।^१ इस पाठ में अपूर्णता सूचक संकेत भी नहीं है । 'सन्विद्धीए' और 'अकालपरिहीण' के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति^२ करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है—'सन्विद्धीए सन्वजुत्तीए सन्ववलेणं सन्वसमुदएणं सन्वादरेणं सन्वविभूसाए सन्व-विभूइए सन्वसंभमेणं सन्वपुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकरेणं सन्वदिव्वजुडियसइसन्निनाएणं महया इद्धीए महया जुइए महया वलेणं महया समुदएणं महया वरत्तुडियजमगसमय-पडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-भल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-सुरय-सुइंग-दुंढुमि-निग्घोस-नाइयखेणं णियग परिवाल सद्धि संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमाणाइं दुरूडा समाणा अकालपरिहीणं ।'

आचार-चूला ५।१४ में 'महद्धणमोल्लाइ' तथा १५।५६ में 'महव्वए' के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नहीं है ।

प्रमादवश कही-कही अपूर्णता सूचक 'जाव' का विपर्यय भी हुआ है, यथा—
 फासुयं.....लामे संते जाव पडिगाहेज्जा । (१।१०१)
 बहुकंटगं... ..लामे संते जाव णो..... । (१।१३४)

समर्पण-सूत्र

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार आचारांग में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं—

जाव— अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं (४।११)

तहेव— अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदग वियडादि णिणिणाइ य (७।१६-२०)

अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव (७।३४, ३५)

एवं— एवं णायव्वं जहा सद्दपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा स्वपडियाए वि (१२।२-१७)

जहा— पाणाइं जहा पिडेसणाए (५।५)

संख्या— थुणंसि वा (४) (७।११)

असणं वा (४) (१।१२)

से भिक्खु वा २ ।

१. देखें—प० बेचरदास दोशी द्वारा संपादित 'रायपसेणइय', पृ० ७३ ।

२. पूर्ति-स्थल के लिए देखें—वही, पृ० ६९, विवरण और पादटिप्पण ।

तं चेव— तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं (१।१४९-१५४) सेसं तं
चेव एवं ससरक्खे (१।६५)

हेट्ठिमो— एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो (१३।४०-७५)

आचारांग का वाचना-भेद

समवायाग में आचारांग की अनेक वाचनाओं का उल्लेख मिलता है।^१ वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। मंक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते हैं, किन्तु वर्तमान में मुख्य दो वाचनाएँ प्राप्त हैं—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका में नागार्जुनीय वाचना-सम्मत पाठों का उल्लेख किया गया है। देखें—‘आयारो’ पृष्ठ २८ पादटिप्पण संख्यांक ४ और ७, पृष्ठ ४१ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ४३ पादटिप्पण संख्यांक ३, पृष्ठ ४८ पादटिप्पण संख्यांक ६, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक ५४, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ६८ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ७१ पादटिप्पण संख्यांक ६ और ७, पृष्ठ ७४ पादटिप्पण संख्यांक ७, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण संख्यांक ८, पृष्ठ ६४ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ९९ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ १०१ पादटिप्पण संख्यांक ११।

आचारांग के उद्धृत पाठ

उत्तरवर्ती अनेक ग्रन्थों में आचारांग के पाठ उद्धृत किए गए हैं। अपराजित-सूरि ने मूलाराधना की टीका में आचारांग के कुछ पाठ उद्धृत किए हैं।^२

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचारांग में नहीं हैं, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आशिक रूप में मिलते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनों पाठ नीचे दिए जा रहे हैं—

मूलाराधना	आचारांग
तथा चोक्तमाचाराङ्गैः—	
सुदं मे आउस्सन्तो भगवदा एव मक्खार्दं ।	× ×
इह खलु संयमाभिसुखा दुविहा इत्थो पुरिसा	
जादा भवन्ति । तंजहा—सव्व समाग्गा गदे	
णो सव्व समागदे चेव । तत्थ जे सव्व	

१ समवायाग समवाय १३६, परिस्ता वायणा ।

२ मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२ ।

समण्णागदे धिरांग / हत्थ पाणि -पादे
सन्विदिय समण्णागदे तस्स णं णो
कप्पदि एगमवि वत्थं धारिउं एवं परिहिउं
एवं अण्णत्थ एगेण पडिलेहगेण ।

अह पुण एव जाणिज्जा—उपातिकंते हेमंते
गिम्हे सुपडिवण्णे से अर्थ पडिज्जुण सुवधिं
पट्टिठ्ठावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

पडिलेहणं, पादपुंछुणं, उगहं कडासणं अण्णदरं
उवधिं पावेज्ज ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

तथावत्थेसणाए—वुक्त्तं तत्थ एसे हिरिमणे
सेगं वत्थं वा धारेज्ज पडिलेहणगं विदियं,
तत्थ एसे जुग्गिदे देसे दुवे वत्थाणि धारिज्ज
पडिलेहणगं तदियं । तत्थ एसे परिसाइं अणधि-
हासस्स ततो वत्थाणि धारेज्ज पडिलेहणं
चउत्थ । —४।४२१ टीका, पत्र ६११

तथा पाएसणाए कथितं—

हिरिमणे वा जुग्गिदे चाविअण्णे वा तस्सण
कप्पदि वत्थादिकं पुनश्चोक्तं तत्रैव—पाट
चरित्तए ।

आलाउ पत्तं वा दासु पत्तं वा मट्टिगपत्तं
वा, अप्पाणं अप्पवीज अप्पसरिदं तथा
अप्पकारं पात्र लाभे सति पडिगहिस्सामि ।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

भावनायां चौक्तं—

चरिमं चीवरधारी तेण परम चेलके तु जिणे

—४।४२१ टीका पत्र ६११

अह पुण एव जाणिज्जा—उवाइं-
क्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवण्णे
अहापरिज्जुनाइं वत्थाइं परिट्ठ-
वेज्जा ।

—१।८, सू० ५०, ६६, ६२

वत्थं पडिगहं कंवलं, पायपुंछुणं
उगहं च कडासणं एतेसु चैव
जाणेज्जा ।

—१।२ सू० । ११२

जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं
अप्पायंके धिरसंघयणे से एगं वत्थं
धारिज्जा णो वितियं

—२।५ सू० २

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा
अभिकखेज्जा पायं एसित्तए,

तंजहा—अलाउ पायं वा दासु
पायं वा, मट्टिया पायं वा
तहप्पगार पायं । —२।६ सू० १
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णामाणे
लाभे सते पडिगाहेज्जा ।

—२।६ सू० १०

×

×

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा-शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

आयारो

अध्ययन	१ सूत्र	१	सन्ना	सण्णा (च, छ) ।
"	१ "	१३	दुस्संबोहे	दुस्संबोधे (क, च, घ) ।
"	१ "	३४	णियाय०	णियाय० (क, ख, च, घ) ।
"	१ "	४०	पवय०	पवद० (ख, च, ग) ।
"	१ "	४७	०मेगेसि	०मेकेसि (क, घ) ।
"	१ "	५६	पवेइयं	पवेदितं (क) , पवेतिय (घ) ।
"	१ "	६७	सया	सता (क, च) ।
"	१ "	७३	पवेदिता	पवेदिदा (क) ।
"	१ "	९०	त णो	तन्नो (क, घ) ।
"	१ "	९४	पाईणं	पावीणं (घ) ; पादीणं (घ) ।
"	१ "	९५	आवि	यावि (ख, घ,) ; संसेतया (क) ; संसेदया (च) ।
"	१ "	११८	संसेयया	संसेयमा (ख,) , ससेतया (क) ; संसेदया (च) ।
"	१ "	१२२	०णिब्बाणं	०णेब्बाणं (क) ।
"	१ "	१३०	०पडिघाय	०पडिघाय (क, ख, ग, घ) ।
"	२ "	६	विभूसाए	विहूसाए (क) ।
"	२ "	४१	मित्त०	मीत० (क) ।
"	२ "	६३	०साया	०साता (क, च, छ) ।
"	२ "	७२	खेयन्ने	खेतन्ने (घ, छ) ।
"	२ "	८६	०पाउडा	०वाउडा (क) ।
"	२ "	१०६	अदिस्समाणे	आदिस्समाणे (क, छ) ।
"	२ "	१३३	मावातए	मावादए (च) ।
"	२ "	१३४	बहुमाई	बहुमादी (छ, चू) ।
"	२ "	१६०	सहते	सहई (ग, घ, च) ।
"	२ "	१६१	अहियानमाणे	अधिवासमाणे (क, च) ।
"	२ "	१७१	इह	इघ (क) ।
"	२ "	१७५	अणाटियमाणे	अणातियमाणे

”	३	”	१७	खेयन्ने	खेदन्ने (च) ।
”	३	”	४२	प्रइत्तए	प्रतित्तए (छ) ।
”	३	”	६०	तहा०	तथा० (क,ग) ।
”	४	”	११	सया	सता (क,छ,चू) ।
”	४	”	२०	तिरियं	तिरितं (छ) ।
”	४	”	२५	असायं	आसायं (ख); अस्सायं (चू) ।
”	४	”	४८	पासह	पासहा (च) ।
”	४	”	५०	पलिद्धिदिय	परिद्धिदिय (क) ।
”	४	”	५२	जयाणं	जदाणं (छ) ।
”	५	”	६	परिजाणतो	परिजाणतो (क,ख,ग); परियाणतो (घ) ; परियाणतो (च,छ) ।
”	५	”	१०	सेवए	सेवे (घ,चू); सेवते (च) ।
”	५	”	१७	पलित्त्तन्ने	पलित्त्तन्ने (घ) ।
”	५	”	२६	विपरिणाम०	विपरिणाम० (क,घ,च) ।
”	५	”	३०	समुप्पेह०	समुप्पेह० (क,ख,ग) ।
”	५	”	४४	णियाय	निदाय (क,च,चू) ।
”	५	”	५०	०पहे	०पधे (च) ।
”	५	”	५०	अण्णहा	अण्णहा (च,छ) ।
”	५	”	७२	०वेयण०	०वेतण०(छ) ।
”	५	”	८७	काहिए	काधिते (क, च, छ) ।
”	५	”	९२	परिव्वयंति	परिव्वतंति (छ) ।
”	६	”	१६	कामेहिं	कामेसु (च) ।
”	६	”	३०	लाय	लोत (क) ।
”	६	”	३०	मायाए	माताए (छ) ।
”	६	”	६०	जाइस्सामि	जातिस्सामि (ख,ग,च,छ) ।
”	८	”	१	वेयावडियं	वेयापडियं (ग) ।
”	८	”	४	०माइयंति	०मादितंति (ख,ग); ०मातितंति (छ) ।
”	८	”	३१	निसामिया	निसामित्ता (क), निसामेत्ता (छ) ।
”	८	”	८१	अहा	आहा (ख,घ); आधा (च,छ) ।
”	८	”	१०७	कहं कहे	कधं कधे (ख,ग,घ,) ।
”	११	”	४	वोसज्ज	वोसिज्ज (ख,ग)

अध्ययन ६।१ सूत्र	१६	पर-पाए	पर-वादे (छ) ।
” ६।४ ”	६	अविसाहिए	अविसाधिते (क,ख,ग) ।
” ६।४ ”	६	आयत्त०	आतय० (क,छ) ।

आयार-चूला

” १ ”	२	आयाय	आताए (अ); आयात्त (क,घ); आदाय (च) ।
” १ ”	२	अप्पुदए	अप्पोदए (क,व) ।
” १ ”	१२	अणिसट्ठं	अणिसिट्ठं (क, व) ।
” १ ”	१५	पुरिसंतरकडं	पुरिसंतरगडं (छ) ।
” १ ”	२६	अणिसट्ठं	अणिसट्ठं (अ,च,व) ।
” १ ”	३१	आसित्ता	असित्ता (अ,क,च,छ) ।
” १ ”	५२	विगं	वगं (अ,छ) ।
” १ ”	८३	विल	विडं (घ) ।
” १ ”	८६	पिहुणेण	पेहुणेण (अ,क,घ) ।
” १ ”	८६	अफासुयं	अप्फासुयं (घ) ।
” १ ”	१०१	दिज्जा	दज्जा (अ,च) ।
” १ ”	१०४	दाडिम०	दालिम० (अ,व,घ) ।
” १ ”	१०५	अहो०	अघो० (क,व,छ) ।
” १ ”	११८	तिंदुगं	तेंदुगं (च,छ) ।
” १ ”	१४६	पाय०	पाद० (छ,व) ।
” २ ”	६	पुरिसंतरकडे	पुरिसंतरगडे (छ,व) ।
” ३ ”	३६	०वडियाए	०पडियाए (क,च,छ) ।
” ३ ”	३६	विउसेज्जा	वितोसेज्जा (अ) ।
” ३ ”	४८	पोक्खरणीओ	पुकरिणीओ (अ) ; पुक्खरिणीओ (व) ।
” ४ ”	२५	पमेडले	पमेतिले (अ) , पमेटिले (क,च,घ) ।
” ७ ”	१	परवत्तभोई	परदत्तभोगी (अ,च) , परवत्तभोति (व) , परदत्तभोती (व) ।
” १३ ”	६	उल्लोलेज्ज	उल्लोडेज्ज (क,घ,च,छ,व) ।
” १० ”	१६	गिहपिट्ठ०	गद्धपट्ठ० (घ,व) ।
” १३ ”	६	उल्लोलेज्ज	उल्लोडेज्ज (क,घ,च,छ,व) ।
” १५ ”	२६	माववेज्जं	सावएज्जं (घ,च); सावतेज्जं (व) ।
” १५ ”	५८	जाई	जाती (अ,छ,व) ।
” १५ ”	६८	०भोई	भोजी (क) , ०भोती (छ) ।

प्रति परिचय

(अ) आचारांग (दोनों श्रुतस्कन्ध)—

यह प्रति जैन-भवन, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ की श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १-१७ तक पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४०-४५ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। सम्बत् वगैरह नहीं है।

(क) दोनों श्रुतस्कन्ध मूलपाठ—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से श्री मदनचन्द्रजी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। पंक्तियाँ १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ५०-५२ तक अक्षर हैं। प्रति के अंत में लिखा है—

सम्बत् १६७६ वर्षे आषाढ सुदि द्वितीय ४ भौम। श्री मालान्वये राक्याण गोत्रे सं० जटमल पुत्र सं० वेणीदास पुस्तक प्रदत्तं श्रीमद् नागपुरीय तपागच्छ सं० श्री मान कीर्ति सूरि शिष्य माघव ज्योतिविद्=। अंत के अक्षर किसी अन्य व्यक्ति के मालूम होते हैं। प्रति के बीच में वावडी तथा तीन बड़े-बड़े लाल टीके हैं।

(ख) आचारांग टन्बा (प्रथम श्रुतस्कन्ध)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ४६ पत्र हैं। पंक्तियाँ पाठ की ७ तथा टन्वे की १४ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर हैं। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

सम्बत् १७३२ वर्षे श्रावण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथौ गुरु वासरे। लिखितं पूज्य ऋषि श्री ५ अमराजी तत् शिष्येण लिपि कृतं मुनि विका ॥ आत्मार्थो शुभं भवतु कल्याण मस्तु। सेहुरीया ग्रामे संपूर्ण मस्ति ॥

(ग) आचा० (प्रथम श्रुतस्कन्ध) पंच पाठी (वालावबोध)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ९० पत्र हैं। प्रथम ३ तथा छठा पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ५ से १० तक हैं। अक्षर ३० से ३३ तक हैं। अंतिम प्रशस्ति नहीं है।

(घ) दोनों श्रुतस्कन्ध, (जीर्ण)—

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मंदिर, अहमदाबाद से श्री गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३॥ इंच लम्बा, ५ इंच

चौडा है। पंक्तियों १७ तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर है।
अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

शुभं भवतु । कल्याण मस्तु ॥ छ ॥ संवत् १५७३ वर्षे १० मंगलवार
समत्तं ॥ छ ॥ ॥ श्री ॥ छ ॥

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानों पर छिद्र हो गए है।

(च) दोनों श्रुतस्कन्ध, मूलपाठ—

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद के लालभाई दलपत-
भाई ज्ञान भण्डार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र है।
प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियों तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर है।
प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौडा है। बीच में वावडी है।

(छ) दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त है।
इसके २९० पत्र है। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४॥ इंच चौडा है।
मूलपाठ की पंक्तियाँ १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर है। अंतिम
प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १८९९ वर्षे श्रावण शुक्ल पक्षे सप्तम्या तिथौ श्री विक्रमपुर मध्ये
लिपिकृतं ॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभं भूयादिति ॥

(व) (द्वितीय श्रुतस्कन्ध) टन्वा (पंचपाठी)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा
प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र है। प्रत्येक पत्र १०॥ इंच लम्बा तथा ४॥ इंच
चौडा है। मूलपाठ की पंक्तियाँ ४ से १३ है। प्रत्येक पंक्ति में २८ से ३३ तक
अक्षर है। बीच-बीच में वावडियाँ है। अंतिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १७५२ वर्षे भाद्रपद मासे पञ्चम्या तिथौ ओरस गच्छे भट्टारक
श्री कवचसूरि तत्पट्टे वर्तमान भट्टारक देवगुप्तसूरिभिरुहीता नागोरी
तपागच्छीय पं० श्रीदयालदास पाश्वात् पञ्चत्वरिंशत् ४५ वर्षोतरात्
महतोद्यमेन ।

(घ), (ट्टपा) सुद्रित, प्रकाशिका—श्री सिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति
विक्रम संवत् १९६१ ।

(चू), (चूपा) सुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतलाम, वि० १९६८ ।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष
पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ ही चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित
आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस

लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारी वाचना अनुसन्धान पूर्ण, गवेषणा पूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसन्धान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संवल पा और अधिक भारी बनें।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है। पाठ-सम्पादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दक्षचित्तता से लगे रहे हैं। मुनि हनुमानमलजी (सरदारशहर) का भी उसमें सहयोग रहा है।

इसका शुद्धि-पत्र तैयार करने में मुनि सागरमलजी 'श्रमण' का सहयोग रहा है।

इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलालजी (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्द्रजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराना और श्री जयचन्द्रलालजी दफ्तरी का भी अविरल योग रहा है। आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में वह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

सागर-सदन, शाहीबाग,

अहमदाबाद-४

२६ अगस्त, १९६७

मुनि नथनल

भूमिका

विषय-सूची

१. आगमो का वर्गीकरण	पृ० १
२. पूर्व	२
३. अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य	४
४. अङ्ग	६
—नवाङ्ग			
—द्वादशाङ्ग			
५. प्रथम अङ्ग	७
६. श्रुतस्कन्ध	८
७. मुख्य-विभाग	१०
८. व्यापार-चूला	११
९. अवान्तर-विभाग	१२
१०. पद-परिमाण और वर्तमान आकार			१२
११. विषय-वस्तु	१५
—दार्शनिक-तथ्य			
—श्रद्धा और स्वतंत्र दृष्टि			
—कषोपल			
—समसामयिक विचार			
१२. रचनाकार और रचना-काल	२०
१३. आचाराग का महत्त्व	२७
१४. रचनाशैली	६८
१५. व्याख्या-ग्रन्थ	३७
१६. उपसंहार	३२

१-आगमों का वर्गीकरण

जैन-साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायांग में आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं—(१) द्वादशांग गणिपिटक^१ और (२) चतुर्विंश पूर्व^२। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम) के दो विभाग मिलते हैं—(१) अङ्ग-प्रविष्ट और (२) अङ्ग-वाह्य।^३ आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन-विषयक विज्ञान उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे नव अङ्गों और पूर्वों के अन्तर्गत विस्तार में हैं।

(१) अङ्ग-प्रविष्ट अङ्गों के लिए वे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी, के लिए थे। आगम-विच्छेद अङ्गों में अहिज्जइ (अन्तगड, प्रथम वर्ग)। यह अङ्ग भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विषय में प्राप्त है।

सामाह्यमाह्याइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, पंचम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विषय में प्राप्त है।

सामाह्यमाह्याइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विषय में प्राप्त है।

सामाह्यमाह्याइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ (अन्तगड, पष्ठ वर्ग, १५ वें अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिसुक्कुमार के विषय में प्राप्त है।

(२) वारह अङ्गों को पढ़ने वाले—

वारसंगी (अन्तगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विषय में प्राप्त है।

(३) चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—

चौदसपुव्वाइं अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुखकुमार के विषय में प्राप्त है।

सामाह्यमाह्याइं चौदसपुव्वाइं अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयमकुमार के विषय में प्राप्त है।

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८८।

२. वही, समवाय १४, सू० २।

३. नन्दी, सू० ४३।

भगवान् पार्श्व के साठे तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे ।^१

भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दश-पूर्वी मुनि थे ।^२

समवायाग और अनुयोगद्वार में अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-वाह्य का विभाग नहीं है । सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है । अङ्ग-वाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरो ने की है । नन्दी की रचना से पूर्व अनेक अङ्ग-वाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दश-पूर्वी स्थविरो द्वारा रचे गए थे । इसलिए उन्हें आगम की कोटि में रखा गया । उसके फलस्वरूप (१) अङ्ग-प्रविष्ट और (२) अङ्ग-वाह्य । यह विभाग (३) तक नहीं हुआ था । यह सबसे पहले नन्दी (वीर-राज)

नन्दी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जात २—(१) अङ्ग-प्रविष्ट और (३) अङ्ग-वाह्य । आज 'अङ्ग-प्रविष्ट' और 'अङ्ग-वाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पूर्व उपलब्ध नहीं है । उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है ।

२-पूर्व

जैन-परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शाब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है । इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एकमत नहीं हैं । प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया ।^३ आधुनिक विद्वानों का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है । यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है ।^४ दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नहीं आता कि पूर्वा की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशांगी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है ।

वर्तमान में जो द्वादशांगी का रूप प्राप्त है, उसमें 'पूर्व' समाए हुए हैं । बारहवों अङ्ग

१. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सू० १४ ।

२. वही, सू० १२ ।

३. समवायाग वृत्ति, पत्र १०१ :

प्रथमं पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात् ।

४. नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४० :

अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं मर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम् ।

दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्व' के अन्तर्गत किए गए हैं। भगवान् महावीर ने प्रारम्भ में पूर्वगत का अर्थ 'प्रतिपादित' किया था और गौतम आदि गणधरो ने भी प्रारम्भ में पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवाँ अङ्ग—ये दोनों भिन्न नहीं हैं। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्व साधारण के लिए वह सुलभ नहीं था। अङ्गों की रचना अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए की गई। जिनभद्र गणि क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद मे समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अङ्गों की रचना अल्पमेधा पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए की गई।^१ ग्यारह अङ्गों को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अङ्ग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम में रहे हैं। दिगम्बर-परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण के वासठ वर्ष बाद केवली नहीं रहे। उसके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उसके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। इनके पश्चात् दो सौ बीस वर्ष तक ग्यारह अङ्गधर रहे।^२

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अङ्गों की रचना नहीं हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अङ्गों की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवे अङ्ग के रूप में स्थापित किया गया।

यद्यपि बारह अङ्गों को पढ़ने वाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते हैं,^३ फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अङ्गों के अध्येता नहीं थे और बारह अङ्गों के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगवित्' कहा गया है।^४ वे चतुर्दश-पूर्वी और अङ्गधर दोनों थे। यह कहने का प्रकार-मेद रहा है कि श्रुत-केवली को कहीं 'द्वादशांगवित्' और कहीं 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया।

ग्यारह अङ्ग पूर्वों से उद्धृत या संकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है,

१. विशेषावश्यक भाष्य, गाथा ५५४ :

जइवि य भूतावाए, सक्वस्स वओगायस्स ओयारो ।

निज्जूहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य ॥

२. जयधवला, प्रस्तावना पृ० ४९ ।

३. देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग ।

४. उत्तराध्ययन, २३।७ ।

वह स्वभाविक रूप से ही द्वादशांगवित् होता है। वारहवे अङ्ग में चौदह पूर्व समाविष्ट है। इसलिए जो द्वादशांगवित् होता है, वह स्वभावतः ही चतुर्दश-पूर्वी होता है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही हैं— (१) चौदह पूर्व और (२) ग्यारह अङ्ग। द्वादशांगी का स्वतंत्र स्थान नहीं है। यह पूर्वी और अङ्गी का संयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने पूर्वी को भगवान् पार्श्व-कालीन और अङ्गी को भगवान् महावीर-कालीन माना है, पर यह अभिमत संगत नहीं है। पूर्वी और अङ्गी की परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग में भी रही है। अङ्ग अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए रचे गए, यह पहले बताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग में सब सुनियो का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे माना जा सकता है? प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग में सदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक-दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी विन्दु पर पहुँचते हैं कि अङ्गी की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन में भी रही है। इसलिए इस अभिमत की पुष्टि में कोई साध्य प्राप्त नहीं है कि भगवान् पार्श्व के युग में केवल पूर्व ही थे, अङ्ग नहीं। सामान्य-ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन में पूर्वी और अङ्गी का युग की भाव, भाषा, शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पूर्व' पार्श्व की परम्परा से लिए गए और 'अङ्ग' महावीर की परम्परा में रचे गए, इस अभिमत के समर्थन में संभवतः कल्पना ही प्रधान रही है।

३-अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तिरव-काल में गौतम आदि गणधरो ने पूर्वी और अङ्गी की रचना की, यह सर्व-विश्रुत है। क्या अन्य सुनियो ने आगम-ग्रन्थों की रचना नहीं की—यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे।^१ उनमें सात सौ केबली थे, चार सौ वादी थे। उन्होंने ग्रन्थों की रचना नहीं की, ऐसा सम्भव नहीं लगता। नन्दी में बताया गया है कि भगवान् महावीर के शिष्यों ने चौदह हजार प्रकीर्णक बनाए थे।^२ ये पूर्वी और अङ्गी से अतिरिक्त थे। उस समय अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-बाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ, यह प्रमाणित करने के लिए कोई साध्य प्राप्त नहीं है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने

१. समवायाग, समवाय १४, सू० ४।

२. नन्दी, सू० ७८.

चोदसपइन्नगसहस्साणि भगवओ वद्धमाणस्स।

ग्रन्थ रचे, तब संभव है उन्हें आगम की कोटि में रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रमाण्य और अप्रमाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के बाद चतुर्दश-पूर्वी और दस-पूर्वी स्थविरों द्वारा रचित ग्रन्थों को आगम की कोटि में रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हें स्वतः प्रमाण नहीं माना गया। उनका प्रमाण्य परतः था। वे द्वादशांगी से अविरोद्ध है, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की संज्ञा दी गई। उनका परतः प्रमाण्य था, इसीलिए उन्हें अङ्ग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के संदर्भ में आगम की अङ्ग-वाह्य कोटि का उद्भव हुआ।

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-वाह्य के भेद-निरूपण में तीन हेतु प्रस्तुत किए हैं—

- (१) जो गणधर-कृत होता है।
- (२) जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है।
- (३) जो ध्रुव—शाश्वत सत्यों से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अङ्ग-प्रविष्ट होता है।^१

इसके विपरीत (१) जो स्थविर-कृत होता है, (२) जो प्रश्न पूछे बिना तीर्थङ्कर द्वारा प्रतिपादित होता है, (३) जो चल होता है—तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अङ्ग-वाह्य है।

अङ्ग-प्रविष्ट और अङ्ग-वाह्य में भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है।^२ जिन आगम के वक्ता भगवान् महावीर हैं और जिसके नकलियता गणधर हैं, वह श्रुत-पुरुष के मूल अङ्गों के रूप में स्वीकृत होता है, इसलिए उसे अङ्ग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते हैं—(१) तीर्थङ्कर, (२) श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) और (३) आरातीय।^३ आरातीय आचार्यों के द्वारा रचित आगम ही अङ्ग-वाह्य माने गए हैं। आचार्य अकलंक के शब्दों में आरातीय आचार्य-कृत आगम अङ्ग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिविम्बित होते हैं इसीलिए वे अङ्ग-वाह्य कहलाते हैं।^४ अङ्ग-वाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यंग या उपांग स्थानीय है।

१. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५२.

गणहर-धेरकवं वा, आएमा मुक्क-वागरणजो वा।

ध्रुव-चल विसेसजो वा, अगाणगेसु नाणत्तं ॥

२. तत्त्वार्थ भाष्य, १।२०.

वक्तृ-विरोपाद् दैविष्यम्।

३. सर्वार्थसिद्धि, १।२० :

त्रयो वक्ताः—सर्वज्ञस्तीर्थकर, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति।

४. तत्त्वार्थ-राजवातिक, १।२० :

आरातीयाचार्यकृताङ्गार्थप्रत्यासन्नरूपमङ्गवाह्यम्।

४-अङ्ग

द्वादशांगी में संगर्भित बारह आगमों को अङ्ग कहा गया है। अङ्ग शब्द संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में वेदाध्ययन के सहायक-ग्रन्थों को अङ्ग कहा गया है। उनकी संख्या छह है—

- (१) शिक्षा— शब्दों के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक ग्रन्थ।
- (२) कल्प— वेद-विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।
- (३) व्याकरण— पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।
- (४) निरुक्त— पदों की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।
- (५) छन्द— मंत्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक शास्त्र।
- (६) ज्योतिष— यज्ञ-याग आदि कार्यों के लिए समय-शुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

वैदिक साहित्य में वेद-पुरुष की कल्पना की गई है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रोत्र, छन्द पैर और ज्योतिष नेत्र है। इसीलिए वे वेद-शरीर के अङ्ग कहलाते हैं।^१

पालि-साहित्य में भी 'अङ्ग' शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थान में बुद्ध-वचनों को नवांग और दूसरे स्थान में द्वादशांग कहा गया है।

नवांग—

- (१) सुत्त— भगवान् बुद्ध के गद्यमय उपदेश।
- (२) गेय्य— गद्य-पद्य मिश्रित अंश।
- (३) वेय्याकरण— व्याख्यापरक ग्रन्थ।
- (४) गाथा— पद्य में रचित ग्रन्थ।
- (५) उदान— बुद्ध के सुख से निकले हुए भावमय प्रीति-उद्गार।
- (६) इतिवृत्तक— छोटे-छोटे व्याख्यान जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसे कहा' से होता है।
- (७) जातक— बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाएँ।
- (८) अब्भुतधम्म— अदभुत वस्तुओं या योगज-विभूतियों का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
- (९) वेदल्ल— वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली में लिखे गए हैं।^२

१. पाणिनीय शिक्षा, ४१, १२।

२. सद्धर्मपडरीक सूत्र, पृ० ३४।

द्वादशांग—

(१) सूत्र, (२) गेय, (३) व्याकरण, (४) गाथा, (५) उदान, (६) अवदान, (७) इतिवृत्तक, (८) निदान, (९) वैपुल्य, (१०) जातक, (११) उपदेश-धर्म और (१२) अदसुत-धर्म ।^१

जैनागम वारह अंगों में विभक्त है—(१) आचार, (२) सूत्रकृत, (३) स्थान, (४) समवाय, (५) भगवती, (६) ज्ञाता धर्मकथा, (७) उपासकदशा, (८) अन्तकृद्, (९) अनुत्तरोपपातिक, (१०) प्रश्नव्याकरण, (११) विपाक और (१३) दृष्टिवाद ।

‘अङ्ग’ शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन की तीनों प्रमुख धाराओं में प्रयुक्त हुआ है । वैदिक और बौद्ध साहित्य में मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक हैं । उनके साथ ‘अङ्ग’ शब्द का कोई योग नहीं है । जैन साहित्य में मुख्य ग्रन्थों का वर्गीकरण गणिपिटक है । उसके साथ ‘अङ्ग’ शब्द का योग हुआ है । गणिपिटक के वारह अङ्ग हैं—
‘दुवालसंगे गणिपिडगे ।’^२

जैन-परम्परा में श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है । आचार आदि वारह आगम श्रुत-पुरुष के अङ्गस्थानीय हैं । संभवतः इसीलिए उन्हें वारह अङ्ग कहा गया ।^३ इस प्रकार द्वादशांग गणिपिटक और श्रुत-पुरुष दोनों का विशेषण बनता है ।

५-प्रथम अङ्ग

द्वादशांगी में आचारांग का पहला स्थान है ।^४ इस विषय में दो विचारधाराएँ प्राप्त होती हैं । एक धारा के अनुसार आचारांग पहला अङ्ग स्थापनाक्रम की दृष्टि से है, रचना-क्रम की दृष्टि से वह वारहवाँ अङ्ग है । दूसरी धारा के अनुसार रचना-क्रम

१ बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ ‘अभिसमयालंकार’ की टीका, पृ० ३५ .

सूत्रं गेय व्याकरणं, गाथोदानावदानकम् ।

इतिवृत्तक निदान, वैपुल्यं च सजातकम् ।

उपदेशाद्भुतौ धर्मो, द्वादशांगमिदं वच ॥

२. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८८ ।

३. मूलाराधना, ४।५६६ विजयोदया :

श्रुत पुरुष मुलचरणाद्यङ्गस्थानीयत्वादगशब्देनोच्यते ।

४. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६ :

से षं अङ्गद्वयाए पढमे ।

(क) नदी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २११ :

स्थापनामधिकृत्य प्रथममङ्गम् ।

(ख) वही, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४० :

(ग) तणधरा: पुन' सूत्ररचना विदधत आचारादिक्रमेण विदधतिस्थापयन्ति वा (च ?) ।

और स्थापना-क्रम दोनो दृष्टियों से आचारांग पहला अङ्ग है। आचार्य मलयगिरि^१ तथा अभयदेवसूरि^२ दोनो ने ही उक्त दोनों विचारधाराओं का उल्लेख किया है। ये धाराएँ उनसे पहले ही प्रचलित थी। अङ्ग पूर्वों से निर्यूढ है, इस अभिमत के आलोक में देखा जाए तो यही धारा संगत लगती है कि आचारांग स्थापना-क्रम की दृष्टि से पहला अङ्ग है, किन्तु रचना-क्रम की दृष्टि से नहीं। निर्युक्तिकार ने 'आचार' को प्रथम अङ्ग माना है। उनके अनुसार तीर्थङ्कर सर्वप्रथम 'आचार' का और फिर क्रमशः शेष अङ्गों का प्रतिपादन करते हैं।^३ गणधर भी उसी क्रम से अङ्गों की रचना करते हैं।^४ निर्युक्तिकार ने आचारांग की प्रथमता का कारण भी प्रस्तुत किया है। उन्होंने लिखा है—आचारांग में मोक्ष के उपाय (चरण-करण या आचार) का प्रतिपादन किया गया है और यही प्रवचन का सार है। इसलिए द्वादशांगी में आचारांग का प्रथम स्थान है।^५

इससे प्रतीत होता है कि निर्युक्तिकार इस धारा के समर्थक रहे हैं कि रचना की दृष्टि से आचारांग का प्रथम स्थान है। किन्तु ग्यारह अङ्गों को पूर्वों से निर्यूढ माना जाए, उस स्थिति में निर्युक्ति-सम्मत धारा की संगति नहीं बैठती। संभव है, निर्युक्तिकार ने अङ्गों के निर्यूहण की प्रक्रिया का यह क्रम मान्य किया हो कि सर्व प्रथम आचारांग का निर्यूहण और स्थापन होता है तथा तत्पश्चात् सूत्रकृत आदि अङ्गों का। इस सम्भावना को स्वीकार कर लेने पर दोनों धाराओं की बाह्य दूरी रहने पर भी आन्तरिक दूरी समाप्त हो जाती है।

१. (क) समवायांग वृत्ति, पत्र १०१ : प्रथममङ्ग स्थापनामधिकृत्य, रचनापेक्षया तु द्वादशमङ्गम् ।

(ख) वही, पत्र १२१ : गणधरा. पुन. श्रुतरचनां विदधाना आचादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्ति च ।

२ आचारांग निर्युक्ति, गाथा ८

सन्वेसि आयारो, तित्थस्स पवत्तणे पढमय.ए ।

सेसाइं अंगाइ, गङ्गारस आपुपुव्वीए ।

३. वही, गाथा ८ वृत्ति :

गणधरा अप्यनयं वानुपुर्व्या सूत्रतया ग्रन्थन्ति ।

४. वही, गाथा ६ :

आयारो अङ्गाणं, पढम अङ्गं दुवालसण्हपि ।

इत्थ य मोक्खो वाओ, एस य सारो पवयणस्स ॥

६-श्रुतस्कन्ध

समवायांग में आचारांग के दो श्रुतस्कन्ध बतलाए गए हैं।^१ इससे यह प्रमाणित होता है कि समवायांग में प्रायः द्वादशांगी का विवरण भी आचार-चूला की रचना का उत्तरवर्ती है। प्रारम्भ में आचारांग के दो स्कन्ध नहीं थे। आचार्य भद्रबाहु ने आचार-चूला की रचना की, उसके पश्चात् दो स्कन्धों की व्यवस्था की गई। मूलभूत प्रथम अंग का नाम आचारांग अथवा 'ब्रह्मचर्याध्ययन' है। समवायांग में इसके अध्ययनो को 'नव ब्रह्मचर्य' कहा गया है।^२ आचारांग निर्युक्ति में इसे 'नव ब्रह्मचर्याध्ययनात्मक' कहा गया है।^३ द्वितीय श्रुतस्कन्ध के दो नाम हैं—आयारंग (आचारांग) और आचार-चूला (आचार-चूला)।

निर्युक्तिकार ने आचारांग के दस पर्यायवाची नाम बतलाए हैं—

- (१) आयार— यह आचरणीय का प्रतिपादक है, इसलिए आचार है।
- (२) आचाल— यह निविड बंधन को आचालित करता है, इसलिए आचाल है।
- (३) आगाल— यह चेतना को सम धरातल में अवस्थित करता है, इसलिए आगाल है।
- (४) आगर— यह आत्मिक-शुद्धि के रत्नों का उत्पादक है, इसलिए आगर है।
- (५) आसास— यह सन्नस्त चेतना को आश्वासन देने में क्षम है, इसलिए आश्वास है।
- (६) आयरिस— इसमें 'इति कर्त्तव्यता' देखी जा सकती है, इसलिए यह आदर्श है।
- (७) अङ्ग— यह अन्तस्तल में स्थित अहिंसा आदि को व्यक्त करता है, इसलिए अङ्ग है।
- (८) आईष्ण— इसमें आर्चीर्ण-धर्म का भी प्रतिपादन है, इसलिए यह आर्चीर्ण है।

१ समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६

दो सुयक्त्रधा।

२- वही, समवाय ६, सूत्र ३

णव बभचेर पण्णत्ता।

३ आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११.

णव बंभचेर मइओ।

- (९) आज्ञा— इससे ज्ञान आदि आचारो की प्रसूति होती है, इसलिए आज्ञाति है ।
 (१०) आमोक्ख^१— यह बंधन-सुक्ति का साधन है, इसलिए आमोक्ष है ।

७-मुख्य-विभाग

आचारांग के नौ अध्ययन हैं । समवायांग^२ और आचारांग निर्युक्ति^३ में इन अध्ययनों के जो नाम प्राप्त होते हैं, उनमें थोड़ा भेद है—

समवायांग	आचारांग निर्युक्ति
सत्यपरिष्णा	सत्यपरिष्णा
लोगविजय	लोगविजय
सीओसणिञ्ज	सीओसणिञ्ज
मम्मत्त	सम्मत्त
आवंती	लोगसार
धूत	धुय
विमोहायण	महापरिष्णा
उवहाणसुय	विमोक्ख
महपरिष्णा	उवहाणसुय

इनमें नाम-भेद और क्रम-भेद दोनों हैं । पाँचवें अध्ययन का मूल नाम 'लोगसार' ही है । आवंती नाम आदि-पद के कारण हुआ है । अनुयोगद्वार में यह उदाहरण रूप में उल्लिखित है ।^४ निर्युक्तिकार ने भी आवंती को आदान-पद नाम और लोक्सार को गौण नाम माना है ।^५

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ७ :

आयारो आचालो, आगालो आगरो य आसासो ।
 आयरिसो अंगंति य, आईष्णाज्जाइ आमोक्खा ॥

२. समवायांग, समवाय ६, सू० ३ ।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३१-३२ ।

४. अनुयोगद्वार, सू० १३० : (वृत्ति पत्र १३०) :

से किं ते आयाण पएणं ? (धम्मो मंगलं, चूलिया) आवंती । तत्र आवतीत्याचारस्य पत्रमाध्ययनं, नत्र ह्यादावेव—'आवन्ती केयावन्ती'त्यालापको विद्यत इत्यादानपदे-नैतन्नाम ।

५. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २३८ :

आयाणपएणावन्ति, गोण्णनामेण लोगसारत्ति ।

८-आयार-चूला

आचारांग के माथ पाँच चूलाएँ जुड़ी हुई हैं।^१ उनमें से प्रथम चार चूलाओं की द्वितीय श्रुतस्कन्ध के रूप में स्थापना की गई है। पाँचवाँ चूला 'निशीथाध्ययन' की स्थापना स्वतंत्र रूप से की गई है। द्वितीय श्रुतस्कन्ध के प्रथम सात अध्ययन—यह प्रथम चूला है। मात सप्तैकक—द्वितीय चूला है। भावना—तृतीय चूला है। विमुक्ति—चतुर्थ चूला है।^२ इस प्रकार चार चूलाओं के सोलह अध्ययन हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं—

समवायांग ^३	आचारांग निर्युक्ति ^४
(१) पिण्डेषणा	पिण्डेषणा
(२) सिञ्जा	सेञ्जा
(३) इरिया	इरिया
(४) भासज्जयण	भासाजात
(५) वत्थेसणा	वत्थेसणा
(६) पायेसणा	पायेसणा
(७) ओग्गहपडिमा सत्तिककसत्तय	ओग्गहपडिमा सत्तिककग सत्त
(८) ठाण सत्तिककग	
(९) निसीहिया सत्तिककग	
(१०) उच्चारपासवण सत्तिककग	
(११) सद् सत्तिककग	
(१२) त्व सत्तिककग	
(१३) परकिरिया सत्तिककग	
(१४) अन्नमन्नकिरिया सत्तिककग	

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ :

हवइ य सपचचूलो ।

२. वही, गाथा २६७ :

जावोग्गहपडिमाओ, पढमा सत्तिककगा विइअ चूला ।

भावण विमुत्ति आयारपकप्पा तिन्नि इअ पंच ॥

३. समवायांग समवाय २५, सूत्र ५ ।

४. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९० ।

(१५) भावणा

भावणा

(१६) विमुत्ती

विमुत्ती

दोनो श्रुतस्कन्धो के अध्ययनो की संयुक्त संख्या पच्चीस होती है ।^१

६-अवान्तर-विभाग

समवायांग में आचारांग के ८५ उद्देशन-काल वतलाए गए हैं ।^२ एक अध्ययन का उद्देशन-काल एक होता है, वैसे ही एक उद्देशक का भी उद्देशन-काल एक ही होता है । उद्देशक अध्ययन का अवान्तर-विभाग होता है । आचार और आचार-चूला दोनो के उद्देशको की संख्या इस प्रकार है—

अध्ययन	उद्देशक	अध्ययन	उद्देशक
१	७	६	४
२	६	१०	१
३	४	११	३
४	४	१२	३
५	६	१३	२
६	५	१४	२
७	७	१५	२
८	८	१६	२

अंतिम नौ अध्ययनो में उद्देशक नहीं है । इस प्रकार पच्चीस में से सोलह अध्ययनो के ७६ उद्देशक होते हैं ।

१०-पद-परिमाण और वर्तमान आकार

आचारांग निर्युक्ति के अनुसार आचारांग की पद-संख्या अट्ठारह हजार है । समवायांग तथा नन्दी में आचारांग के दो श्रुतस्कन्ध वतला कर फिर अट्ठारह हजार पदो की संख्या वतलाई गई है । किन्तु यह पद-संख्या नव ब्रह्मचर्य अध्ययनो की है । निर्युक्तिकार ने इसका स्पष्ट उल्लेख किया है ।^३

१. समवायांग, समवाय २५, सू० ५ :

आयारस्स णं भगवओ सच्चुलियायस्स पणवीसं अज्जकयणा पणत्ता ।

२. वही, प्रकीर्णक समवाय, सू० ८६ ।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ११ .

णववभच्चेरमडओ, अट्ठारसपयसहस्सिओ वेओ ।

अभयदेव सूरि ने समवायांग के संश्लिष्ट पाठ का विश्लेषण किया है। उन्होंने लिखा है—“दी श्रुतस्कन्ध है, यह आचार-चूला सहित आचार का प्रविपादन है। उसके अष्टारह हजार पद है। यह पद परिमाण केवल नव ब्रह्मचर्याध्ययनात्मक आचार का है।”^१ सम्प्रति उपलब्ध आचारांग में अष्टारह हजार पद प्राप्त नहीं है। परम्परा से ऐसा माना जाता है कि रचना-काल में आचारांग का पद-परिमाण इतना था, किन्तु काल-क्रम से उसके ग्रन्थभाग का विच्छेद हो गया, इसलिए वर्तमान में पद-परिमाण भी कम हो गया है। विंगम्बर-परम्परा के अनुसार नक्षत्राचार्य, जयपाल, पाण्डुस्वामी, भ्रुवसेन और कंसाचार्य—ये पाँच आचार्य एकादशांगधर और चौदह पूर्वों के एक देश के धारक हुए हैं। सुभद्र, यशोभद्र, यशोवाहु और लोहार्य—ये चार आचार्य आचारांग के धारक तथा शेष अंगों और पूर्वों के एक देश के धारक हुए हैं।^२ इनके पश्चात् अर्थात् वीर-निर्वाण ६८३ के पश्चात् आचारांगधर का विच्छेद हो गया। फलतः आचारांग का विच्छेद हो गया। आचारांग का विच्छेद मान लेने पर भी इस तथ्य की स्वीकृति की गई है कि उत्तरवर्ती आचार्य सभी अंगों और पूर्वों के एक देश (अवशिष्ट-भाग) के धारक हुए हैं।^३

श्वेताम्बर-परम्परा में भी विष्णु सुनि के वेदावमान के साथ आचारांग का विच्छेद माना गया है।^४ तित्थोगाली में भी आगम-विच्छेद की चर्चा प्राप्त है। उसके अनुसार आचारांग का विच्छेद वीर-निर्वाण २३०० (ई० १७७३) में बताया गया है। इन परम्पराओं से इतना ही सारांश प्राप्त किया जा सकता है कि आचारांग निर्माण-काल में जितना था, उतना आज नहीं है तथा वह सर्वथा विच्छिन्न भी नहीं। उसका कुछ विच्छेद आचारांगधर आचार्यों के अभाव में हुआ है तथा कुछ विच्छेद विस्मृतिवश व प्रतियों के प्रामाणिक सत्करणों के नष्ट होने से भी हुआ है। इतना सुनिश्चित है कि शीलाक सूरि (अस्तित्व-काल ई० ८ वीं शती) को आचारांग का जो अंश प्राप्त था, उसका विच्छेद नहीं हुआ है। अतः तित्थोगाली का विवरण प्रामाणिक नहीं लगता।

१ समवायांग वृत्ति, पत्र १०१

यद् द्वौ श्रुतस्कन्धावित्यादि तदाचारस्य प्रमाण भणितं, यत् पुनरष्टादश पदसहस्राणि तन्नवब्रह्मचर्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाणम्।

२ धवला (षट्खण्डांगम) भाग १, पृ० ६६।

३ वही, भाग १, पृ० ६७:

तशे सञ्ज्ञेसि मग पुत्राण मेग-देमो आङ्किय-परपराए आगच्छमाणो धरमेणाङ्कियं सपत्तो।

४. अभिधान राजेन्द्र, भाग २, पृ० ३४६।

आचारांग का 'महापरिज्ञा' अध्ययन विच्छिन्न हो चुका है—यह श्वेताम्बर-आचार्यों का अभिमत है। उस अध्ययन का विच्छेद वज्रस्वामी (वि० पहली शताब्दी) के पश्चात् तथा शीलांक सूरि (वि० आठवीं शताब्दी) से पूर्व हुआ है। वज्रस्वामी ने महापरिज्ञा अध्ययन से गगनगामिनी-विद्या उद्धृत की थी।^१ इससे स्पष्ट है कि उनके समय में वह अध्ययन प्राप्त था। शीलांक सूरि ने उसके विच्छेद होने का उल्लेख किया है।^२ निर्युक्तिकार ने महापरिज्ञा अध्ययन के विषय का उल्लेख किया है^३ तथा उसकी निर्युक्ति भी की है।^४ इससे लगता है कि चर्चित अध्ययन उनके सामने था। चूर्णिकार के सामने भी महापरिज्ञा अध्ययन रहा है। उन्होंने वृत्तिकार शीलांक सूरि की तरह इसके विच्छेद होने का उल्लेख नहीं किया है। उन्होंने चर्चित अध्ययन के असमनुज्ञात होने का उल्लेख किया है।^५

यह अध्ययन असमानुज्ञात क्यों और कब हुआ, इसकी चूर्णिकार ने कोई चर्चा नहीं की है। एक अनुश्रुति यह है कि 'महापरिज्ञा' अध्ययन में अनेक मंत्र और विद्याओं का वर्णन था। काल-लब्धि के संदर्भ में उसे पढ़ाने का परिणाम अच्छा नहीं लगा। इसलिए तात्कालिक आचार्यों ने उसे असमनुज्ञात ठहरा दिया—उसका पढ़ना-पढ़ाना निषिद्ध कर दिया। किन्तु निर्युक्तिकार के संदर्भ में हम इस विषय पर विचार करते हैं तो उक्त अनुश्रुति का उससे समर्थन नहीं होता। निर्युक्तिकार के अनुसार आचार-चूला के सात अध्ययन (सप्तैकक) महापरिज्ञा के सात उद्देशको से

१ (क) आवश्यकनिर्युक्ति, गाथा ७६६, मलयगिरि वृत्ति, पत्र ३६० :

जेगुद्धरिया विज्ञा, आगासगमा महापरिज्ञाओ ।

वदामि अज्जवद्दरं, अपच्छिमो जो सुयधराण ॥

(ख) प्रभावक चरित, वज्रप्रबन्ध, श्लोक १४८ :

महापरिज्ञाध्ययनाद्, आचारागान्तरस्थितात् ।

श्री वज्रो णोद्धता विद्या, तदा गगनगामिनी ॥

२. आचारांग वृत्ति, पत्र २३५ :

अधुना सप्तमाध्ययनस्य महापरिज्ञाख्यस्यावसर, तच्च व्यवच्छिन्नमितिकृत्वाडित्तिलच्छुचाष्टमस्य सम्बन्धो वाच्यः ।

३. वही, निर्युक्ति, गाथा ३४ ।

४. वही, निर्युक्ति, गाथा २५२-२५८ :

देखिए—आचारांग वृत्ति, द्वितीय श्रुतस्कन्ध का अंतिम पत्र ।

५. वही, चूर्णि, पृ० २४४ :

महापरिज्ञा ण पडिज्जइ असमणुणया ।

निर्युद्ध किए गए है।^१ इस उल्लेख के आधार पर सहज ही अनुमान किया जा सकता है कि जो विषय महापरिज्ञा से उद्धृत सात अध्ययनों (सप्तैकको) में है, वही विषय महापरिज्ञा अध्ययन में रहा है। ऐसी संभावना भी की जा सकती है कि महापरिज्ञा से उद्धृत सात अध्ययनों के प्रचलन के बाद उसकी आवश्यकता न रही हो, फलतः वह असमनुज्ञात हो गया हो और क्रमशः विच्छिन्न हो गया हो। अभी तक हमें अनुश्रुति और अनुमान के अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन के विच्छेद का स्पष्ट प्रमाण प्राप्त नहीं है।

११-विषय-वस्तु

समवायांग और नन्दी में आचारांग का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उत्थितासन, निषण्णासन और शयितासन), गमन, चक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि में योग-नियुजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्गम-उत्थान, एषणा आदि की विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध-ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपवास आदि का प्रतिपादक है।^२

आचार्य समास्वाति ने आचारांग के प्रत्येक अध्ययन का विषय संक्षेप में प्रतिपादित किया है। वह क्रमशः इस प्रकार है^३—

- (१) षड्जीवकाय यतना
- (२) लौकिक संतान का गौरव-त्याग
- (३) शीत-ऊष्ण आदि परीषही पर विजय
- (४) अप्रकम्पनीय-सम्यक्त्व
- (५) संसार से उद्वेग
- (६) क्रमों को क्षीण करने का उपाय
- (७) वैयावृत्य का उद्योग
- (८) तपस्या की विधि
- (९) स्त्री-संग-त्याग
- (१०) विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण
- (११) स्त्री, पशु, क्लीब आदि से रहित शय्या

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा २९० .

सत्तिकगाणि सत्तवि, निज्जूढाई महापरिन्नाओ ।

२. (क) समवायांग, प्रकीर्णक ममवाय, सू० ८६ ।

(ख) नदी, सू० ८० ।

३. प्रशमरति प्रकरण, ११४-११७ ।

- (१२) गति-शुद्धि
- (१३) भाषा-शुद्धि
- (१४) वस्त्र की एपणा-पद्धति
- (१५) पात्र की एपणा-पद्धति
- (१६) अवग्रह-शुद्धि
- (१७) स्थान-शुद्धि
- (१८) निपट्या-शुद्धि
- (१९) व्युत्सर्ग-शुद्धि
- (२०) शब्दासक्ति-परित्याग
- (२१) रूपासक्ति-परित्याग
- (२२) परक्रिया-वर्जन
- (२३) अन्योन्यक्रिया-वर्जन
- (२४) पंच महाव्रतो की दृढ़ता
- (२५) सर्वसगो से विमुक्तता

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनो के विषय इस प्रकार बतलाए है—

- (१) सत्य परिष्णा— जीव संयम ।
- (२) लोग विजय— बंध और मुक्ति का प्रबोध ।
- (३) सीओसणिञ्ज— सुख-दुःख-तितिक्षा ।
- (४) सम्मत्त— सम्यक्-दृष्टिकोण ।
- (५) लोगसार— असार का परित्याग और लोक मे सारभूत रत्नत्रयी की आराधना ।
- (६) धुय— अनासक्ति ।
- (७) महापरिष्णा— मोह से उत्पन्न परीपहो और उपसगों का सम्यक् सहन ।
- (८) विमोक्ख— निर्याण (अंतक्रिया) की सम्यक्-आराधना ।
- (९) उवहाणमुय— भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन ।^१

१. आचाराग निर्युक्ति, गाथा ३३-३४ :

जिअसंजमो अ लोगो जह वज्झइ जह य तं पजहियव्वं ।
 सुहदुक्खतित्तिक्खाविय सम्मत्त लोगसारो य ॥
 तिस्संगया य छट्ठे मोहसमुत्था परीसदुवसग्गा ।
 निज्जाणं अट्टमए नवमे य जिणेण एवति ॥

आचार्य अकलङ्क के अनुसार आचारांग का समय विषय चर्या-विधान^१ तथा श्वराजित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है।^२

जैन-परम्परा में 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। आचारांग की व्याख्या के प्रसंग में आचार के पाँच प्रकार बतलाए गए हैं—(१) ज्ञानाचार, (२) दर्शनाचार, (३) चरित्राचार, (४) तपाचार और (५) वीर्याचार।^३ प्रस्तुत सूत्र में इन पाँचों आचारों का निरूपण है।

दार्शनिक-तथ्य

तत्त्व-दर्शन की दृष्टि से आचारांग एक महत्त्वपूर्ण आगम है। आचार्य मिद्धमेन ने जैन-दर्शन के मूलभूत छह सत्य गिनाए हैं—

- | | |
|--------------------|--------------------------------------|
| (१) आत्मा है। | (४) भोक्ता है। |
| (२) वह अविनाशी है। | (५) निर्वाण है। |
| (३) कर्ता है। | (६) निर्वाण के उपाय है। ^४ |

इनका आचारांग में पूर्ण विस्तार मिलता है। 'आत्मा है'—यह पहला सत्य है। आचारांग का प्रारम्भ इसी सत्य की व्याख्या से हुआ है।^५ इसी व्याख्या के साथ आत्मा के अविनाशित्व का उल्लेख हुआ है।^६ 'पुरुष तू ही तेरा मित्र है'^७, 'यह शल्य तू ने ही किया है'^८—ये वाक्य आत्मा के कर्तृत्व के उद्वेगक हैं। 'अनुसवेदन' का प्रयोग हुआ है।^९ यह क्रिया की प्रतिक्रिया (भोक्तृत्व) का सञ्चक

१ तत्त्वार्थ राजवातिक, १।२० :

आचारे चर्याविधानं शुद्धचष्टकपचसमितित्रिगुप्तिविकल्प कथ्यते।

२. मूलाराधना, आशवास २, श्लोक १३०, विजयोदया :

रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथमभगमाचारं शब्देनोच्यते।

३. समवायाग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८६

से समासओ पचविहे प० तं० णाणायारे दसणायारे चरित्तायारे तवायारे विरियायारे।

४. सम्मति प्रकरण, ३।५५

अत्थि अविणास-धम्मी, करेड वेएइ अत्थि निव्वारणं।

अत्थि य मोक्खोवाओ, छ सम्मत्तस्स ठाणाइं।

५. आचारांग, १।२।

६. वही, १।४।

७. वही, ३।६२

पुरिसा। तुममेव तुम मित्तं।

८. वही, २।८७

तुम चेव त सल्लमाहदट्टु।

९. वही, ५।१०३।

है। आचारांग में निर्वाण को 'अनन्य-परम' कहा गया है। वहाँ सब उपाधियों समाप्त हो जाती हैं, इसलिए उससे अन्य कोई परम नहीं है। निर्वाण के उपायभूत सम्यग्-दर्शन, सम्यग्-ज्ञान और सम्यग्-चारित्र्य का स्थान-स्थान पर प्रतिपादन हुआ है। इन दृष्टियों से आचारांग को जैन-दर्शन का आधारभूत ग्रन्थ कहा जा सकता है।

श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि

आचारांग श्रद्धा का समुद्र है। 'सिद्धी आणाए मेहावी'^१, 'आणाए मामगं धम्म'^२ आदि वाक्यों में अपने आराध्य के प्रति आत्मार्पण की भावना प्रस्फुटित होती है। आचारांग की श्रद्धा में स्वतंत्र-दृष्टिकोण का स्थान असुरक्षित नहीं है। सत्य की उपलब्धि के तीन साधन बतलाए गए हैं—

- १—सहसम्मति,
- २—परव्याकरण और
- ३—श्रुतानुश्रुत^३।

इन तीन साधनों में पहला साधन है—अपनी बुद्धि के द्वारा सत्य का अवबोध करना। 'मइमं पास'^४—इस शब्द का प्रयोग भी दृष्टि की स्वतंत्रता को अवकाश देता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ किया है 'न केवलं अहमेव कथयामि त्वमेव पश्य'—केवल मैं ही नहीं करता हूँ, तू स्वयं भी देख। इस प्रकार आचारांग में श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का सुन्दर संगम हुआ है। केवल श्रद्धा और केवल स्वतंत्र-दृष्टि—ये दोनों अतिर्यो हैं। इनसे अच्छे परिणाम की उपलब्धि नहीं हो सकती। श्रद्धा और स्वतंत्र-दृष्टि का समन्वय ही सत्य-संधान का समुचित मार्ग है।

कषोपल

आचारांग सबसे प्राचीन सूत्र है, इसलिए यह उत्तरवर्ती सूत्रों के लिए 'कषोपल' के समान है। इसमें वर्णित आचार मूलभूत हैं। वे भगवान् महावीर के मौलिक आचार के सर्वाधिक निकट हैं। उत्तरवर्ती सूत्रों में वर्णित आचार उसका परिवर्धन या विकास है। आचारांग-चूला में भी आचार का परिवर्धन या विकास हुआ है। जो तथ्य मूल आचारांग में नहीं हैं, वे आचार-चूला में प्राप्त होते हैं, तब सहज ही प्रश्न खड़ा

१. आचारांग, ३।८०।

२. वही, ६।४८।

३. वही, १।३ :

सह-सम्मइयाए, पर-वागारणेण, अण्णेसि वा अंतिए सोच्चा।

४. वही, ३।१२।

होता है कि उनका आधार क्या है ? दो शताब्दी से-पूर्ववर्ती साहित्य में जो तथ्य नहीं हैं, वे दो शताब्दी बाद लिखे गए साहित्य में कहाँ से आए ? इसका समाधान देने के लिए हमारे पाम पर्याप्त साधन सामग्री नहीं है, फिर भी इस विषय में इतना कहा जा सकता है कि सामयिक परिस्थितियों को ध्यान में रख कर वर्तमान आचार्यों ने उत्सर्ग और अपवाद के मिद्धान्त की स्थापना और उसके आधार पर विधि-विधानों का निर्माण किया था। आचार-चूला उसी शृङ्खला की प्रथम कड़ी है। जैन-आचार की समीक्षा करते समय इस तथ्य की विस्मृति नहीं होनी चाहिए कि आचारांग में वर्णित आचार मौलिक है और महावीर-कालीन है तथा जो आचार आचारांग में वर्णित नहीं है, वह उत्तरवर्ती है तथा उसको प्रारम्भ-तिथि अन्वेषणीय है।

समसामयिक विचार

आचारांग में वैदिक, औपनिषदिक और बौद्ध विचारधाराओं के संदर्भ में अनेक तथ्यों का प्रतिपादन हुआ है। वैदिक-साधना को हम अरण्य-साधना कह सकते हैं। वैदिक-धारणा के अनुसार धर्म की साधना के लिए मनुष्य को अरण्य में रहना आवश्यक है। वैदिक ऋषि तत्त्वचिन्ता के लिए भी अरण्य में रहते थे। अरण्यक-साहित्य उसी अरण्यवास की निष्पत्ति है। भगवान् महावीर ने अरण्यव्रत की अनिवार्यता मान्य नहीं की। उन्होंने कहा—“साधना गाँव में भी हो सकती है और अरण्य में भी हो सकती है।”^१

“धर्म का उपदेश जैसे बड़े लोगों को दिया जा सकता है, वैसे ही छोटे लोगों को दिया जा सकता है।”^२ उच्च-वर्ग को ही धर्म सुनने का अधिकार है, शूद्र को धर्म सुनने का अधिकार नहीं है, इस सिद्धान्त के प्रतिवाद में ही भगवान् महावीर ने उक्त विचार का प्रतिपादन किया था।

“न कोई व्यक्ति हीन है और न कोई व्यक्ति उच्च है”^३—इस विचार का प्रतिपादन जातिवाद के विरुद्ध किया गया था।

इस प्रकार उपनिषद्, गीता और बौद्ध-साहित्य के संदर्भ में आचारांग का तुलनात्मक अध्ययन करने पर विचारधारा के अनेक मौलिक तत्व हमें प्राप्त हो सकते हैं।

१. आचारांग, ८।१४

गामे वा अट्टवा रण्णे, 'धम्ममायाण्ह—पवेदित्ता माट्ठेण मडिमया।

२. वही, २।१७४

जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ।

जहा तुच्छरम कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ।

३. वही, २।४६

णो हीणे, णो अइरित्ते।

१२-रचनाकार और रचना-काल

परम्परा से यह जाना जाता है कि आचारांग की रचना गणधर मुवर्मा स्वामी ने की और तीर्थ-प्रवर्तन के समय में ही की। ऐतिहासिक तथा भाषाशास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर भी ऐसा प्रतीत होता है कि आचारांग उपलब्ध आगमी में सबसे प्राचीन है। इसकी रचना-शैली अन्य आगमी से भिन्न है। डॉ० हर्मन जेकोवी ने इसकी तुलना ब्राह्मण सूत्रों की शैली से की है। उनके अनुसार ब्राह्मण सूत्रों के वाक्य परस्पर सम्बन्धित हैं, किन्तु आचारांग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं। उन्होंने लिखा है—“आचारांग के वाक्य उस समय के प्रसिद्ध धार्मिक-ग्रन्थों से उद्धृत किए गए हैं, ऐसा लगता है। मेरा यह अनुमान गद्य के मध्य आने वाले पद्यों या पदों के संदर्भ में पूर्ण सत्य है। क्योंकि उन पद्यों या पदों की सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन तथा दशवैकालिक के पदों से तुलना होती है।”^१

डॉ० जेकोवी का अभिमत निराधार नहीं है। द्वादशांगी पृषों से निर्युद्ध है तथा दशवैकालिक का निर्युद्ध भी पृषों से किया गया है। इसलिए बहुत संभव है कि इन मन्त्रों के समान पदों का निर्युद्ध-स्थल एक है।

आचारांग के वाक्य परस्पर सम्बन्धित नहीं हैं, इस अभिमत में आंशिक सच्चाई भी है और वह इसलिए है कि वर्तमान में आचारांग का खण्डित रूप प्राप्त है। अखण्ड रूप में जो सम्बन्ध-शृङ्खला प्राप्त हो सकती है, वह खण्डित रूप में नहीं हो सकती।

इसका तीसरा कारण व्याख्या-पद्धति का भेद भी है। आगम-साहित्य के व्याख्यान की दो पद्धतियाँ हैं—

(१) छिन्नच्छेदनयिक और

(२) अछिन्नच्छेदनयिक।

प्रथम पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक अपने आपमें परिपूर्ण होता है। पूर्व या अग्रिम वाक्य तथा श्लोक से उसकी सम्बन्ध-योजना नहीं की जाती।

१ *The Sacred Books of the East, Vol. XXII, Introduction, Page 48:* They do not read like a logical discussion, but like a Sermon made up by quotations from some then well-known sacred books. In fact the fragments of verses and whole verses which are liberally interspersed in the prose texts go far to prove the correctness of my conjecture; for many of these 'dissecta membra' are very similar to verses or Pādas of verses occurring in the Sūtrakṛtāṅga, Uttarādhyaṅga and Dasavaikāhika Sūtras.

द्वितीय पद्धति के अनुसार प्रत्येक वाक्य तथा श्लोक की पूर्व या अग्रिम वाक्य तथा श्लोक के साथ सम्बन्ध-योजना की जाती है ।

आचाराग की व्याख्या छिन्नच्छेदनयिक-पद्धति से करने पर वाक्यों की विसम्बद्धता प्रतीत होती है । यदि अच्छिन्नच्छेदनयिक-पद्धति से उसकी व्याख्या की जाए तो उसमें सर्वत्र विसम्बद्धता प्रतीत नहीं होगी ।

आचार-चूला की रचना-शैली आचाराग से सर्वथा भिन्न है । उसकी रचना भी आचाराग के उत्तर-काल में हुई है । निर्युक्तिकार ने आचार-चूला को स्थविर-वर्तुक माना है ।^१ चूर्णिकार ने स्थविर का अर्थ 'गणधर'^२ और वृत्तिकार ने 'चतुर्दश पूर्ववित्'^३ किया है । इन सब में स्थविर का नाम उल्लिखित नहीं है । अन्यत्र उपलब्ध माह्यो के आधार पर यहाँ 'स्थविर' शब्द चतुर्दशपूर्वी भद्रवाहु के लिए प्रयुक्त हुआ जान पड़ता है । इसकी चर्चा 'दशवैकालिक : एक ममीक्षात्मक अध्ययन' (पृष्ठ ५३-५७) में की जा चुकी है ।

आचाराग का गूढ़ अर्थ आचाराग (आचार-चूला) में स्पष्ट हो जाए, इस दृष्टि में भद्रवाहु स्वामी ने आचाराग का अर्थ 'आचाराग में प्रविभक्त' किया । निर्युक्तिकार ने पाँचो चूलाओं के निर्यहण-स्थलों का निर्देश किया है ।^४

- १ आचाराग निर्युक्ति, गाथा २८७
थेरेहिज्जुगहट्ठा, सीसहिअ होउ पागड्ढत्थं च ।
आयाराओ अत्थो. आयारगेमु पविभत्तो ॥
- २ आचाराग चूर्ण, पृ० ३२६
येरा गणधरा ।
- ३ आच'राग वृत्ति, पत्र २६०
'स्थविरै' धृतवृद्धैश्चतुर्दशपूर्वविद्भि ।
- ४ आचाराग निर्युक्ति, गाथा २८८-२९१
विद्दअस्म य पंचमए अट्टमगस्म विडवमि उडेमे ।
भणिओ पिडो मिज्जा, वत्थ पाउग्गहो चेव ॥
पंचमगस्म चउत्थे डरिया, वणिणज्जई समासेण ।
उट्टुस्म य पंचमए, भासज्जाव विद्याणाहि ॥
नत्तिक्काणि सत्तवि, निज्जूट्ठाड महापरिन्नाओ ।
सन्धपरिन्ना भावण, निज्जूट्ठाओ धुयविमुत्तो ॥
आयारपक्कपो पुण, पच्चक्खाणस्म तइयवत्थुओ ।
आयारनामधिज्जा, वीमडमा पाहुडच्छेया ॥

निर्यूहण-स्थल : आचारांग

निर्यूह-अध्ययन : अचार-चूला

अध्ययन	उद्देशक
२	५
८	२
५	४
६	५
७	१-७
१	
६	२-४

अध्ययन
१, २, ५, ६, ७
१, २, ५, ६, ७
३
४
८-१४
१५
१६

प्रत्याख्यान पूर्व के तृतीय वस्तु का
आचार नामक वीसवाँ प्राश्रुत

आचार-प्रकल्प—निशीथ

नियुक्तिकार ने केवल निर्यूहण-स्थल के अध्ययनों और उद्देशको का निर्देश किया है। चूर्णिकार और वृत्तिकार ने कहीं-कहीं उनके सूत्रों का भी निर्देश किया है।

चूर्णिकार के अनुसार आचार-चूला के १, २, ५, ६ और ७ अध्ययनों के निर्यूहण-सूत्र ये हैं—

१—जमिणं विरुवरुवेहिं सत्येहि लोगस्स कम्मसमारंभा कज्जंति तजहा—अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं.....

(अध्ययन २, उ० ५, सू० १०४, पृ० ३३)।

सव्वामगंधं वा परिणाय

(अ० २, उ० ५, सू० १०८, पृ० ३३)।

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुच्छणं उग्गहं च कडासणं

(अ० २, उ० ५, सू० ११२, पृ० ३३)।

त भिक्खुं उवसं कमित्तु गाहावई वूया—आवसंतो ! समणा अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा (४) वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुच्छणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइ समाग्गं समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं आच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेतमि आवसहं वा समुस्सिणोमि

(अ० ८, उ० २, सू० २१, पृ० ८०-८१)।

वृत्तिकार के अनुसार—

सव्वामगंधं परिणाय णिरामगंधो परिव्वए अदिस्समाणे कय-विक्कएसु

(अ० २, उ० ५, सू० १०८, पृ० ३३)।

भिक्षु परक्कमेज्जा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्ठेज्ज वा सुमाणंति वा..... (यावद् वहिया विहरिज्जा) १ तं भिक्षु उवसंक्रमित्तु गाहावती ब्रूया—
आउसंती समणा ! अहं खन्तु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुल्लणं वा पाणाइं भयाइं जीवाइं मत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्चं—

(अ०८, उ०२, सू०२१, पृ०८०-८१) ।

वत्थं पडिग्गहं कंवलं पायपुल्लणं उग्गहं च कडामणं

(अ०२७०५, सू०११२, पृ०३३) ।

चूर्णि के अनुसार आयार-चूला के तीसरे अध्ययन के निर्यूहण-सूत्र ये हैं—

२—गामाणुगामं दूइज्ज माणस्स—

(अ०५, उ० ४, सू०६२, पृ०५६) ।

तद्दिट्ठीए.....

(अ०५, उ०४, सू०६८, पृ०६०) ।

...पलीवाहरे पासिय पाणे गच्छेज्जा—

(अ०५, उ०४, सू०६९, पृ०६०) ।

से अभिक्कममाणे.....

(अ०५, उ०४, सू०७०, पृ०६०) ।

वृत्तिकार के अनुसार—

गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परक्कत्तं—

(अ०५, उ०४, सू०६२, पृ०५६) ।

चूर्णि के अनुसार आयार-चूला के चौथे अध्ययन के निर्यूहण-सूत्र यह हैं—

३—पार्हणं पडीणं दाहिणं उदीणं आइक्खे विभए किट्ठे—

(अ०६, उ०५, सू०१०१, पृ०७५) ।

वृत्ति के अनुसार—

‘आइक्खे विभए किट्ठे वेयवी’^२—

(अ०६, उ०५, सू०१०१, पृ०७५) ।

निर्युक्ति, चूर्णि और वृत्ति में प्राप्त निर्देशों के अध्ययन से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आचार-चूला आचारांग से उद्धृत नहीं है, किन्तु आचारांग के संक्षिप्त

१. यह वृत्तिगत पाठ है तथा अग्रिम पंक्तियों में भी वृत्तिगत पाठ कुछ भिन्न है ।

२. वृत्ति में पाठ इस प्रकार है—आइक्खे विट्ठे विट्ठे धम्मकामो ।

पाठ का विस्तार है। निर्युक्तिकार ने इस ओर संकेत भी किया है।^१ आचाराय (आचार-चूला) में जो 'अग्र' शब्द है, वह यहाँ 'उपकाराय' के अर्थ में प्रकृत है। चूर्णिकार ने उपकाराय का अर्थ किया है 'पूर्वोक्त का विस्तार और अनुक्त का प्रतिपादन करने वाला'। 'आचाराय' आचारांग में प्रतिपादित अर्थ का विस्तार और अप्रतिपादित अर्थ का प्रतिपादन करता है, इसीलिए उसे आचार का अग्र-स्थान दिया गया।^२

आचार-चूला में उक्त का प्रतिपादन और अनुक्त का विस्तार—ये दोनों मिलते हैं। इसके प्रथम सात अध्ययनों में उक्त का विशदीकरण है। पन्द्रहवें अध्ययन में भगवान् महावीर का जीवन-वृत्त है, वह अनुक्त का प्रतिपादन है। प्रस्तुत अध्ययन आचार के प्रथम अध्ययन (शस्त्र-परिज्ञा) से निर्युद्ध है। उसमें महावीर का जीवन-वृत्त नहीं है। महाव्रतो की भावना प्रथम अध्ययन की पुरक है।

निर्यूहण के विषय में यह अनुमान भी किया जा सकता है कि आचारांग में पिण्ड, शय्या आदि से सम्बन्धित सूत्रों का अर्थांगम विस्तृत था। भद्रबाहु स्वामी ने उस अर्थांगम को सूत्रांगम का रूप देकर उसको चूला के रूप में स्थापित कर दिया। आचारकल्प (निशीथ) आचार से निर्युद्ध नहीं है, किन्तु पूर्वगत आचार-वस्तु से निर्युद्ध है। दोनों में नाम साम्य है, इसीलिए आचाराय को आचार से निर्युद्ध कहा गया है। प्रथम दो चूलाओं में सात-सात अध्ययन रखे गए, तीसरी और चौथी चूला में एक-एक अध्ययन रखा गया। इस व्यवस्था के पीछे क्या रहस्य है, सहज ही यह जिज्ञासा उभरती है? आचारकल्प के बीस उद्देशक हैं और उसे एक (पाँचवीं) चूला माना गया, यह उपयुक्त है। क्योंकि वे सब एक विषय से सम्बन्धित हैं। दूसरी चूला के सात अध्ययन भी आचार के एक अध्ययन से निर्युद्ध हैं तथा पन्द्रहवों और सोलहवों भी एक-एक अध्ययन से निर्युद्ध हैं, इसलिए इन्हें एक-एक चूला मानना उचित है। प्रथम सात अध्ययनों में पाँच अध्ययनों का निर्यूहण-स्थल समान है। पाँचवें और छठे का निर्यूहण-स्थल भिन्न-भिन्न है। फिर भी उन्हें एक चूला में रखा गया, उसका कारण विषय-साम्य प्रतीत होता है। प्रथम चूला के सातों अध्ययन ईर्या, भापा और एषणा नमिनि से सम्बन्धित हैं, इसीलिए उन्हें एक प्रकरण में वर्गीकृत किया गया।

१. आच राग निर्युक्ति, गाथा २८६

उवयारेण उ पगथ, आयास्सेव उवरिमाइ तु।

रुक्खस्स म पव्वयस्स थ, जह अग्गाइ तहेयाइ ॥

२. आचाराय चूर्णि, पृ० २८६.

उपकारायं तु यत् पूर्वोक्तस्य विस्तरतोऽनुक्तस्य च प्रतिपादनदुपकारेकर्तते तद् यथा दशवैकालिकस्य चूडे, अयमेव वा श्रुतस्कन्ध आचारस्येत्यतोऽपकाराणाधिकारः।

पाँचों चूनाएँ एक ही व्यक्ति द्वारा कृत है या भिन्न-भिन्न व्यक्तियों द्वारा, यह प्रश्न भी उपास्थित होता है। नियुक्तिकार ने 'स्थविर' शब्द का प्रयोग बहुवचन में किया है।^१ उसके आधार पर आचार-चूला के अनेक-कर्तृत्व होने की कल्पना की जा सकती है। यदि स्थविर शब्द का बहुवचन सम्मान-सूत्रक हो, तो अनेक-कर्तृत्व की कल्पना आधारहीन हो जाती है। स्थविर शब्द का बहुवचन में प्रयोग अनेक व्यक्तियों के लिए है अथवा सम्मान-सूत्रन के लिए इसका निर्णय करना बड़ा कठिन है। आचारांग के विशेष उपयोगी स्थलों का विस्तार किसी एक ही व्यक्ति ने विशेष प्रयोजन की पूर्ति के लिए किया, ऐसा प्रतीत होता है।

आचारांग में पिण्डैषणा आदि के नियम विखरे हुए थे तथा अर्थांगम के द्वारा प्रतिपादित थे। उनका सूत्रागम के रूप में एकत्र संकलन करने की कल्पना आचार्य के मन में हुई और उन्होंने वैसा किया। आचार-चूला एक विषय के विखरे हुए अर्थों का संकलन है, इसकी सूचना चूर्णिकार ने भी दी है।^२ आचार-चूला में जिन विषयों का निषेध किया गया है, उन्हीं की प्रायश्चित्त-विधि निशीथ में निर्दिष्ट है। आचार सम्बन्धी नियमों का संकलन और उनके अतिक्रमण का प्रायश्चित्त—इन दोनों को व्यवस्थित रूप देने की कल्पना किसी एक ही मास्तपक की है और वह छेदसूत्र के कर्त्ता चतुर्दशपूर्वों भद्रबाहु की ही होनी चाहिए।

श्वेताम्बर-साहित्य में निशीथ को 'कालिक सूत्र' माना है। वह अंग-प्रविष्ट की कोटि में आता है।^३ चार चूलाओं को आचारांग के द्वितीय श्रुतस्कंध के रूप में मान्यता दी गई है।^४ वे अंग-प्रविष्ट की कोटि में मान्य हैं।

दिगम्बर-साहित्य में निशीथ की गणना आरातीय आचार्य कृत चौदह अंग-वाह्य सूत्रों में की है।^५ समवायांग तथा नदी में आचारांग के पच्चीस अध्ययन वतलाए गए हैं।^६ यह संख्या आचारांग के नौ अध्ययनों के साथ चार आचार-चूलाओं के सोलह अध्ययनों का योग करने से निम्न हो जाती है।

१. आचारांग निर्धुक्ति, गाथा २८३।

२. आचारांग चूर्णि, पृ० ३२६

पिंडीकृतो पृथक्-पृथक्, पिंडस्म पिंडेसणामु कतो, सेज्जत्थे सेज्जामु, एवं सेसाणवि ।

३. नदी-सूत्र ७७।

४. वही, सूत्र ८०।

५. गोम्मटसार, ३६६-३६७।

६. (क) समवायांग, समवाय २५, सूत्र ५।

आचारस्स ण भगवओ नवुलियायस्स पणवील अज्झयणा पण्णात्ता ।

(ख) नदी, सूत्र ८० :

पणवीलं अज्झयणा ।

उक्त साह्यो के आंधोर पर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि निशीथ की रचना एक स्वतंत्र ग्रन्थ के रूप में की गई तथा नंदी सूत्र की रचना (आगम संकलनो-काल) तक उसका स्थान स्वतंत्र रहा फिर उसे आचारांग की एक चूला के रूप में मान्य किया गया। यह मान्यता नियुक्ति की रचना से पूर्व स्थिर हो चुकी थी। इसीलिए नियुक्तिकार ने पद-परिमाण की दृष्टि से आचारांग को बहु और बहुतर माना है।^१ शीलांक सूत्र के अनुसार चार चूलाओं का योग करने पर आचारांग का पद-परिमाण 'बहु' होता है और निशीथ नामक पाँचवी चूला का योग करने पर उसका पद-परिमाण 'बहुतर' हो जाता है।^२ वर्तमान में निशीथ का समावेश छेद-सूत्रों के वर्ग में किया जाता है, यह भी नंदी की रचना के उत्तरकाल में हुआ है। उपयोगिता की दृष्टि से भले उसे स्वतंत्र ग्रन्थ माना जाए या छेद-सूत्रों के वर्ग में समाविष्ट किया जाए, किन्तु उसकी रचना के पीछे जो परिकल्पना है, वह शेष चार चूलाओं की परिकल्पना से भिन्न नहीं है। अतः पाँचों चूलाओं को अनेक-कर्तृक मानने की अपेक्षा एक कर्तृक मानने में अधिक संगति है।

समवायांग सूत्र में चूलिका वर्जित आचारांग, सूत्रकृतांग और स्थानांग के सत्तावन अध्ययन बतलाए गए हैं। इनमें सूत्रकृतांग के तेईस अध्ययन और स्थानांग के दस अध्ययन (स्थान) हैं। आचारांग के ६ अध्ययन, आचार-चूला के १५ अध्ययन (चौथी चूला—१६वें अध्ययन को छोड़ कर शेष तीन चूलाओं के पन्द्रह अध्ययन) इस प्रकार सत्तावन अध्ययन होते हैं।^३

वृत्तिकार अभयदेव सूत्र^४ ने विमुक्ति (चौथी चूला) का वर्जन किस आधार पर किया, यह ज्ञात नहीं है और सूत्रकार ने केवल सत्तावन की संख्या पूरी करने के लिए विमुक्ति अध्ययन का वर्जन किया या इसके पीछे कोई दूसरा दृष्टिकोण था, इसका निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता।

१. आचारांग नियुक्ति, गाथा ११ :

हवइ य सपचचूलो बहुबहुतरओ पयगणे ।

२. आचारांग वृत्ति, पत्र ६ :

तत्र चतुश्चूलिकार्थमकद्वितीयश्रुतस्कन्धप्रक्षेपाद्बहुः, निशीथाख्यपञ्चमचूलिकाप्रक्षेपाद्-
बहुतरः ।

३. समवायांग, समवाय ५७, सूत्र १ -

तिण्ह गणिपिडगाणं आयारचुलियावज्जाण मत्तावन् अञ्जयणा पण्णत्ता, तज्हा—
आयारे, सूयगडे, ठाणे ।

४. वहीं, वृत्ति, पत्र ६६ :

आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमाङ्गस्य चूलिका—सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभि-
धानमाचारचूलिका तद् वर्जानाम् ।

आचारांग से सीधा सम्बन्ध प्रथम तीन चूलिकाओं (१५ अध्ययनो) का है। प्रथम दो चूलिकाओं का सम्बन्ध आचार से है तथा तीसरी चूलिका (पन्द्रहवें अध्ययन) का सम्बन्ध नौवें अध्ययन में वर्णित महावीर की साधना से है। 'विमुक्ति' का आचारांग से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसी तथ्य की सूचना इस गणना में दी है—ऐसी कल्पना की जा सकती है।

आवश्यक चूर्ण में एक नई चर्चा प्राप्त होती है। उसके अनुसार स्थूलिभद्र की वहन यक्षा महाविदेह क्षेत्र में गई थी। जब वह वापस आ रही थी, तब सीमंधर भगवान् ने उसे दो अध्ययन दिए—(१) भावना और (२) विमुक्ति।^१

आचार्य हेमचन्द्र ने परिशिष्ट पर्व में इस घटना में दो अध्ययनों का सम्बन्धन किया है। उनके अनुसार साध्वी यक्षा ने भगवान् सीमंधर से चार अध्ययन प्राप्त किए थे—(१) भावना, (२) विमुक्ति, (३) रतिवाक्या (रतिकल्प) और (४) विविक्त-चर्चा। संघ ने प्रथम दो अध्ययन आचारांग की तीसरी और चौथी चूलिकाओं के रूप में और अंतिम दो अध्ययन दशवैकालिक की चूलिकाओं के रूप में स्थापित किये।^२

आचारांग निर्युक्ति और दशवैकालिक निर्युक्ति में उक्त घटना का उल्लेख नहीं है। आवश्यक चूर्ण में इस घटना का समावेश कैसे हुआ और आचार्य हेमचन्द्र ने उसमें सम्बन्धन कैसे किया, इसका प्रामाण्य प्राप्त किए बिना इस बारे में कुछ कहना कठिन है। आचारांग निर्युक्ति के आधार पर इतना ही कहा जा सकता है कि ये चूलिकाएँ स्थविर कृत हैं।

१३-आचारांग का महत्त्व

आचारांग आचार का प्रतिपादक सूत्र है, इसलिए यह सत्र अंगो का सार माना गया है। निर्युक्तिकार ने निर्युक्ति गाथा १६ में स्वयं जिज्ञासा की—'अंगार्णं किं सारो?' अंगो का सार क्या है? इसके उत्तर की भाषा में उन्होंने लिखा है—'आयारो' अर्थात् अंगो का सार आचार है।

आचारांग में मोक्ष का उपाय बताया गया है, इसलिए यह समूचे प्रवचन का सार है।^३

१. आवश्यक चूर्ण. पृ० १८८ :

सिरिओ पव्वइतो अठभत्तट्ठेणं कालगतो महाविदेहे य पुच्छिका गता अज्जा दो वि अञ्जयणाणि भावणा विमोत्ती य आणित्ताणि ।

२. परिशिष्ट पर्व, १।१।८३-१०० ।

३. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ६ ।

आचारांग के अध्ययन से श्रमण-धर्म ज्ञात होता है, इसलिए आचारधर पहला गणिस्थान (आचार्य होने का प्रथम कारण) कहलाता है ।^१

आचारांग मुनि-जीवन का आधारभूत आगम है, इसलिए इसका अध्ययन सर्व प्रथम किया जाता था । नौ ब्रह्मचर्य अध्ययनों का वाचन किए बिना उत्तम या ऊपर के आगमों का वाचन करने पर चातुर्मासिक प्रायश्चित्त का विधान किया गया है ।^२

आचारांग पढ़ने के बाद ही धर्मानुयोग, गणितानुयोग और द्रव्यानुयोग पढ़े जाते थे ।^३ नव दीक्षित मुनि की उपस्थापना आचारांग के शस्त्र-परिज्ञा अध्ययन द्वारा की जाती थी । वह पिण्डकल्पी (भिक्षा लाने योग्य) भी आचारांग के अध्ययन से होता था ।^४ आचारांग का अध्ययन किए बिना सूत्रकृत आदि अङ्गों का अध्ययन विहित नहीं था ।^५ उक्त उद्धरणों से आचारांग का महत्त्व-ख्यापन होना है और साथ-साथ उसके प्रतिपाद्य विषय-आचार का भी महत्त्व-ख्यापन होता है ।

१४-रचना-शैली

सूत्रकृतांग चूर्णि में सूत्र-रचना की चार शैलियों का निर्देश मिलता है—(१) गद्य, (२) पद्य, (३) कथ्य और (४) गेय ।^६

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा १० :

आयारम्मि अहोए, ज नाओ होइ समणधम्मो उ ।

तम्हा आयारधरो, भण्णइ पढम गणिट्ठाणं ॥

२. निशोथ, १११ :

जे भिक्खु णव बंभचेराई अवाएत्ता उत्तम सुय वाएइ, वाएंत वा सातिज्जति ।

३. निशोथ चूर्णि (निशोथ सूत्र, चतुर्थ विभाग), पृ० २५३ :

अहवा—ब्रह्मचेरादी आयार अवाएत्ता घम्माणुओ^७ इतिभासियादि वाएति, अहवा—

सूरपण्णत्तियाइगणियाणुओगं वाएति, अहवा—दिट्ठिवातं दवियाणुओगं वाएति,

अहवा—जदा चरणणुओगो वातित्तो तदा घम्माणुओगं अवाएत्ता गणियाणुओग

वाएति, एव उक्कमो चारणियाए सव्वो वि भासियव्वो ।

४. व्यवहारभाष्य, ३।१७४-१७५ ।

५. निशोथ चूर्णि (निशोथ सूत्र, चतुर्थ विभाग), पृ० २५२ :

अंगं जहा आयारो तं अवाएत्ता सुयगडगं वाएति ।

६. सूत्रकृतांग चूर्णि, पृ० ७ :

तं चउत्तविध, तजहा—गद्यं पद्यं कथ्यं गेयं । गद्यं—चूर्णिग्रन्थः ब्रह्मचर्यादि, पद्यं

गाथासोलसगादि, कथनीयं कथ्यं जहा उत्तरज्जयणाणि इतिभासिताणि णायानि

य, गेयं णाम सरसंचारेण जघा काविलिज्जे 'अग्र वे असासवमि संसारमि

दुक्खपउराए ।'

- (१) गद्य— चूर्ण ग्रन्थ, जैसे—ब्रह्मचर्य अध्ययन ।
 (२) पद्य— जैसे—गाथाघोडशक (सूत्रकृतांग के प्रथम श्रुतस्कंध का १६वाँ अध्ययन)
 (३) कथ्य— कथनीय, जैसे—उत्तराध्ययन, ऋषिभाषित, ज्ञाता ।
 (४) गेय— स्वरयुक्त, जैसे—कापिलीय (उत्तराध्ययन का ८वाँ अध्ययन) ।

दशवैकालिक निर्युक्ति में ग्रथित और प्रकीर्णक—इन दो शैलियों की चर्चा मिलती है ।^१ ग्रथित शैली का अर्थ है 'रचनाशैली' और प्रकीर्णक का अर्थ है 'कथा-शैली' ।^२ ग्रथित शैली के चार प्रकार बतलाए गए हैं—(१) गद्य, (२) पद्य, (३) गेय और (४) चोर्ण ।^३

दशवैकालिक निर्युक्ति में जो प्रकीर्णक है, वही सूत्रकृतांग चूर्ण में कथ्य है । सूत्रकृतांग चूर्ण में ब्रह्मचर्याध्ययन (प्रथम आचारांग) की गद्य की कोटि में रखा है और उसे चूर्ण ग्रन्थ माना है । किन्तु दशवैकालिक चूर्ण में ब्रह्मचर्याध्ययन को चोर्ण पद माना है ।^४ हरिभद्र का भी यही अभिमत है ।^५ आचारांग की रचना गद्य-शैली की नहीं है, इसलिए दशवैकालिक चूर्ण का अभिमत संगत लगता है ।

निर्युक्तिकार ने चोर्ण-पद की व्याख्या इस प्रकार की है—“जो अर्थ-बहुल, महार्थ ह्य, निपात और उपसर्ग से गंभीर, बहुपाद, अव्यवच्छिन्न (विराम रहित), गम और नय से विशुद्ध होता है, वह चोर्णपद है ।”^६ चोर्ण की परिभाषा में आया हुआ 'बहुपाद'

१. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १६६ :
नोमाउगपि दुविह, गहियं च पद्दन्नयं च बोद्धव्वं ।
गहिय चउप्पयार, पद्दन्नग होइ णेगविहं ॥
२. दशवैकालिक हारिभद्रीय वृत्ति, पत्र ८७ :
ग्रथित रचित ब्रह्ममित्यनर्थान्तरम्, अतोऽन्यत्प्रकीर्णकं—प्रकीर्णककथोपयोगिज्ञान-
पदमित्यर्थः ।^३
३. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७० :
गउज पज्ज गेयं, चुण्ण च चउव्विह तु गहियपय ।
तिसमुट्ठाण सव्वं, इइ वेति सलक्खणा कइणो ॥
४. दशवैकालिक चूर्ण, पृ० ७८ :
इदाणि चुण्णपद भण्णइ, जहा वमचेराणि ।
५. दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र ८८ :
चोर्ण पदं ब्रह्म वर्याव्ययनपदवत् ।
६. दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा १७४ :
अत्यबहुलं महत्त्वं, हेउनिवाओवसगगंभीरं ।
बहुपायमवोच्छिन्नं, गमणयसुद्धं च चण्णपयं ॥

शब्द यहाँ बहुत महत्त्वपूर्ण है। जिस रचना में कोई पाद नहीं होता, वह गद्य और जिसमें गद्य भाग के साथ-साथ बहुतपाद (चरण) होते हैं, वह चौरण है। संक्षेप में गद्य को 'अपाद' और चौरण को 'बहुपाद' कहा जा सकता है। आचारांग में सैकड़ों पाद हैं, इसलिए वह चौरणशैली की रचना है।

यह आश्चर्य की बात है कि समवायांग^१ तथा नन्दी^२ में आचारांग के संख्येय वेष्टको और संख्येय श्लोको का उल्लेख है तथा चूर्ण और वृत्ति साहित्य में इसे चौरणपद की कोटि में रखा गया है, फिर भी इसके प्रकीर्ण पादों की ओर जैन विद्वानों ने ध्यान नहीं दिया। आचारांग में गद्य भाग के साथ-साथ विपुल मात्रा में पद्य भाग है—इस रहस्य के उद्घाटन का श्रेय डॉ० शुब्रिग को है। उन्होंने स्व-संपादित आचारांग में पद्य भाग का पृथक् अंकन किया है।

आचारांग के ८ वें अध्ययन के ७ वें उद्देशक तक की रचना चौरणशैली में है और ८ वें उद्देशक तथा ९ वें अध्ययन पद्यात्मक है। आचार-चूला के १५ अध्ययन मुख्यतया गद्यात्मक हैं, कहीं-कहीं पद या संग्रह-गाथाएँ प्राप्त हैं। १६ वें अध्ययन पद्यात्मक है।

१५-व्याख्या-ग्रन्थ

आचारांग के उपलब्ध व्याख्या ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन निर्युक्ति है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० पाँचवीं छठी शताब्दी) हैं।

दूसरा स्थान चूर्ण का है। निर्युक्ति पद्यमय है और चूर्ण गद्यमय। परम्परा से इसके कर्ता जिनदास महत्तर माने जाते हैं। किन्तु ऐतिहासिक शोध के आधार पर इसकी पुष्टि नहीं हुई है। अंग शब्द का निक्षेप करते हुए चूर्णकार ने द्रव्य-अंग की व्याख्या के लिए चउरंगिज्ज (उत्तराध्ययन का तृतीय अध्ययन) की भाँति—ऐसा उल्लेख किया है।^३ इस वाक्यांश से उत्तराध्ययन और आचारांग की चूर्ण के एक कर्ता होने की कल्पना की जा सकती है। यदि आचारांग और उत्तराध्ययन के चूर्णकार एक हों तो उनका परिचय उत्तराध्ययन चूर्ण के अनुसार 'गोपालिक महत्तर शिष्य' के रूप में मिलता है।^४

१. समवायांग, प्रकीर्णक समवाय, सूत्र ८९।

२. नन्दी, सूत्र ८० :

संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा।

३. आचारांग चूर्ण, पृ० ४ :

दव्वंग जहा चउरंगिज्जे।

४. उत्तराध्ययन चूर्ण, पृ० २३३।

आचारांग का तीसरा व्याख्या-ग्रन्थ 'टीका' है। चूर्ण और वृत्ति—ये दोनों नियुक्ति के आधार पर चलते हैं। नियुक्ति का शब्द-शरीर संक्षिप्त है, किन्तु दिशा-सूचन व ऐतिहासिक दृष्टि से वह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। चूर्ण का शब्द-शरीर टीका की अपेक्षा संक्षिप्त है, किन्तु अर्थाभिव्यक्ति व ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत मूल्यवान् है। टीका का शब्द-शरीर उपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों में सबसे बड़ा है। इसके कर्त्ता शीलाङ्क सूरि हैं। उन्होंने अपना दूसरा नाम 'तत्त्वादित्य' बतलाया है।^१ आचारांग की पुष्पिका के अनुसार उन्होंने आचारांग (प्रथम श्रुतस्कन्ध) की टीका गुप्त सम्बत् ७७२, भाद्र शुक्ला-पंचमी के दिन 'गम्भूता' (उत्तर गुजरात में पाटण का पार्श्ववर्ती 'गांभू' नामक गाँव) में पूर्ण की थी।^२

शीलाङ्क सूरि का अस्तित्व-काल ई० स० ८ वीं शती माना जाता है।^३

दीपिका : रचयिता—अंचल गच्छ के मेरुतंग सूरि के शिष्य माणिक्यशेखर सूरि।

दीपिका : रचयिता—खरतर गच्छ के जिनसमुद्र सूरि के पट्टधर जिनहंस सूरि।

अवचूरि : रचयिता—हर्षकल्लोल के शिष्य लक्ष्मीकल्लोल। रचना वि० सं०

१६०६ (?)।

वालावबोध : रचयिता—पार्श्वचन्द्र सूरि।

पद्यानुवाद और वार्तिक : इन दोनों के कर्त्ता श्रीमज्जयाचार्य (विक्रम की २० वीं शती) हैं। पद्यानुवाद—आचारांग के प्रथम श्रुतस्कन्ध की राजस्थानी में पद्यात्मक व्याख्या है। वार्तिक आचार-चूला पर लिखा गया है। उसके चर्चास्पद विषयों के स्पष्टीकरण के लिए प्रस्तुत वार्तिक बहुत महत्त्वपूर्ण है।

ऊपर की पंक्तियों में हमने व्याख्या-ग्रन्थों की चर्चा की है। प्रस्तुत शीर्षक में अनुपलब्ध व्याख्या-ग्रन्थों पर दृष्टि डाल लेना आवश्यक है। आर्य गन्धहस्ती ने

१ आचारांग वृत्ति, पत्र २८७ :

ब्रह्मचर्याख्यश्रुतस्कन्धस्य निवृत्ति कुलीनशीलाचार्येण तत्त्वादित्यापरनाम्ना बाहुरिसाधुसहायेन कृता टीका परिसमाप्ता।

२ वही, पत्र २८७ :

द्वासप्तत्यधिकेषु हि शतेषु, सप्तसु गतेषु गुप्तानाम्।

संवत्सरेषु मासि च, भाद्रपदे शुक्लपञ्चम्याम् ॥

शीलाचार्येण कृता, गम्भूतायां स्थितेन टीकैषा।

सम्यगुपपुज्य शोध्य, मात्सर्यविनाकृतैरार्यैः ॥

३ जीतकल्पसूत्र, प्रस्तावना, पृ० ११-१५ :

पुष्पिकागत रचना-सवत् भिन्न-भिन्न आदर्शों में भिन्न-भिन्न प्रकार का मिलता है। देखिए—'जैन आगम साहित्य भां गुजरात', पृ० १७६।

आचारांग के प्रथम अध्ययन 'शस्त्र-परिज्ञा' की टीका में उसी का संक्षिप्त सार संकलन किया है। आचारांग टीका में उन्होने लिखा है—

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिबहुगहनं च गन्धहस्तिकृदम् ।

तस्मात् सुखबोधार्थं गृह्णाम्यहमञ्जसा सारम् ॥३॥

(आचारांग वृत्ति, पत्र १)

शस्त्रपरिज्ञाविवरणमतिगहनमितीव किल वृतं पूज्यैः ।

श्रीगन्धहस्तिमिश्रैर्विवृणोमि ततोऽहमवशिष्टम् ॥२॥

(आचारांग वृत्ति, पत्र ७४)

हिमवंत थेरावली के अनुसार आर्य गन्धहस्ती ने वारह अङ्गो पर विवरण लिखा था। आचारांग सूत्र का विवरण विक्रम सम्वत् के दो सौ वर्ष बाद लिखा गया।^१ ऊपर उद्धृत आचारांग वृत्ति के श्लोकों से इस अभिमत की पुष्टि नहीं होती कि आर्य गन्धहस्ती ने समय आचारांग पर विवरण लिखा था।

१६—उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में आचार और आचार-चूला का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। भाषाशास्त्रीय अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन, छन्द-विमर्श, व्याकरण-विमर्श आदि-आदि विषयों की विशद समीक्षा अपेक्षित है। इसकी सम्पूर्ति 'आचारांग : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की जाएगी।

सागर-सदन

अहमदाबाद

१५ अगस्त, १९६७

आचार्य चुलसी

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थ-सूची

- अनुयोगद्वार
अभिधानराजेन्द्र कोप
अभियसमयालंकार की टीका (बौद्ध संस्कृत-ग्रन्थ)
आचारांग ('आयारो तह आयार-चूला' में मुद्रित)
आचारांग चूर्ण
आचारांग निर्युक्ति
आचारांग वृत्ति
आवश्यक चूर्ण
आवश्यक निर्युक्ति
उत्तराध्ययन ('दसवेअलियं तह उत्तरज्जभयणाणि' में मुद्रित)
उत्तराध्ययन चूर्ण
गोम्मटसार
जयधवला
जितकल्पसूत्र
तत्त्वार्थ भाष्य
तित्योगाली
तत्त्वार्थ राजवार्तिक
दशवैकालिक चूर्ण
दशवैकालिक निर्युक्ति
दशवैकालिक, हारिभद्रीय टीका
धवला (पट्खण्डागम)
निशीथ
निशीथ चूर्ण
नंदी
नंदी, मलयगिरि वृत्ति

(ख)

परिशिष्ट पर्व

पाणिनीय शिक्षा

प्रभावक चरित

प्रथमरति प्रकरण

प्राकृत साहित्य का इतिहास

मूलाराधना

विशेषावश्यक भाष्य

व्यवहार भाष्य

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र (डॉ० नलिनाक्ष दत्त का देवनागरी संस्करण, रायल
एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, सन् १९५३)

सम्मति तर्क प्रकरण

समवायांग (संशोधित प्रति)

समवायांग वृत्ति

सर्वार्थसिद्धि

सूत्रकृतांग चूर्ण

सेक्रेड बुक्स ऑफ दी ईस्ट, दी खं० २२, ४५

हिमवंत थेरावली

आयारो
तह
आयार-चूला

आचारो : विसय-सूची

१. सत्थ-परिण्णा	जीवसंयम-निरूवणं	पृ० १-२२
पढमो उद्देसो	जीवाणं अत्थित्थ-पदं	१
वीओ उद्देसो	पुढवीकाय-परूवणा-पद	३
तइओ उद्देसो	आउकाय-परूवणा-पदं	७
चउत्थो उद्देसो	तेउकाय-परूवणा-पदं	१०
पंचमो उद्देसो	वणस्सइकाय-परूवणा-पदं	१३
छट्ठो उद्देसो	तसकाय-परूवणा-पदं	१६
सत्तमो उद्देसो	वाउकाय-परूवणा-पद	१९
२. लोअ-विजओ	सद्दादि विसयलोग-विजय-निरूवणं	२३-३८
पढमो उद्देसो	सयणासत्ति-निसेध-पदं	२३
वीओ उद्देसो	संजमदढत्त-पदं	२६
तइओ उद्देसो	माणवज्जण-अत्थनिस्सारता-पद	२८
चउत्थो उद्देसो	भोग-भोगी-अवाय-पदं	३१
पंचमो उद्देसो	लोगनिस्सा-पदं	३३
छट्ठो उद्देसो	लोगं पइ अममाइय-पदं	३६
३. सीओसणिज्जं	सुह-दुक्ख-ति तिक्खा-निरूवणं	३९-४६
पढमो उद्देसो	सुत्त-जागरण-पदं	३९
वीओ उद्देसो	सुत्ताणं दुक्खाणुभव-पदं	४१
तइओ उद्देसो	'न दुक्खसहणमित्तेण समणो होइ'	
	त्ति निरूवण-पदं	४३
चउत्थो उद्देसो	कसाय-पाव-विरइ-संजम-भोक्ख-पदं	४५
४. सम्मत्तं	सम्मत्त-निरूवणं	४७-५३
पढमो उद्देसो	सम्मावाय-पदं—सम्मदंसण-पदं	४७
वीओ उद्देसो	धम्मप्यवाइय-परिक्खा-पदं—सम्मनाण-पदं	४८
तइओ उद्देसो	बालतवेण मोक्ख-निसेध-पदं—सम्मतव-पदं	५१
चउत्थो उद्देसो	समासवयणेण नियमण-पदं—सम्मचरित्त-पदं	५२

५. लोग-सारो	लोग-सार-तत्त-निरूवणं	५४-६५
पढमो उद्देसो	हिंसग-विसयारंभण-एगचर-पदं	५४
बीओ उद्देसो	विरयाविरय-पदं	५६
तइओ उद्देसो	अपरिग्गह-निव्विण्णकामभोग-पदं	५७
चउत्थो उद्देसो	अव्वत्त-एगचर-पच्चवाय-पदं	५९
पंचमो उद्देसो	हरउवमा-तवसंजमगुत्ति-निस्संगया-पदं	६१
छट्टो उद्देसो	उम्मग्ग-रागदोसवज्जणा-पदं	६३
६. धुयं	निस्संगया-निरूवणं	६६-७७
पढमो उद्देसो	सयण-विघूणण-पदं	६६
बीओ उद्देसो	कम्म-विघूणण-पदं	६९
तइओ उद्देसो	उवगरण-सरीर-विघूणण-पदं	७१
चउत्थो उद्देसो	गारवत्तिग-विघूणण-पदं	७३
पंचमो उद्देसो	उवसग्ग-सम्माण-विघूणण-पदं	७५
७. ×	×	
८. विमोक्खो	निज्जाण-निरूवणं	७८-९७
पढमो उद्देसो	असमणुन्न-विमोक्ख-पदं	७८
बीओ उद्देसो	अकप्पिय-विमोक्ख-पडिसेहण-	
	सब्भावकहण-पदं	८०
तइओ उद्देसो	अंगचेत्ठं पइ संकियस्स संकानिवारण-पदं	८३
चउत्थो उद्देसो	वेहाणस-गिद्धपिट्ट-मरण-पदं	८५
पंचमो उद्देसो	गेलण्ण-भत्तपरिण्णा-पदं	८६
छट्टो उद्देसो	एगत्त-इंगिणि-मरण-पदं	८९
सत्तमो उद्देसो	भिक्खुड्डिमा-पाओवगमण-पदं	९१
अट्टमो उद्देसो	अणुपुव्व विहारिणं सलेहण-अणसण-पदं	९४
९. उवहाण-सुयं	महावीराइण्णासाहणा-निरूवणं	९८-१०६
पढमो उद्देसो	भगवओ चरिआ-पदं	९८
बीओ उद्देसो	भगवओ सेज्जा-पदं	१०१
तइओ उद्देसो	भगवओ परीसह-उवसग्ग-पदं	१०३
चउत्थो उद्देसो	भगवओ अतिगिच्छा-पदं	१०४

आयार-चूला : विसय-सूची

१. पिंडेसणा	सूत्र क्रमांक	पृ० १११-१६९
पढमो उद्देसो		१११-११७
सचित्त-संसत्त-असणादि-पदं	१-३	१११
ओसहि-आदि-पदं	४-७	११२
अण्णउत्तिय-गारत्तिय-सद्धि-पद	८-११	११३
अस्सिपडियाए-पदं	१२-१५	११४
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पदं	१६-१८	११६
कुल-पदं	१९-२०	११७
वीओ उद्देसो		११७-१२२
अट्टमी-आदि-पव्व-पदं	२१-२२	११७
कुल-पदं	२३	११८
महामह-पदं	२४-२५	११९
संखडि-पदं	२६-३०	१२०
तइओ उद्देसो		१२२-१२६
संखडि-पद	३१-३५	१२२
विचिगिन्हा-समावण-पदं	३६	१२५
सव्वभडगमायाए-पदं	३७-४०	१२५
कुल-पदं	४१	१२६
चउत्थो उद्देसो		१२६-१३०
संखडि-पदं	४२-४३	१२६
खीरिणीगावी-पद	४४-४५	१२८
माइट्टाण-पदं	४६-४८	१२९

पंचमो उद्देशो		१३०-१३५
माइट्टाण-पदं	४६	१३०
विसमट्टाण-परक्कम-पदं	५०-५१	१३१
वियाल-परक्कम-पदं	५२	१३२
विसमट्टाण-परक्कम-पदं	५३	१३२
कटक-बोदिया-पदं	५४	१३३
अणावायमसंलोय-चिट्टण-पदं	५५-५६	१३३
परिभायण-संभुंजण-पदं	५७	१३४
पुब्बपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं	५८-६०	१३५
छट्टो उद्देशो		१३५-१४२
भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं	६१	१३५
गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं	६२	१३६
पुरेक्कम-आदि-पदं	६३-८१	१३७
पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं	८२	१४०
लोण-पदं	८३	१४१
अगणि-णिविखत्त-पदं	८४-८६	१४१
सत्तमो उद्देशो		१४२-१४८
मालोहड-पदं	८७-८९	१४२
मट्टिओलित्त-पदं	९०-९१	१४३
पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं	९२	१४४
आउकाय-पइट्ठिय-पदं	९३	१४४
अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं	९४-९५	१४४
अच्चुसिण-वीयण-पदं	९६	१४५
वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पदं	९७	१४६
तसकाय-पइट्ठिय-पदं	९८	१४६
पाणग-जाय-पदं	९९-१०३	१४६

अद्वमो उद्देसो		१४८-१५५
पाणग-जाय-पदं	१०४	१४८
गंध-आषायण-पदं	१०५	१४९
सालुय-आदि-पदं	१०६	१५०
पिप्पलि-आदि-पदं	१०७	१५०
पलंद-जाय-पदं	१०८	१५०
पवाल-जाय-पदं	१०९	१५१
सरडुय-जाय-पदं	११०	१५१
मंथु-जाय-पदं	१११	१५१
आमडाग-आदि-पदं	११२	१५२
उच्छु-भेरग-आदि-पदं	११३	१५२
उप्ल-आदि-पदं	११४	१५२
अगवीय-आदि-पदं	११५	१५३
उच्छु-पदं	११६	१५३
लसुण-पदं	११७	१५४
अत्थिय-आदि-पद	११८	१५४
कण-आदि-पदं	११९-१२०	१५४
नवमो उद्देसो		१५५-१५९
पच्छाकम्म-पद	१२१	१५५
पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं	१२२-१२३	१५६
नन्नत्थ-गिलाणाए-पदं	१२४	१५७
माइट्ठाण-पदं	१२५-१२७	१५८
बहिधानीहड-पद	१२८-१२९	१५९
दसमो उद्देसो		१६०-१६४
माइट्ठाण-पदं	१३०-१३२	१६०
बहु-उज्झिय-धम्मिय-पदं	१३३-१३५	१६१
अजाणया लोण-दाण-पदं	१३६	१६३

एगारसंमो उद्देसो		१६४-१६९
माइठ्ठाण-पदं	१३८	१६४
मणुण-भोयण-जाय-पदं	१३९	१६५
पिडेसणा-पाणेसणा-पदं	१४०-१५५	१६५
२. सेज्जा		१७०-१९९
पढमो उद्देसो		१७०-१७९
उवस्सयएसणा-पदं	१-२	१७०
अस्सिपडियाए-उवस्सय-पदं	३-६	१७०
समण-माहणाइ समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं	७-९	१७२
परिकम्मिय-उवस्सय-पदं	१०-१३	१७३
बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं	१४-१७	१७४
अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं	१८-१९	१७५
सागारिय-उवस्सय-पदं	२०-२६	१७६
बीओ उद्देसो		१८०-१८८
सागारिय-उवस्सय-पदं	२७-३०	१८०
तण-पलालाच्छाइय-उवस्सय-पदं	३१-३२	१८२
वज्जियव्व-उवस्सय-पदं	३३-३४	१८२
उवट्टाण-किरिया-पदं	३५	१८३
अभिवक्कत-किरिया-पदं	३६	१८३
अणभिवक्कत-किरिया-पदं	३७	१८४
वज्ज-किरिया-पदं	३८	१८५
महावज्ज-किरिया-पदं	३९	१८६
सावज्ज-किरिया-पदं	४०	१८६
महासावज्ज-किरिया-पदं	४१	१८७
अप्पसावज्ज-किरिया-पदं	४२-४३	१८८

तइओ उद्देसो		१८८-१९९
उवस्सय-छलणा-पदं	४४	१८८
उवस्सय-जयण-पदं	४५-४६	१८९
उवस्सय-जायणा-पदं	४७	१९०
सेज्जायर-णाम-गोय-पदं	४८	१९१
उवस्सय-विसुद्धि-पदं	४९-५६	१९१
संथारग-पदं	५७-६१	१९३
संथारग-पडिमा-पदं	६२-६७	१९४
संथारग-पच्चप्पण-पदं	६८-६९	१९६
उच्चार-पासवण-भूमि-पदं	७०-७१	१९७
सयण-विहि-पदं	७२-७७	१९७
३. इरिया		२००-२२०
पढमो उद्देसो		२००-२०८
वासावास-पदं	१-३	२००
गामाणुगाम-विहार-पदं	४-१३	२०१
नावा-विहार-पदं	१४-२३	२०५
वीओ उद्देसो		२०८-२१३
नावा-विहार-पदं	२४-३३	२०८
जघासंतरिम-उदग-पदं	३४-४०	२१०
विसमट्टाण-परवकम-पदं	४१-४३	२१२
अभिणिचारिय-पदं	४४	२१२
पाडिपहिय-पदं	४५-४६	२१३
तइओ उद्देसो		२१४-२२०
अंगचेट्टापुव्वं निष्फाण-पदं	४७-४९	२१४
आयरिय-उवज्जाय-सद्धि-विहार-पदं	५०-५१	२१५
आहारतिणिय-सद्धि-विहार-पदं	५२-५३	२१६

पाडिपहिय-पदं	५४-५८	२१६
वियाल-पदं	५९	२१९
आमोसग-पदं	६०-६२	२१९
४. भासजातं		२२१-२३३
पढमो उद्देसो		२२१-२२६
वइ-अणायार-पदं	१-२	२२१
सोडस-वयण-पदं	३-४	२२१
अणुवीइ-णिट्ठाभासि-पदं	५	२२२
भासाजात-पदं	६-९	२२३
सावज्ज-असावज्ज-पदं	१०-११	२२३
आमतणीभासा-पदं	१२-१५	२२४
विधि-निसिद्ध भासा-पदं	१६-१८	२२५
वीओ उद्देसो		२२६-२३३
कक्कस-भासा-पदं	१९	२२६
अकक्कस-भासा-पदं	२०	२२७
सावज्ज-असावज्जभासा-पदं	२१-३७	२२८
अणुवीइ-णिट्ठा-भासि-पदं	३८-३९	२३३
५. वत्थेसणा		२३४-२५१
पढमो उद्देसो		२३४-२४६
वत्थजाय-पदं	१-३	२३४
अद्धजोयण-मेरा-पदं	४	२३४
अस्सिपडियाए-पदं	५-८	२३४
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पदं	९-११	२३६
भिकखु-पडियाए-कीयमाइ-पदं	१२-१३	२३७
वत्थ-पदं	१४-१५	२३७

वत्थ-पडिमा-पदं	१६-२१	२३८
संगार-वयण-पदं	२२	२४०
वत्थ-आघसण-पदं	२३	२४१
वत्थ-उच्छोलण-पदं	२४	२४२
वत्थ-विसोहण-पदं	२५	२४२
वत्थ-पडिलेहण-पदं	२६-२७	२४३
सअंडाइ-वत्थ-पदं	२८	२४३
अप्पंडाइ-वत्थ-पदं	२९-३०	२४४
वत्थ-परिकम्म-पदं	३१-३४	२४४
वत्थ-आयावण-पदं	३५-४०	२४५
वीओ उद्देसो		२४६-२५१
णो घोएज्जा-रएज्जा-पदं	४१	२४६
सव्वचीवरमायाए पदं	४२-४५	२४६
पाडिहारिय-वत्थ-पदं	४६-४७	२४७
वत्थ-विकिया-पदं	४८	२४९
आमोसग-पदं	४९-५१	२४९
६. पाएसणा		२५२-२६९
पढमो उद्देसो		२५२-२६४
पायजाय-पद	१	२५२
एगपाय-पद	२	२५२
अद्धजोयण-मेरा-पद	३	२५२
अस्सिपडियाए-पदं	४-७	२५२
समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पाय-पद	८-१०	२५४
भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-पदं	११-१२	२५५
पाय-पदं	१३	२५५
पाय-ववण-पद	१४	२५६
पाय-पडिमा-पद	१५-२०	२५६

संगार-वयण-पदं	२१	२५८
पाय-अठभंगण-पदं	२२	२५८
पाय-आघंसण-पदं	२३	२५९
पाय-उच्छोलण-पदं	२४	२५९
पाय-विसोहण-पदं	२५	२६०
सपाण-भोयण-पडिग्गह-पदं	२६	२६०
पडिग्गह-पडिलेहण-पदं	२७-२८	२६१
सअंडाइ-पाय-पदं	२९	२६१
अप्पंडाइ-पाय-पदं	३०-३१	२६२
पाय-परिकम्म-पदं	३२-३७	२६२
पाय-आयावण-पदं	३८-४३	२६३
बीओ उद्देसो		२६४-२६९
पडिग्गह-पेहा-पदं	४४-४५	२६४
सीओदग-पदं	४६	२६५
उदउल्ल-पदं	४७-४९	२६५
सपडिग्गह-मायाए-पदं	५०-५३	२६५
पडिहारिय-पडिग्गह-पदं	५४-५५	२६६
पायविकिया-पदं	५६	२६७
आमोसग-पदं	५७-५९	२६८
७. ओग्गह-पडिमा		२७०-२८३
पढमो उद्देसो		२७०-२७५
अदिन्नादाण-पदं	१-२	२७०
ओग्गह-पदं	३-२२	२७०
बीओ उद्देसो		२७५-२८३
ओग्गह-पदं	२३-२४	२७५
अंव-पदं	२५-३१	२७६

उच्छु-पदं	३२-३८	२७८
लसुण-पद	३६-४५	२७६
ओग्गह-पदं	४६-४७	२८०
ओग्गह-पडिमा-पदं	४८-५६	२८१
पचविह-ओग्गह-पदं	५७-५८	२८३
८. ठाण-सत्तिक्कयं		२८४-२९२
ठाण-एसणा-पदं	१-२	२८४
अस्मिपडियाए-ठाण-पदं	३-६	२८४
समण-माहणाइ-समुद्धिस्स-ठाण-पदं	७-९	२८६
परिकम्मिय-ठाण-पदं	१०-१३	२८७
वहियानिस्सारिय-ठाण-पद	१४-१५	२८८
ठाण-पडिमा-पदं	१६-२१	२८८
सयारग-पच्चप्पण-पदं	२२-२३	२८९
उच्चार-पासवण-भूमि-पदं	२४-२५	२९०
ठाण-विहि-पदं	२६-३१	२९०
९. णिसीहिया-सत्तिक्कयं		२९३-२९७
णिसीहिया-एसणा-पदं	१-२	२९३
अस्मिपडियाए णिसीहिया-पदं	३-६	२९३
समण-माहणाइ-समुद्धिस्स-णिसीहिया-पदं	७-९	२९५
परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं	१०-१३	२९६
वहियानिस्सारिय-णिसीहिया-पदं	१४-१७	२९७
१०. उच्चार-पासवण-सत्तिक्कयं		२९८-३०४
पाय-पुच्छण-पदं	१	२९८
थंडिल-पदं	२-२६	२९८
११. सह-सत्तिक्कयं		३०५-३१०
वितत-सह-कण्णसाय-पडिया-पदं	१	३०५

तत-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं	२	३०५
ताल-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं	३	३०५
भुसिर-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं	४	३०६
विविह-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं	५-१८	३०६
सदासत्ति-पदं	१६-२०	३०६
१२. रूत्र-सत्तिककयं		३११-३१५
विविह-रूत्र-चक्खुदंसण-पडिया-पदं	१-१५	३११
रूवासत्ति-पदं	१६-१७	३१४
१३. परकिरिया-सत्तिककयं	}	३१६-३२८
१४. अन्नुन्नकिरिया-सत्तिककयं		
किरिया-पदं	१	३१६
पाद-परिकम्म-पदं	२-११	३१६
काय-परिकम्म-पदं	१२-१८	३१७
वण-परिकम्म-पदं	१६-२७	३१८
गंड-परिकम्म-पदं	२८-३४	३१९
मल-णीहरण-पदं	३५-३६	३२१
वाल-रोम-पदं	३७	३२१
लिक्ख-जूया-पदं	३८	३२१
पाद-परिकम्म-पदं	३९-४८	३२१
काय-परिकम्म-पदं	४९-५५	३२३
वण-परिकम्म-पदं	५६-६४	३२४
गंड-परिकम्म-पदं	६५-७१	३२५
मल-णीहरण-पदं	७२-७३	३२६
वाल-रोम-पदं	७४	३२७
लिक्ख-जूया-पदं	७५	३२७
आभरण-आविधण-पदं	७६	३२७
पाद-परिकम्म-पदं	७७-७८	३२८
तिगिच्छा-पदं	७९-८०	३२८

१५. भावणा

३२२-३५५

भगवओ-चवणादि-णक्खत्त-पद	१-२	३२६
गब्भ-पदं	३	३२६
चवण-पदं	४	३३०
गब्भ-साहरण-पदं	५-७	३३०
जम्म-पदं	८-११	३३१
नामकरण-पदं	१२-१३	३३२
बाल-पद	१४	३३३
विवाह-पदं	१५	३३३
नाम-पदं	१६	३३३
परिवार-पदं	१७-२४	३३४
माउ-पिउ-काल-पदं	२५	३३५
अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पद	२६	३३६
देवागमण-पद	२७	३३७
अलकरण-सिवियाकरण-पदं	२८	३३७
अभिणिक्खमण-पद	२९	३४०
लोय-पद	३०-३१	३४१
समाइय-गहण-पद	३२	३४१
मणपञ्जवनाण-लद्धि-पद	३३	३४२
अभिग्गह-पद	३४	३४२
विहार-पद	३५-३७	३४३
केवलनाण-लद्धि-पद	३८-३९	३४३
देवागमण-पदं	४०-	३४४
घम्मोवदेस-पदं	४१-४२	३४५
सभावण-महव्वय-पदं	४३-७८	३४५

१६. चिसुत्ती

३५६-३५८

अणिच्च-पदं	१	३५६
पव्वय-दिट्ठंत-पदं	२-३	३५६
रुप्प-दिट्ठंत-पदं	४-८	३५६
भुजंगतय-दिट्ठंत-पद	९	३५७
समुह-दिट्ठंत-पदं	१०-१२	३५८

संकेत-निर्देशिका

- • ये दोनो बिन्दु पाठ-पूर्ति के द्योतक है:। पाठ-पूर्ति के प्रारम्भ में भरे बिन्दु (•) और उसके समापन में रिक्त बिन्दु (○) का संकेत किया गया है।
- (?) कोष्ठकवर्ती प्रश्न-चिन्ह आदर्शों में अप्राप्त किन्तु पूर्व पद्धति के अनुसार आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें, पृष्ठ १७४, सूत्र १४
- () क—पूर्व पद्धति के अनुसार आदर्शों में प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में अनावश्यक पाठ को कोष्ठक में रखा गया है। देखें, पृष्ठ १७१, सूत्र ५।
- () ख—संग्रह गाथाएँ भी कोष्ठक के अन्तर्गत रखी गई है। देखें, पृष्ठ १५, सूत्र २४
- () ग—तेरहवें और चौदहवें अध्ययन में भेद करने वाले शब्द कोष्ठक में रखे गए हैं।
- () कोष्ठकवर्ती संख्यांक पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक है। देखें, पृष्ठ १६६, सूत्र ५१
- (जाव २।३६) कोष्ठक में जाव के आगे जो सूत्रांक है, वे पूर्ति-आधार-स्थल के अध्ययन और सूत्रांक के सूचक है। देखें, पृष्ठ १८४, सूत्र ३७
- (जाव) एक ही सूत्र में समान पाठ-पद्धति के सूचक जाव शब्दों में से एक की पूर्ति की गई है तथा पुनरागत जाव शब्द के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया गया है। देखें, पृष्ठ १६७, सूत्र १४४।
- '' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान पर पाठान्तर होने का सूचक है। देखें, पृष्ठ १, सू० २८।
- गहरे अक्षर पद्य-भाग के सूचक है। देखें, पृष्ठ ७, सूत्र ३५
- पाठ के संलग्न दिया गया एक बिन्दु अपूर्ण पाठ का द्योतक है।
- × क्रास पाठ नहीं होने का द्योतक है।
- वृपा० वृत्ति सम्मत पाठान्तर।
- चूपा० चूर्ण सम्मत पाठान्तर।
- असण वा ४ } असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
- असण वा (४) }

आयारो

पढमं अज्मयणं

सत्थ-परिण्णा

पढमो उद्देशो

१—सुयं मे आजसं । तेणं भगवया एवमक्खायं^१—

इहमेगेसि नो सन्ना भवइ, तंजहा—

पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

दाहिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

‘अहे वा दिसाओ’^२आगओ अहमंसि,

‘अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अणुदिसाओ वा’^३ आगओ अहमंसि ।

२—एवमेगेसि णो णातं भवति^४—

अत्थि मे आया उववाइए,^५

णत्थि मे आया उववाइए,

के अहं आसी ?

के वा इओ चुओ^६ इह पेच्चा भविस्सामि ?

१—० मखाय (ख) ।

२—अहे दिसाओ वा (क, ख, ग, घ, च), अहो दिसाओ वा (छ) ।

३—अण्णयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ (क, ग, छ) ; अन्नयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (घ) ; अन्नतराए दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (च) ।

४—भवति, त जहा (च्) ।

५—ओववातिते (क) ; उववादिए (च) ।

६—चते (घ) ।

३-सेज्जं पुण जाणेज्जा—

सह-सम्मइयाए,^१

पर-वागरणेणं,

अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा, तंजहा—

पुरत्थिमाओ^२ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

* दक्खिणाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

पच्चत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उत्तराओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

उड्ढाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अहे वा दिसाओ आगओ अहमंसि,^{*}

अण्णयरीओ वा दिसाओ आगओ अहमंसि,

अणुदिसाओ वा आगओ अहमंसि ।

४-एवमेगेसिं जं णातं^३ भवइ-अत्थि मे आया उववाइए ।

जो इमाओ 'दिसाओ अणुदिसाओ वा'^४ अणुसंचरइ,^५

सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ 'जो आगओ

अणुसंचरइ'^६—सोहं ।

५-से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई ।

६-अकरिस्सं च'इहं, कारवेसुं^७ च'इहं, करओ यावि समणुन्ने

भविस्सामि ।

१-सम्मूतियाए (चू), समदियाए (क), सहसमुइयाओ (घ); सहस्समुइए (च) ।

२-पुरित्थि ° (ख, च) ।

३-णाण (ख), णाय (घ) ।

४-दिमाओ वा अणुदिमाओ (ख, छ), दिसाओ वा अणुदिसाओ य (चू, वृ) ।

५-अणुसंचरइ, अणुसंचरति (चूपा); अणुसंचरइ (वृपा) ।

—X (क, ख, ग, च) ।

७-काराविस्स (क, ख, ग,), कारावेस्स (च); कारावेस्स (घ) ।

७-एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियंवा भवंति ।

८-अपरिण्णाय-कम्मे^१ खलु अयं पुरिसे,
जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ,
सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति ।
अणेगरूवाओ जोणीओ संघेइ,^२
विख्वरूवे फासे य^३ पडिसंवेदेइ^४ ।

९-तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१०-इमस्स चेव जीवियस्स--
परिवदण-माणण-पूयणाए,
जाई-मरण-मोयणाए,^५
दुक्ख-पडिघायहेउं ।

११-एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियंवा भवंति ।

१२-जस्से ते लोगंसि कम्म-समारंभा परिण्णाय भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति वेमि ।

वीओ उद्देसो

१३-अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संवोहे अविजाणए ।

१-^० कम्मा (क, घ) ।

२-संघावति (चू), सघेइ (चूपा), सध्धावड (वृपा) ।

३-X (क, ख, ग, घ, च) ।

४-^० सवेतेइ (क) ; ^० सवेयड (घ, च) ।

५-^० भोग्यणाए (वृपा) ।

- १४—अस्सिं लोए पच्चहिए^१,
 तत्थ तत्थ पुढो पास^२,
 आतुरा^३ परितावेति ।
- १५—संति पाणा पुढोसिया ।
- १६—लज्जमाणा पुढो पास ।
- १७—अणगारा मो^४त्ति एगे पवयमाणा ।
- १८—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-
 सत्थं समारंभेमाणे^५ अण्णे व^६णेरूवे^६ पाणे विहिसति ।
- १९—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।
- २०—इमस्स चेव जीवियस्स—
 परिवंदण-माणण-पूयणाए,
 जाई-मरण-मोयणाए,
 दुक्ख-पडिघायहेउं ।
- २१—से सयमेव पुढवि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढवि-सत्थं
 समारंभावेइ, अण्णे वा पुढवि-सत्थं समारंभंते^६ समणुजाणइ ।
- २२—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।
- २३—से तं संबुडभमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।
- २४—सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा^७ अंतिए इहमेगेसिं णातं
 भवति—
 एस खलु गंथे,

१—पच्चविए (च) ।

२—^० पासे (क, घ) ।

३—आतुरा अस्सि (वृ) ।

४—समारंभमाणा (ख, ग, छ) ।

५—अणेग^० (घ, च) ।

६—समारंभमाणे (घ) ।

७—× (घ) ।

एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णरए^१ ।

२५—इच्चत्थं गट्टिए लोए ।

२६—जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहि'^२ पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-
सत्थं संमारंभमाणे^३ अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसइ ।

२७—से वेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे^४, अप्पेगे अंधमच्छे^५ ।

२८—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे,
अप्पेगे 'गुप्फमब्भे अप्पेगे गुप्फमच्छे,
अप्पेगे जंधमब्भे, अप्पेगे जंधमच्छे,
अप्पेगे जाणुमब्भे^६ अप्पेगे जाणुमच्छे,
अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे,
अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे,
अप्पेगे णाभिमब्भे, अप्पेगे णाभिमच्छे,
अप्पेगे उयरमब्भे, अप्पेगे उयरमच्छे,
अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे,
अप्पेगे पिट्टमब्भे^७, अप्पेगे पिट्टमच्छे,
अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे,

१—निरए (क, ख, घ, च) ।

२—^० रूवेसु सत्थेसु (क, च, छ) ।

३—समारंभमाणे (घ) ।

४—अत्त^० (च) ।

५—^० मच्छे (घ) ।

६—पुप्फमब्भे अप्पेगे एवं जंधापुप्फमब्भे अप्पेगे जाणुमब्भे (च) ।

७—पुट्टि^० (क) ; पिट्टि^० (ख, ग, च) ; पट्टि^० (घ) ।

अप्पेगे हिययमब्भे, अप्पेगे हिययमच्छे,
 अप्पेगे थणमब्भे, अप्पेगे थणमच्छे,
 अप्पेगे खंधमब्भे, अप्पेगे खंधमच्छे,
 अप्पेगे बाहुमब्भे, अप्पेगे बाहुमच्छे,
 अप्पेगे हत्थमब्भे, अप्पेगे हत्थमच्छे,
 अप्पेगे अंगुलिमब्भे, अप्पेगे अंगुलिमच्छे,
 अप्पेगे णहमब्भे, अप्पेगे णहमच्छे,
 अप्पेगे गीवमब्भे, अप्पेगे गीवमच्छे,
 अप्पेगे हणुयमब्भे^१, अप्पेगे हणुयमच्छे,
 अप्पेगे होट्टमब्भे^२, अप्पेगे होट्टमच्छे,
 अप्पेगे दंतमब्भे, अप्पेगे दंतमच्छे,
 अप्पेगे जिब्भमब्भे, अप्पेगे जिब्भमच्छे,
 अप्पेगे तालुमब्भे, अप्पेगे तालुमच्छे,
 अप्पेगे गलमब्भे, अप्पेगे गलमच्छे,
 अप्पेगे गंडमब्भे, अप्पेगे गंडमच्छे,
 अप्पेगे कण्णमब्भे, अप्पेगे कण्णमच्छे,
 अप्पेगे णासमब्भे^३, अप्पेगे णासमच्छे,
 अप्पेगे अच्छिमब्भे, अप्पेगे अच्छिमच्छे,
 अप्पेगे भमुहमब्भे, अप्पेगे भमुहमच्छे,
 अप्पेगे णिडालमब्भे, अप्पेगे णिडालमच्छे,
 अप्पेगे सीसमब्भे^४, अप्पेगे सीसमच्छे ।

२९-अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उह्वए ।

१-हणु^० (क, घ, च, छ) ।

२-उट्ठ^० (घ) ।

३-नक्क^० (घ, च) ।

४-सिर^० (च) ।

पढम अज्म्यण (तइओ उहेसो)

३०—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णात्ता भवंति ।

३१—एत्थ सत्थ असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णात्ता भवंति ।

३२—तं परिण्णाय मेहावी—

नेव सयं पुढवि-सत्थ समारंभेज्जा, जेवण्णेहि पुढवि-सत्थं समारभावेज्जा, जेवण्णे पुढवि-सत्थं समारभते समणुजाणेज्जा ।

३३—जस्से ते पुढवि-कम्म-समारभा^१ परिण्णात्ता भवति, से हू मुणी परिण्णात्त-कम्मे ।

—त्ति वेमि ।

तइओ उहेसो

३४—से वेमि—

से^२ जहावि अणगारे उज्जुकडे. णियागपडिवण्णे^३. अमायं कुच्चमाणे वियाहिए ।

३५—जाए सद्धाए णिकखन्तो ।

तमेवअणुपालिया^४ ।

‘विजहित्तु विसोत्तिय’^५ ।

३६—पणया वीरा महावीहिं ।

१—^० काय^० (च) ।

२—X (क, छ) ।

३—निकाय^० (चू, वृपा) ।

४—तामेव^० (घ, च), ^० अणुपालेज्जा (वृ) ।

५—तिन्नोहूसि विसोत्तिय (चू) ; विजहिता पुच्च सजोग (वृपा) ;
विजहिता (ख, ग, घ, च) ।

३७—लोगं च आणाए अभिसमेच्चा^१ अकुतोभयं ।

३८—से बेमि—

णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।

जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ ।

३९—लज्जमाणा^२ पुढो पास ।

४०—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।

४१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-
सत्थं-समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे^३ पाणे विहिसति ।

४२—तत्थ खलु भगवथा परिण्णा पवेदिता ।

४३—इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

४४—से सयमेव उदय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा उदय-सत्थं
समारंभावेति, अन्ने वा^४ उदय-सत्थं समारंभंते समणुजाणति ।

४५—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

४६—से तं संबुज्जमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१—^० समिच्चा (ख, घ) ।

२—एस आढत्त पुढविक्काइय उद्देसयगमेण द्रुवगडिया सुत्तत्थतो भाणियच्चा, अप्पेगे
अधमब्भे (च) ।

३—अणेग ^० (ग, घ) ।

४—X (ख, ग) ।

पदमं अज्जमयणं (तइओ उइसो)

४७—सोच्चा खलु^१ भगवओ अणगाराणं वा^२ अंतिए इहमेगेसि
णायं भवति—
एस खलु गथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णरए ।

४८—इच्चत्थं गट्टिए लोए ।

४९—जमिण 'विरूवरूवेहिं सत्थेहि'^३ उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-
सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे^४ पाणे विहिसति ।

५०—से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

५१—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

५२—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उइवए ।

५३—से बेमि—

संति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ।

५४—इहं^५ च खलु भो ! अणगाराणं उदय-जीवा वियाहिया ।

५५—सत्थं चेत्य^६ अणुवीइ पास^७ ।

५६—'पुटो सत्थं'^८ पवेइयं ।

५७—अदुवा अदिन्नादाणं ।

१—× (घ, च) ।

२—× (क, ख, ग) ।

३—^० रूवेसु सत्थेसु (च) ।

४—अणेग^० (घ, च) ।

५—इह (छ) ।

६—चेत्य (क, ख, छ) ।

७—पास (घ, च) ।

८—पुटोऽपास (वपा) ।

५८—कप्पइ णो,^१

कप्पइ णे पाउं,

अदुवा विभूसाए ।

५९—पुढो सत्थेहिं विउट्टति ।

६०—एत्थऽवि तेसिं णो णिकरणाए ।

६१—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।

६२—एत्थ सत्थं असमारभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।

६३—तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सय उदय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवन्नेहिं उदय-सत्थं
समारंभावेज्जा, उदय-सत्थं समारंभंतेऽवि अण्णे ण
समणुजाणेज्जा ।

६४—जस्से ते उदय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी
परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

चउत्थो उद्देसो

६५—से^२ बेमि—

णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताण अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लोगं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ,

जे अत्ताण अब्भाइक्खइ, से लोग अब्भाइक्खइ ।

६६—जे दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने, से असत्थस्स खेयन्ने ।

जे असत्थस्स खेयन्ने, से दीहलोग-सत्थस्स खेयन्ने ।

६७—वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं ।

संजतेहि, सया जतेहिं, सया अप्पमत्तेहिं ।

१—णो (ष) ।

२—सेय मिण (च) ।

- ६८—जे पमत्ते गुणद्विए,^१ से हु दंडे पवुच्चति ।
 ६९—तं परिणाय मेहावी—
 - इयाणि णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ।
 ७०—लज्जमाणा पुढो पास^२ ।
 ७१—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।
 ७२—जमिणं विख्वरूवेहि सत्थेहि अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-
 सत्थं समारंभमाणे, अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।
 ७३—तत्थ खलु^३ भगवया परिण्णा पवेइत्ता ।
 ७४—इमस्स चव जीवियस्स—
 परिवंदण-माणण-पूयणाए,
 जाई-मरण-मोयणाए,
 दुक्ख-पडिघायहेउं ।
 ७५—से सयमेव अगणि-सत्थ समारंभइ, अण्णेहि वा अगणि-सत्थं
 समारंभावेइ, अण्णे वा अगणि-सत्थं समारंभमाणे
 समणुजाणइ ।
 ७६—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।
 ७७—से तं संवुज्जमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।
 ७८—सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेहि णायं
 भवति—
 एस खलु गथे,
 एस खलु मोहे,
 एस खलु मारे,
 एस खलु णरए ।

१—गुणद्वी (क, वृ), गुणद्वीए (ख, ग) ।

२—धुवगडिय भणिरुण जाव से वेमि (च्) ।

३—x (च) ।

७१—इच्चत्थं गढिए लोए ।

८०—जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहि अगणि-कम्म-समारंभेणं
अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेरूवे पाणे विहिसति ।

८१—से बेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

८२—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

८३—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उह्वए ।

८४—से बेमि—

संति पाणा पुढवि-णिस्सिया, तण-णिस्सिया, पत्त-णिस्सिया,
कट्ट-णिस्सिया, गोमय-णिस्सिया, कयवर-णिस्सिया :

संति संपात्तिमा पाणा, आहच्च संपयंति य' ।

अगणिं च खल्ल पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ॥

८५—जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति^२ ।

जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उदायंति ।

८६—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चते आरंभा अपरिण्णाय
भवंति ।

८७—एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चते आरंभा परिण्णाय
भवंति ।

८८—तं परिण्णाय मेहावी—

नेव सयं अगणि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवन्ने हि अगणि-सत्थं
समारंभावेज्जा अगणि-सत्थं समारंभमाणे अन्ने न समणु
जाणेज्जा ।

१—× (क, ख, ग, च) ।

२—° विज्जति (क, ख, छ) ।

८९—जस्से ते अगणि-कम्म-समारंभा परिणयाया भवंति, से ह
मुणी परिणाय-कम्मे ।

—त्ति वेमि ।

पंचमो उद्देशो

६०—‘तं णो’^१ करिस्सामि समुट्ठाए ।

६१—मंता^२ मइमं अभयं विदित्ता ।

९२—त जे णो करए, एसोवरए, एत्थोवरए, एस—

अणगारे^३त्ति पवुच्चइ ।

९३—जे गुणे से आवट्ठे, जे आवट्ठे से गुणे ।

९४—उड्ढं अहं^४ तिरियं पाईणं^५ पासमाणे रूवाइं पासत्ति’^६,
‘सुणमाणे सद्दाइं सुणेत्ति’^७ ।

९५—उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छत्ति,
सद्देसु आवि ।

६६—एस लोए चियाहिए ।

९७—एत्थ अगुत्ते अणाणाए ।

६८—पुणो-पुणो गुणासाए,
वंकसमायारे,
पमत्ते गारमावसे ।

१—ते णो (च) ।

२—मत्ता (क, घ, च) ।

३—अव (वृ) ; अहे य (ख) ।

४—पासियाइं दरिसेत्ति (वृ) ; पस्समाणे रूवाइं पासइ (चूपा) ।

५—सुणिमाणि सुणेत्ति (वृ), सुणमाणो सद्दाइं सुणेत्ति । एवं गंधरसफासेहि वि
भाणियक्क (चूपा) ।

- ६६—लज्जमाणा पुढो पास^१ ।
- १००—अणगारा मो'त्ति एगे पवयमाणा ।
- १०१—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं
वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेरूवे^२ पाणे
विहिसति ।
- १०२—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।
- १०३—इमस्स चेव जीवियस्स—
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
जातो-मरण-मोयणाए,
दुक्ख-पडिघायहेउं ।
- १०४—से सयमेव वणस्सइ-सत्थं समारंभइ, अण्णेहि वा वणस्सइ-
सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे
समणुजाणइ ।
- १०५—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।
- १०६—से तं संबुज्जमाणे,
आयाणीयं समुट्ठाए ।
- १०७—सोच्चा भगवओ, अणगाराण वा अंतिए इहमेगेसि णायं
भवति—
एस खलु गंथे,
एस खलु मोहे,
एस खलु मारे,
एस खलु णिरए ।

१—बुव गंडिया (वू) ।

२—अणेग^० (ख, ग, च) ।

१०८-इच्चत्थं गट्टिए लोए ।

१०९-जमिणं- विरूवरूवेहि सत्येहि वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं
वणस्सइ-सत्थं समारंभेमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे
विहिसति^१ ।

११०-से वेमि—

अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अधमच्छे ।

१११-अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

११२-अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उट्टवए ।

११३-से वेमि --

इमपि जाइ-धम्मय,	एयंपि जाइ-धम्मय ।
इमपि बुद्धि-धम्मय,	एयंपि बुद्धि-धम्मयं ।
इमंपि चित्तमतयं,	एयंपि चित्तमतयं ।
इमपि छिन्न मिलाति,	एयंपि छिन्न मिलाति ।
इमपि आहारग,	एयंपि आहारगं ।
इमंपि अणिच्चयं,	एयंपि अणिच्चयं ।
इमंपि असासय,	एयंपि असासयं ।
इमपि चयावचइयं,	एयंपि चयावचइयं, ^२ ।
इमंपि विपरिणामधम्मयं,	एयंपि विपरिणामधम्मयं ।

११४-एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता
भवन्ति ।

११५-एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया
भवन्ति ।

१-विहमति (ख, ग) । अशुद्ध प्रतिमाति ।

२-चयावचइय (चू, क, घ, च. छ), चयावचय (ख, ग) ।

११६—तं परिणाय मेहावी—

णेव सयं वणस्सइ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइ-सत्थं
समारंभावेज्जा, णेवणे वणस्सइ-सत्थं समारंभंते
समणुजाणेज्जा ।

११७—जस्सेते वणस्सइ-सत्थ-समारंभा परिणायया भवंति, से हु
मुणी परिणाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

छट्ठो उद्देशो

११८—से बेमि—संति'मे तसा पाणा, तंजहा—अंडया, पोयया,
जराउया, रसया, संसेयया, संमुच्छिमा, उब्भिया, उववाइया ।

११९—एस—संसारेत्ति^१ पवुच्चति ।

१२०—मंदस्स अवियाणओ ।

१२१—णिज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेयं परिणिव्वाणं ।

१२२—सव्वेसिं पाणाणं, सव्वेसिं भूयाणं, सव्वेसिं जीवाणं, सव्वेसिं
सत्ताणं, अस्सायं^२ अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं—त्ति बेमि ।

१२३—तसंति पाणा पदिसोदिसासु य ।

१२४—तत्थ तत्थ पुढो पास, आउरा परितावेत्ति^३ ।

१—ससारिती (क, ख) ।

२—असायं (क्वचित्) ।

३—अट्टा 'ति जाव परितावेत्ति' धुवगड्डिया (च्चु) ।

१२५-संति पाणा पुढोसिया ।

१२६-लज्जमाणा पुढो पास ।

१२७-अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१२८-जमिणं विरूवरूवेहि सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं
समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१२९-तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१३०-इमस्स चेव जीवियस्स-
परिवंदण-माणण-पूयणाए,
इ-मरण-मोयणाए,
दुक्खपडिघायहेउं ।

१३१-से सयमेव तसकाय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा तसकाय-
सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा^१ तसकाय-सत्थं समारंभमाणे
समणुजाणइ ।

१३२-तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१३३-से तं संबुज्जमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१३४-सोच्चा भगवओ, अणगाराणं 'वा अंतिए'^२ इहमेगेसिं पायं
भवइ-

एस खलु गथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णरए ।

१३५-इच्चत्थं गट्टिए लोए ।

१-वि (घ) ।

२-X (क) । सर्वत्र नास्ति ।

१३६—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-
सत्थं समारंभमाणे अण्णे व'णेरूवे पाणे विहिंसति ।

१३७—से बेमि—

अप्पेगे अधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१३८—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

१३९—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।

१४०—से बेमि—

अप्पेगे अच्चाए वहति, अप्पेगे अजिणाए वहंति,^१

अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणियाए वहंति,

° अप्पेगे हिययाए^२ वहति, अप्पेगे पित्ताए वहति,

अप्पेगे वसाए वहंति, अप्पेगे पिच्छाए वहंति,

अप्पेगे पुच्छाए वहंति, अप्पेगे बालाए वहंति,

अप्पेगे सिंगाए वहति, अप्पेगे विसाणाए वहंति,

अप्पेगे दंताए वहंति, अप्पेगे दाढाए वहंति,

अप्पेगे नहाए वहति, अप्पेगे प्हारुणीए वहति,

अप्पेगे अट्टीए वहंति, अप्पेगे अट्टिमिजाए वहंति,

अप्पेगे अट्टाए वहंति, अप्पेगे अणट्टाए ° वहंति,

अप्पेगे 'हिंसिसु मेत्ति वा'^३ वहंति,

अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहति,

अप्पेगे हिंसिस्संति मेत्ति वा वहंति ।

१४१—एत्थ सत्थं समारभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया
भवन्ति ।

१—हणति (च), वधति (क), हिंसति (घ) ।

२—हितयाए (क, च) ।

३—हिंसिसु इति वा (ख, ग) ।

१४२—एत्थं सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चते आरंभा परिणायया भवन्ति ।

१४३—तं परिणाय मेहावी—

णेवसयं तसकाय-सत्थं समारंभेज्जा; णेवण्णेहि तसकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१४४—जस्से ते तसकाय-सत्थ-समारंभा परिणायया भवन्ति, से हु मुणी परिणाय-कस्से ।

—त्ति बेमि ।

सत्तमो उद्देशो

१४५—‘पहू एजस्स’^१ दुगंछणाए ।

१४६—आयंक्र-दंसी ‘अहियं’ति नच्चा ।

१४७—जे अज्मत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ ।

जे बहिया जाणइ, से अज्मत्थं जाणइ ।

१४८—एयं तुलमन्नेसिं ।

१४९—इह^२ संति-गया दविया, णावकंखन्ति जीविउं^३ ।

१५०—लज्जमाणा^४ पुढो पास ।

१५१—अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।

१५२—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहि वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे व’णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१—पहू य एगस्स (वृ), पभु एयस्स (क) ।

२—इति (चूपा) ।

३—जीविय (क, छ) ।

४—अट्टा परिजुण्णा आकंपिता जाव आतुरा परिताविता धुव गडिया (चू) ।

१५३—तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।

१५४—इमस्स चेव जीवियस्स—

परिवंदण-माणण-पूयणाए,

जाई-मरण-मोयणाए,

दुक्ख-पडिघायहेउं ।

१५५—से सयमेव वाउ-सत्थं समारंभति, अन्नेहि वा वाउ-सत्थं
समारंभावेति, अन्ने वा वाउ-सत्थं समारंभते समणुजाणइ ।

१५६—तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।

१५७—से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।

१५८—सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसि णायं
भवइ—

एस खलु गंथे,

एस खलु मोहे,

एस खलु मारे,

एस खलु णिरए ।

१५९—इच्चत्थं गट्ठिए लोए ।

१६०—जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहि वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं
समारंभमाणे अण्णे व'णेगरूवे पाणे विहिंसति ।

१६१—से वेमि—

अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।

१६२—अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे । (१।२८)

१६३—अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्वए ।

१६४—से वेमि—

संति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंति य ।

फरिसं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ।

१६५—जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति,
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दयंति ।

१६६—एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाय
भवंति ।

१६७—एत्थ सत्थ असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाय
भवंति ।

१६८—त्तं परिण्णाय मेहावी—

णेव सयं वाउ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वाउ-सत्थं समा-
रंभावेज्जा, णेवन्ने वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१६९—जस्से ते वाउ-सत्थ-समारंभा परिण्णाय भवन्ति, से हु मुणी
परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।

१७०—एत्थं पि जाणे उवादीयमाणा ।

१७१—जे आयारे न रमंति ।

१७२—आरंभमाणा विणयं वयंति ।

१७३—छंदोवणीया अज्जोववण्णा ।

१७४—‘आरंभसत्ता पकरेति संगं’^१ ।

१७५—से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्ताणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं
पावं कम्मं ।

१७६—त्तं^२ णो अन्नेसि ।

१—‘आरंभसत्ता पकरेति संगं’, अस्य पाठस्यानन्तरं चूर्ण्या निम्न-पाठ उपलभ्यते—
‘एत्थ वि जाण अणुवाइयमाणा, जे आयारे रमंति, अणारंभमाणा विणयं वदति,
पसत्थ छंदोवणीता, तत्थेव अज्जोववण्णा आरंभे असत्ता णो पगरेति संगं’ ।

२—X (ख, ग, छ) ।

१७७—तं परिण्णाय मेहाची—

णेव सयं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवन्तेहि
 छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवन्ते छज्जीव-
 णिकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।

१७८—जस्से ते छज्जीव-णिकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णायया भवंति,
 से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

--त्ति वेमि ।

*

वीअं अज्भयष

लोगविजओ

पढमो उद्देसो

१—जे गुणे से मूलद्वाने, जे मूलद्वाने से गुणे ।

२—इति से गुणद्वी महता परियावेणं 'पुणो पुणो'^१ वसे पमत्ते^२—
माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे,
धूया मे, 'सुण्हा मे'^३, सहि-सयण-संगथ-संथुया मे,
'विवि(चि?)त्तोवगरण-परियट्टण-भोयण-अच्छायणं'^४ मे,
इच्चत्थं^५ गट्टिए लोए—वसे पमत्ते ।

३—अहो य^६ राओ य परित्पमाणे, कालाकाल-समुट्ठाई,
संजांगट्ठी अट्ठालोभी, आलुं पै सहसक्कारे^७,
विणिविट्ठचित्ते^८,
एत्थ सत्थे^९ पुणो पुणो ।

१—X (क, ख, ग, घ, च) ।

२—पमत्ते, त-जहा (क, ख, ग, घ, च) ।

३—सुण्हा मे, सहाया मे (घ) ।

४—विवित्तो^० (ख, च) ।

५—च्छायण (क), अच्छादयण (च) ।

६—इच्चत्थ से (क), इच्चत्थ इत्थ से (ग), इच्चत्थ एत्थ से (च) ।

७—X (क, ख, ग, घ) ।

८—सहसाकारे (क, ख, ग, घ), सहसकारे (च) ।

९—^० चिट्ठे (च, वृ, च) ।

१०—सत्ते (च, वृपा) ।

४-अप्पं च खलु आउं इहमेगेसि^१ माणवाणं, तंजहा—

सोय-परिण्णाणेहि^२ परिहायमाणेहि,

चक्खु-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि,

घाण-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि,

रस-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि,

फास-परिण्णाणेहि परिहायमाणेहि ।

५-अभिवक्तं^३ च खलु वयं स पेहाए^४ ।

६-तओ से एगया मूढ-भावं जणयंति^५ ।

७-जेहि वा सद्धि संवसति^६ 'ते वा ण'^७ एगया णियगा तं
पुब्बिं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।

८-नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमं पि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

९-से ण हस्साए^८, ण किड्ढाए, ण रतीए, ण विभूसाए ।

१०-इच्चेवं समुट्ठिए 'अहोविहाराए' ।

११-अंतरं च खलु इमं सपेहाए^९—“धीरे मुहुत्तमविणो पमायए” ।

१२-वयो^{१०} अच्चेइ जोव्वणं व ।

१३-जीविए इह जे पमत्ता ।

१-इधम्मकेसि चि (च) ।

२-^० पण्णाणेण (च्, क) ।

३-अहिवक्त (क), अहिकत (घ), अतिकतं (च) ।

४-'सपेहाए' (ख, ग, च) अशुद्धमिदम् ।

५-जणयति (वृ), जणयति (वृषा) ।

६-सवसति (घ, छ) ।

७-ते वण (क, छ); ते विण (घ); त एव ण (वृ) ।

८-ह्साए (क, ख, ग, छ) ।

९-सपेहाए (ग, घ, छ) ।

१०-वओ (क, ख, ग) ।

१४—से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुंपित्ता, विलुंपित्ता, उद्द्वित्ता,
उत्तासइत्ता ।

१५—अकडं 'करिस्सामि'त्ति मण्णमाणे ।

१६—जेहि वा सद्धि संवसति 'ते वाण'^१ एगया णियगा त पुब्बिं
पोसेति,

सो वा ते नियगे पच्छा पोसेज्जा ।

१७—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

१८—उवाइय^२ सेसेण^३ वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ.^४ इहमेगेसि
असंजयाणं^५ भोयणाए ।

१९—तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।

२०—जेहि वा सद्धि संवसति ते वा ण एगया णियगा तं^६ पुब्बिं
परिहरंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिहरेज्जा ।

२१—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।

तुमंपि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।

२२—जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं^७ सायं ।

२३—अणभिव्वकंतं^८ च खलु वयं 'स पेहाए'^९ ।

२४—खणं जाणाहि पंडिए !

१—त एव वा ण (वृ), ते व ण (ख) ।

२—उवादीत^० (क, च) ।

३—सेस तेण (क, ख, घ, च, छ) ।

४—किज्जइ (ख, ग, छ) ।

५—माणवाण (च) ।

६—X (क, ख, ग, घ) ।

७—पत्तेय (क, ख, ग, घ, च) ।

८—अणतिक्कतं (क) ।

९—सपेहाए (छ) । १३२ सूत्र वृत्तौ 'स प्रेथय' अत्र च 'सप्रेथय' कथमिदम् ?

२५—जाव सोय-‘पण्णाणा अपरिहीणा’,^१
 जाव णेत-पण्णाणा अपरिहीणा,
 जाव घाण-पण्णाणा अपरिहीणा,
 जाव जीह-पण्णाणा अपरिहीणा,
 जाव फास-पण्णाणा अपरिहीणा ।

२६—इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पन्नाणेहिं अपरिहीणेहिं^२ आयट्ठं सम्मं
 समणुवासिज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

बीओ उद्देशो

- २७—अरइं आउट्टे से मेहावी ।
 २८—खणंसि मुक्के ।
 २९—अणाणाए ‘पुट्टा वि’^३ एगे^४ णियट्ठंति ।
 ३०—मंदा मोहेण पाउडा ।
 ३१—“अपरिग्गहा भविस्सामो” समुट्टाए,
 लद्धे कामे ऽहिगाहंति^५ ।
 ३२—अणाणाए मुणिणो पडिल्लेहंति ।
 ३३—एत्थ मोहे पुणो पुणो सन्ता ।
 ३४—णो हन्वाए णो पाराए ।

१—परिण्णाणेहिं अपरिहायमाणेहिं (क, ख, ग, घ, छ) सर्वत्र ।

२—अपरिहीयमाणेहिं (क, ख, ग, घ, छ, वृ) ।

३—पुट्टा (च्चु) ।

४—X (च्चु) ।

५—अभिग्गाहति (क) ; अभिग्गहति (ख, छ), अभिगाहति (ग) ।

- ३५—विमुक्का^१ हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो ।
 ३६—लोभं अलोभेण दुगंछमाणे, लद्धे कामे नाभिगाहइ^२ ।
 ३७—विणावि^३ लोभं निक्खम्म,
 'एस अकम्मे'^४ जाणति पासति ।
 ३८—पडिलेहाए णावकंखति ।
 ३९—एस—अणगारे^५त्ति पवुच्चति ।
 ४०—अहो य^६ राओ य परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई,
 संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे,^६
 विणिविट्ठचित्ते,
 एत्थ सत्थे पुणो पुणो ।
 ४१—से आय-बले, 'से णाइ-बले'^७, से मित्त-बले, से पेच्च-बले,
 से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अतिहि-बले,
 से किवण-बले,^८ से समण-बले ।
 ४२—इच्चतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं 'दंड-समायाणं'^९ ।
 ४३—सपेहाए भया कज्जति,^{१०} ।
 ४४—'पाव-मोक्खो' त्ति मण्णमाणे ।
 ४५—अदु वा आसंसाए ।

१—विमुक्ता (क, ख, ग, घ, छ) ।

२—णोभिगाहइ (क, च) ।

३—विणइत्तु (क, घ, च, वृपा) ।

४—एसऽकम्मे (घ, छ) ।

५—X (क, ख) ।

६—सहसाकारे (क, ख, ग) ।

७—से णाइ-बले, से सयण-बले (क, ख, ग, घ, च) ।

८—किविण-^० (क, ख, ग) ।

९—दंड समारभति (चु) ।

१०—दंड-समायाण कज्जइ (चूपा) ।

४६—तं परिणाय मेहावी—

णेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभेज्जा, णेव'णं^१ एएहिं
कज्जेहिं दंडं समारंभावेज्जा, 'णेव'णं एएहिं कज्जेहिं
दंडं समारंभंतं समणुजाणेज्जा'^२ ।

४७—एस मग्गे—आरिएहिं^३ पवेइए ।

४८—जहेत्य कुसले णोवलिपिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उद्देशो

४९—'से असइं उच्चा-नोए, असइं णीया-नोए ।

णो हीणे, णो अइरित्ते'^४,

णो पीहए'^५ ।

५०—इति^६ संखाय के गोया-वादी ? के माणा-वादी ?

कंसि वा एगे गिज्जे ?

५१—तम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुज्जे ।

५२—भूएहिं^७ जाण पडिलेह सातं ।

१—णेव अन्नेहिं (छ) ।

२—एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभते वि अण्णे ण समणुजाणिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

३—आरिएहिं (क, ख, घ) ।

४—नागार्जुनीया —एगमेगे खलु जीवे अईअहूघाए असइं उच्चा-नोए अतइं णीया-नोए
कंडमहुगए णो हीणे नो अइरित्ते (चू, वृ) ।

५—पीहइ (ख, ग) ।

६—एय (चू) ।

७—नागार्जुनीया —पुरिसेणं खलु दुक्खविवागगवेमएणं । पुंत्वि नाव जीवाभिगमे कायव्वे,
जाइं च इच्छिताणिच्छे. तं साता-सातं वियाणिया हिंसोवरती कायव्वा (चू) ।

नागार्जुनीया :—पुरिसेणं खलु दुक्खुव्वये सुहेसए (वृ) ।

५३—समिते एयाणुपस्सी ।

५४—तंजहा—अंधत्तं, बहिरत्तं, मूयत्तं, काणत्तं, कुंटत्तं, खुज्जत्तं, बडभत्तं, सामत्तं, सबलत्तं ।

५५—सहपमाएणं अणेग-रूवाओ जोणीओ संघाति^१,
विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ^२ ।

५६—से अबुज्भमाणे 'हतोवहते जाइ-मरणं अणुपरियट्टमाणे'^३ ।

५७—जीवियं पुढो पियं इहमेगेसिं माणवाणं,
खेत्त-वत्थु ममायमाणानं ।

५८—आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण इत्थियाओ,
परिगिज्झ तत्थेव रत्ता ।

५९—ण एत्थ तवो वा, दमो वा, णियमो वा दिस्सति ।

६०—संपुण्णं बाले जीविउ-कामे, लालप्पमाणे मूढे विप्परियासु'वेइ'^४ ।

६१—इणमेव णावकंखंति, जे जणा धुव-चारिणो ।
जाती-मरणं परिन्नाय, चरे संकमणे दढे ॥

६२—णत्थि कालस्स णागमो ।

६३—सग्गे पाणा पियाउया^५, सुह-साया दुक्ख-पडिकूला, अप्पिय-
वहा, पिय-जीविणो जीविउ-कामा ।

६४—सब्बेसिं जीवियं पियं ।

६५—तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजियाणं, ससिंचियाणं,
तिविहेणं जा वि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ।

१—सघाएति (ख, ग, च) ।

२—परि० (घ, वृ) ।

३—हतोवहते विणिविट्ठचित्तं एत्थ सत्ते पुणो-पुणो (वृ) ।

४—विप्परियासमुवेइ (ख, ग, घ, छ) ।

५—पियायया (वृषा) ।

- ६६—से तत्थ गढिए चिद्धइ भोयणाए ।
 ६७—तओ से एगया विपरिसिद्धं^१ संभूयं महोवगरणं भवइ ।
 ६८—तं पि से एगया दायाया विभयंति,
 अदत्तहारो^२ वा से अवहरति,^३
 रायाणो वा से विलुंपंति,
 णस्सति वा से, विणस्सति वा से,
 अगार-दाहेण वा से डज्झइ ।
 ६९—इति से परस्स अट्टाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे,
 तेण दुक्खेण मूढे^४ विप्परियासु^५वेइ ।
 ७०—मुणिणा हु एयं पवेइयं ।
 ७१—अणोहंतरा एत्ते, नो य ओहं तरित्तए ।
 अतीरंगमा एत्ते, नो य तीरं गमित्तए ।
 अपारंगमा एत्ते, नो य पारं गमित्तए ॥
 ७२—आयाणिज्जं च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ ।
 वितहं पप्प^५खेयन्ने, तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ॥
 ७३—उट्ठेसो पासगस्स णत्थि ।
 ७४—बाले पुण णिहे काम-समणुत्ते असमिय-दुक्खे दुक्खी
 दुक्खाणमेव आवट्ठं अणुपरियट्ठइ ।
- त्ति बेमि ।

१—विविह परिसिट्ठं (क, ख, ग, घ, च) ।

२—अदत्ताहारा (ख, ग) ।

३—अवहरति (ख, ग) ।

४—समूढे (क, घ) ।

५—विप्परियासमुवेत्ति (ख, ग, घ, च, छ) ।

चउत्थो उद्देसो

- ७५—तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।
 ७६—जेहिं वा सद्धिं सवसति ते वा णं एगया णियया पुच्चिं
 परिवयंति,
 सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।
 ७७—नालं ते तव ताणाए वा, सरणाए वा ।
 तुमंपि तेसि नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।
 ७८—जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं ।
 ७९—भोगामेव अणुसोयंति ।
 ८०—इहमेगेसिं माणवाणं ।
 ८१—तिविहेण जावि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ।
 ८२—से तत्थ गढिए च्चिट्ठति, भोयणाए ।
 ८३—ततो से एगया विपरिसिट्ठ संभूयं महोवगरणं भवति ।
 ८४—तं पि से एगया दायाया विभयंति,
 अदत्तहारो वा से अवहरति,^१
 रायाणो वा से विलुंपंति,
 णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से,
 अगार-डाहेण वा डज्झइ ।
 ८५—इति से बाले परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं पकुव्वमाणे,
 तेण दुक्खेण मूढे^२ विप्परियासु'वेइ ।

१—हरति (क, छ) ।

२—समूढे (क, घ, च) ।

- ८६—आसं च छंदं च विगिंच^१ धीरे ।
 ८७—तुमं चैव तं सल्लमाहट्टु ।
 ८८—जेण सिया तेण णो सिया ।
 ८९—इणमेव णावजुज्झंति, जे जणा मोह-पाउडा ।
 ९०—थीभि लोए पञ्चहिए ।
 ९१—ते भो वयंति “एयाइं आयतणाइं” ।
 ९२—से दुक्खाए, मोहाए, माराए, णरगाए, णरग-तिरिक्खाए^२ ।
 ९३—सततं मूढे धम्मं णाभिजाणइ^३ ।
 ९४—उदाहु वीरे—अप्पमादो महा-मोहे ।
 ९५—अलं कुसलस्स पमाएणं ।
 ९६—संति मरणं संपेहाए,^४ भेउर-धम्मं संपेहाए ।
 ९७—“णालं पास” ।
 ९८—अलं ते एएहिं ।
 ९९—एयं पास मुणी ! महब्भयं ।
 १००—णाइवाएज्ज कंचणं ।
 १०१—एस वीरे पसंसिए^५—
 जे ण णिविज्जति आदाणाए ।
 १०२—“ण मे देति” ण कुप्पिज्जा, थोवं लड्डुं न खिसए ।
 पडिसेहिओ^६ परिणमिज्जा ।
 १०३—एयं मोणं समणुवासेज्जासि । —त्ति बेमि ।

१—विविच्च (क) ।

२—^० तिरियाए (घ) ।

३—ण जानाति (वृ) ।

४—सपेहाए (क, च) ।

५—नमसिते (च्चुपा) ।

६—पडिलगभिओ (वपा) ; पडिलाभितो परिणमे, ण वो वास चैव कुज्जा (च्चुपा) ।

पंचमो उद्देशो

१०४-जमिणं विरुवख्वेहि सत्येहि^१ लोगस्स कम्म-समारंभा
कज्जंति, तंजहा—अप्पणो से पुत्ताणं, धूयाणं, सुण्हाणं,
णातीणं, धातीणं, राईणं, दासाणं, दासीणं, कम्म-कराणं,
कम्म-करीणं,

आएसाए, पुढो पहेणाए, सामासाए, पायरासाए ।

१०५-सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ, इहमेगेसि माणवाणं भोयणाए ।

१०६-समुट्ठिए अणगारे आरिए आरिय-पण्णे आरिय-दंसो
'अयं संघी'ति अदक्खु^२ ।

१०७-से णाइए, णाइआवए, ण समणुजाणइ ।

१०८-सञ्चामगंधं^३ परिण्णाय, णिरामगन्धो परिच्वए ।

१०९-अदिस्समाणे कय-विक्कएंसु ।

से ण किणो ण किणावए,

किणंतं ण समणुजाणइ ।

११०-से भिक्खू कालण्णे, बलण्णे^४, मायण्णे, खेयन्ते, खणयन्ते^५,
विणयन्ते, समयन्ते^६, भावण्णे, परिग्गहं अममायमाणे,
काले'णुट्ठाई, अपडिन्ते ।

१११-दुहओ छेत्ता नियाइ ।

११२-वत्थं पडिग्गहं, कंबलं पाय-पुंछणं, उग्गहं च कडासाणं,
एतेसु चेष जाणेज्जा ।

१-सत्येहि विरुवख्वेवाणं अट्ठाए (चुपा) ।

२-अयं सधिमदक्खु (वृषा) ; अदक्खु (क, ख, ग) ।

३-० गंधे (घ, च) ।

४-बालण्णे (क, घ, च, वृ) ।

५-खणणो (चू) ।

६-समयण्णे परसमयण्णे (घ, च), स समयण्णे परसमयण्णे (छ) ।

- ११३—लद्धे आहारे अणगारे मायं जाणेज्जा,
से जेह'यं भगवया पवेइयं ।
- ११४—'लाभो'त्ति न मज्जेज्जा ।
- ११५—'आलाभो'त्ति ण सोयए^१ ।
- ११६—वहुं पि लद्धुं ण णिहे ।
- ११७—परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा ।
- ११८—'अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा'^२ ।
- ११९—एस मग्गे-आरिण्हि पवेइए ।
- १२०—जहे'त्य कुसले णोवलिपिज्जासि—त्ति वेमि ।
- १२१—कामा दुरत्तिक्रमा ।
- १२२—जीवियं दुप्पडिव्हणं^३ ।
- १२३—काम-कामी खलु अयं पुरिसे ।
- १२४—से सोयति, जूरति, तिप्पति^४, पिडुति^५, परितप्पति ।
- १२५—आयतचक्खू लोग-विपस्ती—
लोगस्स अहो-भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं
जाणइ ।
- १२६—गडिण^६ अणुपरियट्टमाणे ।
- १२७—संश्रिं विदित्ता इह मच्चिण्हिं ।
- १२८—एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए ।
- १२९—जहा अन्तो तथा बाहिं, जहा बाहिं तथा अन्तो ।

१—सोएज्जा (ख, ग, च, छ) ।

२—अण्णतरेण पासएण परिहरिज्जा (चुपा) ।

३—^० वृहणं (घ ङ) ।

४—तप्पति (चु) ।

५—पिट्ट (क, ख, ग) ; × (च, छ) ।

६—गडिण लोए (ख, ग, घ) ।

- १३०—अन्तो अन्तो पूति-देहं तराणि, पासति पुढोवि सवंताइं ।
 १३१—पंडिए पडिलेहाए ।
 १३२—से मइमं परिणाय, मा य हु लालं पञ्चासी ।
 १३३—मा तेसु त्तिरिच्छमप्पाणमावातए ।
 १३४—‘कासं कसे’^१ खलु अयं पुरिसे, बहु-माई,
 कडेण मूढे पुणो तं करेइ-लोभं ।
 १३५—वेरं वड्ढेति अप्पणो ।
 १३६—जमिणं परिकहिज्जइ, इमस्स चेव पडिवूहणयाए^२ ।
 १३७—अमरायइ^३ महा-सड्ढी ।
 १३८—‘अट्टमेतं पेहाए’^४ ।
 १३९—अपरिन्नाए कंदति ।
 १४०—‘से तं जाणह जमहं वेमि’^५ ।
 १४१—‘तेइच्छं पंडिते’^६ पवयमाणे ।
 १४२—से^७ हंता, छेत्ता, भेत्ता^८, ‘लुंपइत्ता, विलुंपइत्ता’^९, उद्वइत्ता ।
 १४३—‘अकडं करिस्सामि’त्ति मण्णमाणे ।
 १४४—जस्स वि य णं करेइ ।
 १४५—अलं बालस्स संगेणं ।
 १४६—जे वा से कारेइ वाले ।
 १४७—‘ण एव’^{१०} अणगारस्स जायति । —त्ति वेमि ।

१—काम कामे (चू) ; कास कसे य (घ) ।

२—पडिवूहणइहाए (वृ, छ) ।

३—अमराइ (घ, च) ।

४— उपेहाए (चू), अट्टमेत (क, घ, च, छ) ।

५—से एव मायाणह ज वेमि (चू), से एव मायाणह जमह वेमि (क, ख, ग) ।

६—तेइच्छ पंडितो (चू) ।

७—x (चू) ।

८—भेत्ता, छेत्ता (ख, ग, घ, च, छ) ।

९—लुपित्ता, विलपित्ता (ख, ग, च, छ) ।

१०—ण हु एव (चू) ।

छट्टो उद्देशो

- १४८—से तं संबुज्जमाणे, आयाणीयं समुद्वाए ।
 १४९—तम्हा पावं कम्मं, षे'व कुज्जा न कारवे ।
 १५०—सिया तत्थ^१ एगयरं विप्परामुसइ^२, छसु अण्णयरंसि कप्पति ।
 १५१—सुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढेविप्परियासमुवेति ।
 १५२—सएण विप्पमाएण, पुढो वयं पकुच्चति ।
 १५३—जंसि'मे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए—णो णिकरणाए^३ ।
 १५४—एस परिण्णा पवुच्चइ ।
 १५५—कम्मोवसंती ।
 १५६—जे ममाइय-मति जहाति, से जहाति^४ ममाइयं ।
 १५७—से हु दिट्ठ-पहे^५ मुणी, जस्स णत्थि ममाइयं ।
 १५८—तं परिण्णाय मेहावी ।
 १५९—विदित्ता लोगं, वंता लोग-सण्णं, 'सि मतिमं'^६ परक्कमेजासि^७
 —त्ति वेमि ।
 १६०—णारतिं^८ सहते वीरे, वीरे णो सहते रतिं ।
 जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे ण रज्जति ॥
 १६१—सहे यं फासे अहियासमाणे ।
 १६२—णिच्चिद णंदिं इह जीवियस्स ।

१—से (च) ।

२—विपरामुसति (क) ।

३—णिकरणयाए (ख, ग) ।

४—चयइ (क, ख, ग, च) ।

५—दिट्ठ-भये (घ, च, चपा, वृपा) ।

६—स मइमं (ख), स इति मुनि (वृ) ।

७—परक्कमेज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

८—णो रइ (क, च) ।

९—X (ख, ग, च, छ) ।

- १६३-मुणी मौणं समादाय, धुणे^१ कम्म-सरीरगं ।
 १६४-पंतं लूहं सेवंति, वीरा सम्मत्त-दंसिणो ।
 १६५-एस ओघंतरे मुणी, तिन्ने मुत्ते विरते,
 वियाहिते—त्ति बेमि ।
- १६६-दुव्वसु मुणी अणाणाए ।
 १६७-तुच्छए गिलाइ वत्तए ।
 १६८-एस वीरे पसंसिए ।
 १६९-अच्चेइ लोय-संजोयं ।
 १७०-एस णाए पवुच्चइ^२ ।
 १७१-जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाण,
 तस्स दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति^३ ।
- १७२-इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ।
 १७३-जे अणण्ण-दंसी, से अणण्णारामे,
 जे अणण्णारामे, से अणण्ण-दंसी ।
- १७४-जहा पुण्णस्स कत्थइ, तथा तुच्छस्स कत्थइ ।
 जहा तुच्छस्स कत्थइ, तथा पुण्णस्स कत्थइ ॥
- १७५-अवि य हणे अणादियमाणे^४ ।
 १७६-एत्थंपि जाण, सेयंति णत्थि ।
 १७७-कै यं पुरिसे कं च णए ?
 १७८-एस वीरे पसंसिए, जे वद्धे पडिमोयए ।
 १७९-उद्धं अहं तिरियं दिसासु, से सच्चतो सच्च-परिण्ण-चारी ।

१-धुण (वृ) ।

२-स वुच्चइ (घ) ।

३-पतिण्ण ° (छ) ।

४-x (च) ।

१८०—ण लिप्पई छण-पण वीरे ।

१८१—से मेहावी, अणुघायणस्स खेयन्ने,
जे य—बंधप्पमोक्खमन्नेसी ।

१८२—कुसले पुण णो बद्धे, णो मुक्के ।

१८३—से जं च आरभे जं च णारभे ।
अणारद्धं च णारभे ।

१८४—छणं-छणं परिणाय, लोग-सन्नं च सच्चसो ।

१८५—उद्देसो पासगस्स णत्थि ।

१८६—बाले पुण णिहे काम-समणुन्ने असमिय-दुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव
आवट्टं अणुपरियट्टइ ।

—त्ति बेमि ।

तद्वय अज्मयण

सीओसणिज्जं

पढमो उद्देशो

- १-सुत्ता अमुणी सया^१, मुणिणो सया^२ जागरंति ।
- २-लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं ।
- ३-समयं लोगस्स जाणित्ता, एत्थ सत्थोवरए ।
- ४-जस्सि^३मे सद्दा य ख्वा य गंधा य रसा य फासा
य अभिसमन्नागया भवंति, से 'आयवं नाणवं वेयवं
धम्मवं बंभवं'^४ ।
- ५-पन्नाणेहि पगियाणइ लोयं, 'मुणी'त्ति वच्चे^५, धम्मविउ^६त्ति
अजू^७ ।
- ६-आवट्ट-सोए संगमभिजाणति ।
- ७-सीउसिणच्चाइ से निगगंथे अरइ-रइ-सहे फरुसिय^८ णो वेदेति ।
- ८-जागर-वेरोवरए वीरे^९ ।
- ९-एवं दुक्खा पमोक्खसि^८ ।
- १०-जरा-मच्चु-वसोवणीए णरे, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणति ।

१-X (च, च) ।

२-सततमनवरतम् (वृ) ।

३-आतवि, वेदवि, धम्मवि, वमवि (च्), आतव ..(चण) : आयवी, णाणवी, वेदवी,
धम्मवी, वमवी (वृपा) ।

४-मुणी वच्चे (वृ, छ) ।

५-उजू (क, च, छ) ।

६-फरुसय (च्) ।

७-वीरे (छ) ।

८-पमुच्चमि (क ख ग घ, छ) ।

- ११—पासिय आउरे^१ पाणे, अप्पमत्तो परिच्चए ।
 १२—मंता एयं मइमं ! पास ।
 १३—आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा ।
 १४—माई पमाई^२ पुणरेह् गब्भं ।
 १५—उवेहमाणो सद्-रूवेसु अंजू, माराभिसंकी^३ मरणा पमुच्चति ।
 १६—अप्पमत्तो कामेहि, उवरतो पाव-कम्मेहि, वीरे आय-गुत्ते जे खेयन्ते ।
 १७—जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ते, से असत्थस्स खेयन्ते,
 जे असत्थस्स खेयन्ते, से पज्जवजाय-सत्थस्स खेयन्ते ।
 १८—अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ।
 १९—कम्मणा^४ उवाही^५ जायइ ।
 २०—कम्मं च पडिलेहाए ।
 २१—‘कम्म-मूलं च’^६ जं छणं ।
 २२—पडिलेहिय सच्चं समायाय ।
 २३—दोहिं अंतैहिं अदिस्समाणे ।
 २४—तं परिणाय मेहावी ।
 २५—विदित्ता लोगं, वंता लोगसन्नं, से मइमं^७ परक्कमेज्जासि ।
 —त्ति वेमि ।

१-आतुरे सो (चू) ।

२-पमाया (व) ।

३-म.रावसक्की (चूपा) ।

४-कम्मणा (क, ख. ग) ।

५-उवही (चू) ।

६-कम्ममाहूय (चूपा, वृपा) ।

७-मेहावी (ख, ग, च) ।

बीओ उहेसो

- २६—जातिं च वुद्धिं च इहज्ज पासे ।
 २७—भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं ।
 २८—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,
 सम्मत्त-दंसी ण करेति पावं ।
 २९—उम्मंच पासं इह मच्चिएहिं ।
 ३०—आरंभ-जीवी उभयाणुपस्सी ।
 ३१—कामेसु गिद्धा णिचयं करेति,
 संसिच्चमाणा पुणरेंति गव्भं ।
 ३२—अवि से हासमासज्ज, हंता णंदीति मन्तति ।
 अलं बालस्स संगेणं, वेरं वडुति^१ अप्पणो ॥
 ३३—तम्हाऽति विज्जो परमंति णच्चा,
 आयंक-दंसी ण करेति पावं ।
 ३४—‘अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे’^२ ।
 ३५—पलिच्छिन्दियाणं णिकम्म-दंसी ।
 ३६—एस मरणा पमुच्चइ ।
 ३७—से हु दिट्ठ-भए^३ मुणी ।
 ३८—लोयंसी परम-दंसी विचित्त-जीवी उवसंते,
 समिते^४ सहिते सयाजए कालकंखी परिव्वए ।
 ३९—बहुं च खलु पाव-कम्म पगडं ।
 ४०—सच्चंसि धितिं कुच्चह ।

१-वडुतेति (घ) ।

२- वीरे X (क, ग, च, चू), मूल च अग्ग च विइत्तु वीरो (चूपा) । नागार्जुनीया.—
 मूल च अग्गा च विएत्तु वीरे, कम्मासव चेड विमोक्खण च (चू) ।

३-दिट्ठ-पहे, अहवा दिट्ठ-भए (चू) ।

४-समिते अप्पमाई(ती) (घ, छ) ।

६०—णातीतमट्टं^१ णय आगमिस्सं, अट्टं नियच्छंति तहागया उ ।

विधूत-कप्ये एयाणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता 'खवगे महेसी'^२ ॥

६१—का अरइ ? के आणंदे ? एत्थंपि अग्गहे चरे ।

सच्चं हासं परिच्चज्ज, आलीण-गुत्तो परिव्वए ॥

६२—पुरिसा ! "तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ?"

६३—जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं ।

जं जाणेज्जा दूरालइयं, तं जाणेज्जा उच्चालइयं ॥

६४—पुरिसा ! "अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि" ।

६५—पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि^३ ।

६६—सच्चस्स आणाए 'उवट्ठिए से'^४ मेहावी मारं तरति ।

६७—सहिए धम्ममादाय, सेयं समणुपस्सति ।

६८—दुहओ जीवियस्स परिवंदण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमादेति ।

६९—'सहिए दुक्खमत्ताए'^५ पुट्ठो णो भंभाए ।

७०—पासिमं दविए^६ लोयालोय-पवंचाओ मुच्चइ ।

—त्ति वेमि ।

१—^० मट्ट (च) ।

२—X (क, घ, च) ।

न व्याख्यातं (च, वृ) ।

३—^० जाणहि (क) ; ^० जाणेहि (च) ।

४—से उवट्ठिए से (क, ख, ग) ; से समुट्ठिए (घ) ; से उवट्ठिए (च) ।

५—सहिते धम्ममादाय (च) ; सहिते दुक्खमत्ताते (चूपा) ; ^० मेत्ताते (क) ;

^० माताते (च) ।

६—दविए लोए (छ) ।

चउत्थो उहेसो

- ७१—से वंता कोहं च, माणं च, मायं च, लोभं च ।
 ७२—एयं पासगस्स दंसणं, 'उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स' ।
 ७३—आयाणं (णिसिद्धा^१ ?) सगडब्भि^३ ।
 ७४—जे एग जाणइ, से सव्वं जाणइ ।
 जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥
 ७५—सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं ।
 ७६—जे एगं नामे, से बहं नामे,
 जे बहं नामे, से एगं नामे ।
 ७७—दुक्खं लोयस्स जाणित्ता ।
 ७८—वंता लोगस्स संजोगं, जंति वीरा^४ महाजाणं ।
 परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ॥
 ७९—एगं विगिचमाणे पुढो विगिचइ ।
 पुढोविगिचमाणे एगं विगिचइ ।
 ८०—सड्डी आणाए मेहावी ।
 ८१—लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ।
 ८२—अत्थि सत्थ परेण परं, णत्थि असत्थं परेण परं ।

१—^० कडस्स (क) ।

२—द्वष्टव्यम् सू० ८६ (पृ० ४६) ।

३—X (च) ।

४—धीरा (क) ।

८३—जे क्रोह-दंसी से माण-दंसी
 जे माण-दंसी से माय-दंसी
 जे माय-दंसी से लोभ-दंसी
 जे लोभ-दंसी से पेज्ज-दंसी
 जे पेज्ज-दंसी से दोस-दंसी
 जे दोस-दंसी से मोह-दंसी
 जे मोह-दंसी से गब्भ-दंसी
 जे गब्भ-दंसी से जम्म-दंसी
 जे जम्म-दंसी से मार-दंसी
 जे मार-दंसी से निरय-दंसी
 जे निरय-दंसी से तिरिय-दंसी
 जे तिरिय-दंसी से दुक्ख-दंसी ।

८४—से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा^१—कोहं च, माणं च, मायं च,
 लोहं च, पेज्जं च, दोसं च, मोहं च, गब्भं च, जम्मं च,
 मार^२ च, नरगं च, तिरियं च, दुक्खं च ।

८५—एयं पासगस्स दंसणं उवरय-सत्थस्स पलियंतकरस्स ।

८६—आयाणं 'णिसिद्धा सगडिब्भि ।

८७—किमत्थि उवाही^३ पासगस्स ण विज्जइ ?^४
 णत्थि ।

—त्ति वेमि ।

१—^० निव्वट्टेज्जा (क, घ, छ) ।

२—मरण (ख, ग) ।

३—उवाही (घी) (क, घ, छ) ।

४—x (च) ।

चउत्यं अज्भयणं

सम्मतं

पढमो उद्देशो

१-से वेमि—जे^१ अईया, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमेस्सा
अरहंता^२ भगवन्तो^३ ते सव्वे एवमाइक्खंति, एवं भासंति,
एवं पण्णवेति, एवं परूवेति :

सव्वे पाणा, सव्वे भूता, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता, ण हंतव्वा,
ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण
उद्देवेयव्वा ।

२-एस धम्मं सुद्धे^४, णिइए, सासए, समिच्च लोय—
खेयन्नेहिं^५ पवेइए ।

३-तजहा—उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा
उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा
उवरय-दंडेसु वा, अणुवरय-दंडेसु वा
सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा
संजोग-रएसु वा, असंजोग-रएसु वा ।

४-तच्चं चेयं तथा चेयं, अस्सिं चेयं पवुच्चइ ।

१-जे य (ख, ग, घ, छ) ।

२-अरिहता (ख, घ) ।

३-भगवता (घ, च) ।

४-सुद्धे ध्रुवे (घ) ।

५-खेत्तन्नेहिं (च) ।

- ५—तं आइत्तु^१ ण णिहे ण णिकिखवे, जाणित्तु धम्मं जहा^२ तथा ।
 ६—दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा ।
 ७—णो लोएससेसणं चरे ।
 ८—जस्स णत्थि इमा णाई, अन्ना तस्स कओ^३ सिया ?
 ९—दिट्ठं सुयं मयं विन्नायं, जमेयं^४ परिकहिज्जइ ।
 १०—समेमाणा पलेमाणा^५, पुणो—पुणो जातिं पकप्पेति ।
 ११—अहो य राओ य^६ 'जयमाणे, वीर'^७ सया आगय-पन्नाणे ।
 पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परकमेज्जासि ।
 —त्ति वेमि ।

वीओ उद्देशो

- १२—जे आसवा, ते परिस्सवा,
 जे परिस्सवा, ते आसवा,
 जे अणासवा, ते अपरिस्सवा,
 जे अपरिस्सवा, ते अणासवा —
 एए पए संबुज्झमाणे, लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो
 पवेइयं ।
 १३—आघाइं^८ णाणी इह माणवाणं,
 संसार-पडिवन्नाणं संबुज्झमाणं विन्नाणं-पत्ताणं ।

१—आइत्तु (ख,ग,च,छ,वृ) ।

२—अहा (घ) ।

३—कुतो (च) ।

४—ज लोए (चू) ।

५—पालेमाणा (क, च), चलेमाणा (घृ०) ।

६—× (ख,ग,छ) ।

७—धीरे (ख,ग,घ,वृ) ।

८—जताहि एव वीरे (चू) ।

९—अकखाइ (घ); नागार्जुनीया — भ्रात्राइ धम्म खलु से जीवाण, तजहा—संसारपडिण
 वन्नाण मणुस्सवभत्थाण आरंभविणईण दुक्खुव्वेअसुहेसगाणं धम्म-सवणणगवेसगा -
 निक्खिल-सत्थाणं सुरूसमाणाण पडिपुच्छमाणाण विन्नाणपत्ताणं (च, व) ।

- १४-अड्डा वि सन्ता अदुवा पमत्ता ।
 १५-अहासच्चमिणं ति वेमि ।
 १६-नाणागमो मच्चु-मुहस्स अत्थि,
 इच्छापणीया वंका-णिकेया ।
 काल-ग्गहीआ णिचए णिविड्डा,
 'पुढो-पुढो जाइं पकप्पयंति'^१ ।
 १७-'इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवति ।
 अहोववाडए फासे पडिसंवेदयंति ।
 १८-चिट्ठं कूरेहिं कम्महिं, चिट्ठं परिचिट्ठति^२ ।
 अचिट्ठं कूरेहिं कम्महिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति^३ ।'^४
 १९-एगे वयंति अदुवा वि णाणी,
 णाणी वयंति अदुवा वि एगे ।
 २०-आवंती केआवंती लोयंसि समणा य माहणा य पुढो
 विवादं वदंति—
 से दिट्ठं च णे, सुय च णे,
 मयं च णे, विण्णायं च णे—

१-पुढो पुढो जाइ पकरेति (चू) ,

एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुढो पुढो जाइ पगप्पेति (चूपा) ;

.. पकप्पेति (क) ; पकप्पन्ति (ख, ग, च) ; ' पकुप्पंति (च, छ) ।

'पुढो पुढो जाइ पकप्पयन्ति' पंक्तिस्थाने शुत्रिग सपादिते पुस्तके एतादृशं पाठान्तरम्—

एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाडए फासे पडिसवेययन्ति ;

चित्तं कूरेहिं कम्महिं, चित्तं परिचिट्ठइ ,

अचित्तं कूरेहिं कम्महिं, नो चित्तं परिचिट्ठइ ।

२-परिविचिट्ठइ (क, चू) ।

३-परिविचिट्ठइ (क) ।

४-X (शु) ।

उड्ढं अहं^१ तिरियं दिसासु, सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—
 सव्वे पाणा, 'सव्वे भूया, सव्वे जीवा'^२ सव्वे सत्ता,
 हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा^३ उद्देयव्वा ।
 एत्थं^४ वि जाणह णत्थित्थ दोसो ।

२१—अणारिय-वयणमेयं ।

२२—तत्थ जे ते आरिया, ते एवं वयासी—

से दुद्धिं च भे, दुस्सुयं च भे,
 दुम्मयं च भे, दुव्विन्नायं च भे,
 उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे,
 जन्नं तुब्भे एवमाइक्खह, एवं भासह, एवं 'परूवेह, एवं
 पन्नवेह'^५—

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,
 हंतव्वा अज्जावेयव्वा परिघेतव्वा परियावेयव्वा उद्देयव्वा ।
 एत्थं वि जाणह 'णत्थित्थ दोसो'^६ ।

२३—वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं
 पन्नवेमो—

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता,
 ण हंतव्वा ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परियावेयव्वा,
 ण उद्देयव्वा ।
 एत्थं वि जाणह णत्थित्थ दोसो ।

२४—आरिय-वयणमेयं ।

१—अहे य (क) ।

२—सव्वे जीवा सव्वे भूया (वृ, क, घ, छ) ।

३—परियावेयव्वा किलामेयव्वा (क, ख, ग) ।

४—एत्थं पि (ख, ग, घ) ।

५—पन्नवेह, एवं परूवेह (चू, क) ।

६—नत्थित्थ दोसो । अणारिय वयणमेय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

२५—पुव्वं निकाय समयं पत्तेय^१ पुच्छिस्सामो—

हं भो पावादुया^२ ! किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं ?

२६—समिया पडिवन्ते यावि एवं वूया—

सव्वेसि पाणाणं, सव्वेसि भूयाणं, सव्वेसि जीवाणं, सव्वेसि सत्ताणं, असायं अपरिणिव्वाणं मह्वभयं दुक्खं ।

—त्ति वेमि ।

तइथो उहेसो

२७—उवेह^३ एणं ग्रहिया य लोयं, से सच्च-लोगंसि जे केइ विन्नु ।

अणुवीइ^४ पास णिक्खित्त-दंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति^५ ॥

२८—नरे^६ मुयच्चा धम्मविदु त्ति अंजु ।

२९—आरंभजं दुक्खमिणंत्ति णच्चा, एवमाहु सम्मत्त-दंसिणो ।

३०—ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिन्नमुदाहरंति ।

३१—इति कम्म परिन्नाय सव्वसो ।

३२—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे 'एगमप्पाणं संपेहाए'^७ ।

धुणे सरीरं^८, कसेहि^९ अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं ।

३३—जहा जुन्नाइं कट्ठाइं, हव्ववाहो^{१०} पमत्थति,

एवं अत्त-समाहिए अणिहे ।

३४—विगिंच कोहं अविकंपमाणे, इमं णिरुद्धाउयं संपेहाए ।

१—पत्तेय-पत्तेय (ख, ग, च, छ) ।

२—पवादिया (छ), समणा माहणा (वू) ।

३—उवेहण (क, घ), उवेहेण (ख, ग); उव्वेहेण (च, छ) ।

४—अणुचित्तिय (क, च); (छ) अणुचित्तिय ।

५—जहति (च, छ) ।

६—नरा (छ) ।

७—सरीरग (वृ) ।

८—किसेहि (चू), कम्महि जरेहि (ख) ।

९—हव्ववाहू (घ, च, छ) ।

- ३५—दुक्खं च जाण अदु^१ वा'गमेस्सं ।
 ३६—पुढो फासाइं च फासे^२ ।
 ३७—लोक्यं च पास विप्फंदमाणं ।
 ३८—जे णिच्चुडा पावेहिं कम्महिं, अणिदाणा ते वियाहिया ।
 ३९—तम्हाऽतिविज्जो णो पडिसंजलिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

चउत्थो उद्देसो

- ४०—आवीलए पवीलए निप्पीलए,^३
 जहिता पुव्व-संजोगं, हिच्चा उवसमं ।
 ४१—तम्हा अविमणे वीरे, सारए समिए सहिते सया जए ।
 ४२—दुरणुचरो मग्गो वीराणं, अणियट्ट-गामीणं ।
 ४३—विगिच्च मंस-सोणियं ।
 ४४—एस पुरिसे दवीए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए ।
 जे धुणाइ समुस्सयं, वसित्ता बंभचेरंसि ॥
 ४५—णेत्तेहिं पलिच्छिन्नेहिं, आयाण-सोय-गट्टिए बाले ।
 अब्बोच्छिन्न-बंधणे, अणभिव्वकंत-संजोए,
 तमंसि^४ अविजाणओ, आणाए लंभो णत्थि—त्ति बेमि ।
 ४६—जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्जे तस्स कओ^५ सिया ?
 ४७—से हु पन्नाणमंते बुद्धे आरंभोवरए ।

१—बहु (क) ।

२—फासए (क, छ) ।

३—निप्पीलए (क, घ) ।

४—अधंस्स तमस्स (चू); तमसि (चूपा) ।

५—कुओ (क, च, छ) ।

४८—सम्मयेयंति पासह ।

४९—जेण वन्धं वहं घोरं, परितावं च दारुणं ।

५०—पलिच्छिदिय बाहिरगं च सोयं,
णिक्कम्म-दंसी इह मच्चिएहिं ।

५१—‘कम्मुणा सफलं’^१ दट्टुं, तथो णिज्जाइ वेयवी ।

५२—जे खलु भो वीरा समिता सहिता सदा जया संघड-
दंसिणो^२ आतोवरया, जहा-तहा^३ लोग मुवेहमाणा,
पाईणं पडीणं दाहीणं उदीणं इति सच्चंसि परिचिद्धिसु^४,
साहिस्सामो^५ णाण वीराणं समिताण सहिताणं सदा जयाणं
संघड-दंसिणं आतोवरयाणं अहा-तहा लोगमुवेहमाणाणं ।

५३—किमत्थि उवाधी^६ पासगस्स ? ‘ण विज्जति ?’^७
णत्थि ।

—त्ति बेमि ।

१—कम्माण सफलत्त (वृ) ।

२—सत्थड^० (च), संथड^० (च्) ।

३—अहातह (क) ।

४—परिविचिद्धिसु (क, ख, ग, च, छ), विपरिचिद्धिसु (च्) ।

५—अग्घात्तिस्सामो (च) ।

६—उवही (क, घ, च, छ) ।

७—अह णत्थि ? ण विज्जति त्ति बेमि (च्); णत्थि वा ण विज्जति त्ति बेमि (छ) ।

पचम अङ्कयणं

लोग-सारो

पढमो उद्देशो

- १—‘आवंती केआवंती लोयंसि विप्परामुसंति, अट्टाए
अणट्टाए वा’,^१ एएसु चैव विप्परामुसंति ।
- २—गुरू से कामा ।
- ३—तओ से मारस्स अंतो,
जओ से मारस्स अंतो, तओ से दूरे ।
- ४—णेव से अंतो, णेव से दूरे^२ ।
- ५—से पासति फुसियमिव, कुसग्गे पणुन्नं णिवतितं वातेरितं ।
एवं बालस्स जीवियं, मंदस्स अविजाणओ ॥
- ६—कूराणि कम्माणि बाले पकुब्बमाणे,
तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासुवेइ^३ ।
- ७—मोहेण गब्भं ‘मरणाति एति’^४ ।
- ८—एत्थ मोहे पुणो-पुणो ।
- ९—संसयं परिजाणतो, संसारे परिण्णाते भवति,
संसयं अपरिजाणतो, संसारे अपरिण्णाते भवति ।

१—नागार्जुनीया :—जावति केइ लोए छक्काय-वह समारभति अट्टाए अणट्टाए वा ।

२—× (ख, ग, घ, च, छ) ।

३—बाहि (च) ।

४—विप्परियासमुवेति (क, ख, ग, छ) ; ° समेति (च, च) ।

५—मरणा दुवेति (चपा) ।

- १०—जे छेए से सागारियं ण सेवए ।
 ११—‘कट्टु एवं अविजाणओ, वितिया मंदस्स वालया’^१ ।
 १२—लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा
 अणासेवणयाए—त्ति वेमि ।
 १३—पासह एगे रुवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे ।
 १४—‘एत्थ फासे’^२ पुणो-पुणो ।
 १५—आवंती केआवंती लोयंसि आरभजीवी,
 एएसु चेव आरंभजीवी ।
 १६—एत्थ वि वाले परिपच्चमाणे^३ रमति पावेहि कम्महिं,
 असरणे सरणं’ति मण्णमाणे ।
 १७—एह मेगेसि एगचरिया भवति—
 से बहु-कोहे बहु-माणे बहु-माए बहु-लोहे बहु-रणे बहु-नडे
 बहु-सढे बहु-संकप्पे,
 आसवसक्की पलिउच्छन्ने,
 उट्ठयवायं पवयमाणे “मा मे केह् अदक्खु”
 अण्णाण-पमाय-दोसेण, सयय मूढे धम्मं णाभिजाणइ ।
 १८—अट्टा पया माणच ! कम्म-कोविया, जे-अणुवरया,
 अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्टं^४ अणुपरियट्टंति ।
 —त्ति वेमि ।

१—नागार्जुनीया —जे खलु विसए सेवई सेवित्ता वा णालोएइ, परेण वा पुट्ठो
 निण्हवइ अहवा तं पर सएण वा दोसेण उवलिपिज्जति । तमेवा वियाणतो “ (च) ।

२—एत्थ मोहे (च, वृषा), तत्थ फासे (चूपा) ।

३—परिपच्चमाणे (च), परितप्पमाणे (छ, च, वृ)- परिच्चमाणे (चूपा, वृषा) ।

४—आवट्टमेव (च्च, ग, च) ।

बीओ उद्देशो

- १९—आवंती केआवंती लोयंसि अणारंभ-जीवी एतेसु^१ चेव
मणारंभ-जीवी^२ ।
- २०—एत्थोवरए तं भोसमाणे 'अयं संधी' ति अदक्खु ।
- २१—जे 'इमस्स विग्गहस्स अयं खणे'त्ति मन्नेसी^३ ।
- २२—एस मग्गे—आरिएहिं पवेदिते ।
- २३—उट्ठिए णो पमायए ।
- २४—जाणित्तु दुक्खं 'पत्तेयं सायं'^४ ।
- २५—पुढो-छंदा इह माणवा, पुढो दुक्खं पवेदितं ।
- २६—से अविहिसमाणे अणवयमाणे, पुट्ठो^५ फासे विप्पणोल्लए ।
- २७—एस समिया-परियाए वियाहिते ।
- २८—जे असत्ता पावेहिं कम्मोहिं, उदाहु ते आयंका फुसंति ।
इति उदाहु वीरे^६ 'ते फासे पुट्ठो हियांसए' ।
- २९—से पुव्वं पेयं पच्छा पेयं भेउर-धम्मं, विद्धंसण-धम्मं, अधुवं,
अणितियं, असासयं, चयावचइयं^७, विपरिणाम-धम्मं, पासह
एयं 'रूवं ।
- ३०—संधिं^८ समुप्पेहमाणस्स एगायतण-रयस्स^९ इह विप्पमुक्कस्स,
णत्थि मग्गे विरयस्स—त्ति बेमि ।

१—तेसु (वृ) ।

२—अणारभ-^० (ग, च) ।

३—अन्नेसि (ख, ग, च) ।

४—पत्तेय-साय (क, च, छ) ।

५—पुढो (ख, ग, घ) (अशुद्धम्) ।

६—घोरे (क, ख, ग, छ) ।

७—चयो^० (क, ग, घ, च, छ) ।

८—रूवं-संधिं (क, च, छ) ।

९—एगायण^० (घ) ।

३१—आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गहावंती—

से अप्पं वा, बहुं^१ वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा,
अचित्तमंतं वा,

एतेसु चेव परिग्गहावंती ।

३२—एतदेवेगेसि^२ महब्भयं भवति, लोगवित्तं^३ च णं उवेहाए ।

३३—एए संगे अविजाणतो ।

३४—से 'सुपडिबुद्धं सूवणीयं'ति णच्चा'^४, पुरिसा ! परमचक्खू !
विपरक्कमा^५ ।

३५—एतेसु चेव बंभचेरं—ति बेमि ।

३६—से सुयं च मे, अज्झत्थियं^६ च मे—“बंध-पमोक्खो तुज्झं^७
अज्झत्थेव” ।

३७—एत्थ विरते अणगारे, दीहरायं तितिक्खए ।

पमत्ते बहिया पास, 'अप्पमत्तो परिच्चए'^८ ॥

३८—एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उद्देसो

३९—आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती,

एएसु चेव अपरिग्गहावंती ।

१—बहुय (क, घ, च, छ) ।

२—एयमेगेसि (ख, ग) . एयमेवेगेसि (घ) ।

३—लोग वित्त (ख, ग, छ) ।

४—सुपडिबुद्ध (क, घ, छ, वृ) , सुत अणुविचित्तेति णच्चा, (ज्ञपा) ।

५—विपरक्कम (ख, ग, च) ।

६—अज्झत्थ, (क, ख, ग, घ, च) : अज्झत्थय (क्वचित्)

७—× (ख, ग, घ, छ) ।

८—अप्पमाय सुसिक्खेज्जा (चू) ।

- ४०—सोच्चा वई^१ मेहावी, पंडियाणं गिसामिया ।
समियाए^२ धम्मे, आरिएहिं पवेदिते ॥
- ४१—जहेत्थ मए संधी झोसिए, एवमण्णत्थ संधी दुज्झोसिए
भवति ।
तम्हा वेमि णो णिहेज्ज^३ वीरियं ।
- ४२—जे पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।
जे पुव्वुट्ठाई, पच्छा-णिवाई
जे णो पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई ।
- ४३—सेऽवि तारिसए सिया^४, जे परिण्णाय लोग मणुस्सिओ^५ ।
- ४४—एयं णियाय सुणिणा पवेदितं—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे,
पुच्चावररायं जयमाणे, सया-सीलं संपेहाए,
सुणिया भवे अकामे अकंभे ।
- ४५—इमेणं चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण वज्झओ ?
- ४६—‘जुद्धारिहं खलु दुल्लहं’^६ ।
- ४७—जहेत्थ कुसलेहिं परिन्ना-विवेगे भासिए ।
- ४८—चुए हु बाले ‘गब्भाइसु रज्जइ’^७ ।
- ४९—अस्सिं चयं पव्वुच्चति, रूवंसि वा छणंसि वा ।
- ५०—से हु एगे संविद्धपहे^८ मुणी, अण्णहा लोगमुवेहमाणे ।

१—वति (क, ख, ग,) ; वात (छ) ।

२—समया (घ, च) ।

३—णिहणिज्ज, (ख, ग) निण्हवेज्ज (शु) ।

४—चेव (चू) ।

५—मण्णेसति (चू, क) ; मण्णुसिया (ख, ग, छ) ; मण्णेसति (च) ; मणुस्सिते (चूपा) ।

६—जुद्धारिय च दुल्लह (वृपा) ।

७—गब्भाइ रज्जइ (चूपा) ; गब्भाइसु रिज्जइ (वृ) ।

८—संविद्धमए (चू, वृपा) ; सविद्धपहे (चूपा) ।

- ६३—वयसा वि एगे बुइया कुप्पंति माणवा ।
 ६४—उन्नयमाणे य णरे, महता मोहेण मुज्फति ।
 ६५—संबाहा बहवे भुज्जो-भुज्जो दुरत्तिकमा अजाणतो अपासतो ।
 ६६—एयं ते मा होउ ।
 ६७—एयं कुसलस्स दंसणं ।
 ६८—तद्धिट्ठीए तम्मोत्तीए^१ तप्पुरक्कारे, तस्सन्नी तन्निवेसणे ।
 ६९—जयं-विहारी चित्तणिवाती^२ पंथ-णिज्झाती पलीवाहरे,^३
 पासिय पाणे गच्छेज्जा ।
 ७०—से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे संकुचेमाणे^४ पसारेमाणे
 विणियट्टमाणे संपलिमज्जमाणे^५ ।
 ७१—एगया गुण-समियस्स रीयतो काय-संफास मणुचिन्ना
 एगत्तिया पाणा उद्दयंति ।
 ७२—इहलोग-वेयण-वेज्जावडियं ।
 ७३—जं 'आउट्टि-कयं कम्मं'^६, तं परिन्नाय विवेगमेति ।
 ७४—एवं से अप्पमाणं, विवेगं किट्ठति वेयवी ।
 ७५—से पभूय-दंसी पभूय-परिन्नाणे उवसंते समिए सहिते सयाजए
 दट्ठुं विप्पडिवेदेति अप्पाणं—
 ७६—किमेस जणो करिस्सति ?
 ७७—'एस से परमारामो'^७, जाओ लोगंमि इत्थीओ ।

१—तम्मुत्तिए (क, च) ।

२—चित्तणिघायी (चूपा) ।

३—पलिवाहिरै (क ग) ; पलिवाहरे (च) ; बलि-वाहिरै (खु) ;
 पलिवाहिरै (ख, घ, छ, वृ) ।

४—संकुचं (च) ।

५—संपलिज्जं (चू, ख) ।

६—आउट्टीकम्म (क, च) : आवट्टीकम्मं (घ) ।

७—एसे(सो) परमारामो (क, घ, च) ।

७८—मुणिणा ह एतं पवेदितं, उब्बाहिज्जमाणे गाम-धम्महिं—

७९—अवि णिब्बलासए ।

८०—अवि ओमोयरियं कुज्जा ।

८१—अवि उड्ढं ठाणं ठाइज्जा ।

८२—अवि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

८३—अवि आहारं वोच्छिदेज्जा ।

८४—अवि चए इत्थीसु मणं ।

८५—पुब्बं^१ दंडा पच्छा फासा, पुब्बं फासा पच्छा दंडा ।

८६—इच्चते कलहा संगकरा भवन्ति ।

पडिलेहाए आगमेत्ता

आणवेज्जा अणासेवणाए—त्ति बेमि ।

८७—से णो काहिए णो पासणिए णो संपसारए णो ममाए^२ णो

कय-किरिए वइ-गुत्ते अज्भप्प-संबुडे परिवज्जए सदा पावं ।

८८—एतं मोणं समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

पंचमो उद्देशो

८९—से बेमि—तंजहा

अवि हरए पडिपुन्ने, 'चिट्ठइ समंसि भोमे'^३ ।

उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठति सोयमज्भगए ॥

९०—से पास सच्चतो गुत्ते, पास लोए महेसिणो,

जे य पन्नाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया ।

१—पुब्बि (घ) ।

२—ममायए (छ) ; मामए (शु) ।

३—ममंसि भोमे चिट्ठइ (च) ।

- ९१—सम्ममेयंति पासह^१ ।
- ९२—‘कालस्स कंखाए परिव्वयंति’—त्ति बेमि ।
- ९३—वित्तिगिच्छ^२—समावन्नेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधि ।
- ९४—सिया वेगे अणुगच्छंति, असिया वेगे अणुगच्छंति,
अणुगच्छमाणेहिं अणुगच्छमाणे कहं ण णिव्विज्जे ? ।
- ९५—तमेव सच्चं गीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।
- ९६—सड्ढिस्स णं समणुन्नस्स संपव्वयमाणस्स—
समियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ
समियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ
असमयंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ
असमयंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ
समियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया
होइ उवेहाए ।
असमयंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया
होइ उवेहाए ।
- ९७—उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया—उवेहाहि समियाए,
९८—इच्चेवं तत्थ संघी फोसितो भवति ।
९९—उट्ठियस्स ठियस्स गतिं समणुपासह ।
- १००—एत्थवि बाल-भावे अप्पाणं णो उवदंसेज्जा ।
- १०१—तुमंसि नाम सच्चेव^३, जं ‘हंतव्वं’ ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव, जं ‘अज्जावेयव्वं’ ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव, जं ‘परितावेयव्वं’ ति मन्नसि,

१—पासहा (क, च, छ) ।

२—वित्तिगिच्छ (छ) ; विगिच्छ^० (शु) ।

३—तं चेव (क, घ, च) ।

- ० तुमंसि नाम सच्चैव, जं 'परिघेतव्वं' ० ' ति मन्तसि.
 तुमंसि नाम सच्चैव, जं 'उट्टवेयव्वं' ति मन्तसि ।
 १०२-अंजू चैयं पडिबुद्ध-जीवी, तग्हा ण हंता ण विवायाग ।
 १०३-अणुमंवेयणमप्पाणेणं, जं 'हंतव्वं' ति पाभिपत्त्याग ।
 १०४-जे आया से विन्नाया, जे विन्नाया से आया ।
 जेण विजाणति से आया, तं पडुच्च पडिमंवा ।
 १०५-एस आया-वाटो समियाग-परियाग विवाहिने ।

— ६ ३ —

छट्टो उट्टो

- १०६-अगाणाग एगे सोवट्टाणा, आणाग ~~...~~
 १०७-एतं ते मा हाउ ।
 १०८-एयं कुमलसस दंसणं ।
 १०९-तदिट्टीए तम्मुचीए, तप्पुरकाणे ~~...~~
 ११०-अभिमूय अदक्खू, अणनिभूते ~~...~~
 १११-जे महं अवहिमणे ।
 ११२-पवाएणं पवायं जाणेज्जा
 ११३-सह-सम्मडयाए, पण-उत्तरेण ~~...~~
 ११४-णिट्टेस पातिवट्टेज्जा, ~~...~~

१-एव ज 'परिघेतव्वं' ति मन्तसि
 ज 'उट्टवेयव्वं' ति मन्तसि (न २ न ३, ३, १) ।
 २-चैय (क, ख, ग, च चू. छ) ।
 ३-पडिबुद्ध (न, च चू) ।
 ४-X (ख, ग, घ, च छ) ।
 ५-अह (चू) ।
 ६-मम्मुड(ति)याग (न २ च छ) ।

११५—सुपडिलेहिय^१ सन्वतो सन्वयाए^२ सम्ममेव^३ समभिजाणिया^४ ।

११६—इहारामं परिण्णाय, अल्लीण-गुत्तो परिच्चए ।

णिट्ठियट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि—त्ति बेमि ।

११७—उड्ढं सोत्ता अहे सोत्ता, तिरियं सोत्ता वियाहिया,
एते सोया वियक्खाया, जेहिं संगंति पासहा ॥

११८—‘आवट्ठं तु उवेहाए’^५, ‘एत्थ विरमेज्ज वेयवी’^६ ।

११९—विणएत्तु^७ सोयं णिक्खम्म^८, एसमहं अकम्मा जाणति
पासति ।

१२०—पडिलेहाए णावकंखति, इह आगतिं परिण्णाय

१२१—अच्चेइ जाइ-मरणस्स वट्टमगं^९ वक्खाय-रए^{१०} ।

१२२—सच्चे सरा णियट्ठंति ।

१२३—तक्का जत्थ ण विज्जइ ।

१२४—मई तत्थ ण गाहिया ।

१२५—ओए अप्पत्तिट्ठाणस्स खेयन्ते ।

१२६—से ण दीहे, ण हस्से^{११},

ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरसे, ण परिमण्डले ।

१—^० लेहिय (चू) ।

२—सन्वताए (चू) . सर्वात्मना (वृ) ।

३—^० मेत (चू) ।

४—^० ज्जा (घ) ।

५—आवट्ठमेय तु पेहाए (ख, ग, घ), अट्ठमेय उवेहाए (चू) ।

६—विषेण किट्ठइ वेदवी (चू, वृपा); एत्थ विरमेज्ज वेयवी (चूपा) ।

७—विणएत्ता (चूपा) ।

८—णिक्खम्म(म्मा) (घ, छ) ।

९—वट्टमगं (क) : वट्टमगं (च, छ) ।

१०—वक्खाय^० (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

११—हस्से (क, घ, च); रहस्से (ख); हरस्से (छ) ।

१२७-ण किण्हे. न णीले, ण लोहिए, ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले ।

१२८-ण भुट्ठिभगंधे^१, ण दुरभिगंधे ।

१२९-ण तित्ते, ण कड्डुए, ण कसाए, ण अंबिले, ण महुरे ।

१३०-ण कक्कड्डे^२, ण मउए, ण गरुए, ण लहुए,

ण सीए, ण उण्हे. ण णिद्धे, ण लुक्खे ।

१३१-ण काऊ ।

१३२-ण रूहे ।

१३३-ण संगे ।

१३४-ण डट्ठी, ण पुरिसे, ण अन्नहा ।

१३५-परिण्णे सण्णे^३ ।

१३६-उवमा ण विज्जाए ।

१३७-अरुवी सत्ता ।

१३८-अपयस्स पयं णत्थि ।

१३९-से ण सट्ठे, ण रूत्ते, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चेताव ।

—त्ति बेमि ।

१-सुरहि (मि) (क, ख, ग) ।

२-कक्कडे (घ, छ) ।

३-सव्वमो (च्चु) ; × (घ) ।

छट्ठं अज्जयणं

धुयं

पढमो उद्देशो

- १-ओवुज्जमाणे इह माणवेसु, आघाइ^१ से णरे ।
- २-जस्सिमाओ जाईओ सब्बओ सुपडिलेहियाओ भवन्ति ।
अक्खाइ से णायमणेलिसं ।
- ३-से किट्ठति तेसि समुट्ठियाणं णिक्खित्त-दंडाणं समाहियाणं
पन्नाणमंताणं इह मुत्ति-मग्गं ।
- ४-एवं पेगे महावीरा विप्परक्कमन्ति ।
- ५-पासह एगे ऽवसीयमाणे^२ अणत्त-पन्ने ।
- ६-से बेमि—से जहा वि कुम्भे हरए विणिविट्ठ-चित्ते, पच्छन्न-
पलासे, उम्मग्गं^३ से णो लहइ ।
- ७-भंजगा इव सन्निवेसं णो चयन्ति,
एवं पेगे^४—
'अणेग-रूवेहिं कुलेहिं'^५ जाया,
'रूवेहिं सत्ता'^६ कलुणं थणन्ति,
णियाणओ ते ण लभन्ति मोक्खं ।

१-अक्खाति (क, ख, ग, घ) ; अग्धाति (चू) ।

२-वितीय^० (क, ख, ग, घ, चू) ।

३-उम्मग्ग (क, घ, छ) ।

४-वेगे (च) ।

५-अणेग गोतेसु कुलेसु (चू) ।

६-रूवेसु गिह्वा (चू) ।

८—अह पास तेहिं^१, कुलेहिं^२ आयत्ताए जाया—

गंडी अदुवा कोठी^३, रायंसी अन्नमारियं ।
 काणियं भिमियं चेर, कुणियं खुज्जियं तथा ॥
 उदरिं पास मूर्यं^४ च, सुणियं च गिलासिणिं ।
 वेवइं^५ पीढ-सपिं च, सिलिवयं महु-महणिं^६ ॥
 सोलस एते रोगा, अन्नखाया अणुपुञ्जसो ।
 अह णं फूसंति आयंका, फासा य असमंजसो ॥
 मरणं तेसिं संपेहाए^७, उववायं चयणं च णच्चा ।
 परिपागं^८ च संपेहाए, तं सुणेह जहा-तहा ॥

९—संति पाणा अधा तमंसि^{१०} वियाहिया ।

१०—तामेव सइं असइ अतिअच्च^{११} उच्चावय-फासे
 पडिसवेदेति^{१२} ।

११—बुद्धेहिं एयं पवेदितं ।

१२—संति पाणा वासगा, रसगा, उदए उदय-चरा, आगास-
 गामिणो ।

१३—पाणा पाणे किलेसंति ।

१४—पास लोए महवभयं ।

१—तेहिं तेहिं (चू) ।

२—X (चू) ।

३—कोठी (ग, छ) ।

४—मूर्यं (क, घ, चू) ।

५—वेवय (क, ख, ग, च), वेवइयं (घ) ।

६—सिलेवइं (घ, च) ।

७—सुणेहण (छ) ।

८—सपेहाए (क, घ, च) ; पेहाए (ख, ग) ।

९—परियाग (ख, ग, घ) (अशुद्ध) ; पलिपाग (चू) ।

१०—तमंसि (क, घ) ।

११—अतिगच्च (क) ।

१२—^० वेदेति (क, ख, घ, च, छ) ।

- १५—बहु-दुःखा हु जंतवो ।
 १६—सत्ता कामेहि^१ माणवा ।
 १७—अत्रलेण वहं गच्छंति, सरीरेण पभंगुरेण ।
 १८—अट्टे से बहु-दुःखे, इति वाले पकुच्चइ ।
 १९—एते रोगे बहू णच्चा, आउरा परितावए ।
 २०—“णालं पास” ।
 २१—“अलं तवेएहि” ।
 २२—एयं पास मुणी ! महब्भयं ।
 २३—णातिवाएज्ज कंचणं ।
 २४—आयाण भो ! सुस्सूस भो ! ‘धूय-वादं पवेदइस्सामि’^२ ।
 २५—इह खलु अत्तत्ताए तेहिं-तेहिं कुलेहि अभिसेएण^३ अभिसंभूता,
 अभिसंजाता, अभिणिव्वट्टा, अभिसंबुड्ढा^४, अभिसंबुद्धा
 अभिणिक्खंता, अणुपुच्चेण महामुणी ।
 २६—तं परक्कमंतं परिदेवमाणा, “मा णो चयाहि”^५ इति ते वदंति ।
 छंदोवणीया अज्झोववन्ना, अक्कंद-कारी जणगा रूवंति ॥
 २७—अतारिसे मुणी णो^६ ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा ।
 २८—सरण तत्थ णो समेति । किह णाम से तत्थ रमति ?
 २९—एयं^७ णाणं सया समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१—कामेसु (च) ।

२—नागार्जुनीया :—धूयो वाय पवेयइस्सामि. (चू) ; धूतोवायं पवेयति (वृ) ।

३—X (घ, च) ।

४—X (क, छ) ; ° सवड्ढा (ख, ग) ; अभिवुद्धा (घ) ।

५—जहाहि (चू) ।

६—X (क, घ, च, छ) ।

७—एवं (च) (अशुद्धं) ।

वीओ उद्देशो

- ३०—आतुरं लोय मायाए, 'चइत्ता पुञ्ज-संजोगं'^१
 हिच्चा^२ उवसमं वसित्ता वंभचेरम्मि, वसु वा अणुवसु वा
 जाणित्तु धम्मं अहा^३-त्तहा, 'अहेगे तमचाइ कुसीला ।
- ३१—वत्थं पडिग्गहं कंवलं पाय-पुंछणं विउसिज्जा^४ ।
- ३२—अणुपुब्बेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए ।
- ३३—कामे ममायमाणस्स, इयाणि वा मुहुत्ते^५ वा
 अपरि-माणाए भेदे ।
- ३४—एवं से अंतराइएहि कामेहि आकेवलिएहि अवितिण्णा^६ चेए'^७ ।
- ३५—'अहेगे धम्म मादाय'^८ 'आयाण-प्पभिइं सुपणिहिए'^९ चरे'^{१०} ।
- ३६—अपलीयमाणे'^{११} दढे ।
- ३७—सच्चं गेहि'^{१२} परिणाय, एस पणए महा-सुणी ।
- ३८—अइअच्च सच्चतो संगं, "ण महं अत्थित्ति इति एगोहमंसि ।"

१—जहिता पुत्रमायतण (चू) ।

२—हिच्चा इह (चू) ।

३—जहा (ख) ।

४—विओ^० (छ) ।

५—मुहुत्तेण (ख, ग, च, छ, वृ) ।

६—अवतिन्ना (ग, छ) ।

७—एताणि विवज्जतेण पडिज्जति अत्थआसावातो—अहेगे त चाई सुसीला,
 वत्थ पडिग्गहं कंवल पाय-पुंछण विउसिज्जा, अणुपुब्बेण अहियासमाणा परीसहे
 दुरहियासओ, कामे ममायमाणस्स इदाणि वा मुहुत्ते वा अपरिमाणाए भेदे ।
 एव से अंतराइएहि कामेहि आकेवलिएहि वितिन्ना चेए (चू) ।

८—सहिए धम्ममायाय (चुपा) !

९—^० पभित्तिमु पणि^० (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।

१०—उवसेसमेव चर (चू) ।

११—अप्प^० (क, ग, घ, छ) ।

१२—गिहि (ख, घ) ; गघ (थ) (च) ।

- ३९—जयमाणे एत्थ विरते अणगारे सव्वओ मुंडे रीयंते^१ ।
 ४०—जे अचले परिवुसिए^२ संचिक्खति^३ ओमोयरियाए ।
 ४१—से अक्खुट्ठे व^४ हए व लूसिए^५ वा ।
 ४२—पलियं पगंथे अदुवा पगंथे^६ ।
 ४३—अतहेहि सद्-फासेहि, इति संखाए ।
 ४४—एगतरे अन्नयरे अभिन्नाय, तित्तिक्खमाणे परिच्चए ।
 ४५—जे य हिरी, जे य अहिरीमणा^७ ।
 ४६—चिच्चा सच्चं विसोत्तियं, 'फासे-फासे'^८ समिय-दंसणे ।
 ४७—एते भो ! णगिणा बुत्ता, जे लोगंसि अणागमण-धम्मिणो ।
 ४८—“अणाए मामगं धम्मं” ।
 ४९—एस उत्तर-वादे, इह माणवाणं वियाहिते ।
 ५०—एत्थोवरए तं भोसमाणे
 ५१—आयाणिज्जं परिणाय, परियाएण विगिंचइ ।
 ५२—इहमेगेसि एग-चरिया होति ।
 ५३—तत्थि'यरा इयरेहि कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए ।
 ५४—से मेहावी परिच्चए ।
 ५५—सुब्भि अदुवा दुब्भि ।
 ५६—अदुवा तत्थ भेरवा ।

१—रीयते (क, घ, च) ।

२—^० जुसिते (छ) ; × (चू) ।

३—^० चिट्ठ^० (छ) ।

४—वा (ख, च, छ) ।

५—लुचिए (ख, ग, छ, वृ) ।

६—पकत्थ (क) ; पकये (ख, ग, च) ; पगत्य (छ) ।

७—^० माणे (णा) (ख, घ, च, छ) ।

८—फासे (ख, घ) ; सफासे फासे (च) ।

५७—पाणा पाणे किल्लेसंति ।

५८—ते फासे पुट्ठो धीरो^१ अहियासेज्जामि ।

—त्ति बेमि ।

तइओ उद्देसो

५९—‘एयं खु मुणी’^२ आयाणं सया सुअक्खाय-धम्मो विधूत-कप्पे
णिज्झोसइता^३ ।

६०—जे अचैले परिवुसिए, तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइ—
परिजुण्णे^४ मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं
जाइस्सामि, संधिस्सामि, सीवीस्सामि, उक्कसिस्सामि,
वोक्कसिस्सामि, परिहिस्सामि^५, पाउणिस्सामि ।

६१—अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति,
सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा
फुंसति ।

६२—एगयरे अन्नयरे विरूव-रूवे फासे अहियासेति अचैले ।

६३—‘लाघवं आगममाणे’^६ ।

६४—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

६५—जहे’यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा ‘सव्वतो
सव्वत्ताए’^७ सम्मत्तमेव समभिजाणिया^८ ।

१—वीरो (रे) (क, च) ।

२—एस मुणी (चु) ।

३—^० सइत्ता (क, ख, ग, छ) ।

४—^० जिण्णे (घ, ङ) ।

५—× (क, घ, च) ।

६—नागार्जुनीया .—एवं खलु से उवगरण-लावविय तव कम्मक्खयकारण करैइ (वृ, वृ)

७—नागार्जुनीया :—सव्व सव्वत्ताए ।

८—^० जाणित्ता (ख, ग, च) ।

- ६६—एवं तेसिं महावीराणं चिरराइं पुव्वाइं वासाणि रीयमाणानं
दवियाणं पास अहियासियं ।
- ६७—आगय-पन्नाणाणं किंसा बाहा^१ भवन्ति, पयणुए य मंस-
सोणिए ।
- ६८—विस्सेणिं कट्टु, परिण्णाए^२ ।
- ६९—एस तिन्ने मुत्ते विरए वियाहिए—त्ति वेमि ।
- ७०—विरयं भिक्खुं रीयंतं, चिर-रातोसियं, अरती तत्थ किं
विधारए ?
- ७१—संघेमाणे^३ समुट्टिए^४ ।
- ७२—जहा से दीवे असंदीणे, एवं से धम्मे आयरिय-पदेसिए^५ ।
- ७३—ते अणवकखेमाणा^६ अणतिवाएमाणा^७ दइया^८
मेहाविणो पंडिया ।
- ७४—एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे जहा से दिया-पोय^९ ।
- ७५—एवं ते सिस्सा दिया य राओ य अणुपुव्वेण वाइय ।
—त्ति वेमि ।

१-बाधा (क, च) ; वाहवो (छ) ।

२-^० ण्णाय (ख, ग, छ) ।

३-संघणाए (चू) ; संघेमाणे (चुपा) ।

४-^० ड्वाय (ख, ग, घ, च, छ) ।

५-आरिय-वेसिए (क, च, चू) ।

६-ते अवयमाणा भावसोया (चू) ;

ते अणवकखेमाणा (चुपा) ।

७-पाणे अणति^० (ख, ग, छ, वृ) ;

अणतिवरतेमाणा जाव अपरिगिण्हेमाणा (चू) ।

८-चियत्ता (चू) ।

९-दिय^० (ग) ।

चउत्थो उद्देशो

७६-एवं ते 'सिस्सा दिया य राओ य अणुपुब्बेण वाइया' तेहि^१
महावीरेहि पण्णाणमंतेहि ।

७७-तेसिति^२ पण्णाण मुवलब्भ^३ हिच्चा उवसमं 'फारुसिय'^४
समादियंति' ।

७८-वसित्ता बंभचेरंसि आणं'तं णो' त्ति मण्णमाणा,

७९-अग्घायं^५ तु सोच्चा णिसम्म 'समणुन्ना जीविस्सामो' एगे
णिकक्खम्म ते—

असंभवन्ता विडज्जमाणा, कामेहिं गिद्धा अज्जभोववण्णा ।
समाहि माघाय मभोसयन्ता, सत्थारमेउ फरुसं वदंति ॥

८०-सीलमन्ता उवसन्ता, संखाए रीयमाणा ।

“असीला” अणुवयमाणा ।

८१-वित्तिया मंदस्स बालया ।

८२-णियट्टमाणा वेगे आयार-नोयरमाइक्खंति, णाण-भट्ठा ।
दंसण-लूसिणो ।

८३-णममाणा एगे जीवितं विप्परिणामेति ।

८४-पुट्ठा वेगे णियट्टंति, जीवियस्सेव कारणा^६ ।

८५-णिकखंतं पि तेसि दुन्निक्खंतं भवति ।

८६-बाल-वयणिज्जा हु ते नरा, पुणो-पुणो जातिं^७ पक्कपेति ।

१-तेसि महावीराण (चू) ।

२-तेसिति (क, च), तेमिति (छ) ।

३-° पइलब्भ (चू) ।

४-अहेगे फारुसिय समारभति (चूपा); अहेगे फारुसिय समारहति (वृषा) ।

५-आघायं (क, ख, घ, च) ।

६-कारणा (क, घ, छ) ।

७-गव्माइ (च) ।

८७—अहे संभवंता विहायमाणा ।

अहमंसी^१ विउक्कसे

८८—उदासीणे^२ फरुसं वदंति ।

८९—पलियं पगंथे अदुवा पगंथे, अतहेहि ।

९०—तं मेहावी जाणिज्जा धम्मं ।

९१—अहम्मट्ठी तुमंसि णाम बाले, आरंभट्ठी, अणुवयमाणे,
हण^३ पाणे, घायमाणे, हणओयावि समणुजाणमाणे,
घोरे धम्मे उदीरिए, उवेहइ णं अणाणाए ।

९२—एस विसण्णे वित्ते वियाहिते--त्ति बेमि ।

९३—'किमणेण भो ! जणेण करिस्सामि'त्ति मण्णमाणा^४ 'एवं
पे'गे वइत्ता'^५,

मातरं पितरं हिच्चा, णातओ य परिग्गहं ।

'वीरायमाणा^६ समुट्ठाए, अविहिंसा सुच्चया दंता'^७ ॥

९४—अहेगे^८ पस्स दीणे उप्पइए पडिंवयमाणे^९ ।

९५—वसट्ठा कायरा जणा लूसगा भवंति ।

१—^० मंसीत्ति (ख, ग, च) ।

२—उदासीणा (छ) ।

३—हयमाणे (छ) ।

४—मण्णमाणे (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५—एवमेगे विदित्ता (क) ; एव एगे विभत्ता (चूपा) . ^० विदित्ता (छ) ।

६—^० माणे (क, घ, च, छ) ;

७—नागार्जुनीया .—समणा भविस्सामो अणगारा अकिच्चणा अपुत्ता अपसुया अविहिंसगा
सुच्चया दत्ता परदत्तभोइणो पावं कम्म न करिस्सामो समुट्ठाए (च, वृ) ।

८—x (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

९—पडिंयमाणे (च, छ) ।

९६—अहमेगेसिं सिलोए^१ पावए भवइ, “से समण-विब्भते
समण-विब्भते”^२ ।

९७—पासहे^३गे^३ समन्नागएहिं असमण्णागए^४, णममाणेहिं
अणममाणे,
विरतेहिं अविरते, दविएहिं अदविए ।

९८—अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया
परक्कमेज्जासि^५ । —त्ति वेमि ।

पंचमो उद्देशो

१९—से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा, गामेसु वा गामंतरेसु वा,
नगरेसु वा नगरंतरेसु वा, जणवएसु वा जणवयंतरेसु^६ वा,
संते^७गइया जणा लूसगा भवंति, अदुवा—
फासा फूसंति ते फासे, पुट्ठो वीरो^८ ऽहियासए ।

१००—ओए समिय-दंसणे ।

१०१—दयं लोगस्स जाणित्ता, पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं,
आइक्खे^९ विभए किट्ठे वेयवी ।

१—लोए (च, छ) ।

२—समण वितते (क, ए, चू), समण भवित्ता समण विब्भते (ख, ग) .
समणे भविन्ना विब्भते विब्भते (छ) ।

३—पास एगे, (क), पासवेगे (च) ।

४—सह असमण्णागए (ख, ग, छ) ।

५—सव्वओ परिव्वएज्जासि (चू) ।

६—जणवयतरेसु वा जाव रायहाणी सु वा रायहाणी अतरेसु वा गामणयंतरे वा गाम
जणवयतरे वा णगरजणवयतरे वा जाव गामरायहाणी अंतरे वा उज्जाणे वा
उज्जागतरे वा विहारभुमी गयस्स वा गच्छतस्स वा अट्ठाणपडिवन्नस्स अछंतस्स
वा जाव काउसंग ठाणं वा ठियस्स (चू, वृ) ।

७—धीरो (च) ।

८—नागार्जुनीया .—‘जे खलु समणे बहुस्सुए वव्भागमे आहरणहेउकुसले धम्मकहालद्धि-
संपन्ने खेत्तं काल पुरिस समासज्ज केऽयं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसपन्तो ? एवं गुण
जाइए पमु धम्मस्स आववितए’ ।

- १०२—से उट्टिएसु वा अणुट्टिएसु^१ वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—
संति, विरतिं, उवसमं, णिव्वाणं^२, सोयवियं^३, अज्जवियं,
मद्वियं, लाघवियं, अणइवत्तियं^४ ।
- १०३—सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं
सत्ताणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खेज्जा ।
- १०४—अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे—
णो अत्ताणं आसाएज्जा, णो परं आसाएज्जा,
णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाएज्जा ।
- १०५—से अणासादए अणासादमाणे वज्जमाणाणं पाणाणं भूयाणं
जीवाणं सत्ताणं, जहा से दीव्हे असंदीणे,
एवं से—भवइ सरणं महासुणी ।
- १०६—एवं से उट्टिए ठियप्पा^५, अणिहे अचले चले
अवहि-लेस्से परिव्वए ।
- १०७—संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे ।
- १०८—तम्हा संगं त्ति पासह ।
- १०९—गंधेहिं गट्ठिया^६ णरा,
विसण्णा काम-विप्पिया^७ ।
- ११०—‘तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसेज्जा’^८ ।

१—अणुट्टिएसु वा जाव सोवट्टिएसु वा (चू) ।

२—णिव्वाण (क, च) ।

३—सोय (ख, ग) ।

४—अणत्तिवात्तिय (चू) ।

५—उट्टिएत्तप्पा (चू, च) ।

६—गहिता (छ) ।

७—कामक्कंता (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।

८—जसि इमे लूसिणो णो परिवित्तसति (चू), तम्हा लूहाओ णो परिवित्त सिज्जा (चुपा) ।

१११-जस्सि^१मे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवन्ति,
'जेसि^२मे लूसिणो णो परिवित्तसन्ति'^१, से वन्ता कोहं च माणं
च मायं च लोभं च ।

११२-एस तुट्टे^२ वियाहिते—त्ति बेमि ।

११३-कायस्स विओवाए^३, एस संगाम-सीसे वियाहिए ।
से हु पारंगमे मुणी, अविहम्ममाणे^४ फलगावयट्ठि^५,
कालोवणीते कंखेज्जकालं, जाव सरीर-भेउ ।

—त्ति बेमि ।

१—× (चू) ; जस्सि (च, छ) ।

२—तिउट्टे (चू) ।

३—विवाघाए (ख, ग), विघाए (छ), विवायाए (च), व्याघात (विवाघाए) (वृ) ।

४—^० हन्त ^० (क) ।

५—^० तट्ठि (क, छ) ।

अट्टमं अज्जयणं

विमोक्खो

पढमो उद्देशो

१—से बेमि—समणुन्नस्स वा असमणुन्नस्स^१ वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे^२—त्ति बेमि ।

२—धुवं चयेयं जाणेज्जा—असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-पुंछणं वा, लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, पंथं विउत्ता^३ विउकम्म विभत्तं धम्मं भोसेमाणे^४ समेमाणे पलेमाणे^५, पाएज्ज वा, णिमंतेज्ज वा, कुज्जा वेयावडियं-परं अणाढायमाणे,—त्ति बेमि ।

३—इहमेगेसिं आयार-नोयरे णो सुणिसंते भवति ।
ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा 'हण पागे' घायमाणा, हणतो यावि समणुजाणमाणा ।

४—अट्टुवा अदिन्नमाइयंति ।

१—अमणु^० (क, ख, ग) ।

२—वियत्ता (क, छ) ; विवत्ताण (ख, ग) . विइयत्ता, (च) ;
विवत्तण (झ) (चिन्तनीय) ।

३—जोसे^० (च) ।

४—भलेमाणा (घ) ; बलेमाणे (च) ; चलेमाणे (छ) ; मालेमाणा (झ) ।

५—अदुवा वायाओ विउंजंति^१, तंजहा-
 अत्थि लोए, णत्थि लोए,
 धुवे लोए, अधुवे लोए,
 साइए^२ लोए, अणाइए^३ लोए,
 स-पज्जवसिते लोए, अपज्जवसिते लोए,
 सुकडे^४ति वा दुक्कडे^४ति वा,
 कट्ठाणे^५ति वा पावे^५ति वा,
 साहु^५ति वा असाहु^५ति वा,
 सिद्धीति वा, असिद्धीति वा,
 णिरए^५ति वा, अणिरए^५ति वा ।

६—जमिणं विप्पड्विण्णा मामगं धम्मं पन्नवेमाणा ।

७—एत्थवि जाणह^६ अकस्मात्^६ ।

८—‘एवं तेसिं णो सुअक्खाए, णो सुपन्नत्ते धम्मं भवति’^७ ।

९—से जहे^७यं भगवया पवेदितं आसु-पण्णेण जाणया पासया ।

१०—अदुवा गुत्ती बओ-नोयरस्स—त्ति वेमि ।

११—सव्वत्थ सम्मयं पावं ।

१२—तमेव उवाइकम्म ।

१३—एस महं विवेगे वियाहिते ।

१४—गामे वा अदुवा रण्णे, णेव गामे णेव रण्णे, धरममायाणह—
 पवेदितं माहणेण मईमया ।

१—विप्पउजति (क, ख, ग, च, छ) ।

२—साइ (घ) ।

३—अणाइ (घ) ।

४—पावड (क); पावए (घ, च, छ) ।

५—जाण (क, च), जाणे (घ) ।

६—अकस्मा (चू) ।

७—न एस धम्मं सुयक्खाए मुपन्नत्ते भवड (चू) ।

- १५—जामा तिण्णि उदाहिया^१, जेसु इमे आरिया^२ संबुज्झमाणा समुद्धिया ।
- १६—जे णिव्वुया^३, पावेहिं कम्ममेहिं, अणियाणा ते वियाहिया ।
- १७—उड्डं अहं तिरियं दिसासु, सव्वतो सव्वावंति च णं पडियक्क^४ जीवेहिं^५ कम्म-समारभे णं ।
- १८—तं परिणाय मेहावी—णेव सयं एतेहिं काएहि दंडं समारंभेज्जा, णेव'ण्णेहि एतेहि काएहि दंडं समारंभावेज्जा, ने'वन्ने एतेहिं काएहि दंडं समारंभंते वि समणुजाणेज्जा ।
- १९—जेवन्ने एतेहि काएहिं दंडं समारंभंति, तेसि पि वयं लज्जामो ।
- २०—तं परिणाय मेहावी—तं वा दंडं, अण्णं वा दंडं, णो दंडंभी दंडं समारंभेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

बीओ उद्देशो

- २१—से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा, सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-गुहंसि वा, खख-मूलसि वा, कुंभारायाणंसि वा, हुरत्था वा कहिं चि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती बूया—
आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्टाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा, वत्थं वा, पडिग्गहं वा, कंबलं वा, पाय-

१—उदाहडा (घ, छ, चू) . उदाहया (ख, ग) ।

२—आयरिया (घ, छ) ।

३—निव्वुडा (चू) ।

४—पाडेक्क (क) ; पाडियक्क (घ, चू) ।

५—दड समारभते (चू) ।

पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं^१ अभिहडं आहट्टुं^२
'चेतेमि'^३, आवसहं^४ वा समुस्सिणोमि ।
से भुंजह वसह ।

२२—आउसंतो समणा भिक्खू तं गाहावतिं समणसं सवयसं
पडियाइक्खे—

आउसंतो गाहावती ! णो खलु ते वयणं आढामि, णो खलु
ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्टाए असणं वा पाणं
वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा
पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं, समारब्भ
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु
चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि ।

से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ।

२३—से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, ° चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा,
तुयट्ठेज्ज वा,

सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरि-नुहंसि वा, रुक्ख-
मूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा °, हुरत्था वा कर्हिचि
विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती आयगयाए
पेहाए, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा
पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं
सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं,

१—° मिट्ठ (ख, ग, घ) ।

२—आफुड (च) ।

३—वेतेमि'त्ति केयि भणति करेमि, त तु ण युज्जति (चू) ।

४—आवसधं (ख, ग) . आवसय (छ) ।

अणिसट्ठं, अभिहडं आहट्टु चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति^१,
तं भिक्खुं परिघासेउं ।

२४—तं च भिक्खू जाणेज्जा—सह-सम्मइयाए^२, पर-वागरणेणं,
अण्णेसि वा सोच्चा^३—अयं खलु गाहावई मम अट्टाए असणं
वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा
कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं,
° समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्ज अणिसट्ठं
अभिहडं आहट्टु ° चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति^४ ।

तं च भिक्खू संपडिलेहाए^५ आंगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए^६
—त्ति वेमि ।

२५—भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा
फुसंति—

‘से हंता हणह, खणह, छिंदह, दहह पचह, आलुंपह,
विलुंपह, सहसाकारेह^७, विप्परामुसह^८’—ते फासे ‘धीरो
पुट्ठो^९’ अहियासए ।

२६—अदुवा आयार-गोयरमाइक्खे ।

तत्तिकयाणमणेलिसं ।

२७—अदुवा वइ-गुत्तीए^१ गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए
आयगुत्ते ।

१-° स्सिणोति (क) ।

२-सम्मू ° (क, घ, च, छ) ।

३-अतिए सोच्चा (ख) ।

४-° स्सिणोति (क) ।

५-पडिलेहाए (ख, ग, घ) ।

६-° सेवणयाए (घ) ।

७-सहसककारेह (क) ।

८-पुट्ठो धीरो (ख, ग, घ) ; पुट्ठो वीरो (घ) ; वीरो पुट्ठो (च) ।

९-° गुत्तीओ (ख, ग, घ) ।

२८—बुद्धेहिं एयं पवेदितं—

से समणुन्ने असमणुन्नस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, नो पाएज्जा, नो निमंतेज्जा, नो कुज्जा वेयावाडियं-परं आढायमाणे^१—त्ति बेमि ।

२९—धम्ममायाणह, पवेइयं माहणेण मत्तिमया—

समणुन्ने संमणुन्नस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा, वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा, पाएज्जा, णिमंतेज्जा, कुज्जा वेयावडियं-परं आढायमाणे^२—त्ति बेमि ।

तइओ उइसो

३०—मज्झिमेणं^३ वयसा त्रिं एगे, संबुज्झमाणा समुट्ठिता ।

३१—‘सोच्चा वई मेहावी’^४, पंडियाणं निसामिया ।

३२—समियाए^५ धम्मे, आरिएहिं^६ पवेदिते ।

३३—ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो
‘परिग्गहावंती सव्वावंती’^७ च णं लोगंसि ।

३४—णिहाय दंडं पाणेहिं,

पावं कम्मं अकुव्वमाणे; एस महं अगंथे वियाहिए ।

१—^० मीणे (क, च) ।

२—^० मीणे (क, च) ।

३—मज्झ० (ख) ।

४—मिह एगे (घ) ।

५—सोच्चा मेहावी वयण (क, ख ग, घ, छ), सोच्चा मेहावी ण वयणं (च) ।

६—समयाए (क) ।

७—आरिएहिं (घ, छ) ।

८—^० वति सव्वावति (ख, ग, घ, च, छ) ।

- ३५—ओए जुतिमस्स^१ खेयन्ने उववायं^२ चवणं^३ च णच्चा ।
- ३६—आहारोवचया देहा, परिसह-पभंगुरा ।
- ३७—पासहे^४गे सन्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं ।
- ३८—ओए दयं दयइ ।
- ३९—जे सन्निहाणं^५-सत्थस्स खेयन्ने, से भिक्खू कालण्णे बलण्णे
मायण्णे खणण्णे विणयण्णे समयण्णे परिग्गहं अममायमाणे
काले'णुट्ठाई अपडिन्ने ।
- ४०—दुहओ छेत्ता नियाइ ।
- ४१—तं भिक्खुं सीयफास-परिवेवमाण गायं उवसंकमित्तु गाहावई
बूया—
आउसंतो समणा ! णो^६ खलु ते गाम-धम्ममा उव्वाहंति ?
आउसंतो गाहावई ! णो^६ खलु मम गाम-धम्ममा उव्वाहंति ।
सीयफासं^७ णो खलु संचाएमि अहियासित्तए ।
णो खलु मे कप्पति-अगणि-कायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए
वा, कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा अण्णेसिं वा
वयणाओ ।
- ४२—सिया से एवं वदंतस्स परो अगणि-कायं उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता
कायं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए
—त्ति वेमि ।

१—जुइमंतस्स (ख, ग, च) ; अहवा जुत्तिम (चू) ।

२—ओवाय (क, घ) ।

३—चयणं (घ, च) ।

४—सन्निहाणस्स (चू) ।

५—X (चू) ।

६—अप्यं (चू) ।

७—° फासं च (क, ख, च) ।

चउत्थो उद्देशो

- ४३-जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते' पाय-चउत्थेहिं, तस्स णं
णो एवं भवति—चउत्थं वत्थं जाइस्सामि ।
- ४४-से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।
- ४५-अहा-परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।
- ४६-णो धोएज्जा^३, णो राएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं
धारेज्जा ।
- ४७-अपलिउंचमाणे^३, गामंतरेसु ।
- ४८-ओमचेलिए^४ ।
- ४९-एयं खु वत्थ-धारिस्स सामगियं ।
- ५०-अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे
पडिवन्ने, अहा-परिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहा-
परिजुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—
- ५१-अदुवा संतरुत्तरे (अदुवा ओमचले ?) ।
- ५२-अदुवा एग-साडे ।
- ५३-‘अदुवा अचले’^५ ।
- ५४-लाघवियं आगममाणे ।
- ५५-तवे से अभिसमन्नागए भवति ।
- ५६-जमे’यं^६ भगवया पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सब्वतो
सव्वत्ताए^७ सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१-° उसिते (घ, छ) ।

२-धावेज्जा (ग) ; धाएज्जा (घ) ।

३-° ओवमाणे (ख, च, छ) ।

४-अवम ° (क, ख, ग) ।

५-× (च्चु) ।

६-जहेयं (घ) ।

७-सव्वयाए (घ) ; सव्वताए (च) ; आवट्टे (ख, ग) ।

- ५७—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—‘पुट्ठो खलु अहमंसि’, नाल-
महमंसि सीय-फासं अहियासित्तए,
से वसुमं सव्व-समन्नागय-पन्नाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए
आउट्टे ।
- ५८—तवस्सिणो हु तं सेयं, जमेगे^१ विहमाइए^२,
५९—तत्थावि तस्स काल-परियाए,
६०—से वि तत्थ विअंति-कारिए ।
६१—इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं^३, आणु-
गामियं
- त्ति वेमि ।

पंचमो उद्देशो

- ६२—जे भिक्खू दोहि वत्थेहिं परिवुसिते पायतइएहिं, तस्सणं णो
एवं भवति—
तइयं वत्थं जाइस्सामि ।
- ६३—से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।
६४—^० अहा परिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।
६५—णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ।
६६—अपलिउंचमाणे गामंतरैसु ।
६७—ओमचेलिए^० ।
६८—एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं ।

१—जसेगे (क, घ, च) ।

२—वेहसादिए (छ) ।

३—निस्सेसं (ख, ग, घ, च) ; निस्सेसिय (च) ।

६९—अहं पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिबन्ते, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्टवेज्जा, अहा परिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्टवेत्ता ।

७०—अदुवा एगसाडे ।

७१—अदुवा अचेले ।

७२—लाघवियं आगममाणे ।

७३—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

७४—जमेयं^१ भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

७५—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—पुट्ठो अबलो अहमंसि, नालमहमंसि गिहंतर-संकमणं 'भिक्खायरिय-गमणाए'^२ *सि एवं वदंतस्स परो अभिहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा,
से पुव्वामेव^३ आलोएज्जा आउसंतो ! गाहावती ! णो खलु मे कप्पइ 'अभिहडे असणेण'^४ वा पाणेणवा खाइमेण वा साइमेण वा भोत्तए^५ वा, पायए^६ वा, अन्ने वा एयप्पगारे^७ *!^८

१—जहेय (घ, छ) ।

२—भिक्खायरिय-गमणाए (क, घ, च, छ) ।

३—पुव्व^० (ख, ग, घ) ।

४—अभिहडं असण (ख, ग, च) ।

५—भोइत्तए (ख, ग) ।

६—पायत्तए (ख), पित्तए (घ), पातुए (छ) : पात्तए (च) ।

७—तहप्पगारे (छ) ।

८—१. त भिक्खु केइ गाहावई ! उवसंकमित्तु द्वाया—आउसतो समणा ! अहन्नं तव अट्टाए असण वा (४) अभिहड दलामि, से पुव्वामेव जाणेज्जा—आउसंतो-गाहावई ! जन्न तुम मम अट्टाए असणं (४) अभिहडं चेतिसि, णो य खलु मे कप्पइ एयप्पगारं असण वा (४) भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे ! (वृषा) ।

७६—जस्स णं भिक्खुस्स अथं पगप्पे—

अहं च खलु पडिण्णत्तो अपडिण्णत्तेहिं, गिलाणो अगिलाणेहिं,
अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि ।
अहं वा वि खलु अपडिण्णत्तो पडिण्णत्तस्स, अगिलाणो
गिलाणस्स, अभिकंख साहम्मिअस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए^१ ।

७७—आहट्टु पइण्णं^२ आणक्खेस्सामि,^३ आहडं च सातिज्जिस्सामि,
आहट्टु पइण्णं आणक्खेस्सामि, आहडं च णो
सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि,
आहडं च सातिज्जिस्सामि,
आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो
सातिज्जिस्सामि ।

७८—*लाघवियं आगममाणे ।

७९—तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

८०—जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सब्वतो सब्वत्ताए
सम्मत्त मेव समभिजाणिया* ।^४

८१—एवं से अहा—किट्टियमेव धम्मं समहिजाणमाणे, संते विरते
सुसमाहित-लेसे ।

८२—तत्थावि तस्स काल-परियाए ।

८३—से तत्थ विअंति-कारए ।

८४—इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं,
आणुगामियं^५ । —त्ति बेमि ।

१—करणयाए (क, च) ।

२—चूर्णिवृत्त्यनुसारेण स्वीकृतोऽत्र पाठ (सर्वत्र) ।

३—आणिक्खि^० (ख, ग) ; अणिक्खि^० (च) ।

४—चिह्नान्तर्वर्ती पाठः चूर्णो वृत्तौ च समस्ति, प्रतीषु नोपलभ्यते । चूर्णनुसारे णाज्जं
पाठः स्वीकृतः, वृत्तौ समभिजाणमाणे एतत्पश्चात् स्वीकृतोऽस्ति ।

५—अणु^० (क, ख, ग, च, छ) ।

छट्ठो उद्देशो

८५—जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिव्रुसिते पायविइएणं, तस्स णो
एवं भवइ—

विइयं वत्थं जाइस्सामि ।

८६—से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा ।

८७—अहापरिग्गहियं वत्थं धारेज्जा ।

८८—^० णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोयरत्तं वत्थं धारेज्जा ।

८९—अपलिउंचमाणे गामंतरैसु ।

९०—ओमचेलिए ।

९१—एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं ।

९२—अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते ^०; गिम्हे
पडिवण्णे, अहा-परिजुन्नं वत्थं परिट्ठवेज्जा, अहा-परिजुन्नं
वत्थं परिट्ठवेत्ता—

९३—'अदुवा अचेले'^१ ।

९४—लाघवियं आगममाणे ।

९५—^० तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

९६—जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो
सव्वत्ताए ^० सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

९७—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—एगो अहमंसि, न मे अत्थि
कोइ, न याऽहमवि कस्सइ^२, एवं से एगागिणमेव^३ अप्पाणं
समभिजाणिज्जा ।

९८—लाघवियं आगममाणे ।

१—अदुवा एगसडे अदुवा अचेले (ख, ग, घ, च, छ, झ) ।

२—कस्सवि (घ) ।

३—एगागियं^० (च, चू) ।

- १९—तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।
 १००—जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो
 सव्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।
 १०१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा
 साइमं वा आहारेमाणे णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं
 संचारेज्जा' आसाएमाणे^१,
 दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं णो संचारेज्जा
 आसाएमाणे, से अणासायमाणे ।
 १०२—लाघवियं आगममाणे,
 १०३—तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।
 १०४—जमे'यं भगवता पवेइयं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो सव्वत्ताए
 सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।
 १०५—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—
 से 'गिलामि च'^३ खलु अहं इमंसि समए^४, इमं सरीरं
 अणुपुब्बेण परिवहित्तए, से आणुपुब्बेणं आहारं संवट्टेज्जा,
 आणुपुब्बेणं आहारं संवट्टेत्ता,
 कसाए पयणुए किच्चा, समाहियच्चे फलगावयट्ठी,
 उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे ।
 १०६—अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा,
 मडंबं^५ वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा,
 सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहारिणं वा,

१—साहरेज्जा (च्) ।

२—आढायमाणे (च्पा, वृपा) ।

३—गिलाणा मिव (ख, ग) ; गिलाणमिव (छ, च्) ।

४—समये णो संचाएमि (ख, ग) ; न शक्नोमि (वृ) ।

५—मडंबं (ग) ।

‘तणाइं जाएज्जा’^१, तणाइं जाएत्ता, से तमायाए
एगंतमवक्कमेज्जा; एगंतमवक्कमेत्ता,
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए, ‘पडिलेहिय-
पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं
संथरेत्ता’^२ एत्थ वि समए इत्तरियं कुज्जा ।

१०७-तं सच्चं सच्चावादी^३ ओए तिण्णे छिण्ण-कहंकेहे आतीतट्ठे^४
अणातीते चेच्चाण भेउरं कायं, संविहूणिय विरूव-रूवे
परिसहोवसग्गे अस्सिस विसंभणयाए भेरव मणुच्चिण्णे ।

१०८-तत्थावि तस्स काल-परियाए ।

१०९-से^५ तत्थ विअंति-कारए ।

११०-इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं,
आणुगामियं ।

—त्ति वेमि ।

सत्तमो उद्देशो

१११-जे भिक्खू अचेले परिवुसिते, ‘तस्स णं’^६ एवं भवति—
चाएमि अहं तण-फासं अहियासित्तए, सीय-फासं
अहियासित्तए, तेउ-फासं अहियासित्तए, दंस-मसग-फासं
अहियासित्तए, एगतरे अन्नतरे विरूव-रूवे फासे

१-× (क, ग, घ, च) ।

२-पडिलेहिता सथारग सथरेड संथारगं सथरेत्ता (वृ) ।

३-सच्चवादी (ख, ग, च, छ) ।

४-अइअट्ठे (क, घ, च) ।

५-से वि (ख, ग, च, छ) ।

६-तस्स णं भिक्खुस्स (वृ) ।

अहियासित्तए, हिरिपडिच्छादणं 'चऽहं'^१ णो संचाएमि
अहियासित्तए, एवं से कप्पति कडि-बंधणं धारित्तए ।

११२-अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तण-फासा फुसंति,
सीय-फासा फुसंति, तेउ-फासा फुसंति, दंस-मसग-फासा
फुसंति, एगयरे अन्नयरे विरुव-रुवे फामे अहियासेति
अचेले ।

११३-लाघवियं आगममाणे ।

११४-तवे से अभिसमण्णागए भवति ।

११५-जमे'यं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सब्वतो
सब्वत्ताए सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

११६-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसिं
भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु
दलइस्सामि^२, आहडं च सातिजिस्सामि ।

११७-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अन्नेसिं
भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु
दलइस्सामि, आहडं च णो सातिजिस्सामि ।

११८-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु 'अन्नेसिं
भिक्खूणं'^३ असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु
नो दलइस्सामि, आहडं च सातिजिस्सामि ।

११९-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं खलु अन्नेसिं भिक्खूणं
असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो
दलइस्सामि, आहडं च णो सातिजिस्सामि ।

१-च (ख, ग, घ, च) ।

२-दाहामि (चू) ।

३-× (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

१२०-अहं च खलु तेण अहाइरित्तेण^१ अहेसणिज्जेणं अहा-
परिग्गहिणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण
वा अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए ।

१२१-अहं वावि तेण अहातिरित्तेणं अहेसणिज्जेणं अहा-
परिग्गहिणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण
वा अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं
सात्तिज्जिस्सामि ।

१२२-लाघवियं आगममाणे ।

१२३-तवे से अभिसमण्णागए^० भवति ।

१२४-जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा, सव्वतो
सव्वत्ताए^० सम्मत्तमेव समभिजाणिया ।

१२५-जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति-से गिलाभि^२ च खलु अह
इमम्मि समए, इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए,
से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता,
कसाए पयणुए किच्चा समाहिअच्चे फलगावयट्ठी,
उट्ठाय भिक्खू अभिणिच्चुडच्चे ।

१२६-अणुपविसित्ता गामं वा, नगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा,
मडंबं वा, पट्टणं वा, दोण-मुहं वा, आगरं वा, आसमं वा,
सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहारिणं वा,
तणाइं जाएज्जा, तणाइं जाएत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा,
एगंतमवक्कमेत्ता,
अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए, पडिलेहिय-

१-आहा^० (क, च, छ) ।

२-गिलाएमि (ख, छ) ।

पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता
एत्थ वि समए कायं च जोगं च, इरियं च, पच्चक्खाएज्जा ।

१२७—‘तं सच्चं सच्चावादी ओए तिण्णे छिन्न-कहंकहे आतीतट्ठे
अणातीते चेच्चाण भेउरं कायं, संविहूणिय विरूव-रूवे
परिसहोवसग्गे अस्सि विसंभणयाए भेरव मणुचिण्णे ।

१२८—तत्थावि तस्स काल-परियाए ।

१२९—से तत्थ विअंति-कारए ।

१३०—इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं,
आणुगामियं^१ ।

—त्ति वेमि ।

अट्ठमो उद्देशो

- १-अणुपुब्बेण विमोहाइं, जाइं धीरा^२ समासज्ज ।
वसुमंतो^३ मइमंतो, सव्वं णच्चा अणेलिसं ॥
- २-दुविहं पि विदित्ताणं^४, बुद्धा धम्मस्स पारगा ।
अणुपुब्बीए^५ संखाए, आरंभाओ^६ त्तिउट्ठति ॥
- ३-कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तित्तिक्खए ।
अह भिक्खू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अंतियं^७ ॥

१-नागार्जुनीया —कट्टमिव आतट्ठे तत्थ सचतित सज्जीकरेत्ता उ पतिण्णे छिन्नकह
कहेज्जा जाव आणुगामियं (चू) ।

२-वीरा (क, च) ।

३-वुसिमतो (चू) ।

४-विगिचित्ता (चूपा) ।

५-^० पुब्बीड (ग) ।

६-कम्मुणाओ (चूपा, वृपा) ।

७-कारणा (चू) ।

- ४-जीवियं णाभिकखेज्जा, मरणं णोवि पत्थए ।
 दुहतो वि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तथा ॥
- ५-मज्झत्थो णिज्जरा-पेही, समाहि मणुपालए ।
 अंतो बहिं विउसिज्ज, अज्झत्थं सुद्ध मेसए ॥
- ६-जं किंचुवक्कमं^१ जाणे, आउ-क्खेमस्स अप्पणो ।
 तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ॥
- ७-गामे वा अट्टुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया ।
 अप्पपाणं तु विन्नाय^२, तणाइं संथरे मुणी ॥
- ८-अणाहारो तुअट्टेज्जा^३, पुट्टो तत्थ हियासए ।
 णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहिं विपुट्टओ^४ ॥
- ९-संसप्पगा य जे पाणा, जे य उड्डमहेचरा ।
 भुंजंति मंस-सोणियं, ण छणे न पमज्जए ॥
- १०-पाणा देहं विहिसंति, ठाणाओ ण विउब्भमे^५ ।
 'आसवेहिं विवित्तेहिं'^६, तिप्पमाणेऽहियासए^७ ॥
- ११-अंथेहिं विवित्तेहिं^८, आउ-कालस्स पारए ।
 पग्गहियतरां^९ चेयं, दवियस्स वियाणतो^{१०} ॥
- १२-अयं से अवरे धम्मे, णायपुत्तेण साहिए ।
 आयवज्जं पडीयारं, विजहिज्जा तिहा तिहा ॥

१-किंचिदुवक्कम (च) ।

२-वियाणित्ता (च्चु) ।

३-णिवज्जेज्जा (च्चू, वृ) ।

४-^० पुट्टव (क, च, छ), ^० पुट्टए (ख, ग) ।

५-वि उड्डममे (क, ख, ग, घ, वृ) ।

६-अवसव्वेहिं विवित्तेहिं (च्चु) ।

७-त्तप्प^० (घ) ।

८-विवित्तेहिं (क, ख, घ, च, छ, च्चु) ।

९-^० तराग (क), ^० तर (च्चु) ।

१०-सुयाहितो (च्चु) ।

- १३-हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं 'मुणिआ सए'^१ ।
 विउसिज्ज^२ अणाहारो, पुट्टो तत्थ हियासए ॥
- १४-इंदिएहि गिलायंते, समियं साहरे^३ मुणी ।
 तहावि से अगरिहे^४, अचले जे समाहिए ॥
- १५-अभिव्कमे पडिव्कमे, संकुचए पसारए ।
 काय-साहारणट्टाए^५, एत्थं^६ वावि अचेयणे ॥
- १६-परिव्कमे परिकिलंते, अट्टुवा चिट्ठे अहायते ।
 ठाणेण परिकिलंते, णिसिएज्जा य अंतसो ॥
- १७-'आसीणे णेलिसं'^७ मरणं, इंदियाणि समीरए ।
 कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरेसए ॥
- १८-जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए ।
 ततो उक्कसे^८ अप्पाणं, सब्बे फासेऽहियासए ॥
- १९-अयं चायततरे^९ सिया, जो एवं अणुपालए ।
 सब्ब-गायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ॥
- २०-अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्टाणस्स पग्गहे ।
 अचिरं पडिलेहित्ता, विहरे चिट्ठ माहणे ॥

१-मुणि आसए (च, चू) ।

२-वियो ° (ख, ग, च, छ) ।

३-आहरे (ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

४-अगरिहे (क, ख, ग, घ) ।

५-साहारण ° (क, ग घ) ; सधारण (चू), सहारण (च) ।

६-इत्थं (घ) ।

७-आसीण मणेलिस (क, घ, च), उदासीणो अणे लिसो (चू) ।

८-उक्कसे (ग, घ, छ) ।

९-चायतरे (ख), चाततरे (चू, क) ; आयरे द्रवग्गाहतरे धम्मे (चुपा) ;

यदि वा०''''आत्तर. (वृ) ।

- २१—अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं ।
 वोसिरे सव्वसो कायं, 'ण मे देहे परीसहा'^१ ॥
- २२—जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा 'य संखाय'^२ ।
 संबुडे देह-भेयाए, इति पण्णे हियासए ॥
- २३—भेउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहूतरेसु^३ वि ।
 इच्छा-लोभं^४ ण सेवेज्जा, सुहुमं^५ वन्नं सपेहिया ॥
- २४—सासएहिं णिमंतेज्जा, 'दिव्वं मायं'^६ ण सद्दे ।
 तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया ॥
- २५—सव्वट्ठेहिं^७ अमुच्छिए, आज-कालस्स पारए ।
 तित्तिक्खं परमं णच्चा, विमोहन्नतरं हितं ॥

—त्ति वेमि ।

..

१—न मे देह परीसहा, यदि वा—न मे देहे परीमहा (च, वृ) ।

२—तिति संखाते (क), इति सखया (ता) (ग, घ, छ) - इति संखाय (च, वृ) ।

३—बहुलेसु (चूपा, वृपा) ।

४—इच्छ^० (क) ।

५—धुव (धुव^०) (क, ख, ग, घ, च, छ, चूपा, वृपा) ।

६—दिव्वमाय (ख, घ, च) ।

७—सव्वत्थेहिं (चू) ।

नवमं अज्जयणं

उवहाण-सुयं

पढमो उद्देशो

- १-अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय ।
संखाए तंसि हेमंते, अहुणा पव्वइए रीयत्था^१ ॥
- २-णो चेवि'मेण वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते ।
से पारए आवकहाए^२, एयं खु अणुधम्मियं^३ तस्स ॥
- ३-चत्तारि साहिए मासे, बह्वे पाण-जाइया^४ आगम्म ।
अभिरुज्झकायं^५ विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिसु ॥
- ४-संवच्छरं साहियं मासं, जं ण रिक्का'सि वत्थगं भगवं ।
अचेलए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे ॥
- ५-अदु पोरिसिं तिरियं-भित्तिं, चक्खुमासज्ज अंतसो भाइ ।
अह चक्खु-भीया^६ सहिया, त 'हंता हंता' बह्वे कंदिसु ॥
- ६-सयणेहि 'वित्ति मिस्सेहि'^७, इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय ।
सागारियं^८ ण सेवे, इति से सयं पवेसिया भाति ॥

१-रीइत्था (क, चू), रीयित्था (च); रोएत्था (ग) ।

२-आवकह (घ) ।

३-आणु^० (छ) ।

४-^० जाती (क) ।

५-आरुज्झ^० (चू) ।

६-^० भीय (ग, च, छ) ।

७-विमिस्सेहि (घ) ।

८-साकारिय (घ, छ) ।

- ७-जे के इमे अगारत्था, मीसी-भावं पहाय से भ्राति ।
 पुट्टो^१ वि गाभिभासिसु, गच्छति णाइवत्तई अंजू ॥
- ८-णो सुगर मेत मेगेसि, गाभिभासे अभिवायमाणे ।
 हयपुव्वो तत्थ दंडेहि, लूसियपुव्वो अप्प-पुन्नेहि ॥
- ९-फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे ।
 आघाय-णट्ट-गीताइं , दंड-जुद्धाइं मुट्ठि-जुद्धाइं ॥
- १०-गडिंए मिहो^२-कहासु^३, समयंमि^४ णायसुए^५ विसोगे अदक्खू ।
 एताइं सो उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते^६ असरणाए ॥
- ११-अविसाहिए दुवे वासे, सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते ।
 एगत्त-गाए^७ पिहियच्चे, से अहिन्नाय-दंसणे संते ॥
- १२-पुढवि च आउकायं^८, तेउ-कायं च वाउ-कायं च ।
 पणगाइं^९ बीय-हरियाइं, तस-कायं च सव्वसो णच्चा ॥
- १३-एयाइं संति पडिलेहे, चित्तमंताइं से अभिन्नाय ।
 परिवज्जिया^{१०} ण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे ॥
- १४-अदु^{११} थावरा तसत्ताए, तस-जीवाय थावरत्ताए ।
 अदु सव्व-जोणिया सत्ता, कम्मणा^{१२} कप्पिया पुढो बाला ॥

१-तागार्जुनीया —पुट्टो व मो अपुट्टो व, णो अणुन्नाइ पावण भगव ।

पुट्टेव से अपुट्टे वा^० (चू) ।

२-मिधु^० (च), मिह^० (छ) ।

३-^० कहासू (क, घ) ।

४-समतोमि (चू) ।

५-^० पुत्ते (ख, ग, वृ) ।

६-णाइ^० (छ) ।

७-एगत्ति^० (चू) ।

८-^० काय च (क, ग, च, छ) ।

९-पणगाय (ख) ।

१०-^० वज्जिया (ख, ग) ।

११-अदुवा (ख, ग, च, छ) ; अदुव (क) ।

१२-कम्मणा (च) ।

- १५-भगवं च एवमन्नेसि^१, सोवहिए हु लुप्पती बाले ।
कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं ॥
- १६-दुविहं समिच्च मेहावी, किरिय मक्खाय'णेलिसि^२ णाणी ।
आयाण सोय मतिवाय-सोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा ॥
- १७-अइवातियं^३ अणाजट्टि, सयमन्नेसि अकरणयाए ।
जस्सि'त्थिओ परिणयाया, सव्वकम्मावहाओ से^४ अदक्खू ॥
- १८-अहाकडं^५ न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा 'य अदक्खू'^६ ।
जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था ॥
- १९-णो सेवती य परवत्थं^७, पर-पाए वि से ण भुंजित्था ।
परिवज्जियाण ओमाणं, गच्छति संखडि असरणाए^८ ॥
- २०-मायन्ने असण-पाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णे ।
अच्छिपि णो पमज्जिया^९ णोवि य कंडूयये मुणी गायं ॥
- २१-अप्यं तिरियं पेहाए, अप्यं पिट्ठओ उपेहाए^{१०} ।
अप्यं वुइएऽपडिभाणी, पंथ-पेही चरे जयमाणे ॥
- २२-सिसिरंसि अद्ध-पडिवन्ने, तं वोसज्ज^{११} वत्थ मणगारे ।
पसारित्तु वाहुं परक्कमे, णो अवलंबिया ण कंधंसि^{१२} ॥

१-एवमन्नेसि (क, घ, च, छ, व), एवमणिसित्ता (चू) ।

२-मणेलिस (ख, ग) ।

३-° वत्तिय (छ) ।

४-X (क, घ, च, छ) ।

५-आहा ° (च, छ) ।

६-वध अदक्खू (क); अदक्खू (ख, ग, च), य दक्खू (घ) ।

७-परं वत्थं (ख, ग) ।

८-असरणयाए (घ, च) ।

९-पमज्जिज्जा (ख) ।

१०-व पेहाए (घ) ।

११-वोसरिज्ज (घ, चू) ।

१२-खधंसि (क, च) ।

२३-एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
 बहुसो^१ अप्पडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥
 --त्ति वेमि ।

वीओ उद्देशो

१-चरियासणाइं^२ सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ वुइयाओ ।
 आइक्ख ताइं सयणासणाइं^३, जाइं सेवित्था से महावीरो ॥
 २-आवेसण^४-सभा-पवासु^५, पणिय-सालासु एगदा वासो ।
 अट्टुवा पलिय-ट्टाणेसु, पलाल-पुंजेसु एगदा वासो ॥
 ३-आगंतारे आरामगारे, गामे^६ णगरे वि^७ एगदा वासो ।
 सुसाणे सुण्ण-गारे^८ वा, ख्ख-मूले वि एगदा वासो ॥
 ४-एतेहि मुणी सयणेहि, समणे आसी^९ प-त्तेरस^{१०} वासे ।
 राइ दिवं पि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिए भ्राति ॥
 ५-'णिइं पि णो पगामाए, सेवइ^{११} भगवं उट्टाए^{१२} ।
 जग्गावती^{१३} य अप्पाणं, ईसि 'साई या'^{१४} सी अपडिन्ने ॥

१-अप्पडिन्नेण वीरेण (चू), बहुसो अप्पडिन्नेण (चूपा) ।

२-अय च श्लोक चिरतन टीकाकारेण न व्याख्यात (वृ) ।

३-सयणाइं (क, च) ।

४-आएमण^० (चू) ।

५-^० सभप्पवासु (क, घ, छ) ।

६-x (क, च); तह य (घ, छ, ञ) ।

७-वा (क) ।

८-सुण्णागारे (छ) ।

९-वासी (छ) ।

१०-प-त्तेरस (च) ।

११-सेवइ य (ख, ग) ।

१२-नागार्जुनीया —णिहावि ण प्पगामा, आमी तहेव उट्टाए (चू) ।

१३-जगा^० (ख, छ) ।

१४-साइ य (क, च, छ) ।

- ६—संबुज्झमाणे पुणरवि, आसिसु^१ भगवं उट्ठाए ।
णिकखम्म एगया राओ, बहिं^२ चंकमिया^३ मुहुत्तागं ॥
- ७—सयणेहि तस्सुवसग्गा^४, भीमा आसी अणेग-रूवा य ।
संसप्पगाय जे पाणा, अदुवा जे पक्खिणो उवचरंति ॥
- ८—अदु^५ कुचरा उवचरंति, गाम-रक्खा य सत्ति-हत्था य ।
अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगतिया पुरिसा य ॥
- ९—इह-लोइयाइं पर-लोइयाइं, भीमाइ अणेग-रूवाइं ।
अवि सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं, सद्दाइं अणेग-रूवाइं ॥
- १०—अहियासए सया समिए^६, फासाइं विरूव-रूवाइं ।
अरइं रइं अभिभूय, रीयई माहणे अबहु-वाई ॥
- ११—स जणेहि तत्थ पुच्छिसु, एग-चरा वि एगदा राओ ।
अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिन्ने ॥
- १२—अय मंतरंसि को एत्थ, अहमंसि त्ति भिक्खू आहट्टु ।
अय^७ मुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए सकसाइए भाति ॥
- १३—जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारुए पवायंते ।
तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवाय भेसंति ॥
- १४—संघाडिओ पविसिस्सामो^८, एहा य समादहमाणा ।
पिहिया वा सक्खामो^९, अतिदुक्खं हिमग-संफासा ॥

१-न विर जागित्ता ईंसि साइयासि (चू) ।

२-बहिं (च) ।

३-चंकमिता (छ) ।

४-तत्थु^० (क, ख, ग, घ, छ) ।

५-अदुवा (क, छ) ।

६-सहिए, इति मता भगव अणगारे (चूपा) ।

७-को एत्थ सामो ठित्तो (चू) ।

८-पहिरिस्सामो (चू) ।

९-पस्सामो (चू) ।

- १५—तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे वियडे अहियासए दविए ।
 णिकखम्म एगदा राओ, चाएइ^१ भगवं समियाए ॥
- १६—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
 वहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति ॥
 —त्ति बेमि ।

तडओ उद्देसो

- १—तण-फासे^२ सीय-फासे य, तेउ-फासे य दंस-मसगे य ।
 अहियासए सया समिए, फासाइं विरूव-रूवाइं ॥
- २—‘अह दुच्चर’^३-लाढ मचारी, वज्ज-भूमिं च सुव्भ(म्ह?)—भूमिं च ।
 पंतं सेज्जं सेविसु, आसणगाणि चैव पंताइं ॥
- ३—लाढेहिं तस्सुवसग्गा, बहवे जाणवया लूसिसु ।
 अह लूह-देसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिसु णिवत्तिसु ॥
- ४—अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे^४ ।
 छुछुकारंति आहंसु, समणं कुक्कुरा डसंतु^५त्ति ॥
- ५—एलिकखए जणा भुज्जो, बहवे वज्ज-भूमिं फरुसासी ।
 लट्ठि गहाय णालीयं^६, समणा तत्थ एव विहरिसु ॥
- ६—एवं पि तत्थ विहरंता, पुट्ट-पुव्वा अहेसि सुणएहि ।
 संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि^६ तत्थ लाढेहिं ॥

१-च ठाएइ (ग)—अशुद्ध प्रतिभाति ।

२-फास (क, ख, ग, च) ।

३-अवि दुच्चर (चु) ।

४-भममाणे (चु), डसमाणे (च) ।

५-नालियं (ख, ग, चु) ।

६-दुच्चराणि (क, च, छ, वृ) ।

- ७—निधाय दंडं पाणेहि, तं कायं वोसज्ज मणगारे ।
 अह^३ गाम-कंटए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा ॥
 ८—णाओ संगाम-सीसे वा, पाग्ए तत्थ से महावीरे ।
 एवं पि तत्थ लाढेहि, अलद्ध-पुव्वो वि एगया गामो ॥
 ९—उवसंकमंत मपडिन्ति, गामंतियं पि अप्पत्तं ।
 पडिणिक्खमित्तु लूसिंसु^२, एत्तो^३ परं पलेहित्ति ॥
 १०—हय-पुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु'कुंताइ-फलेण'^४ ।
 अदु लेलुणा कवालें, "हंता हंता" बहवे कंदिंसु ॥
 ११—मंसाणि^५ छिन्न-पुव्वाइं, उट्ठुभंति^६ एगया कायं ।
 परीसहाइं लुंचिंसु, अहवा पंसुणा अवकिरिंसु^७ ॥
 १२—उच्चालइय णिहणिसु, अदुवा आसणाओ खलइंसु ।
 वोसट्ठ-काए पणयासी, दुक्ख-सहे भगवं अपडिन्ने ॥
 १३—सूरो संगामसीसे वा, संवुडे तत्थ से महावीरे ।
 पडिसेवमाणे फरसाइं, अचले भगवं रीइत्था ॥
 १४—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
 बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥
 —त्ति वेमि ।

चउत्थो उद्देशो

- १—ओमोदरियं चाएत्ति, अपुट्ठे वि भगवं रोगेहि ।
 पुट्ठे वा से अपुट्ठे वा, णो से सातिज्जति तेइच्छं ॥

१-अदु (घ. छ) ।

२-लूसिन्ति (चू) ।

३-एताओ (तो) (क. ख. ग घ. च छ) ।

४-कुंतेण फलेण (घ) ।

५-मसूणि (क. ख. ग. घ. च. छ) ।

६-उट्ठु भिया (क. ख. ग. च छ, वृ) ; उट्ठुभियाए (घ) ।

७-उवकारिसु (क. ख. ग. घ. च. छ)—वृत्तित्रर्ण्यनुसारेण अशुद्ध प्रतिभाति ।

- २-संसोहणं च वमणं च, गायव्भंगणं^१ सिणाणं च ।
 संवाहणं 'ण से कप्पे'^२, दंत-पक्खालणं परिण्णाए ॥
- ३-विरए^३ गाम-धम्मसेहि, रीयति माहणे अबहु-वाई ।
 सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए भाइ आसी य ॥
- ४-आयावई य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभितावे ।
 अदु जावइत्थ^४ लूहेणं, ओयण-मंथु-कुम्मासेणं ॥
- ५-एयाणि तिन्नि पडिसेवे, अट्ट-मासे य जावए भगवं ।
 अपिइत्थ^५ एगया भगवं, अट्ट-मासं अदुवा मासं पि ॥
- ६-अविसाहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा अपिवित्ता^६ ।
 रायोवरायं अपडिन्ने, अन्न-गिलाय मेगया भुंजे ॥
- ७-छट्टेणं एगया भुंजे, अदुवा^७ अट्टमेण दसमेणं ।
 दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहि अपडिन्ने ॥
- ८-णच्चाणं^८ से महावीरे, णो वि य पावगसयमकासी ।
 अन्नेहि वा ण कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था ॥
- ९-गामं पविसे^९ णयरं वा, घासमेसे^{१०} कडं परट्टाए ।
 सुविसुद्ध मेसिया भगवं, आयत्त-जोगयाए सेवित्था^{११} ॥

१-^० मव्भगण (घ) ।

२-ग सेवित्था (च) ।

३-विरए य (क, घ, च, छ) ।

४-जावइ (घ) ।

५-अपियत्थ (च) ।

६-रीयित्था (च), विहरित्था (च) ।

७-अदु अट्ट^० (ख), अदुट्ट^० (ग) ।

८-णच्चाण (क, ख, ग, घ, च) ।

९-पविस्स (झ) ।

१०-वासमात्त (च) ।

११-गवेसित्था (च) ।

- १०—अद्दु वायसा दिगिच्छत्ता^१, जे अन्ने रसेसिणो सत्ता ।
घासेसणाए चिट्ठंति, समयं णिवतिते य पेहाए ॥
- ११—अद्दु माहणं व समणं वा, गाम-पिंडोलगं च अतिहि वा ।
सोवागं मूसियारं वा, कुक्कुरं वा 'विविहं ठियं'^२ पुरत्तो ॥
- १२—वित्ति-च्छेदं वज्जंतो, तेस'प्पत्तियं'^३ परिहरंतो ।
मंदं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घास मेसित्था ॥
- १३—अवि सूइयं व' सुक्कं वा, सीय-पिंडं पुराण-कुम्मासं ।
अद्दु वक्कसं^४ पुलागं वा, लद्धे पिडे अलद्धए दविए ॥
- १४—अवि भाति से महावीरे, आसणत्थे अकुक्कुए भाणं ।
उड्डमहे^५ तिरियं च, 'लोए झायइ'^६ समाहिमपडिन्ने ॥
- १५—अकसाई विगय-गेही^७, सद्-रूवेसुऽमुच्छिए^८ भाति ।
छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो^९ पमायं सइं पि कुब्बित्था ॥
- १६—सयमेव अभिसमागम्म, आयत-जोग माय-सोहीए ।
अभिणिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समिआसी ॥
- १७—एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
बहुसो अपडिन्नेण, भगवया एवं रीयंति ॥
- त्ति वेमि ।

१—दिगिच्छत्ता (ख, ग) ।

२—विट्ठिय (क, ख) ; विचिट्ठिय (घ) ; उवट्ठियं (चू), चिट्ठिय (च) ।

३—तेसिप्पत्तिय (ख, ग) ; तेसि पत्तिय (क, च), 'त्राममकुर्वन्' (वृ) ।

४—वा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

५—वुक्कसं (ख) ।

६—उड्डं अहे य (य) (ख, ग, घ, छ) ।

७—पेहमाणो (क, घ, च, छ) ; भायड (चू) ।

८—गेही य (क, ख, ग, घ, च) ।

९—अमुच्छिए (ख, ग, च) ।

१०—ण (च) ।

आयार-चूला

पढमं अज्मयणं

पिंडेसणा

पढमो उद्देसो

सचित्तं-संसत्त-असणादि-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं^१ पुण जाणेज्जा—

असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—पाणेहिं वा,
पणएहिं वा, बीएहिं वा, हरिएहिं वा—संसत्तं, उम्मिस्सं,
सीओदएण वा ओसित्तं^२, रसया वा परिवासियं^३,

तहप्पगारं असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—
परहत्थंसि वा परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति
मन्नमाणे लाभे वि संते णो पडिग्गाहेज्जा^४ ।

२-से य आहच्च पडिग्गाहिं^५ सिया, से त आयाय
एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—

अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे, अप्प-पाणे,
अप्प-बीए, अप्प-हरिए, अप्पोसे, अप्पुदए, अप्पुत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणए, विगिंचिय-विगिंचिय,
उम्मिस्सं^६ विसोहिय-विसोहिय, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा
पीएज्ज वा ।

१-से ज (क, व) ।

२-उत्सित्त (क) ; अ.भिमित्त (चू) ।

३-^० वासिय (अ, क, घ, च, व) ।

४-पडिग्गा^० (घ, छ, व) ।

५-^० गाहे (अ, घ, च, छ, व) ।

६-उम्मीस (क, च) ।

३-जं च णो संचाएज्जा भोत्तए वा पायए वा, से^१ तमायाय
 एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—
 अहे झाम-थंडिलंसि वा, अट्टि-रासिसि वा, किट्टि^२-रासिसि
 वा, तुस-रासिसि वा, गोमय-रासिसि वा, अण्णयरंसि वा
 तहप्पगारंसि थंडिलंसि^३ पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-
 पमज्जिय, तओ संजयामेव परिट्टवेज्जा ।

ओसहि-आदि-पदं

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
 अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जाओ^४ पुण ओसहीओ जाणेज्जा—
 कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छ-
 च्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडि,
 अणभिककंताऽभज्जियं^५ पेहाए—अफासुयं अणेसणिज्जं ति
 मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
 पडियाए अणुपविट्ठे^६ समाणे, सेज्जाओ^४ पुण ओसहीओ
 जाणेज्जा—
 अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छ-
 च्छिन्नाओ, वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडि, अभिककंतं
 भज्जियं पेहाए—फासुयं एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते
 पडिगाहेज्जा ।

१-सेत्त ° (अ, च, छ) ।

२-किट्टि ° (छ) ।

३-थंडिल्ल (अ, छ) ।

४-से जाओ (क, व, छ) ।

५-° ककत भज्जियं (क, च) ; ° ककंतम भज्जियं (घ) ।

६-से जाओ (क, ग, छ, व) । (अ, दुवुत्तौ विमयति) ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं^१ वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउल-पलवं वा सइं भज्जियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा, *बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलवं वा असइं भज्जियं, दुक्खुत्तो वा भज्जियं, तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं *ति मन्नमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं *पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे, णो अन्नउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ^२ अपरिहारिएण वा^३, सद्धि गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा, णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा, सद्धि—बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा—णिक्खमेज्ज^४ वा पविसेज्ज वा ।

१-भुज्जियं (क, घ, च, छ, व) , भज्जिय (अ) ।

२-परिहारिओ वा (अ, क, च, व) ।

३-× (अ, क, च, छ, व) ।

४-न प्रविशेत् नापि ततो निष्कामेत् (वृ) ।

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धि—गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे—णो अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देज्जा वा अणुपदेज्जा वा ।

अस्सिपडियाए-पदं

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए^१ एगं साहम्मियं समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, 'समारब्भ समुद्दिस्स'^२ कोयं पामिच्चं अच्चेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं^३ वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, 'परिभुत्तं वा'^४ 'अपरिभुत्तं वा'^५ आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

१३—*से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स,

१—अस्सं^० (क, च, छ, ब, वृ) ।

२—समारंभमुद्दिस्स (च, ब) ; समारभं^० (अ, घ) ।

३—अबहिया अणीहडं (क, च) ।

४—× (वृ) ।

५—× (क) ।

पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-
कडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा
अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा
अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे
संते णो पडिगाहेज्जा ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स,
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं
पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतर-
कडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा
अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा
अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे
सते णो पडिगाहेज्जा ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स,
पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं
पामिच्चं, अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं
वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पद

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं^०पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-क्विण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइं वा, भूयाइं वा, जीवाइं वा, सत्ताइं वा, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असण वा ४ पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं^०पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ बहवे समण-माहण-अतिहि-क्विण-वणीमए समुद्दिस्स, पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, अबहिया^१ णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं^०ति मन्नमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

१—बहिया अणीहडं (अ) ।

१८—अह पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्टियं, परिभुत्तं, आसेवियं—
फासुयं एसणिज्जं *ति मन्ममाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।

कुल-पदं

१९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
पविसित्तुकामे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा—
इमेसु खलु कुलेसु णितिए^१ पिंडे दिज्जइ, णितिए अग्ग-पिंडे
दिज्जइ, णितिए भाए दिज्जइ, णितिए अवड्ढभाए दिज्जइ—
तहप्पगाराइं कुलाइं णितियाइं णितिउमाणाइं, णो भत्ताए
वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

२०—एयं^२ खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, ज
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

—त्ति वेमि ।

बीओ उद्देशो

अट्टमी-आदि-पव्व-पदं

२१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा ४ अट्टमि-पोसहिएसु वा, अद्धमासिएसु वा,
मासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तिमासिएसु वा,
चाउमासिएसु वा, पंचमासिएसु वा, छमासिएसु वा, उउसु^३
वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्ठेसु वा, बहवे समण-माहण-
अत्तिहि-किवण-वणीमगे, एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे

१—× (क, च) ।

२—एव (घ, च, छ) । अशुद्ध प्रतिभाति ।

३—उडुसु (च) ।

पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए 'तिहि उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'^१ 'चउहि उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'^२ कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ^३ वा सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा^४ परिएसिज्जमाणे पेहाए—

तहप्पगारं असणं वा ४ अपुरिसंतरकडं, *बहिया णीहडं, अणत्तद्वियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं *ति मन्नमाणे लाभे सते^० णो पडिगाहेज्जा ।

२२—अह पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, *बहिया णीहडं, अत्तद्वियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं *एसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे सते^० पडिगाहेज्जा ।

कुल-पदं

२३—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तंजहा—

उग्ग-कुलाणि वा, भोग-कुलाणि वा, राइण्ण-कुलाणि वा, खत्तिय-कुलाणि वा, इक्खाग-कुलाणि वा, हरिवंस-कुलाणि वा, एसिय-कुलाणि वा, वेसिय-कुलाणि वा, गंडाग-कुलाणि वा, कोट्टाग-कुलाणि वा, गामरक्खकुलाणि वा, पोक्कसालिय^०-कुलाणि वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु

१—X (च) ।

२—X (अ, क, घ, च, ब) ।

३—कालओ वा ततो (छ) ; कालओ वा तिण्णो (व) ।

४—सण्णिचयाओ वा तओ एवं विहं जावतिय पिंड समणादीण परिएसिज्जमाणे पेहाए (वृ) ।

५—वोक्क^० (अ, छ, ब, च) ।

कुलेमु अदुगुंछिएमु अगरहिएसु, असणं वा ४ फासुयं
एसणिज्जं *ति मन्नमाणे लाभे सते० पडिगाहेज्जा ।

महामह-पदं

२४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ समवाएसु वा, पिंड-णियरेसु वा, इंद-महेसु
वा, खंद-महेसु वा, रूद-महेसु वा, मुगुंद-महेसु वा, भूय-महेसु
वा, जक्ख-महेसु वा, णाग-महेसु वा, थूम-महेसु वा, चेतिय-
महेसु वा, रक्ख-महेसु वा, गिरि-महेसु वा, दरि-महेसु वा,
अगड-महेसु वा, तडाग'-महेसु वा, दह-महेसु वा, 'णई-महेसु
वा'^२, सर-महेसु वा, सागर-महेसु वा, आगर-महेसु वा—

अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूव-रूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु,
वहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए^३, एगाओ
उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहि *उक्खाहि परि-
एसिज्जमाणे पेहाए, तिहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए,
चउहि उक्खाहि परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमुहाओ वा
कलोवाइओ वा० सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे
पेहाए—

तहप्पगारं असण वा ४ अपुरिसंतरकडं^४, *अवहिया णीहडं,
अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्त, अणासेवितं-अफासुयं अणेसणिज्जं
ति मन्नमाणे लाभे सते० णो पडिगाहेज्जा ।

१—तलाग (घ, च, छ) ।

२—णईमहेसु वा असणमहेसु वा (क) ।

३—वणीमएसु (अ, क, च, छ, व) अयुद्ध ।

४—० गय (अ, क, च), ० कय (छ) ।

२५—अह पुण एवं जाणेज्जा—

दिण्णं जं तेसिं दायव्वं ।

अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए—गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरि वा, से पुव्वामेव^१ आलोएज्जा^२—आउसि! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं भोयणजायं ?

से सेवं वदंतस्स परो असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा—
तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं^३ जाएज्जा, परो वा से देज्जा-फासुयं^४ एसणिज्जं त्ति मन्नमाणे लाभे सते^० पडिगाहेज्जा ।

संखडि-पदं

२६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणभेराए संखडिं णच्चा संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

पाईणं संखडिं णच्चा पडीणं गच्छे, अणाढायमाणे,
पडीणं संखडिं णच्चा पाईणं गच्छे, अणाढायमाणे,
दाहिणं संखडिं णच्चा उदीणं गच्छे, अणाढायमाणे,
उदीणं संखडिं णच्चा दाहिणं गच्छे, अणाढायमाणे ।

२८—जत्थेव सा संखडी सिया, तं जहा—गामंसि वा, णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि^५ वा, पट्टणंसि वा,

१—पुव्व ° (क, च) ।

२—आलोएज्जा पभू वा पभूसदिट्ठो (चू), प्रभू प्रभुसंदिष्ट वा ब्रूयात् (वृ) ।

३—X (घ, छ) ।

४—मंडवसि (व) ।

‘आगरंसि वा, दोणमुहंसि वा’^१, णिगमंसि वा, आसमंसि वा ‘सण्णिवेसंसि वा रायहाणिसि वा’^२—

संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२९—केवली बूया—आयाणमेयं^३—

संखडिं संखडि-पडियाए अभिसंधारेमाणे आहाकम्मियं वा, उहेसियं वा, मीसजायं^४ वा, कीयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्चेज्जं वा, अणिसिट्ठं वा, अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाण भुंजेज्जा ।

असंजए^५ भिक्खु-पडियाए, खुड्डिय-दुवारियाओ महल्लियाओ^६ कुज्जा, महल्लिय-दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा, वहि वा उवस्सयस्स^७ हरियाणि छिदिय-छिदिय, दालिय-दालिय, संथारगं संथारेज्जा—‘एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए ।’^८

१—दोणमुहंसि वा आगरमि वा (अ, क, घ, च, छ, व) । १ ८६।१०६ सूत्र क्रम अनुसृत (च) ।

२—रायहाणिसि वा सण्णिवेसंसि वा (वृ) ।

३—आययण ° (वृपा) ।

४—° ज्जाय (च, छ, व) ।

५—अस्स ° (घ, छ, व) ।

६—महाद्वारा (वृ) ।

७—कुज्जा उवासयस्स (क, छ), उवस्सयस्स कुज्जा (घ), उपाप्रव सत्कुयात् (वृ) ।

८—एस विलगयामो सिज्जाए अक्खाए (अ, छ); एस खलु गयामो सेज्जाए अक्खाए (क), एस वि खलु गयामो सिज्जाए अक्खाए (च); एस खलु गयामो सिज्जाए (व) ।

तम्हा से संजए णियंठे^१ तहप्पगारं पुरे संखडिं^२ वा,
पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो
अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

३०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामंगियं, जं
सव्वट्ठेहिं सप्पिए सहिए सया जए ।

—त्तिं बेमि ।

तइओ उदेसो

३१—से एगइओ अण्णतरं संखडि आसित्ता पिबित्ता छइडेज्ज वा,
वमेज्ज वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वा
से दुक्खे रोयातंके समुपज्जेज्जा ।

३२—केवली बूया आयाणमेयं—

इह खलु भिक्खू गाहावइहि वा, गाहावइणीहि वा,
परिवायएहि वा, परिवाइयाहिं वा, एगज्झ सद्धं^३ सोडं पाउं
भो! वत्तिमिस्सं^४ हुरत्था वा, उवस्सयं पडिलेहमाणे णो
लभेज्जा, तमेव उवस्सयं सम्मिस्सिंभाव^५ मावज्जेज्जा ।

अण्णमण्णे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा,
किलीवे वा, तं भिक्खुं उवसंक्रमित्तु बूया—

आउसंतो समणा! अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा,

१—निगथे अण्णयरं वा (व) ।

२—× (क, घ, च) ।

३—सद्धि (व) ।

४—विति ° (च, छ) ।

५—मित्रीभावम् (वृ) ।

राओ वा, वियाले वा, गामधम्म^१-णियंतियं कट्टु, रहस्सियं मेहुणधम्म-परियारणाए आउट्टामो ।

तं चेगइओ सातिज्जेज्जा । अकरणिज्जं चयं संखाए । एते आयाणा^२ संति संचिज्जमाणा, पच्चावाया भवति^३ ।

तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा^४ गमणाए ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अन्नयर^५ संखडिं वा सोच्चा णिसम्म संपरिहावइ^६ उस्सुयं-भूयेणं अप्पाणेणं ।

धुवा संखडी । णो संचाएइ तत्थ इतरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं^७ एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेत्तए ।

माइट्ठाणं संपासे, णो एवं करेज्जा ।

से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थितरेतरेहि कुलेहि सामुदाणियं एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,^० रायहाणि वा ।

१-गाम ° (वृ), ग्रामासन्ने वा (वृ) ।

२-आयतणाणि (घ, वृ) ।

३-X (अ, क, घ, च, छ) ।

४-° धारेज्ज (अ) ।

५-अण्णयरिं (अ, च) ।

६-सप्रधावति (वृ) ।

७-समु ° (अ, क, च, छ) ।

इमंसि खलु गामंसि वा, *णगरंसि वा, खेडंसि वा,
 कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा,
 दोणमुहंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि
 वा^०, रायहाणिसि वा, संखडी सिया । तं पि य गामं वा
 (जाव) रायहाणि वा, संखडि-पडियाए^१ णो अभिसंधारेज्जा
 गमणाए ।

३५-केवली बूया आयाणमेयं—

आइण्णावमाणं^२ संखडि अणुपविस्समाणस्स—
 पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ,
 हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवइ,
 पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ,
 सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ,
 काएण वा काए सखोभियपुव्वे भवइ,
 दंडेण वा अट्टीण वा मुट्टीण वा लेलुणा वा क्वाल्लेण वा
 अभिहयपुव्वे भवइ,
 सीओदएण वा ओसित्तपुव्वे भवइ,
 रयसा वा परिघासियपुव्वे^३ भवइ,
 अणेसणिज्जे^४ वा परिभुत्तपुव्वे भवइ,
 अण्णेसि वा दिज्जमाणे पडिगाहियपुव्वे भवइ ।
 तम्हा से संजए णिगंथे तहप्पगारं आइण्णोमाणं संखडि
 संखडि-पडियाए नो अभिसंधारेज्ज गमणाए ।

१—संखडि संखडि-पडियाए (व) ।

२—आइण्णे^० (अ, घ, ङ) अद्युद्ध ।

३—परिज्जासित^० (क) ; परियासित^० (च, छ) ।

४—^० णिज्जेण (अ, छ) ।

विचिगिच्छा-समावण्ण-पदं

३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा ४ एसणिज्जे सिया, अणेसणिज्जे सिया—
विचिगिच्छ^१-समावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए,
तहप्पगारं असणं वा ^२४ अफासुयं अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे^०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

सव्वभंडगमायाए-पदं

३७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं ^०पिडवाय-
पडियाए^० पविसितुकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं
पिडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

३८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया विहार-भूमि वा वियार-
भूमि वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं भंडग
मायाए बहिया विहार-भूमि वा वियार-भूमि वा णिक्खमेज्ज
वा, पविसेज्ज वा ।

३९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं
भंडग मायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अह^२ पुण एवं जाणेज्जा—
तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा
महियं सणिक्खयमाणि^३ पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं
पेहाए—

१-वितिगिच्छ (व) ; वितिगिछ (अ) ; विचिगिछ (छ) ।

२-अह य (घ, छ) ।

३-^० माणं (अ, घ) ।

तिरिच्छं^१ संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा
पेहाए,

से एवं णच्चा णो सव्वं भंडग मायाए गाहावइ-कुलं
पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

बहिया विहार-भूमि वा वियार-भूमिं वा पविसेज्ज वा,
णिक्खमेज्ज वा, गामाणुगामं वा^२ दूइज्जेज्जा ।

कुल-पदं

४१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा,
तं जहा—खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा,
रायपेसियाण वा, रायवंसट्टियाण^३ वा, अंतो वा बहिं^४ वा
गच्छंताण वा, सण्णिविट्ठाण वा, णिमंतेमाणाण वा,
अणिमंतेमाणाण वा, असणं वा ४ *अफासुयं अणेसणिज्जं
त्ति मन्नमाणे^० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

(एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, ज
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

--त्ति बेमि ।)

चउत्थो उइसो

संखडि-पदं

४२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१-तिरिच्छ (अ, क, घ, च) ।

२-× (अ, च, क, छ, व) ।

३-^० वंसुट्टियाण (घ) ।

४-बहिय (अ, छ) ; बाहियं (च) ; बहिया (घ) ।

मंसादियं^१ वा, मच्छादियं^२ वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं^३
वा, आहेणं^४ वा, पहेणं वा, हिगोलं वा, संमेलं^५ वा,
हीरमाणं पेहाए,

अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा
बहुउदया बहुउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगा,
बहवे तत्थ समण-माहण-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता
उवागमिस्संति, तत्थाइण्णावित्ती^६,

णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-
परियट्टणाणुपेहं^७-धम्माणुओगचिंताए,

सेवं^८ णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा; पच्छा-संखडिं वा,
संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए ।

४३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं वा,
आहेणं वा, पहेणं वा, हिगोलं वा, संमेलं वा, हीरमाणं
पेहाए,

अंतरा से मग्गा अप्पंडा *अप्पमाणा अप्पबीया अप्पहरिया
अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-
संताणगा,

१-मस ° (घ) ।

२-मज्जा ° (घ, व) ।

३-मज्ज ° (घ) ।

४-अहेण (घ, व) ।

५-समीलं (च, व) ।

६-अन्नाइण्णा ° (क, च) अच्चाइण्णा ° (ञ) ।

७-° पेहाए (क, च, व) . पेहा ° (घ) ।

८-स एव (क, च) ; से एव (अ, घ) ।

णो तत्थ^१ बहुवे समण-माहण^२-अतिथि-किवण-वणोमगा
 उवागता^० उवागमिस्संति, अप्पाइण्णावित्ती,
 पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-
 परियट्ठणाणुपेह^३-धम्माणुओगचिंताए ।
 सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा,
 संखडि संखडि-पडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए ।

खीरिणी-गावी-पदं

४४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं^० पिंडवाय-
 पडियाए^० पविसिउकामे सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 खीरिणीओ^३ गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए;
 असणं वा ४ उवसंखडिज्जमाणं^४ पेहाए,
 पुरा अप्पजूहिए,
 सेवं णच्चा णो गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज
 वा, पविसेज्ज वा ।
 से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता
 अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।

४५-अहं पुण एवं जाणेज्जा—
 खीरिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए,
 असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए,
 पुरा पजूहिए,
 से एवं णच्चा तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
 पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

१-जत्थ (अ, क, च, छ, व) ।

२-^० पेहाए (क, व) ; पेहा (च) ।

३-खीरिणियाओ (क, घ, च, छ, व) ।

४-उक्खडि^० (अ, घ, क, छ, व, चू) ।

माइद्दाण-पदं

४६-भिक्षागा गामेगे^१ एवमाहंसु-‘समाणे वा, वसमाणे’^२ वा,
गामाणुगामं दूइज्जमाणे-“खुहुआए खलु अयं गामे, संणिरुद्धाए,
णो महालए, से हंता! भयंतारो! बाहिरगाणि गामाणि
भिक्षायरियाए^३ वयह ।”

संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया
वा परिवसति, तं जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा,
गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ
वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,
कम्मकरीओ वा,

तहप्पगाराइं कुलाइं पुरे-संथुयाणि वा, पच्छा-संथुयाणि वा,
पुव्वामेव भिक्षायरियाए अणुपविसिस्सामि अविय इत्थ
लभिस्सामि—पिडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधिं वा,
णवणीयं वा, घय वा, गुलं वा, तेळ्ळं वा, महुं वा, मज्जं
वा, मंसं वा, संकुलिं^४ वा, फाणियं वा, ‘पूयं वा’^५,
सिहरिणिं वा,

तं पुव्वामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गहं सलिहिय संमज्जिय,
तओ पच्छा भिक्खूहि सद्धि गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा ।

माइद्दाणं संफासे, तं णो एवं करेज्जा ।

१-° नाम मेगे (व) ।

२-समाणा वा वसमाणा (च) ।

३-° पडियाए (घ, व) ।

४-सकुलिं (घ, छ), सक्कुलिं (क्वचित्) ।

५-× (घ, छ, वृ) ।

४७-से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता, तत्थितरे-
तरेहिं^१ कुलेहिं सामुदाणियं, एसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता
आहारं आहारेज्जा ।

४८-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति वेमि ।^०

पंचमो उद्देशो

४९-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अग्ग-पिंडं उक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं णिक्खिप्पमाणं
पेहाए,

अग्ग-पिंडं हीरमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभाइज्जमाणं
पेहाए,

अग्ग-पिंडं परिभुज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिट्ठवेज्जमाणं
पेहाए,

पुरा असिणाइ^२ वा, अवहाराइ वा, पुरा जत्थन्ने समण-
माहण-अत्तिहि-किविण-वणीमगा खद्धं-खद्धं उवसंकमंति, से
हंता अहमवि खद्धं^३ उवसंकमामि, माइट्ठाणं संफासे, णो
एवं करेज्जा ।

१-तत्थियराइयरेहिं (घ, व) ।

२-असणाइ (क, व) ; असिणेइ (छ) ।

३-खद्धं खद्धं (छ, व) ।

विसमट्टाण-परक्कम-पद

५०-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे—

अंतरासे वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि^१ वा,
तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा—
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

५१-केवली बूया आयाणसेयं—

से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, 'पक्खलेज्ज वा'^२, पवडेज्ज
वा, से तत्थ पयलमाणे वा, 'पक्खलमाणे वा'^३, पवडमाणे
वा, तत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा,
सिंघाणेण वा, वतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण
वा, सोणिण्ण वा, उवलित्ते सिया ।

तहप्पगारं कायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए
पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए,
णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दासुए जीवपइट्ठिए,
सअडे सपाणे^४सबीए सह्रिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-
दग्ग-मट्ठिय-मक्कडा°-संताणए,

णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा, णो संलिहेज्ज वा,
'णो णिल्लिहेज्ज वा'^५, णो^५ उव्वलेज्ज वा, णो उव्वट्ठेज्ज वा,
णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

१-पोगाराणि (अ), पोगलाणि (ब) ।

२-× (अ, क, घ, च, व) ।

३-× (अ, क, घ, च, व) ।

४-× (छ) ।

५-× (अ, क, घ, च, व) सर्वत्र ।

से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा, पत्तं वा, कट्टं वा, सक्करं वा, जाइज्जा, जाइत्ता से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता अहे भामथंडिलंसि वा, *अट्टि-रांसिसि वा, किट्ट-रांसिसि वा, तुस-रांसिसि वा, गोमय-रांसिसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा; संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

वियाल-परक्कम-पद

५२-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 गोणं वियालं पडिपहे° पेहाए,
 महिसं वियालं पडिपहे पेहाए,
 एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थि², सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं,
 अच्चं, तरच्चं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोल-
 सुणयं, कोकंतियं, चित्ताचिच्चलडयं—
 वियालं पडिपहे पेहाए,
 सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

५३-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे—
 अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कट्टे वा, घसी³ वा,
 भिलुगा वा, विसमे वा, विज्जले वा, परियावज्जेज्जा—

१-पडिपह (अ, क, च) ।

२-हत्थी (अ, क, च, छ) ।

३-वसा (व) ।

सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

कंटक-बोदिया-पदं

५४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलस्स दुवार-बाहं कंटक-बोदियाए परिपिहियं पेहाए, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुन्नविय, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

अणावायमसलाय-चिट्ठण-पद

५५-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
समणं वा, माहणं वा, गामपिंडोलगं वा, अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा ।

५६-‘केवली बूया आयाण मेयं—

पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असणं वा ४ आहट्टु दलएज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा’ ।

से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।

परिमायण-संभुंजण-पदं

५७-से से^१ परो अणावायमसंलोए चिद्धमाणस्स असणं वा ४

आहट्टु दलएज्जा, से यं^२ वदेज्जा-

आउसंतो समणा ! इमे भे असणे वा ४ सव्वजणाए निसिद्धे,
तं भुंजह वा^३ णं परिभाएह वा णं ।

तं चेगइओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ उवेहेज्जा, अवियाइं एवं
मम मेव सिया, एवं^४ माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, तत्थ गच्छेत्ता, से पुव्वामेव
ओलोएज्जा-आउसंतो समणा ! इमे भे असणं वा ४
सव्वजणाए णिसिद्धे, तं भुंजह वा णं, परिभाएह वा णं ।

से णेवं^५ वदंतं परो वएज्जा-आउसंतो समणा ! तुमं चैव
णं परिभाएहि ।

से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-
ऊसढं रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिद्धं-णिद्धं लुक्खं-लुक्खं ।
से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगिद्धिए अणज्जोववण्णे बहुसम
मेव परिभाएज्जा ।

से णं परिभाएमाणं परो वएज्जा-आउसंतो समणा ! मा णं
तुमं परिभाएहि, सव्वे वेगत्तिया भोक्खामो वा, पाहामो
वा ।

से तत्थ भुंजमाणे णो अप्पणो खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं
रसियं-रसियं मणुन्नं-मणुन्नं णिद्धं-णिद्धं लुक्खं-लुक्खं ।

१-X (घ) ।

२-एवं (घ) ।

३-व (अ, व) ।

४-X (अ, घ, च) ।

५-X एवं (घ) ।

से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगटिए अणज्कोववण्णे बहुसम
मेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा ।

पुव्वपविट्टसमणादि-उवाइक्कमण-पदं

५८—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
समणं वा, माहणं वा, गाम-पिंडोलगं वा, अतिहिं वा
पुव्वपविट्ठं पेहाए, णो ते उवाइक्कम्म पविसेज्ज वा,
ओभासेज्ज वा ।

से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, एगंत मवक्कमेत्ता
अणावाय मसंलोए चिट्ठेज्जा ।

५९—अह पुणेवं जाणेज्जा—

पडिसेहिए व^१ दिन्ने वा, तओ तम्मि णियत्तिए ।
संजयामेव पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ॥

६०—एयं^२ खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,
*जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि^० ।

छट्टो उद्देसो

भत्तठ-समुदितपाणाण उज्जुगमग-पद

६१—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
रसेसिणो बहवे पाणा घासेसणाए संथडे सण्णिवइए पेहाए,

१-वा (छ) ।

२-एवं (अ, क, छ, वृ) ।

तं जहा—कुक्कुड-जाइयं वा, सूयर-जाइयं वा, अग्गपिंडंसि
वा वायसा संथडा सण्णिवइया पेहाए—
सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

गाहावइकुल-पविट्टस्स अकरणिज्ज-पद

६२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे—

नो गाहावइ-कुलस्स दुवार-साहं^१ अवलंबिय-अवलंबिय
चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स दगच्छड्डुणमत्ताए चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स चंदणियए चिट्ठेज्जा,

नो गाहावइ-कुलस्स सिणाणस्स वा, वच्चस्स वा, संलोए
सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा,

णो गाहावइ-कुलस्स आलोयं वा, थिग्गलं वा, संधिं वा,

दग-भरणं वा बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए वा

उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय

णिज्झाएज्जा,

णो गाहावइं अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय जाएज्जा,

णो गाहावइं अंगुलियाए चालिय-चालिय जाएज्जा,

णो गाहावइं अंगुलियाए तज्जिय-तज्जिय जाएज्जा,

णो गाहावइं अंगुलियाए उक्खलुंपिय^२-उक्खलुंपिय जाएज्जा,

णो गाहावइं वंदिय-वंदिय जाएज्जा,

'णो व णं'^३ फरसं वएज्जा ।

१-दुवार सामगिय (अ); दुवारवाह (क, च, चू); वारसाह (घ) ।

२-चाउगुलंपिय २ (अ); उक्खलपिय २ (क, च); उक्खुलविय २ (घ, ङ) ।

३-णो चेषण (अ); णो वयणं (च, छ, ङ) ।

पुरेकम्म-आदि-पद

६३-अह तत्थ कंचि^१ भुंजमाणं पेहाए, तं जहा—गाहावइं^२ वा,
 *गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं
 वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासि
 वा, कम्मकरं वा,^० कम्मकरि वा,

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति
 वा दाहिसि मे एत्तो अन्नयरं भोयणजायं ?

से सेवं वयतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्वि वा, भायणं
 वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा,
 उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति
 वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दव्वि वा, भायणं वा,
 सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेहि
 वा, पहोएहि वा,

अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्वि वा, भायणं
 वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा,
 उच्छोलेत्ता पहोइत्ता आहट्टु दलएज्जा—

तहप्पगारेण पुरेकम्मकएण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए
 वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफासुयं अणेसणिज्जं *त्ति
 मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

१-किंचि (क, घ, छ) ।

२-गाहावइय (च, छ) ।

६४—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो पुरेकम्मकएण, उदउल्लेण । तहप्पगारेण उदउल्लेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा, असणं वा ४ अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

६५—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो उदउल्लेण, ससिणिद्धेण । *तहप्पगारेण ससिणिद्धेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६६—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ससिणिद्धेण, ससरक्खेण । तहप्पगारेण ससरक्खेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६७—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ससरक्खेण, मट्टिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण मट्टिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६८—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो मट्टिया-संसट्ठेण, ऊस-संसट्ठेण । तहप्पगारेण ऊस-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

६९—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो ऊस-संसट्ठेण, हरियाल-संसट्ठेण । तहप्पगारेण हरियाल-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७०—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो हरियाल-संसट्ठेण, हिंगुलय-संसट्ठेण । तहप्पगारेण हिंगुलय-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७१-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो हिगुलय-संसट्ठेण, मणोसिला-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
मणोसिला-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७२-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो मणोसिला-संसट्ठेण, अंजण-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
अंजण-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७३-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो अंजण-संसट्ठेण, लोण-संसट्ठेण । तहप्पगारेण लोण-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७४-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो लोण-संसट्ठेण, गेरुय-संसट्ठेण । तहप्पगारेण गेरुय-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७५-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो गेरुय-संसट्ठेण, वण्णिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
वण्णिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७६-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो वण्णिया-संसट्ठेण, सेड्डिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
सेड्डिया^१-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७७-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो सेड्डिया-संसट्ठेण, सोरट्टिया-संसट्ठेण । तहप्पगारेण
सोरट्टिया-संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

७८-अह पुण एवं जाणेज्जा-

णो सोरट्टिया-संसट्ठेण, पिट्ठ-संसट्ठेण । तहप्पगारेण पिट्ठ-
संसट्ठेण हत्थेण वा (१।६४) ।

१-सेड्डिय (क) ।

७९—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो पिट्ट-संसट्टेण, कुक्कस-संसट्टेण । तहप्पगारेण कुक्कस-संसट्टेण हत्थेण वा (१।६४) ।

८०—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो कुक्कस-संसट्टेण, उक्कुट्ट^१-संसट्टेण । तहप्पगारेण उक्कुट्ट-संसट्टेण हत्थेण वा (१।६४) ।^०

८१—अह पुण एवं जाणेज्जा—

णो असंसट्टे, संसट्टे । तहप्पगारेण संसट्टेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दब्बीए वा, भायणेण वा, असणं वा ४ फासुयं
 *ग्गसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा^२ ।

पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं

८२—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्टे समाणे,^० सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा, वहुरयं वा, *भज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा,^० चाउलपलंबं वा,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए, *चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्टिए, सअंडे सपाणे सवीए सहुरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-^० मक्कडा-संताणाए कोट्टेंसु वा, कोट्टित्ति वा, कोट्टिस्संति वा, उप्पणिसु^३ वा, उप्पणिति वा, उप्पणिस्संति वा—

१—उक्कुट्टा (क) ।

२—अह पुणंवं जाणेज्जा असंसट्टे तहप्पगारेण संसट्टेण हत्थेण वा ४ असणं वा ४ फासुयं जाव पडिगाहेज्जा (छ) प्रतौ एतत् सूत्रमधिकमस्ति ।

३—उप्फ^० (अ क, च) ।

तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउलपलंबं वा-अफासुयं
 *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

लोग-पदं

८३-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
 अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-
 विलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं,
 अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए, *चित्तमंताए
 लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे
 सबीए सह्रिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्ठिय-
 मक्कडा-० संताणाए भिंदिसु वा, भिंदंति वा, भिदिस्संति
 वा, रच्चिसु वा, रच्चिति वा, रच्चिस्संति वा-
 विलं वा लोण, उब्भियं वा लोणं-अफासुय *अणेसणिज्जं
 ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

अगणि-णिक्खित्त-पदं

८४-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
 अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-
 असणं वा ४ अगणि-णिक्खित्त,
 तहप्पगारं असण वा ४ अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे०
 लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८५-केवली बूया आयाण मेयं-

अस्संजए^१ भिक्खु-पडियाए उस्सिचमाणे वा, निस्सिचमाणे
 वा, आमज्जमाणे वा, पमज्जमाणे वा, ओयारेमाणे वा,
 उव्वत्तमाणे^२ वा, अगणिजीवे हिंसेज्जा ।

१-असजए (छ) ।

२-ओयत्तेमाणे (अ, क) ; पवत्तेमाणे (छ) ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं,
एसुवएसे-

तं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणि-णिक्खित्तं—अफासुयं
अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।

सत्तमो उद्देशो

मालोहड-पदं

८७—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा ४ खधंसि वा, थंभंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा,
पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नयरंसि वा तहप्पगारसि
अंतलिकखजायंसि उवणिक्खित्ते सिया—
तहप्पगारं मालोहडं असणं वा ४ अफासुय *अणेसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

८८—केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा, फलमं वा, णिस्सेणि वा,
उदूहलं वा, अवहट्टु उस्सविय आरुहेज्जा^१ ।
से तत्थ दुरुहमाणे^२ पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा,

१-दुहेज्जा (अ, ब); दूहिज्जा (घ), दुरुहेज्जा (च)।

२-दूहमाणे (घ)।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि वा, अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा—

तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा४ *अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

८९—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा४ कोट्टियाओ वा, कोलज्जाओ० वा,
अस्संजए भिक्खु-पडियाए उक्कुज्जिय, अवउज्जिय, ओहरिय,
आहट्टु दलएज्जा—

तहप्पगारं असणं वा४ मालोहडं३ ति णच्चा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

मिट्ठिओलित्त-पद

९०—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४ मट्ठिओलित्तं४,

तहप्पगारं असणं वा४ *अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१—बाहुं (अ, क, घ, ब) ।

२—कोलेज्जाओ (क, च) ; कोलिज्जाओ (घ) ।

३—माला० (छ) ।

४—० ओवलित्तं (घ, छ) ।

९१—केवली बूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए मट्टिओलित्तं असणं वा४
उब्भिदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा,

तह तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तस कायं समारंभेज्जा,
पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइण्णा, एस हेऊ, एस
कारणं, एसुवएसे०,

जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा४ *अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पुढविकाय-पइट्टिय-पदं

९२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणु-०पविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा४
पुढविकाय-पइट्टियं तहप्पगारं असणं वा४ *पुढविकाय-
पइट्टियं०—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते०
णो पडिगाहेज्जा ।

आउकाय-पइट्टिय-पद

९३—*से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा४ आउकाय-पइट्टियं—
तहप्पगारं असणं वा४ आउकाय-पइट्टियं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अगणिकाय-पइट्टिय-पदं

९४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा४ अगणिकाय-पइट्टियं—

तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्टियं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते गो पडिगाहेज्जा ।^०

९५—केवली ब्रूया आयाण मेयं—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए अगणि ओसक्किय^१, णिस्सक्किय^२,
ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइण्णा, एस हेऊ, एस
कारणं, एसुवएसे.

जं तहप्पगारं असणं वा ४ अगणिकाय-पइट्टियं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० गो पडिगाहेज्जा ।

अच्चुसिण-वीयण-पदं

९६—से भिक्खू वा भिक्खुणो वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

असणं वा ४ अच्चुसिणं,

अस्संजए भिक्खु-पडियाए सूवेण^३ वा, विहुवणेण^४ वा,
तालियटेण वा, 'पत्तेण वा'^५, साहाए वा, साहा-भंगेण वा,
पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा,
हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो! त्ति वा, भगिणि! त्ति
वा मा एयं तुमं असणं वा ४ अच्चुसिणं सूवेण वा, विहुवणेण
वा, तालियटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहाभंगेण वा,
पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा,

१—उस्सक्किय (क, घ, च) ; उस्सिक्किय (छ) ; ओसिक्किय (अ) ।

२—णिस्सिक्किय (अ, छ, व) ।

३—सुप्पेण (अ, च) ।

४—विहुयणेण (अ, क, घ, च) ।

५—X (घ, वृ) ।

१०२-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं^१
जाणेज्जा—

अणंतरहियाए पुढवीए *ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए
पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेल्लुए,
कोलावासंसि वा दाए जीवपइड्डिए, सअंडे सपाणे सबीए
सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-°
संताणए ओद्धट्टु^२ निक्खित्ते सिया ।

असंजए भिक्खु-पडियाए उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा,
सकसाएण वा, मत्तेण वा, सीओदएण वा संभोएत्ता आहट्टु
दलएज्जा—

तहप्पगारं पाणग-जायं-अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे°
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०३-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, *जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।°

अट्टमो उद्देशो

१०४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पाणग-जायं
जाणेज्जा—

१-पाणगं (वु, वु, च) ।

२-ओहट्ट (क) ।

तं जहा-अंब-पाणगं वा, अंबाडग-पाणगं वा, कविट्ट-पाणगं वा, मातुल्लिग^१-पाणगं वा, मुद्धिया-पाणगं वा, दाडिम-पाणगं वा, खज्जूर-पाणगं वा, णालिएर-पाणगं वा, करीर-पाणगं वा, कोल-पाणगं वा, आमलग-पाणगं वा, चिंचा-पाणगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए^२ भिक्खु-पडियाए छब्बेण^३ वा, दूसेण^४ वा, वालगेण वा, आवीलियाण वा, परिपीलियाण वा, परिस्सावियाण^५ आहट्टु दलएज्जा—
तहप्पगारं^६ पाणग-जायं—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे^७ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

गघ-आघायण-पदं

१०५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^७ समाणे,
से आगतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा—अन्न-गंधाणि वा, पाण-गंधाणि वा, सुरभि-गंधाणि वा, अघाय^८-अघाय—से तत्थ आसाय-पडियाए मुच्छिए गिद्धे गट्ठिए अज्झोववन्ने अहोगंधो-अहोगंधो णो गंध माघाएज्जा ।

१—मातुल्लुग (अ, घ), मातुलेग (क), मातुलग (च) ।

२—असजए (क, च) ।

३—छप्पेण (अ, च) ; छट्ठेण (घ) ।

४—दूयेण (छ) ।

५—परिसाइयाण (क, छ, ब), परिसावियाण (घ) ।

६—आहट्टुगारं (घ) ।

७—आघाय (अ, क, च) ।

सालुय-आदि-पदं

१०६-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
सालुयं वा, विरालियं वा, सासवणालियं वा—
अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं
*अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पिप्पलि-आदि-पदं

१०७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पिप्पलि^१ वा, पिप्पलि-चुण्णं वा, मिरियं वा, मिरिय-चुण्णं
वा, सिगबेरं वा, सिगबेर-चुण्णं वा—
अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं
*अणेसणिज्जं ति मन्नमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

पलब-जाय-पदं

१०८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण पलंब^२-जायं
जाणेज्जा—
तं जहा—अंब-पलंबं वा, अंबाडग-पलंबं वा, ताल-पलंबं वा,
भिज्जिभरि^३-पलंबं वा, सुरभि^४-पलंबं वा, सल्लइ-पलंबं वा—
अन्नयरं वा तहप्पगारं पलंब-जायं आमगं असत्थ-परिणयं—
अफासुयं अणेसणिज्जं *ति मन्नमाणे° लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

१—पिप्पलि (छ) ।

२—पलबग (ब) ।

३—भिज्जिभरि (अ), भिज्जिभर (घ, छ) ।

४—सुरघु (छ) ।

पवाल-जाय-पदं

१०९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^१ समाणे, सेज्जं पुण पवाल-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—आसोत्थ^१-पवालं वा, णग्गोह^२-पवालं वा, पिलुंखु-
पवालं वा, णीपूर^३-पवालं वा, सल्लइ-पवालं वा—
अन्नयरं वा तहप्पगारं पवाल-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-
अफासुयं अणेसणिज्जं *ति मन्नमाणे लाभे संते^० णो
पडिगाहेज्जा ।

सरडुय-जाय-पदं

११०-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^१ समाणे, सेज्जं पुण सरडुय-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—अंब-सरडुयं वा, अंबाडग-सरडुयं वा, कविट्ठ-
सरडुयं वा, दाडिम-सरडुयं वा, विल्ल^४-सरडुयं वा^५—
अणयरं वा तहप्पगारं सरडुय-जायं आमगं असत्थ-परिणयं-
अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो^०
पडिगाहेज्जा ।

मंथु-जाय-पदं

१११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^१ समाणे, सेज्जं पुण मंथु-जायं जाणेज्जा—
तं जहा—उंबर-मंथुं वा, णग्गोह-मंथुं वा, पिलुंखु^६-मंथुं वा,
आसोत्थ-मंथुं वा—

१-आसोत्तु (क, घ) ; आसत्थ (छ) ।

२-णिग्गोह (छ) ।

३-णीपूर (अ, घ, छ, ब) ।

४-फिल्ल (क) ; पिल्ल (घ) ।

५-वा पिप्पल्लि (च) ।

६-पिलक्खु (क, च) ।

अण्णयरं वा तहप्पगारं मंथु-जायं आमयं दुक्कं साणुबोयं—
अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो
पडिगाहेज्जा ।

आमडाग-आदि-पदं

११२—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
आमडागं वा, पूइपिण्णागं वा, महुं वा, 'मज्जं वा'^१, सप्पि
वा, खोलं वा पुराणगं ।

एत्थ पाणा अणुप्पसूया, एत्थ पाणा जाया, एत्थ पाणा
संवुड्ढा, एत्थ पाणा अबुक्कंता^२, एत्थ पाणा अपरिणया,
एत्थ पाणा अविद्धत्था^३—अफासुयं अणेसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

उच्छु-मेरग-आदि-पदं

११३—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
उच्छु-मेरगं वा, अंक-करेलुयं वा, कसेरुगं वा, सिंघाडगं वा,
पूति आलगं वा—

अन्नयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थ-परिणयं—*अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

उत्तरल-आदि-पदं

११४—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

१—x (च) ।

२—वक्कंता (क, छ) ; ऽवक्कंता (च) ; बुक्कंता (ब) ।

३—णो विद्धत्था (घ, छ) ।

उप्पलं वा, उप्पल-नालं वा, भिसं वा, भिस-मुणालं वा,
पोक्खलं वा, पोक्खल-विभंगं^१ वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं *आमगं असत्थ-परिणयं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

अगवीय-आदि-पदं

११५-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अग्ग-बीयाणि वा, मूल-बीयाणि वा, खंध-बीयाणि वा, पो-
र-बीयाणि वा,

अग्ग-जायाणि वा, मूल-जायाणि वा, खंध-जायाणि वा,
पोर-जायाणि वा,

णण्णत्थ तक्कलि-मत्थएण वा, तक्कलि-सीसेण वा,
णालिएरि^२-मत्थएण वा, खज्जूरि^३-मत्थएण वा, ताल-
मत्थएण वा—

अन्नयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—*अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

उच्छु-पदं

११६-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

उच्छुं वा काणगं^४ अंगारिय संमिस्सं विगदूमियं^५, वेत्तगं^६
वा, कंदलीऊसुयं^७ वा—

१—^० -विभाग (क, च) ।

२—णालिएर (अ, च, ब) ।

३—खज्जूर (ब) ।

४—काणं (घ, व) ।

५—वइदूमियं (अ) ; विगदूमियं (घ, ब) . विविदूमियं (छ) ।

६—वेत्तगं (अ) , वित्तज्जगं (घ) , वेत्तागं (छ) ।

७—^० उस्सुगं (च) ; ^० ऊसिगं (छ) ; चूर्णं अन्येपि शब्दा दृश्यन्ते—कलतो सिम्बा-
कलो चणगो, ओली सिंगा तस्स चैव, एव मुग्ग मासाणावि ।

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं *—अफासुं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

लसुण-पद

११७—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुल पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

लसुणं वा, लसुण-पत्तं वा, लसुण-नालं वा, लसुण-कंदं वा,
लसुण-चोयगं^१ वा—

अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

अत्थिय-आदि-पदं

११८—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अत्थियं^२ वा, कुंभिपक्कं तिदुगं वा, वेलुयं^३ वा, कासव-
णालियं वा—

अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

कण-आदि-पद

११९—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे° समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा—

कणं वा, कण-कुंडगं वा, कणं-पूयलियं वा, चाउलं वा,
चाउल-पिट्ठं वा, तिलं वा, तिल-पिट्ठं वा, तिल-पप्पडगं वा—

१-° -चोय (क, घ, च, छ, व) ।

२-अच्छिय (च) ।

३-पेल्लुयं (क) ; पलुगं (च) ।

४-° -पूयलियं (क, च, छ, व) ।

अन्नतरं वा तहृप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं—^१अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

१२०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,
^२जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

—ति वेमि ।^०

नवमो उद्देशो

पच्छाकम्म-पद

१२१—इह खलु पाईणं वा, पडोणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा
संतेगइया सड्ढा भवन्ति—

गाहावई वा, ^३गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा,
गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा,
दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,^० कम्मकरीओ
वा ।

तेसि च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवन्ति समणा
भगवन्तो सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा वंभचारी
उवरया मेहुणाओ धम्माओ,

णो खलु एएहिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे^१ वा ४ भोत्तए
वा, पायत्तए^२ वा ।

सेज्जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए^३ णिद्धियं, तं जहा-
असणं वा ४ सव्वमेयं समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वटं
पच्छा वि अप्पणो अट्ठाए असणं ४ चेइस्सामो ।

१-असण (क) ।

२-पात्तए (क), पायए (च); पाएत्तए (घ) ।

३-सयट्ठाए (अ, क, च) ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, तहप्पगारं असणं वा ४
अफासुयं अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे° लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं

१२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा 'समाणे वा, वसमाणे वा'^१,
गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-
गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं
वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा,
सण्णिवेसं वा,° रायहाणि वा ।

इमंसि खलु गामंसि वा, *णगरंसि वा, खेडंसि वा कव्वडंसि
वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि
वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा,°
रायहाणिसि वा—सतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया^२ वा,
पच्छासंथुया वा परिवसंति, तं जहा—

गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा,
गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा,
दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरोओ वा ।

तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा
णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

१२३-केवली बूया—आयाण मेयं । पुरा पेहाए तस्स परो अट्टाए
असणं वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइण्णा, एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो—°

१-समाणे वसमाणे वा (क, च, ब) ; समाणे (घ, छ) ।

२-पुव्व ° (ब) ।

जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वासेव भत्ताए वा, पाणाए वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायम-संलोए च्चिट्ठेज्जा ।

से तत्थ कालेणं अणुपविसेज्जा, रत्ता तत्थियरेयरेहि कुलेहिं सामुदाणियं^१, एसियं, वेसियं, पिंडवायं, एसित्ता आहारं आहारेज्जा ।

सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा ४ उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चा-इक्खिस्सामि । माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा-आउसो ! त्ति वा, भग्गिणि ! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा ४ भोत्तए वा, पायए वा । मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि ।

से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा ४ उवक्खडेत्ता आहट्ठ दलएज्जा ।

तहप्पगारं असणं वा ४ अफासुयं *अणेसणिज्ज त्ति मण्णमाणे^० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

नन्तथ-गिलाणाए-पदं

१ २४-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, सेज्जं पुण जाणेज्जा-

मंसं वा, मच्छं वा भज्जिज्जमाणं^१ पेहाए, तेव्वपूयं वा
 आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए, णो खद्धं-खद्धं उवसंक-
 मित्तु ओभासेज्जा,
 णन्तथ गिलाणाए^२ ।

माइट्ठाण-पदं .

१२५-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
 अणुपविट्ठे^० समाणे, अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता सुब्भि-
 सुब्भि भोच्चा दुब्भि-दुब्भि परिट्ठवेइ ।

माइट्ठाणं^३ संफासे । णो एवं करेज्जा ।

सुब्भि वा दुब्भि वा, सच्चं भुंजे न छड्ढए ॥

१२६-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
 अणुपविट्ठे^० समाणे, अण्णतरं वा पाणग-जायं पडिगाहेत्ता
 पुप्फं-पुप्फं आविइत्ता^४ कसायं-कसायं परिट्ठवेइ ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

पुप्फं-पुप्फेति वा, कसायं कसाए त्ति वा—सव्वमेयं भुंजेज्जा,
 णो किच्चि वि परिट्ठवेज्जा ।

१२७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुपरियावण्णं भोयण-जायं
 पडिगाहेत्ता^५ साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा
 अपरिहारिया अदूरगया । तेसिं अणालोइया^६ अणामंतिया^७
 परिट्ठवेइ ।

१-भज्जमाण (अ) ; भज्जमानमिति (वृ) ।

२-गिलाणीए (अ, क, च) ; गिलाणीसाए (छ) ।

३-सात्ति^० (व) ।

४-आवेइत्ता (च) ; आवीइत्ता (छ) ।

५-पडिगाहेत्ता बहवे (अ, छ, व) ।

६-^० इय (च, छ) ।

७-^० मंते (घ) ।

माइद्वाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता, से पुव्वामेव
आलोएज्जा—आउसंतो! समणा! इमे मे असणे^१ वा ४
बहुपरियावण्णे, तं भुंजह णं^२ ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो! समणा! आहारमेयं
असणं वा ४ जावइयं-जावइयं परिसडइ^३, तावइयं-तावइयं
भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

सव्वमेयं परिसडइ^४, सव्वमेयं भोक्खामो वा, पाहामो वा ।

बहियानीहड-पदं

१२८—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे^०, सेज्जं पुण जाणेज्जा—
असणं वा ४ परं समुद्धिस्स बहिया णीहडं, जं^५ परेहिं
असमणुन्नायं अणिसिद्धं-अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे
लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा,
जं^६ परेहिं समणुन्नायं सम्मं^० णिसिद्धं-फासुयं *एसणिज्जं ति
मण्णमाणे^० लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१२९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,
*जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सयाजए ।

—ति वेमि ।^०

१—असणं (क) ।

२—व ण (अ, व) ।

३—^० सरइ (घ, च, छ) ।

४—^० सरइ (घ, च) ।

५,६—तं (अ, क, घ, च) ।

७—सम (अ, क, घ, व) ।

दसमो उद्देशो

माइट्टाण-पदं

१३०—से एगइओ साहारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए
अणापुच्छिता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं
दलाति^१ ।

माइट्टाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता^२ वएज्जा^३—आउसंतो!
समणा! संति मम पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा, तं
जहा—

आयरिए वा, उवज्भाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा,
गणहरे वा, गणावच्छेइए वा । अवियाइं एएसिं खद्धं-खद्धं
दाहामि ।

‘से णेवं वयंतं’^४ परो वएज्जा—कामं खलु आउसो! अहापज्जतं
णिसिराहि^५ ।

जावइयं-जावइयं परो वयइ, तावइयं-तावइयं णिसिरेज्जा ।
सव्वमेयं परो वयइ, सव्वमेयं णिसिरेज्जा ॥

१३१—से एगइओ मणुन्नं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता पंतेण भोयणेण^६
पलिच्छाएति—मामेयं दाइयं संतं, दट्टूणं सयमायए ।

आयरिए वा, उवज्भाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी

१—दलयति (अ) ।

२—गच्छेत्ता पुव्वामेव (अ, छ, व) ।

३—आलोएज्जा (व) ।

४—सेवं (घ) ।

५—णिसिराहि (अ, छ) ।

६—भोयणे जाईण (घ) ।

वा, गणहरे वा,° गणावच्छेइए वा । णो खलु मे कस्सइ
किंचि वि दायव्वं सिया ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

से त्त मायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव उत्ताणए
हत्थे पडिगगहं कट्टु—'इमं खलु'^१ इमं खलु त्ति आलोएज्जा,
णो किंचि वि णिगूहेज्जा ।

१३२—से एगइओ अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता—

भइयं-भइयं भोच्चा, विवन्नं विरस माहरइ ।

माइट्ठाणं संफासे । णो एवं करेज्जा ।

बहु-उज्झिय-धम्मिय-पदं

१३३—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए

अणुपविट्ठे समाणे,° सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा, उच्छु-गंडियं वा, उच्छु-चोयगं वा, उच्छु-
मेरुगं^२ वा, उच्छु-सालगं वा, उच्छु-डगलं^३ वा, सिंबलिं^४
वा, सिंबलि-थालगं^५ वा ।

अस्सि खलु पडिगाहियंसि,

अप्ये सिया^६ भोयणजाए, बहुउज्झियधम्मिए ।

तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा [जाव] सिंबलि-थालगं वा—

१—× (क, घ, छ, ब) ।

२—° मेरुगं (अ, व) ।

३—आचारङ्गस्य १।१० वृत्तौ—'डालग' ति शाखैकदेशः । ७।२ वृत्तौ—'डालग' ति
आम्रमलक्षणा खण्डानि, इति लभ्यते, किन्तु निशीथस्य षोडशोद्देशे 'डगल' पाठो
लभ्यते । तद् भाष्ये चूर्णोडगलस्यार्थोविहितः । भाष्ये यथा—'डगल' चक्कलिछेदो
(५४११); चूर्णो यथा—चक्कलिछेदे छिण्ण डगलं भण्णति (भा० ४ पृष्ठ ६६) ।
आचारारणे लिपि-दोषतः परिवर्तनमिदं जातमिति संभाव्यते ।

४—सबलि (अ, क, च, छ) ; संपलि (व) ।

५—° थालिय (अ) ।

६—× (क, घ, च, छ) ।

अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

१३४—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,० सेज्जं पुण जाणेज्जा—
बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं ।
अस्सि खलु पडिगाहियंसि,
अप्पेसिया भोयण-जाएसु, बहुउज्झियधम्मिए ।
तहप्पगारं बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१३५—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे० समाणे, सिया णं परो बहु-अट्ठिएण मंसेण^१ उवणिमंतेज्जा—

आउसंतो! समणा! अभिकंखसि बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्ते? एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म, से पुव्वामेव आलोएज्जा—

आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्ते,
अभिकंखसि मे दाउं जावइयं, तावइयं पोग्गलं दलयाहि, मा अट्ठियाइं ।

से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्ठु अंतो-पडिग्गहंगंसि^२ बहु-अट्ठियं मंसं परिभाएत्ता^३ णिहट्ठु दलएज्जा ।

१—मसेण मच्छेण (अ, ब, छ) ।

२—० पडिग्गहंसि (अ) ।

३—परिभोएत्ता (अ) ; परियाभोएत्ता (क, च) ।

तहप्पगारं पडिग्गहं^१ परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—
अफासुयं अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे^० लाभे संते^० णो^०
पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णोहि त्ति वएज्जा, णो
अणहिति^२ वएज्जा ।

से त्त मायाए एगंतमवक्कमेज्जा एगंतमवक्कमेत्ता, अहे
आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, अप्पंडए *अप्प-पाणे
अप्प-बीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पु-त्तिग-पणग-दग-
मट्टिय-मक्कडा-^० संताणए मंसगं मच्छगं^३ भोच्चा अट्टियाइं
कंटए गहाय,

से त्त मायाए एगंत मवक्कमेज्जा, २ त्ता अहे ऋमथंडिलंसि
वा, *अट्टि-रासिसि वा, किट्ट-रासिसि वा, तुस-रासिसि वा,
गोमय-रासिसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
पडिलेहिय-पडिलेहिय,^० पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजया मेव
परिट्ठवेज्जा ।

अजाणया लोण-दाण-पदं

१३६-से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे^० समाणे,

सिया से परोअभिहट्टु अंतो-पडिग्गहए विलं वा लोणं,
उब्भियं वा लोणं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं
अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिग्गाहिए सिया, तं च णाइद्वरगए जाणेज्जा,

१—^० गहण (अ) ।

२—अणहिति ('छ) ।

३—X (घ) ।

से त्त.मायाए तत्थ गच्छेज्जा, २.त्ता पुव्वामेव आलोएज्जा—
आउसो! त्ति.त्ता, भइणि! त्ति.त्ता 'इमं ते किं जाणया
दिन्नं? उदाहु अजाणया' १?'

सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया ।
कामं^२ खलु आउसो! इदाणि णिसिरामि । तं भुंजह च णं,
परिभाएह च णं ।

तं परेहिं समणुन्नायं समणुसिद्धं, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा,
पीएज्ज वा ।

जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा । साहम्मिया
तत्थ वसंति संभोइया समणुन्ना अपरिहारिया अदूरगया
तेसि अणुपदातव्वं ।

सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावन्ने
कीरति, तहेव कायव्वं सिया ।

१३७.—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,
*जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।^०

एगारसमो उद्देशो

माइट्ठाण-पदं

१३८—भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु—समाणे वा, वसमाणे वा,
गामाणुगामं 'वा दूइज्जमाणे'^३ मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता,
से^४ भिक्खूं गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।

१—अजाणया दिन्नं (घ) ।

२—इमं (अ) ।

३—दूइज्जमाणे वा (अ) ; दूइज्जमाणे (च, छ, व) ।

४—से य (अ) ।

से य भिक्खू णो भुंजेज्जा । तुमं चेव णं भुंजेज्जासि ।
 से एगइओ भोक्खामिति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय
 आलोएज्जा, तं जहा-इमे पिंडे, इमे^१ लोए^२, इमे तित्तए,
 इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले, इमे महुरे, णो खलु
 एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति ।
 माइट्ठाणं संपासे । णो एवं करेज्जा ।
 तहाठियं^३ आलोएज्जा, जहाठियं^४ गिलाणस्स सदति—तं
 तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति
 वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा ।

मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं

१३९—भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु-समाणे वा, वसमाणे वा,
 गामाणुगामं (वा ?) दूइज्जमाणे मणुंन्तं भोयण-जायं लभित्ता
 से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह ।
 सेय भिक्खू णो भुंजेज्जा । आहारेज्जासि^५ णं ।
 णो खलु मे^६ अतराए आहरिस्सामि । इच्चेयाइं^७ आयतणाइं
 उवाइकम्म ।

पिंडेसणा-पाणेसणा-पद

१४०—अह भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ।

१—× (क, च, छ) ।

२—लुक्खए (छ) ।

३—तहेव तं (अ, च, छ) ।

४—जहेव तं (अ, च, छ) ।

५—आहारेज्जासि (अ, घ, छ, ब) ; आहारेज्जा से (क च) ।

६—इमे (अ, क, च, छ, ब) ।

७—इच्चेइयाइ (क, छ, ब) ।

१४१-तत्थ खलु इमा पढमा पिडेसणा-असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते ।
तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण^१ वा, असणं वा,
पाणं वा, खाद्दमं वा, साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो
वा से देज्जा-फासुयं^२ एसणिज्जं ति मणमाणे लाभे संते^३
पडिगाहेज्जा-पढमा पिडेसणा ।

१४२-अहावरा दोच्चा पिडेसणा-संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते ।

•तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, असणं वा ४
सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा-फासुयं एसणिज्जं ति
मणमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा-दोच्चा पिडेसणा ।^४

१४३-अहावरा तच्चा पिडेसणा-इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा,
दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवन्ति-गाहावई वा,
•गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ
वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ
वा, कम्मकरो वा,^५ कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूव-रूवेसु भायण-जाएसु
उवणिक्खित्तपुव्वे सिया, तं जहा—

थालंसि वा, पिठरंसि^२ वा, सरगंसि वा, परगंसि वा,
वरगंसि वा ।

अह पुणेवं जाणेज्जा-असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे
असंसट्ठे^३ मत्ते ।

से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहए^४ वा, से पुव्वामेव
आलोएज्जा-आउसो! ति वा भगिणि! ति वा एएगं तुमं

१-मत्तएण (अ, छ, ब) ।

२-पिठरगसि (अ, च), पिठरगसि (घ), पिठरंसि (ब) ।

३-सट्ठे वा (क, च) ।

४-पडिग्गहिए (छ, ब) ।

असंसद्वेण हत्थेण संसद्वेण मत्तेण, संसद्वेण वा हत्थेण असंसद्वेण मत्तेण, अस्सि पडिग्गहंसासि वा पाणिसि वा णिहट्टु उवित्तु दलयाहि ।

तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा फासुयं एसणिज्जं *ति मण्णमाणे^० लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा ।

१४४—अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा, *भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,^० सेज्जं पुण जाणेज्जा—

पिहुयं वा *बहुरजं वा, भुंज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा^०; चाउल-पलंबं वा ।

अस्सि खल्लु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा [जाव] चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा *—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा ।

१४५—अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, उवहितमेव^१ भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिंडिमंसि वा, कोसगंसि वा ।

अहपुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे ।

तहप्पगारं असणं वा ४ सयं वा णं जाएज्जा *परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा ।

अहावरा छट्ठा पिंडेसणा—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा

गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे,^०
पग्गहियमेव^१ भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पाय-
परियावन्तं, तं पाणि-परियावणं—फासुयं *एसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—छट्ठा पिडेसणा ।

१४६—अहावरा सत्तमा पिडेसणा—से भिक्खू वा *भिक्खुणी वा
गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे^० समाणे, बहु-
उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—

जं चऽन्ने वहवे द्रुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण
वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं-भोयण-
जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा *—फासुयं
एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा—सत्तमा
पिडेसणा । इच्चेयाओ सत्त पिडेसणाओ ।

१४७—अहावराओ सत्त पाणेसणाओ । तत्थ खलु इमा पढमा
पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—(११४१) ।

१४८—*अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते—
(११४२) ।

१४९—अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा,
दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवन्ति—(११४३) ।

१५०—अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, सेज्ज
पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं
वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा ।

१—उग्गहिय^० (अ, क, च) ; उग्गहित पग्गहित (चू) ।

अस्सि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए । तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फामुय एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

१५१—अहावरा पंचमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, उवहित-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(११४५) ।

१५२—अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, पग्गहिय-मेव पाणग-जायं जाणेज्जा—(११४६) ।

१५३—अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे, वहु उज्झिय-धम्मियं पाणग-जाय जाणेज्जा—° (११४७) ।

१५४—इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडसेणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्म पडिवन्ते ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सब्बे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए एवं च णं विहरंति ।

१५५—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, जं सब्बट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।

वीयं अज्भयणं

सेज्जा

पढमो उद्देशो

उवस्सयएसणा-पदं

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए^१,
अणुपविसित्ता गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा,
मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,
आसमं वा, सण्णिवेसं वा^०, रायहाणिं वा,

सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

सअंडं *सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-
दग-मट्टिय-मक्कडा-^० संताणयं ।

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा
चेतेज्जा ।

२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अप्पंडं अप्पपाणं *अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-^० संताणयं ।

तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव
ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।

अस्सिपडियाए-उवस्सय-पदं

३—सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
 * (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा० अणासेविते
 वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

४-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
 जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
 अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
 (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते
 वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

५-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
 जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
 अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
 (बहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
 वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते
 वा णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

६-सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,
 भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
 अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

(वहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।^०

समण-माहणाड-समुद्दिस्स-उवस्सय-पटं

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स^१ पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं *समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चएइ ।

तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा, अपुरिसंतरकडे वा (वहिया णीहडे वा अणीहडे वा) अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—

बह्वे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु^० चएइ ।

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे * (अवहिया णीहडे) अणत्तट्टिए अपरिभुत्ते^० अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, * (वहिया णीहडे)

अत्तट्टिए, परिभुत्ते^०, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१-समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं (घ, च) ।

परिकम्मिय-उवस्सय-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंभिए^१ वा, छन्ने
वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपधूमिए वा ।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, °(अबहिया णीहडे)
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चैतेज्जा ।

११—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, °(बहिया णीहडे)
अत्तट्टिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चैतेज्जा ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुट्टियाओ दुवारियाओ
महल्लियाओ कुज्जा,

°महल्लियाओ दुवारियाओ खुट्टियाओ कुज्जा,

समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,

विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,

पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,

णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,

अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिदिय-छिदिय,
दालिय-दालिय ।° संधारगं संधारेज्जा°, बहिया वा
णिण्णक्खु ।^३

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, °(अबहिया णीहडे)
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं
वा, णिसीहियं वा चैतेज्जा ।

१-उक्कंपिए (क, घ, च, व) ।

२-संधारेज्जा (म, क, घ, च, व) ।

३-णिण्णक्खु (क, छ) ।

१३-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, * (बहिया णीहडे) अत्तट्टिए, परिभुत्ते^०, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा (तयाणि वा?)^१, पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु ।

तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, * (अबहिया णीहडे) अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते^० णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१५-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, * (बहिया णीहडे) अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा^० चेतैज्जा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खू-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणि वा, उदूहलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खु ।
तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे, * (अबहिया णीहडे) अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए^० णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१७-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे * (बहिया णीहडे) अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा^० चेतैज्जा ।

१-अद्यप्ययमत्र प्रतिषु नोपलभ्यते, तथापि ३।३।५५ सूत्रमनुसुत्यासावज्ज युज्यते ।

अंतलिकख-जाय-उवस्सय-पदं

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
तंजहा—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि
वा, हम्मियतलंसि वा, अन्नतरंसि वा तहप्पगारंसि वा
अंतलिकखजायंसि, गण्णत्थ आगाढाणागाढेहि^१ कारणेहि
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

से य आहच्च चेतिते सिया, णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा,
उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि
वा, दंताणि वा, मुहं वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा ।

णो तत्थ ऊसढं पगरेज्जा, तंजहा—उच्चारं वा, पासवणं वा,
खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा, पूत्तिं वा, सोणियं
वा, अन्नयरं वा सरीरावयवं ।

१९-केवली बूया—आयाण मेयं । से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज
वा पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे^२ वा पवडमाणे^३ वा हत्थं वा, *पायं वा,
बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा,^० सीसं वा, अन्नतरं वा कायंसि
इंदिय-जातं लूसेज्ज वा ।

पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि वा, सत्ताणि अभिहणेज्ज
वा, *वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा,
परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा,
जीविआओ^० ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, *एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो,^०

१-गाढा ° (क, च, व) ; आगाढावगाढेहि (घ) : आगाढादीहि (छ) ।

२-पयले ° (क, च, छ) ।

३-पवडे ° (क, च, छ) ।

जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिव्वजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
सइत्थियं, सखुड्डं, सपसुभत्तपाणं,
तहप्पगारे सागारिए^१ उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२१-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइ-कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स
अलसगे वा, विसूइया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा,^२
अन्नतरे वा से दुक्खे रोगातंके^३ समुप्पज्जेज्जा,
अस्संजए कल्लुण-पडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा,
घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेज्ज वा,
मक्खेज्ज वा,
सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण^४ वा, वण्णेण वा, चुन्नेण
वा, पउमेण वा, आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा,
उवट्ठेज्ज वा,
सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा 'उच्छोलेज्ज
वा'^५, पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा,
दारुणा वा दारुपरिणामं^६ कट्ठु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,

१-साकारिए (छ, व) ।

२-उप्पा ° (क, च, व) ।

३-रोगे आयके (घ) ।

४-लोद्धेण (अ, व) ।

५-उच्छोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा (व) ।

६-दारुणं परि ° (अ, च) ; दारुण ° (क) ।

पज्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता-पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा,
पयावेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं,
एस उवएसो,

ज तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२२-आयाण मेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स^१,
इह खलु गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता
वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ
वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा^०, कम्मकरीओ
वा अन्नमन्नं अक्कोसंति वा, बंधंति^२ वा, रंभंति वा,
उद्देवेति^३ वा ।

अह भिक्खूणं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अन्नमन्नं
अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु, बंधंतु, वा मा वा बंधंतु,
रंभंतु वा मा वा रंभंतु, उद्देवतु वा मा वा उद्देवतु ।

अह भिक्खूणं पुब्बोवदिट्ठा एस पइन्ना, *एस हेऊ, एस
कारणं, एस उवएसो^०,

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२३-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहि सद्धिं संवसमाणस्स^४,
इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,
पज्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा ।

१-वसमाणस्स (व) ।

२-पहति (क) ; × (च, व) ; वहति (अ) ।

३-उदति वा उद्देवेति (घ) ; उद्दंति वा उद्देवेति (छ) ।

४-वस^० (अ, घ, च, छ, व) ।

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालेंतु वा मा वा पज्जालेंतु, विज्ज्मावेंतु वा मा वा विज्ज्मावेंतु ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२४—आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,
इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए वा, 'हिरण्णे वा'^१, 'सुवण्णे वा'^२, कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि^३ वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा, तरुणियं वा कुमारिं अलंकिय-विभूसियं पेहाए,

अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा णो वा एरिसिया—इति वा णं वूया. इति वा णं मणं साएज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०,

जं तहप्पगारे (सागारिए?) उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२५—आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स,
इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-

१—X (अ) ।

२—X (छ) ।

३—तिसराणि (च) ।

सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा,
गाहावइ-कम्मकरीओ वा ।

तासिं च णं एवं वुत्तपुब्बं भवइ, जे इमे भवंति समणा
भगवंतो *सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया सवुडा
बंधचारी० उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसिं
कप्पइ मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टित्तए ।

जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा,
पुत्तं खलु सा लभेज्जा—ओयस्सिं तेयस्सिं वच्चस्सिं जसस्सिं
संपराइयं^१ आलोयण-दणिसणिज्ज ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी
सड्ढी^२ त तवस्सिं भिक्खुं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टा-
वेज्जा । अहं भिक्खूणं पुव्वोवदिञ्जा *एस पइन्ना, एस हेऊ,
एस कारणं, एस उवएसो०,

जं तहपगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

२६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गिय, *जं
सव्वट्टेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति वेमि ।०

१-सपहारियं (अ) ।

२-सहियं (अ) ; सहित (छ) ।

बीओ उद्देशो

२७-गाहावई णामेगे सुइ-समायारा भवन्ति, भिक्खू य असिणाणए^१ मोयसमायारे, 'से तग्गंघे'^२ दुग्गंघे पडिकूले पडिलोभे यावि भवइ ।

जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं ।

तं भिक्खु-पडियाए वट्टमाणे करेज्जा वा, नो 'वा करेज्जा ।'^३

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसोहियं वा° चेतैज्जा ।

२८-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स, इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सअट्ठाए विरूव-रूवे भोयण-जाए उवक्खडिं सिया,

अह पच्छा भिक्खु-पडियाए असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा उवक्खडेज्ज वा, उवकरेज्ज वा,

तं च भिक्खू अभिकंखेज्जा भोत्तए वा, पायए वा, वियट्टित्तए वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°,

जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतैज्जा ।

१-असिणाणाए (अ) ।

२-से से गंघे (अ, ब, क, घ, च, छ, चू) ।

३-करेज्जा (अ) ; करेज्जा वा (छ, ब) ।

२९-आयाण मेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धिं संवसमाणस्स,
 इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं
 भिन्न-पुव्वाइं भवंति,
 अह पच्छा भिक्खु-पडियाए विरूव-रूवाइं दारुयाइं भिदेज्ज
 वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,
 दारुणा वा दारुपरिणामं^१ कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा,
 पज्जालेज्ज वा ।
 तत्थ भिक्खू अभिक्खेज्जा आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा,
 वियट्ठित्तए वा ।
 अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ता, एस हेऊ, एस
 कारणं, एस उवएसो^०,
 जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाण वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं
 वा^२ चेतैज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे
 राओ वा विआले वा गाहावइ-कुलस्स दुवारवाहं अवंगुणेज्जा,
 तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसेज्जा ।
 तस्स भिक्खुस्स णो कप्पइ एवं वदित्तए—
 अयं तेणे पविसइ वा णो वा पविसइ,
 उवल्लियइ^३ वा णो वा उवल्लियइ,
 अइपतति^३ वा णो वा अइपतति,
 वदति वा णो वा वदति,
 तेण हडं अण्णेण हडं,
 तस्स हडं अण्णस्स हडं,

१-दारुण^० (घ, च) ।

२-उव्वलियति (च) ; उवलियति (छ) ।

३-आवयति (घ, च) ।

अयं तेणे अयं उवचरए,
 अयं हंता अयं एत्थमकासी,
 तं तवस्सि भिक्खुं^१ अतेणं तेणं ति संकत्ति,
 अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा^२ एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
 कारणं, एस उवएसो,
 जं तहप्पगारे उवस्सए । णो ठाणं वा, सेज्जं, णिसीहियं वा^०
 चेतैज्जा ।

तण-पलाला-च्छाइय-उवस्सय-पदं

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
 तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, सअंडे,^३ *सपाणे सबीए
 सहरिए सउसे सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय मक्कडा-^०
 संताणए,
 तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा
 चेतैज्जा ।

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
 तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, अप्पंडे^३ *अप्पपाणे
 अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिग-पणग-दग-
 मट्टिय-मक्कडा-संताणए,
 तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहिंत्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयामेव
 ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा^० चेतैज्जा ।

जेजयव्व-उवस्सय-पदं

३३-से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,
 परियावसहेसु वा अभिक्खणं-अभिक्खणं साहम्मिएहि ओवय-
 माणेहिं णोवएज्जा^४ ।

१-भिक्खुय (अ, छ) ।

२-चूर्णवित्र बहुवचन लभ्यते—'सडेहिं' ।

३-चूर्णवित्र बहुवचनं लभ्यते—'अपडेहिं' ।

४-गोयवएज्जा (अ) ; णो उवएज्जा (क, घ, च) ।

३४-से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°,
परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं
वा कप्पं उवातिणावित्ता' तत्थेव भुज्जो' संवसंति,
अयमाउसो! कालाइक्कंत-किरिया वि भवइ ।

उवट्टाण-किरिया-पदं

३५-से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°,
परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं
वा कप्पं उवातिणावित्ता तं दुगुणा तिगुणेण^१ अपरिहरित्त।
तत्थेव भुज्जो संवसंति,
अयमाउसो! उवट्टाण-किरिया वि^२ भवइ ।

अभिवक्कंत-किरिया-पदं

३६-इह खलु पाईणं वा, पड्डीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
संतेगइया,
सड्ढा भवन्ति, तंजहा—गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा,
गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-मुण्हाओ
वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°,
कम्मकरीओ वा ।

तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,
तं सट्ठमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बह्वे
समण-माहण-अतिहि-क्किवण-वणीमए समुट्ठिस्स तत्थ-तत्थ
अगारीहिं अगाराइं चेतित्ताइं भवन्ति,
तंजहा—आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा,

१-° तिणिता (अ, क, च, घ, ब) ।

२-भुज्जो भुज्जो (घ) ।

३-दुगुणेण (अ, क, घ, च, ब) । स्वीकृत पाठं वृत्पनुसारी वर्तते ।

४-अयमाउसो ! इतरा (अ, च, ब) ।

५-या वि (अ, ब) ।

सहाओ^१ वा, पवाओ^२ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-
 सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-
 कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध^३-कम्मंताणि वा,
 वक्क^४-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि
 वा, कट्ट-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, 'संति-कम्मं-
 ताणि वा'^५, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर^६-कम्मंताणि वा,
 'सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा'^७, भवणगिहाणि वा,
 जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव) भवण-
 गिहाणि वा तेहिं ओवयमाणेहिं ओवयंति,
 अयमाउसो! अभिक्कंत-किरिया वि^८ भवइ ।

अणभिक्कंत-किरिया-पदं

३७—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
 संतेगइया सड्ढा भवंति,
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।
 तेसि च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,
 तं सइहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे
 समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए समुद्धिस्स तत्थ-तत्थ
 अगारीहिं अगाराइं च्चेत्तिआइं भवंति,

१—सहाणि (क, घ, छ, ब) ।

२—पवाणि (अ, क, घ, छ, ब) ।

३—वत्थ^० (छ) ।

४—वल्कज^० (वृ) ।

५—संतिकम्मंताणि वा सुणणागारकम्मंताणि वा (अ) ।

६—कंदरा^० (अ) ।

७—सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा सयण-गिहाणि वा (छ) ।

८—या वि (अ, क, घ, च, ब) ।

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा
जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)
भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओवयंति,
अयमाउसो! अणभिवकंत-किरिया वि भवति ।

वज्ज-किरिया-पदं

३८—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
संतेगइया सड्ढा भवंति,
तंजहा गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।
तेसिं च णं एवं पुत्तपुक्वं भवइ—

जे इमे भवंति समणा भगवंतो सीलमंता *वयमंता गुणमंता
संजया संवुडा बंभचारी० उवरया मेहुणाओधम्माओ ।
णो खलु एएसि भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए
वत्थए । सेज्जाणिमाणि^१ अम्हं अप्पणो सअट्टाए^२ चेतित्ताइं
भवन्ति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।
सव्वाणि ताणि समणाणं णिसिरामो, अविद्याइं वयं पच्छा
अप्पणो सअट्टाए चेतिस्सामो, तंजहा—आएसणाणि वा
(जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

एयप्पगारं ः णिग्घोस सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो
तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३५) भवणगिहाणि
वा । उवागच्छन्ति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं^३ पाहुडेहिं
वट्ठंति ।

१—० इमाणि (च) ।

२—अट्टाए (अ, छ, व) ।

३—इतरातिरेहिं (क, घ) ; इतरातरेहिं (अ, च) ।

अयमाउसो ! वज्ज-किरिया वि भवइ ।

महावज्ज-किरिया-पद

३९—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा
 संतेगइया सड्ढा भवंति,
 तंजहा— गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा,
 तेसिं च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवइ,
 तं सद्हमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे
 समण-माहण-अतिहि-क्विण-वणीमए पगणिय-पगणिय
 समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति,
 तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।
 जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)
 भवणगिहाणि वा उवगच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं^१
 पाहुडेहिं वट्टंति,
 अयमाउसो ! महावज्ज-किरिया वि भवइ ।

सावज्ज-किरिया-पदं

४०—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
 संतेगइया सड्ढा भवंति,
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।
 तेसिं च ण आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ,
 तं सद्हमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे
 समण-माहण-अतिहि-क्विण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ
 अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति,
 तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

१—इतरातरेहिं (अ) ; इयराइयरेहिं (घ) ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)
 भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छिता इतरेतरेहि
 पाहुडेहिं वट्टंति,
 अयमाउसो! सावज्ज-किरिया वि भवइ ।

महासावज्ज-किरिया-पदं

४१-इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा,
 संतेगइया सड्ढा भवंति,
 तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।
 तेसि च णं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवइ,
 तं सदहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमोहिं एगं समण-
 जायं समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतित्ताइं
 भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।
 महया पुढविकाय-समारंभेणं, *महया आउकाय-समारंभेणं,
 महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं,
 महया वणस्सइकाय-समारंभेणं, महया तसकाय-समारंभेणं,
 महया संरंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूव-रूवेहि
 पावकम्म-किच्चेहिं, तंजहा—छायणओ लेवणओ संथार-
 दुवार-पिहणओ ।

सीतोदए वा परिट्टवियपुव्वे भवइ,

अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ,

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)
 भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं
 दुपक्खं ते कम्मं सेवंति,

अयमाउसो! महासावज्ज-किरिया वि भवइ ।

अप्पसावज्ज-किरिया-पदं

४२—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा
संतेगइया सड्ढा भवंति,

तंजहा—गाहावई वा (जाव २।३६) कम्मकरीओ वा ।

तेसि च णं आयार-नोयरे णो सुणिसंते भवइ,

तं सइहमाणेहि तं पत्तियमाणेहि, तं रोयमाणेहि अप्पणो
सअट्टाए तत्थ-तत्थ अगारीहि अगाराइं चेतताइं भवंति,

तंजहा—आएसणाणि वा (जाव २।३६) भवणगिहाणि वा ।

महया पुढविकाय-समारंभेणं (जाव २।४१) अगणिकाए वा
उज्जालियपुव्वे भवइ ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा (जाव २।३६)

भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, २ ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं
एगपक्खं ते कम्मं सेवंति,

अयमाउसो ! अप्पासावज्ज-किरिया वि भवइ ।

४३—एयं खलु तस्स भिक्खूस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि ।°

तइओ उद्देसो

उवस्सय-छलण-पदं

४४—सिय^१ णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो य खलु सुद्धे
इमेहिं पाहुडेहिं, तंजहा—छायणओ, लेवणओ, संथार-
दुवार-पिहाणओ^२, पिंडवाएसणाओ ।

१—से य (क, घ, च, छ, ब) ।

२—° पिहुणाओ (अ) ; ° पिहुणओ (घ) ।

से^१ भिक्खू चरिया-रए, ठाण-रए, निसीहिया-रए, सेज्जा-संथार-पिंडवाएसणारए ।

संति भिक्खुणो एव मक्खाइणो उज्जुया^२ णियाग-पडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया ।

संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं णिक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइयपुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ, परिद्व-वियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए^३ वियागरेति ? हंता भवइ ।

उवस्सय-जयण-पदं

४५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—खुड्डियाओ, खुड्डुदुवारियाओ^४, निइयाओ^५ (नीयाओ?) संनिरुद्धाओ^६ भवंति ।

तहप्पगारे उवस्सए राओ वा, विआले वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा पुरा हत्थेण पच्छा पाएण, तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४६—केवली बूया—आयाण मेयं—जे तत्थ समणाण वा, माहणाण वा, छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, 'नालिया वा, चेलं वा'^७, चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा, चम्म-छेदणए वा—दुव्वद्वे दुण्णिक्खित्ते

१—से य (अ) ।

२—उज्जुअडा (अ, छ) ।

३—समिय (घ) ; समिया (छ) ।

४—^० दुवाराओ (घ) ।

५—नेरइयाओ (अ) ; निययाओ (घ) ।

६—सनिरुद्धिओ (अ) ।

७—नालिया वा चेले वा (अ) ; चेल वा नालिया वा (घ, ञ) ; नालिया वा (छ) ।

अणिकपे-चलाचले-भिवखू य राओ वा, वियाले वा,
णिकखममाणे वा, पविसमाणे वा, पयलेज्ज वा, पवडेज्ज
वा,

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा हत्थं वा, पायं वा,
•बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अन्नयरं वा
कार्यंसि० इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा,
जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, •वत्तेज्ज वा,
लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा,
किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ०
ववरोवेज्ज वा ।

अह् भिवखूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं,
एस उवएसो,
जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेणं पच्छा पाएणं, तओ
संजयामेव णिकखेमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

उवस्सय-जायणा-पदं

४७-से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,
परियावसहेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा ।

जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए^१, ते उवस्सयं
अणुणवेज्जा—कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णातं
वसिस्सामो जाव आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए,
जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'^२ उवस्सयं गिण्हिस्सामो, तेण
परं विहरिस्सामो ।

१-समाहिट्ठाए (अ, क, घ, छ) ; समाहिट्ठए (ब) ।

२-एवावता (अ) ; इत्ता ता (क) ; इत्ता वा (च) ; इं ताव (छ) ।

सेज्जायर-णाम-गोय-पदं

४८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्साए संवसेज्जा, तस्स पुब्बमेव णाम-गोयं जाणेज्जा । तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंते-माणस्स अणिमंतेमाणस्स वा असणं वा, पाणं वा, खाइमं वा, साइमं वा—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

उवस्सय-विसुद्धि-पदं

४९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
ससागारियं सागणियं स-उदयं, णो पण्णस्स निक्खमणपवेसाए,
णो पण्णस्स वायण-^०पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग^०-
चिताए,
तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा
चेतेज्जा ।

५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
गाहावइ-कुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पथं पडिबद्ध वा^१, णो
पण्णस्स *णिक्खमणपवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-
परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग^०-चिताए,
तहप्पगारे उवस्साए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा
चेतेज्जा ।

५१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता
वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ
वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा^०, कम्मकरीओ

वा अण्णमण्ण मक्कोसंति वा, *बंधंति वा, संभंति वा°,
उह्वेति वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिंताए,
सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा *सेज्जं वा,
णिसीहियं वा° चेतैज्जा ।

५२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा
अण्णमण्णस्स गायं तेक्केण वा, घएण वा, णवणीएण वा,
वसाए वा, अब्भंगे(गें?) ति वा, मक्खे(खें?) ति वा, णो
पण्णस्स (जाव २।४९) चिंताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं वा°
चेतैज्जा ।

५३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा,
अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण^१ वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसंति वा, पधंसंति
वा, उव्वलेति वा, उव्वट्ठेति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण
(जाव २।४९) चिंताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं
वा°, चेतैज्जा ।

५४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा
अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोलेति वा, पधोवेति वा, सिचंति वा, सिणावेति
वा, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चिंताए,

तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतैज्जा ।

५५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सय जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, (जाव २।५१), कम्मकरीओ वा
णिगिणा ठिआ, णिगिणा उवट्ठीणा मेहुणधम्मं विण्णवेति,
रहस्सियं वा मंतं मेतेति, णो पण्णस्स (जाव २।४९)
चित्ताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, *सेज्जं वा, णिसीहियं
वा° चेतैज्जा ।

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—
आइण्णसलेक्खं^१, णो पण्णस्स (जाव २।४९) चित्ताए,
तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा
चेतैज्जा ।

संथारग-पदं

५७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं एसित्तए ।
सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—
सअंडं *सपाणं सबीअं सहुरियं सउस सउदयं सउत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-मक्कडा°-सताणगं—
तहप्पगारं संथारगं—*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे°
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—
अप्पंडं *अप्पपाणं अप्पवीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं, गरुयं,

१-° सल्लिखे (घ), ° सलेखे (छ) ।

तहप्पगारं संधारणं—*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

५९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५.८) संताणगं, लहुयं अप्पडिहारियं,
तहप्पगारं संधारणं^१—*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५.८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं णो
अहावद्धं,
तहप्पगारं संधारणं—*अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे०
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

६१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संधारणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव २।५.८) संताणगं, लहुयं पाडिहारियं अहावद्धं,
तहप्पगारं संधारणं—*फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे० लाभे
संते पडिगाहेज्जा ।

संधारण-पडिमा-पदं

६२—इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा,
इमार्हि चउहिं पडिमार्हि संधारणं एसित्तए ।

६३—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय संधारणं
जाएज्जा, तंजहा—इक्कडं वा, कडिणं^२ वा, जंतुयं वा, परगं

१—क्वचित् 'सेज्जा संधारणं' इति पाठोऽस्ति । तत्र 'सेज्जा' लिपिदोषेण प्रक्षिप्त-इति
संभाव्यते ।

२—कडिणं (घ) ।

वा, मोरगं^१ वा, तणं^२ वा, कुसं वा, 'कुच्चगं वा'^३, पिप्पलगं वा, पलालगं वा ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ?

तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं *त्ति मण्णमाणे० लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ।

६४—अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए संथारगं जाएज्जा, तंजहा—गाहावइं वा, गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासि वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं^४ वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ?

तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं *त्ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

६५—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, ते तत्थ अहासमण्णागए, तंजहा—इक्कडे वा, *कडिणे वा, जंतुए वा, परो वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा,

१—पोरग (घ) ।

२—तणगं (क, च, छ, ञ) ।

३—कुच्चग वा वच्चग वा (चू) ।

४—कम्मकरी (अ, घ, व), कम्मकरीय (च, छ) ।

पिप्पले वा०, पलाले वा । तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—तच्चा पडिमा ।

६६—अहावरा चउत्था पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथड मेव सथारगं जाएज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा, कट्टसिलं वा अहासंथड मेव । तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—चउत्था पडिमा ।

६७—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने, जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्टिया० अन्नोन्नसमाहीए एवं च ण विहरंति ।

संथारग-पच्चप्पण-पदं

६८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए ।

सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं (जाव २।५७) संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ।

६९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए ।

सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं (जाव २।५८) संताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय^१-विणिद्धुणिय, तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ।

१—विहुणिय २ (क, च) ; विट्टणिय २ (घ, व) ।

उच्चारपासवण-भूमि-पदं

७०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा, वसमाणे वा
गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुब्बामेव णं^१ पण्णस्स उच्चार-
पासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।

७१—केवली बूया—आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवण
भूमिए, भिक्खू^२ वा भिक्खुणी वा राओ वा विआले वा
उच्चार-पासवणं परिट्टवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,
से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पायं वा
•बाहुं वा, ऊरु वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्नयरं वा
कायंसि इंदिय-जायं^० लूसेज्ज वा पाणाणि वा, •भूयाणि वा,
जीवाणि वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज
वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज
वा, ठाणाओ ठाणं सकामेज्ज वा, जीविआओ^० ववरोवेज्ज
वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं,
एस उवएसो, जं पुब्बामेव पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं
पडिलेहेज्जा ।

सयण-विहि-पदं

७२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमि
पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा उवज्झाएण वा,
•पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा^०,
गणावच्छेइएण^३ वा, बालेण वा, बुड्ढेण वा, सेहेण वा,
गिलाणेण वा, आएसेण वा,

१—X (क, घ, च) ।

२—से भिक्खु (छ, व) ।

३—गणावच्छेइएण (च) ।

अंतेण वा, मज्जेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा, 'तओ संजयामेव' पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय^३ बहु-फासुयं सेज्जा-संधारणं संधरेज्जा ।

७३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संधारणं संधरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संधारए दुरुहित्तेण, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा संधारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव, बहु-फासुए सेज्जा-संधारणे दुरुहेज्जा, २ ता तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संधारए सएज्जा ।

७४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संधारए सयमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा ।

से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संधारए सएज्जा ।

७५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए^३ वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा, पाणिणा परिपिहत्ता, तओ संजयामेव ऊससेज्ज^४ वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा करेज्जा ।

१-× (क, घ, च, व) ।

२-पमज्जिय तओ संजयामेव (क, घ, च, छ, व) ।

३-उड्डुए (घ, च, छ) ।

४-ऊसासेज्ज (क, घ, च, छ) ।

७६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—

समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
पवांता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा,
ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा
भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-इंस-
मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा,

सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया
सेज्जा भवेज्जा,

सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा
भवेज्जा,

तहप्पगाराहिं सेज्जाहि संविज्जमाणाहिं पग्गहिततरागं
विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा ।

७७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति वेमि ।

तदयं अज्जयणं

इरिया

पढमो उद्देशो

वासावास-पदं

१-अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुद्धे बह्वे पाणा अभिसंभूया,
बह्वे बीया अहुणुब्भिन्ना^१, अंतरा से मग्गा बहुपाणा
बहुबीया *बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-मक्कडा-^०संताणगा, अणभिककंता पंथा, णो
विण्णाया मग्गा, सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा,
तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं
वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा,
सण्णिवेसं वा^०, रायहाणि वा,

इमंसि खलु गामंसि वा, *णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि
वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, आगरंसि वा, दोणमुहंसि
वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा^०,
रायहाणिसि वा—

णो महती विहारभूमी, णो महती वियारभूमी, णो सुलभे
पीढ-फलग-सेज्जा-संधारए, णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे,
बह्वे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया
उवागमिस्संति य, अच्चाइण्णा वित्ती—

१-अहुणुब्भिया (अ); अहुणोब्भिन्ना (ब); अहुणाब्भिन्ना (च, द),

णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, *णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-
परियट्टणाणुपेह^०-धम्माणुओग-चित्ताए,
सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा, णगरं वा, (जाव) रायहाणि
वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

गामं वा (जाव ३।२) रायहाणि वा,
इमंसि खलु गामंसि वा (जाव ३।२) रायहाणिसि वा—
महती विहारभूमी, महती वियारभूमी, सुलभे जत्थ पीढ-
फल-सेज्जा-संथारए, सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो
जत्थ बहवे समण-^०माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा^० उवागया
उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती—

*पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-
परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चित्ताए,
सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा (जाव ३।२)^० रायहाणि
वा, तओ सजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ।

गामाणुगाम-विहार-पद

४-अह पुणेवं जाणेज्जा---

चत्तारि मासा वासाण वीइक्कंता, हेमंताण य^० पंच-दस-
रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा *बहुबीया
बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिग-पणग-दग-
मट्टिय^०-मक्कडा-संताणगा, णो जत्थ बहवे समण-^०माहण-
अतिहि-किवण-वणीमगा^० उवागया उवागमिस्संति य,
सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५-अह पुणेवं जाणेज्जा—

चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-
रायकप्पे परिवुसिए,

अंतरा से मग्गा अप्पंडा *अप्पपाणा अप्पबीआ अप्पहरिया
अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-
संताणगा, बहुवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा
उवागया उवागमिस्संति य,

सेवं णच्चा तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ
जुगमायं पेहमाणे, दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पायं रीएज्जा,
साहट्टु पायं रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं^१ वा
कट्टु पायं रीएज्जा । सति परक्कमे संजता मेव परक्कमेज्जा,
णो उज्जुयं गच्छेज्जा । तओ संजया मेव गामाणुगामं
दूइज्जेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा
से पाणाणि वा, वीयाणि वा, हरियाणि वा, उदए वा,
मट्टिया वा अविद्धत्था । [सति परक्कमे *संजता मेव
परक्कमेज्जा°, णो उज्जुयं गच्छेज्जा । तओ संजया मेव
गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा
से विरूव-रूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि
अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पणवणिज्जाणि अकालपडि-
बोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाडे विहारए,

१-वित्तिरिच्छ (अ, घ, च, व) ।

सथरमाणेहि जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।

९-केवली बूया—आयाण मेयं ते णं बाला 'अयं तेणे' 'अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा, *बंधेज्ज वा, रंभेज्ज वा^०, उद्दवेज्ज^१ वा, वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुच्छणं 'अच्छिदेज्ज वा'^२, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज^३ वा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ता, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो^०,

जं णो तहप्पगाराणि विरुव-रूवाणि पच्चंतियाणि दस्सुगायतणाणि *मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पणवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सत्ति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं^०. विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजया सेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सत्ति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए ।

११-केवली बूया—आयाण मेयं ते णं बाला 'अयं तेणे' *अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खं अक्कोसेज्ज वा, बंधेज्ज वा, रंभेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा,

१-उवद्दवेज्ज (अ, क, च, व) ।

२-अच्छिदेज्ज वा भिदेज्ज वा (च, छ, व), अच्छिदेज्ज वा अग्ग्धिदेज्ज वा (अ) ।

३-परिदुवेज्ज (घ, च, व) ।

वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं अच्चिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा—एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराणि अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहि जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज^० गमणाए । तओ संजया मेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, नो पाउणेज्ज वा,
तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं । सति लाढे *विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।

१३—केवली बूया—आयाण मेयं । अंतरा से वासे सिया, पाणेषु वा, पणएसु वा, बीएसु वा, हरिएसु वा, उदएसु वा, मट्टियासु^१ वा अविद्धत्थाए ।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो^०, जं तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं *सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा^० णो गमणाए, तओ संजया मेव गामाणु-गामं दूइज्जेज्जा ।

१—मट्टिएसु (क, च) ; मट्टियाएसु (घ, छ) ।

नावा-विहार-पदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे^१—अंतरा से णावासंतारिमे उदए सिया । सेज्जं पुण णावं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा, णावाए वा णाव^२-परिणामं कट्टु थलाओ वा णावं जलंसि ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा णावं उस्सिच्चेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा, तहप्पगारं णावं उड्ढगापिणिं वा, अहेगामिणिं वा, तिरिय-गामिणिं वा, परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए वा अप्पतरो वा भुज्जतरो वा णो दुरुहेज्ज गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुव्वामेव तिरिच्छ-संपातिमं णावं जाणेज्जा, २ ता, से त्त मायाए एंगंतमवक्कमेज्जा, २ ता, भंडगं पडिलेहेज्जा^३ २ ता, एगाभोयं^४ भंडगं करेज्जा, २ ता, ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, २ ता, सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, २ ता, एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजया मेव णावं दुरुहेज्जा ।

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरुहमाणे णो णावाए पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मज्झतो दुरुहेज्जा, णो वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलिए^५ उवदंसिय-उवदंसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा ।

१—दूइज्जेज्जा (क, घ, च, छ, व) ।

२—णाव (क, घ, च, छ, व) ।

३—पडिगाहेज्जा (छ, छ, व) ।

४—^० भाय (अ) ; ^० भोयण (छ) ।

५—अगुलियाए (च, छ, व) ।

१७—से णं परो णावा-गतो णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता^१ तुमं णावं उक्कसाहि वा,
वोक्कसाहि वा, खिवाहि वा, रज्जुयाए^२ वा गहाय
आकसाहि ।

णो से तं परिन्नं परिजाणेज्जा^३, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१८—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! णो संचाएसि तुमं णावं उक्कसित्तए वा,
वोक्कसित्तए वा, खिवित्तए वा, रज्जुयाए वा गहाय
आकसित्तए ।

आहर एतं णावाए रज्जुयं, सयं चेव णं वयं णावं
उक्कसिस्सामो वा, वोक्कसिस्सामो वा, खिविस्सामो वा,
रज्जुयाए^४ वा गहाय आकसिस्सामो ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१९—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एयं ता^५ तुमं णावं अलित्तेण^६ वा,
पिहएण^७ वा, वंसेण वा, वलएण वा, अवल्लएण^८ वा
वाहेहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

१—X (अ, छ) ।

२—रज्जुए (अ, क, घ, व) ।

३—जाणेज्जा (घ, व) ।

४—रज्जुए (च) ।

५—X (छ) ।

६—आलित्तेण (अ, क, घ, च, छ, व) ।

७—पीढेण (अ, क, घ, च, ङ, व) । अथ पाठो निशीथस्य तथा अमयुक्ताचाराङ्गादर्शयानुसारेण
स्वीकृत ।

८—अवल्लेण (च) ।

२०—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो!
समणा! एयं ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा, पाएण वा,
मत्तेण वा, पडिग्गहेण वा, णावा-उस्सिचणेण वा
उस्सिचाहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

२१—से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—

आउसंतो! समणा! एतं ता तुमं णावाए उत्तिगं हत्थेण वा,
पाएण वा, बाहुणा वा, ऊरुणा^१ वा, उदरेण वा, सीसेण
वा, काएण वा, णावा-उस्सिचणेण वा, चेलेण वा, 'मट्टियाए
वा, कुसपत्तएण वा'^२, कुविदेण^३ वा पिहेहि ।

णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसीणिओ उवेहेज्जा ।

२२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिगेणं उदयं
आसवमाणं पेहाए, उवरुवरि^४ णावं कज्जलावेमाणं पेहाए णो
परं उवसंकमित्तु एवं ब्रूया—आउसंतो! गाहावइ! एयं ते
णावाए उदयं उत्तिगेणं आसवति, उवरुवरि वा णावा
कज्जलावेति ।

एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा,
अप्पुस्सुए अबहिलेस्से, एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज^५
समाहोए, तओ संजयामेव णावा-संतारिमे उदए अहारियं
रीएज्जा ।

१—उरुणा (घ, च, छ, ब) ।

२—निशीथ-चूणि, भाग ४, पृष्ठ २०६ : 'मट्टियाए वा कुसपत्तेण वा' इत्यस्य स्थाने
'कुसुमट्टियाए वा' इति पाठोऽस्ति ।

३—कुर्विदेण (अ, क, घ, च, छ, ब)—अय पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्या-
नुसारेण स्वीकृत ।

४—उवरुवरि (घ) ।

५—विउसज्ज (क) ।

२३-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सदा जएज्जासि ।

—ति बेमि ।

बीओ उद्देशो

२४-से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो !
समणा ! एयं ता तुमं छत्तगं वा, *मत्तगं वा, दंडगं वा,
लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलिमिलि
वा, चम्मगं वा, चम्म-कोसगं वा^१, चम्म-छेयणगं वा
गेण्हाहि, एयाणि तुमं विरूव-रूवाणि सत्थ-जायाणि धारेहि,
एयं ता तुमं दारगं वा 'दारिगं वा'^२ पज्जेहि,
णो से तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।

२५-से णं परो णावा-गए णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! एस णं
समणे णावाए भंडभारिए भवइ । से णं बाहाए गहाय
णावाओ उदगंसि पक्खिवह^३ ।

एतप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य चीवरधारी सिया,
क्खिप्पामेव चीवराणि उव्वेड्ढिज्ज वा, णिव्वेड्ढिज्ज वा,
उप्फेसं वा करेज्जा ।

२६-अह पुणेवं जाणेज्जा—अभिवकंत-कूरकम्मा खलु बाला
बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा ।

से पुव्वामेव वएज्जा—आउसंतो ! गाहावइ ! मा भेतो बाहाए
गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं णावातो
उदगंसि ओगाहिस्सामि ।

१—× (क, घ, च) ।

२—पक्खिवेज्जा (क, घ, च, छ, व) ।

से जेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय णावाओ
उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया, णो दुम्मणे^१
सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसि बालाणं
घाताए वहाए समुट्टेज्जा ।

अप्पुस्सुए^२ अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज^०
समाहीए, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थेण
हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा ।

‘से अणासायमाणे’^३, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग^३-
णिमग्गियं^४ करेज्जा,
मामेयं उदगं कण्णेसु वा, अच्छीसु वा, णक्कंसि वा, मुहंसि
वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं
पाउणेज्जा,
खिप्पामेव उवहिं विगिंचेज्ज वा विसोहेज्ज वा, णो चेव णं
सात्तिज्जेज्जा ।^५

३०—अहं पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए,
तओ संजयामेव उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा काएण
उदगतीरे चिट्ठेज्जा ।

१—दुमणे (घ, छ, व) ।

२—से अणासादए अणा^० (अ) ।

३—उम्मग (घ, च, व) ।

४—^० णिम्मग्गिय (घ, च) ।

५—सात्तिज्जेज्ज वा (छ) ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

३२—अह पुण एवं जाणेज्जा विगओदए मे काए, वोच्छिन्न-सिणेहे^१ मे काए, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा (जाव ३।३१) पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगाम दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

जघासंतारिम-उदग-पदं

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से जंघा-संतारिमे उदए सिया, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे थ पमज्जेज्जा, २ ता^० सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, २ ता^० एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए^२ अहारियं रीएज्जा ।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदगे अहारियं रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'^३ पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा । 'से अणासायमाणे'^४, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ।

१—छिन्न ° (क, घ, च, ब) ।

२—उदगंसि (क, घ, च) ।

३—हत्थेण वा हत्थं (अ) (सर्वत्र) ।

४—से अणासादए अणा ° (अ) ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघा-संतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय-वडियाए^१, णो परदाह-वडियाए, महइ महालयंसि उदगंसि काय विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघा-संतारिमे उदए अहारिय रीएज्जा ।

३७—अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए, तओ सजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण^२ वा काएण दगतीरए^३ चिट्ठेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ।

३९—अह पुणेवं जाणेज्जा—विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए,

तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा *पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा जव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा^० पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेणं हरिय-वहाए गच्छेज्जा । “जहेयं” पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु” ।

माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।

से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

१-साया^० (अ) ।

२-ससिणिद्धेण (च) ।

३-उदगतीरए (घ) ।

४-जमेतं (छ) ।

विसमट्टाण-परक्कम-पदं

४१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा । सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

४२-केवली बूया—आयाण मेयं । से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा ।

से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा रुक्खाणि वा, गुच्छ्राणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, वल्लीओ वा, तणाणि वा, गहणाणि वा, हरियाणि वा, अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा^१, जे तत्थ पाडिपहिया^२ उवागच्छंति, ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा^३, तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से जवसाणि वा, सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा, सेणं वा विरूव-रूवं सण्णिविट्ठं^४ पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।

अभिणिचारिय-पदं

४४-से णं परो सेणागओ वएज्जा—आउसंतो! एस णं समणे सेणाए अभिणिचारियं^५ करेइ । से णं बाहाए गहाय

१-उत्तारेज्जा (अ) ।

२-पाडिपघेया (क) ; पडिवाहेया (घ) ; पाडिपडिया (छ) ।

३-उत्तारेज्जा (अ) ।

४-सणिरुद्ध (व) ।

५-अभिणिवारियं (अ, क, घ, च, व) ।

आगसह । से णं परो बाहाहिं गहाय आगसेज्जा । तं णो सुमणे सिया, *णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुद्वेज्जा । अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज^० समाहीए । तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

पाडिपहिय-पदं

४५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वद्वेज्जा—आउसंतो ! समणा ! केवइए एस गामे वा, *णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा^०, रायहाणी वा ? केवइया एत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परिवसंति ?

से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ?

से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ?

‘एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो नो आइक्खेज्जा, एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा’^१ ।

४६—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं सव्वद्वेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति वेमि^० ।

१-× (व) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (क, च, छ) ; एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एय पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (घ) ।

तइओ उद्देसो

अंगचेट्टायुव्वं निज्झाण-पदं

४७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा
 से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, *तोरेणाणि
 वा, अग्गलाणि वा, अग्गल पासगाणि वा, गड्डाओ वा,^०
 दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि
 वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-
 कडं, थूमं वा चेइय—कडं, आएसणाणि वा, *आयतणाणि वा,
 देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा,
 पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा,
 सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा,
 वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा,
 कट्ट-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि
 वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्टाण-
 कम्मंताणि वा^०, भवणगिहाणि वा णो बाहाओ पगिज्झय-
 पगिज्झय, अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-
 ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय, निज्झाएज्जा, तओ संजयामेव
 गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा
 कच्छाणि वा, दवियाणि वा, णूमाणि वा, वलयाणि वा,
 गहणाणि वा, गहण-विदुग्गाणि वा, वणाणि वा, वण-
 विदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वय-विदुग्गाणि वा, अगडाणि
 वा, तलागाणि वा, दहाणि वा, णदीओ वा, वावीओ वा,
 पोक्खरिणीओ वा; दीहियाओ वा, गुंजांलियाओ वा,

सराणि वा; सर-पतियाणि वा, सर-सर-पंतियाणि वा णो
 बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय (जाव ३।४७) णिज्झाएज्जा ।
 ४९—केवली बूया 'आयाण मेयं' जे तत्थ मिगा वा, पसुया^१ वा,
 पक्खी वा, सरीसिवा^२ वा, सीहा वा, जलचरा वा, थलचरा
 वा, खहचरा वा सत्ता । ते उत्तसेज्ज वा, वित्तसेज्ज वा,
 वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा,
 चारे त्ति मे अयं समणे ।
 अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा *एस पइन्ना, एस हेऊ, एस
 कारणं, एस उवएसो^०,
 जं णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय (जाव ३।४७)
 णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं
 गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आयरिय-उवज्झाय-सद्धिं-विहार-पद

- ५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं
 गामाणुगामं दूइज्जमाणे, णो आयरिय-उवज्झायस्स हत्थेण
 हत्थं, *पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा ।
 से^० अणासायमाणे, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं
 सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।
- ५१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं
 दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं
 पाडिपहिया एवं वएज्जा—
 आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा
 गच्छिहिह ?

१-पसु (अ) ।

२-सिरीसिवा (अ, घ, च) ।

जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासेज्ज वा,
वियागरेज्ज वा । आयरिय-उवज्झायस्स भासमाणस्स वा,
वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा । तओ संजयामेव
आहारातिणिए^१ दूइज्जेज्जा ।

आहारातिणिय-सद्धि-विहार-पदं

५२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं गामाणुगामं
दूइज्जमाणे, णो रातिणियस्स हत्थेण हत्थं, *पाएण पायं,
काएण कायं आसाएज्जा ।

से^० अणासायमाणे, तओ संजयामेव आहारातिणियं गामाणु-
गामं दूइज्जेज्जा ।

५३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं दूइज्जमाणे,
अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं
वदेज्जा—

आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा
गच्छिहिह?

जे तत्थ सव्वरातिणिए^२ से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा ।
रातिणियस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो
अंतराभासं भासेज्जा । तओ संजयामेव गामाणुगामं
दूइज्जेज्जा ।

पाडिपहिय-पदं

५४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा^३ । ते णं पाडिपहिया एवं
वदेज्जा—

१-^० राइणियाए (अ, व) ; अहा^० (घ, च) ।

२-रातिणिए (घ) ।

३-आगच्छेज्जा (अ, च, छ) ।

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तंजहा-
मणुसं वा, गोणं वा, महिसं वा, पसुं वा, पक्खि वा,
सरीसिवं^१ वा, जलयरं वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो
आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं^२ तं परिणं परिजाणेज्जा,
तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ
संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा^३ । ते णं पाडिपहिया एवं
वएज्जा—

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह—
उदगपसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, 'तयाणि वा,
पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा,
हरियाणि वा'^४, उदगं वा संणिहियं, अगणि वा
संणिव्वित्तं ? से आइक्खह, *दंसेह । त णो आइक्खेज्जा, णो
दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ
उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव
गामाणुगामं^० दूइज्जेज्जा ।

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा
से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं
वएज्जा—

आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह—
जवसाणि वा, *सगडाणि वा, रहाणि वा, सच्चकाणि वा,

१—सिरीसिव (अ, छ, व) ; सिरिसव (च) ।

२—तस्त (क, च, छ) ।

३—आगच्छेज्जा (अ, छ) ।

४—तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया (अ, क, घ, च, छ, व) ।

परचक्काणि वा०, सेणं वा विरूव-रूवं संणिविट्ठं? से आइक्खह, दसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

आउसंतो! समणा! केवइए एत्तो गामे वा, *णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, आगरे वा, दोणमुहे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा०, रायहाणी वा? से आइक्खह, दसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—

आउसंतो! समणा! केवइए एत्तो गामस्स वा, णगरस्स वा, *खेडस्स वा, कव्वडस्स वा, मडंबस्स वा, पट्टणस्स वा, आगरस्स वा, दोणमुहस्स वा, णिगमस्स वा, आसमस्स वा, सण्णिवेसस्स वा०, रायहाणीए वा मग्गे? से आइक्खह, दसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिणं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

वियाल-पदं

५९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से गोणं वियालं पडिपहे पेहाए, *महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थिं, सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्चं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोल-सुणयं, कोकंतियं,० चित्ताच्चिल्लडं—

वियालं पडिपहे पेहाए, णो तेसि भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो ख्खंसिं दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए *अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जं समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पद

६०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसिं बहवे आमोसगा उवगरण-पडियाए संपिडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो ख्खंसिं दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जं समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

६१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे, अंतरा से आमोसगा संपिडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! 'आहर एयं'^१ वत्थं वा, पायं वा, कंवलं वा, पायपुंछणं वा—देहि, णिक्खिवाहि। तं णो देज्जा, णो णिक्खिदेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलि कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवैहेज्जा।

ते णं आमोसगा 'सयं करणिज्जं'^२ त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, 'बंधंति वा, रुभंति वा^३, उह्वंति वा। वत्थं वा, पायं वा, कंवलं वा, पायपुंछणं वा अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज^४ वा।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! गाहावइ। एए खलु आमोसगा उवगरण-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा (जाव) परिभवेत्ति^५ वा। एयप्पगारं मणं वा वइ^६ वा णो पुरओकट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए 'अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज^७ समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

६२—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वठ्ठेहिं समिते सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति वेमि।

१—आहारं एवं (छ) ; आहर एत्थ (अ, क, व) ।

२—सयं करणिज्जा करणिज्जं (च) ।

३—परिट्ठं (अ, क, घ, च, छ, व) ।

४—परिट्ठं (अ, क, घ, च, छ, व) ।

५—वाय (च) ; वयं (छ, व) ।

चउत्त्यं अज्भयणं

भासा

पढमो उद्देसो

वइ-अणायार-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ-आयाराइं सोच्चा
णिसम्म इमाइं-अणायाराइं अणायरियपुव्वाइं जाणेज्जा—
जे कोहा वा वायं विउंजंति, जे माणा वा वायं विउंजंति,
जे मायाए वा वायं विउंजंति, जे लोभा वा वायं विउंजंति,
जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति,
सव्वमेयं^१ सावज्जं वज्जेज्जा विवेग मायाए ।

२-ध्रुवं चेरं जाणेज्जा, अध्रुवं चेरं जाणेज्जा—असणं वा (४)
लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, अदुवा आगए अदुवा
णो आगए; अदुवा एइ अदुवा णो एइ, अदुवा एहिति अदुवा
णो एहिति, एत्थवि आगए एत्थवि णो आगए, एत्थवि एइ
एत्थवि णो एइ, एत्थवि एहिति एत्थवि णो एहिति ।

सोडस-वयण-पदं

३-अणुवीइ^२ णिठ्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा,
तंजहा—एगवयणं, दुवयणं, बहुवयण, इत्थीवयणं^३,
पुरिसवयणं, णपुंसगवयणं, अज्भत्थवयणं, उवणीयवयणं,
अवणीयवयणं, उवणीय-अवणीयवयणं, अवणीय-उवणीयवयणं,

१-सव्व वेय (क, च, व) ; सव्व चेरं (घ) ।

२-अणुवीय (छ) ।

३-इत्थि ° (झ) ।

तीयवयणं, पडुप्पन्नवयणं, अणागयवयणं, पच्चक्खवयणं,
परोक्खवयणं ।

४—से एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वएज्जा,
•दुवयणं वदिस्सामीति दुवयणं वएज्जा,
बहुवयणं वदिस्सामीति बहुवयणं वएज्जा,
इत्थीवयणं वदिस्सामीति इत्थीवयणं वएज्जा,
पुरिसवयणं वदिस्सामीति पुरिसवयणं वएज्जा,
णपुंसगवयणं वदिस्सामीति णपुंसगवयणं वएज्जा,
अज्झत्थवयणं वदिस्सामीति अज्झत्थवयणं वएज्जा,
उवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीयवयणं वएज्जा,
अवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीयवयणं वएज्जा,
उवणीय-अवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीय-अवणीयवयणं
वएज्जा,
अवणीय-उवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीय-उवणीयवयणं
वएज्जा,
तीयवयणं वदिस्सामीति तीयवयणं वएज्जा,
पडुप्पन्नवयणं वदिस्सामीति पडुप्पन्नवयणं वएज्जा,
अणागयवयणं वदिस्सामीति अणागयवयणं वएज्जा,
पच्चक्खवयणं वदिस्सामीति पच्चक्खवयणं वएज्जा,
परोक्खवयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वएज्जा ।

अणुवीह-णिट्ठाभासि-पदं

५—‘इत्थी वे’स पुरिस वे’स, णपुंसग वे’स’^१, एवं^२ वा चयें,

१—इत्थीवेद पुवेय णपुंसगवेय (घ, छ, ब) ।

२—एयं (घ, छ) ।

अण्णं^१ वा च्चैयं, अणुवीइ णिट्ठाभासी, समियाए संजए भासं
भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म ।

भासाजात-पदं

६—अह भिक्खू जाणेज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तंजहा—सच्च-
मेगं^२ पढमं भासजायं, वीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव
सच्चं णेवमोसं नेव सच्चामोसं—असच्चामोसं णाम तं चउत्थं
भासजातं ।

७—से बेमि—जे अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य अणागया अरहंता
भगवंतो सब्बे ते एयाणि च्चैव चत्तारि भासज्जायाइं भासिसु
वा, भासंति वा, भासिस्संति वा, पण्णविसु वा, पण्णवेति
वा, पण्णविस्संति वा ।

८—सव्वाइं च णं एयाणि अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि
रसमंताणि फासमंताणि चयोवचइयाइं^३ विपरिणामधम्माइं^४
भवन्तीति अक्खायाइं^५ ।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
पुव्वं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा,
भासासमयविइक्कंता^६ भासिया भासा अभासा ।

सावज्ज-असावज्ज-पदं

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा
सच्चामोसा, जा य भासा असच्चामोसा,

१—अण्णहा (अ, च, छ, व) ।

२—^० मेय (अ, घ, छ), ^० मेत (क) ।

३—चओवचए (अ), चयोवचयाऽ (छ) ; चयोवचयमनाणि (व) ।

४—विविहपरिणाम ^० (च, छ) ।

५—समक्खायाइ (अ) ।

६—^० विइक्कतं च ण (क, घ, च, छ) ।

तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं
फरुसं अण्हयकरि छेयणकरि भेयणकरि परितावणकरि
उद्वणकरि भूतोवघाइयं अभिकंख 'णो भासेज्जा' ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

जा य भासा सच्चा सुहुमा, जा य भासा असच्चा मोसा,
तहप्पगारं भासं असावज्जं अकिरियं *अकक्कसं अकडुयं
अनिट्ठुरं अफरुसं अण्हयकरि अछेयणकरि अभेयणकरि
अपरितावणकरि अणुद्वणकरि^० अभूतोवघाइयं अभिकंख^३
भासेज्जा ।

धामंतणीभासा-पदं

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिते वा
अपडिसुणेमाणे णो एवं वएज्जा—

'होले ति वा, गोले ति वा'^३, वसुले ति वा, कुपक्खे ति
वा घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति
वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा 'इच्चेयाइं तुमं एयाइं'^४
ते जणगा वा—

एतप्पगारं^५ भासं सावज्जं सकिरियं (जाव ४।१०) अभिकंख
नो भासेज्जा ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा
अपडिसुणेमाणे एवं वएज्जा—

१—णो भास भासेज्जा (अ, ब) ; भास णो भासेज्जा (घ) ।

२—अभिकंख भासं (अ, घ, छ) ।

३—होले इ वा गोले इ वा (घ) ; होलि ति वा गोलि ति वा (छ) ।

४—इतियाइं तुम इतियाइ (अ) ; एयाइं तुम^० (क, च) ; एतिया तुम^० (ब) ।

५—तहप्पगार (छ) ।

अमुगे ति वा, आउसो ति वा, आउसंतो^१ ति वा, सावगे ति वा, उपासगे ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये ति वा—
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।१?) अभूतोवघाइयं
अभिकंख भासेज्जा ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थिय आमंतेमाणे आमंतिए य
अपडिसुणेमाणी नो एवं वएज्जा—

होले ति वा, गोले ति वा, ^२वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा,
घडदासी ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति
वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा, इच्चेयाइं तुम एयाइं ते
जणगा वा—

एतप्पगारं भास सावज्जं (जाव ४।१०) अभिकंख णो
भासेज्जा^० ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थियं आमंतेमाणे आमंतिए य
अपडिसुणेमाणी एवं वएज्जा—

आउसो ति वा, 'भगिणी ति वा'^३, भगवई ति वा, साविगे
ति वा, उवासिए ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये^३ ति वा—
एतप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।११) अभिकंख
भासेज्जा ।

विधि-निसिद्ध भासा-पद

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो एवं वएज्जा—

णभोदेवे^४ ति वा, गज्जदेवे^५ ति वा, विज्जुदेवे ति वा,

१—आउसतारो (क, घ, छ) ।

२—भगिणि ति वा भोई ति वा (क, घ, च) ।

३—धम्मिणिए (क) ।

४—णभ देवे (घ) ।

५—गज्ज देवे (व) ।

पवुद्धदेवे^१ ति वा, निवुद्धदेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं^२ मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ, सो वा राया जयउ मा वा जयउ-णो एतप्पगारं भासं भासेज्जा पण्णवं ।

१७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतल्लिक्खे ति वा, गुज्झाणुचरिए ति वा, संमुच्छिए ति वा, णिवइए^३ ति वा 'पओए, वएज्ज'^४ वा वुट्ठवलाहगे ति वा ।

१८—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वठ्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—ति वेमि ।

वोओ उद्देमो

कक्कस-भासा-पद

१९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

गंडी गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा, *रायंसी रायंसी ति वा, अवमारियं अवमारिए ति वा, काणियं काणिए ति वा, ऋमियं ऋमिए ति वा, कुणियं कुणिए ति वा, खुज्जियं खुज्जिए ति वा, उदरी उदरी ति वा, मूयं मूए ति

१—पवुद्धो ° (अ) ।

२—सासं (अ, व) ।

३—णिवडिए (च) ।

४—तओ एवं वदेज्जा (छ) ।

वा, सूणियं सूणिए ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा, वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं सिलिवए ति वा^०, महुमेहणी महुमेहणी^१ ति वा, हत्थछिन्नं हत्थछिन्ने ति वा, *पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा, ओट्टछिन्नं^० ओट्टछिन्ने ति वा^२ जे यावण्णे तहप्पगारे तहप्पगाराहि^३ भासाहि बुइया-बुइया^४ कुप्पंति माणवा, तेयांवि तहप्पगाराहिं भासाहि अभिकंख णो भासेज्जा ।

अकक्कस-भासा-पदं

२०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं एवं वएज्जा^५ तंजहा—

ओयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेयसी ति वा, वच्चसी वच्चंसी ति वा, जससी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइए ति वा, दरिसणिज्जं दरिसणीए ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा तहप्पगाराहिं^६ भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा, ते यावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं^७ भासाहिं अभिकंख भासेज्जा^८ ।

१—महुमेही (छ) ।

२—एव पाद नक्क कण्ण ओट्ट^० (अ) ; एव पाद कण्ण नक्क^० (छ, व) ।

३—एयप्प^० (क, छ) ।

४—x (अ) ।

५—भासेज्जा (छ) ।

६—एयप्प^० (अ, घ, च) ।

७—पूर्वं सूत्रे 'तहप्पगाराहिं' विद्यते किन्तु अत्र प्रतिगु तथा नाम्नि ।

८—भासेज्जा । तहप्पगार भास अगावज्ज जाव भासेज्जा (अ, व) ।

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पद

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा,
तंजहा—

वप्पाणि वा, *फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि
वा, अग्गलाणि वा, अग्गलपासगाणि वा, गड्ढाओ वा,
दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि
वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-
कडं, थूमं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा, आयतणाणि वा,
देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि
वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ
वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध-कम्मंताणि
वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-
कम्मंताणि वा, कट्ट-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा,
संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा,
सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा,° भञ्जण-गिहाणि वा—तहावि ताइं
णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाण
ति वा', करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं *सकिरियं कक्कसं कड्डुयं निट्ठुं
फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं
उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख° णो भासेज्जा ।

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा,
तंजहा—

१—साहुकल्लाण ति वा (अ, छ) ।

वप्पाणि वा (जाव ४।२१) भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं
एव वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा,
पासादियं पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा,
अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं^१ अकिरियं अकक्कसं अकडुयं
अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं
अपरितावणकरिं अणुद्वणकरिं अभूतोवघाइयं अभिकंखं^०
भासेज्जा ।

२३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए
तहावि^१ तं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुकडे ति वा, सुठ्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे
ति वा, करणिज्जे ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा ४ उवक्खडियं पेहाए
एवं वएज्जा, तंजहा—

आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा,
भद्दयं भद्दए ति वा, ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति
वा, मणुण्ण मणुण्णे ति वा—

एयप्पगारं^२ भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं^३ वा, गोणं वा, महिसं
वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा, जलयरं वा,

१—तहाविह (घ, ब) ।

२—तहप्प^० (अ, च) ।

३—माणुस्स (घ, छ) ।

से त्तं^१ परिवूढकायं पेहाए णो एवं वएज्जा-थूले ति^२ वा,
पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्जे ति वा, पाइमे ति वा-
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं (जाव ४।२५) जलयरं
वा, से त्तं परिवूढकायं पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा-
परिवूढकाए ति वा, उवचियकाए ति वा, थिरसंघयणे ति
वा, चियमंससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइंदिए ति वा-
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

२७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो
एवं वएज्जा, तंजहा-
गाओ दोज्झाओ^३ ति वा, दम्मे^४ ति वा, गोरहे^५ ति वा,
'वाहिमा ति वा, रहजोग्गाति वा'^६-
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

२८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं
वएज्जा, तंजहा-
जुवंगवे ति वा, घेणू ति वा, रसवती ति वा, हस्से^७ ति वा,
महल्लए^८ ति वा, महव्वए ति वा, संवहणे ति वा-
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा ।

१-त्त (छ) ।

२-थूले (अ, क, च, छ) ।

३-दोज्झा (अ, क, च, छ, व) ।

४-दम्मा (अ, च, व) ।

५-गोरहा (अ, च, व) ।

६-वाहतयोग्यो रथयोग्य. (वृ) ।

७-हस्से (घ, छ) ; रहस्से (व) ।

८-महल्ले (छ, व) ।

२९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पच्चयाइं वणाणि य^१ रुक्खा महल्ला पेहाए णो एवं वएज्जा, तंजहा-
पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'^२ ति वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल'^३-नावा-उदगदोणि-पीढ-
चंगवेर^४- णंगल-कुलिय-जंतलट्टी - णाभि - गंडी-आसण-सयण-
जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा-
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा तहेव गंतुमुज्जाणाइं पच्चयाणि वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा--
जातिमंता ति वा, दीह्वट्टा ति वा, महालया ति वा,
पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा,
दरिसणीयाति वा, अभिक्खा ति वा, पडिक्खा ति वा-
एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) अभिकंख भासेज्जा ।

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वणफला पेहाए तहावि ते णो एवं वएज्जा, तंजहा-
पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया^५ति वा, टाला ति वा, वेहिया ति वा-
एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया 'वणफला अंबा'^६ पेहाए एवं वएज्जा, तंजहा-

१-वा (च, व) ।

२-तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा (अ. व) ।

३-अग्गलजोग्गा ति वा फलिह (च) ।

४-सिगवेर (अ, व) ।

५-वेलोविगा (अ) ; वेलोतिया (क, घ, च), वेलोविया (व) ।

६-वणफणा (क, च, व), फलजंबा (वृ) ।

असंथडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया इ वा,
भूयरूवा ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए
तहावि ताओ णो एवं वएज्जा, तंजहा—

पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छ्वीया^१ ति वा, लाइमा
ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुखज्जा ति वा—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए
एवं वएज्जा, तंजहा—

रूढा ति वा, बहुसंभूया ति वा, थिरा ति वा, उरुढा ति
वा, गब्भिया ति वा, पसूया ति वा, ससारा^२ ति वा—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सहाइं सुणेज्जा,
तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तंजहा—

सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दे ति वा'^३—

एयप्पगारं भासं सावज्जं (जाव ४।२१) णो भासेज्जा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सहाइं सुणेज्जा^४,
ताइं एवं वएज्जा, तंजहा—

१-छवी (अ) ।

२-ससारा (अ, छ) ।

३-× (च, छ) ।

४-× (अ, क, च, छ, व) ।

सुसद्दं सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दं दुसद्दे ति वा'^१—

एयप्पगारं भासं असावज्जं (जाव ४।२२) भासेज्जा ।

३७—एवं.....रूवाइं.....कण्हे ति वा, णीले ति वा, लोहिए ति वा, हाल्लिद्दे ति वा, मुक्किल्ले ति वा, गंधाइं.....सुब्भिगंधे ति वा, दुब्भिगंधे ति वा, रसाइं.....तित्ताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अंबिलाणि वा, महुराणि वा, फासाइं.....कक्खडाणि वा, मउयाणि वा, गुरूयाणि वा, लहुयाणि वा, सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिद्धाणि वा, रुक्खाणि वा ।

अणुवीइ-णिट्ठा-भासि-पदं

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वंता 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च'^२, अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्म-भासी अतुरिय-भासी विवेग-भासी समियाए संजए भासं भासेज्जा ।

३९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

१-X (च. छ) ।

२—कोह्वयणं माण वा ४ (क, घ, च,

पंचमं अञ्जयणं
वत्थेसणा
पढमो उद्देशो

वत्थजाय-पदं

- १-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्ताए,
सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तंजहा—
जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तगं वा, खोमियं वा,
तूलकडं वा—तहप्पगारं वत्थं—
२-जे णिग्गथे तरुणे जुगवं^१ बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एग
वत्थं धारेज्जा, णो वितियं ।
३-जा णिग्गंथी, सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा-एगं दुहत्थ-
वित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं ।
तहप्पगारेहि^२ वत्थेहि असंविज्जमाणेहि^३ अह पच्छा एगमेगं
संसीवेज्जा ।

अद्धजोयण-मेरा-पदं

- ४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयणमेराए वत्थ-
पडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

अस्सिपडियाए-पद

- ५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, ^०भूयाइं,

१-जुवन् (घ) ।

२-एएहिं (अ, च, ब) ।

३-अविज्ज^० (अ, ब) ।

जीवाइं, सत्ताइ, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेएति ।

तं तहप्पगार वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा° ।

६-°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए वहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइं,
जीवाइ, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेएति ।

त तहप्पगार वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठुं चेएति ।

त तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
वहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्चेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएति ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पद

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं, समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्चेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा-

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्चेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्ठु चेएइ ।

तं तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, अब्हिया णीहडं,
अणत्तद्वियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं
ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

११—अहं पुण एवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तद्वियं, परिभुत्तं, आसेवियं—
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।^०

भिक्षु-पडियाए-कीयमाइ-पदं

१२—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जं पुण वत्थ जाणेज्जा—

असंजए भिक्षु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्टं
वा, मट्टं वा, संमट्टं^१ वा, संपधूमियं^२ वा—तहप्पगारं वत्थं
अपुरिसंतरकडं, *अब्हिया णीहडं, अणत्तद्वियं, अपरिभुत्तं,
अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते^०
णो पडिगाहेज्जा ।

१३—अहं पुणेवं जाणेज्जा—

पुरिसंतरकडं, *बहिया णीहडं, अत्तद्वियं, परिभुत्तं, आसेवियं—
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

वत्य-पद

१४—से भिक्षू वा भिक्षुणी वा सेज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा

विरुवरूवाइं महद्धणमोत्ताइं तजहा—

आजिणभाणि^३ वा, सहिणाणि^४ वा, सहिण-कल्लाणाणि वा,
आयकाणि^५ वा, कायकाणि^६ वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि

१—ससट्ठ (क) ।

२—^० धुवितं (अ, छ) ।

३—आतिणाणि (अ) ; अजिणमाणि (क, च) ।

४—सहणाणि (छ) ।

५—आयाणाणि (अ, क, घ, च) ; आयाण (व) ।

६—कायाणाणि (घ, ब) ।

वा, मलयाणि वा, पत्तुण्णाणि वा अंसुयाणि वा, चीणं-
सुयाणि वा, देसरागाणि^१ वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि
वा, फालियाणि^२ वा, कोयहा(वा?)णि^३ वा, कंबलगाणि
वा, पावाराणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं वत्थाइं
महद्धणमोत्लाइं—^४अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे^५
लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण आईणपाउरणाणि
वत्थाणि^६ जाणेज्जा, तंजहा—

उट्टाणि^७ वा, पेसाणि^८ वा, पेसलेसाणि वा, किण्हमिगा-
ईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि
वा, कणगाणि वा, कणगकताणि^९ वा, कणगपट्टाणि वा,
कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा,
विदग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा—
अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं आईणपाउरणाणि वत्थाणि—
^{१०}अफासुयाइं अणेसणिज्जाइ ति मण्णमाणे^५ लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

वत्यपडिमा-पद

१६—इच्चेयाइं आयतणाइ उवाइकम्म, अह भिक्खू जाणेज्जा
चउहि पडिमाहि वत्थं एसित्ताम् ।

१—वेसरागाणि (अ), देसर गि (छ); वेसराणि (व) ।

२—फालियाणि (क, च, छ, व) ।

३—कायहाणि (अ); कोहयाणि (घ); निशीथरय १७ उट्टेणकस्य चूर्णे 'कोनवाणि'
इति पाठो लभ्यते ।

४—वा वत्थाणि वा (क, छ) ।

५—उट्टाणि (अ, क, च, व, वृ), उट्टवाणि (व) - आट्टाणि (छ) ।

६—पेसाणि (छ) ।

७—कणगकताणि (अ, क, घ, च, छ, व), कनककान्तीनि (वृ) ।

१७-तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं
जाएज्जा, तंजहा-

जंगियं वा, मंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा,
तूलकडं वा-तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा
से देज्जा-फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते
पडिगाहेज्जा । पढमा पडिमा ।

१८-अहावरा दोच्चा पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए-पेहाए वत्थं जाएज्जा,
तंजहा-

गाहावइं वा, *गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा,
गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा,
दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा,
से पुव्वामेव आलोएज्जा, आउसो! ति वा, भगिणि! ति
वा दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं? तहप्पगारं वत्थं सयं
वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा-फासुयं *एसणिज्जं ति
मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा । दोच्चा पडिमा ।

१९-अहावरा तच्चा पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा,
तंजहा-

अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा-तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं
जाएज्जा, *परो वा से देज्जा-फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे
लाभे संते° पडिगाहेज्जा । तच्चा पडिमा ।

२०-अहावरा चउत्था पडिमा-

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा,

जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा
णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं
जाएज्जा, परो वा से^१ देज्जा—फासुयं *एसणिज्जं^२ ति
मण्णमाणे लाभे संते^३ पडिगाहेज्जा । चउत्था पडिमा ।

२१—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं *अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे
णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो,
अहमेगे सम्मं पडिवण्णे ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जिताणं विहरंति,
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जिताणं विहरामि, सब्बे
वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं
विहरंति ।^४

संगार-वयण-पदं

२२—सियाणं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो!
समणा! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण
वा, सुए वा, सुयतरे^५ वा, तो ते वयं आउसो! अण्णयरं
वत्थं दाहामो^६ ।

एयप्पगारं^७ णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलो-
एज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ
एयप्पगारे^८ संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं?
इयाणिमेव दलयाहि ।

१—ण (अ, ब) ।

२—^० य (अ) ।

३—^० तराए (घ, च, छ, ब) ।

४—दासामो (अ, च, ब) ।

५—तहप्प^० (अ) ।

६—^० गार (छ) ।

से सेवं^१ वयंतं परोवएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि,
तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा
णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे सगार-वयणे पडिसुणेत्तए,
अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि !
त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं
पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं
समारव्भ समुद्दिस्स (वत्थं^२) चेइस्सामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं—
अफामुयं *अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो
पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-आघसण-पद

२३—सिया णं परो णेत्ता वएज्जा—“आउसो ! त्ति वा, भइणि !
त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा, *कक्केण वा, लोद्धेण
वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा^० आघंसित्ता वा,
पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगार णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलो-
एज्जा—“आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं
वत्थं सिणाणेण वा (जाव) पघंसाहि वा । अभिकंखसि मे
दाउं ? एमेव दलयाहि ।”

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा

१—णेव (क, घ, च, छ), एव (व) ।

२—जाव (अ, क, घ, च, छ, व) ।

दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-उच्छोलण-पद

२४—से णं परो गेत्ता वएज्जा—“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा आहरेयं वत्थं—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा^१, पधोवेत्ता^२ वा समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलो-एज्जा—“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा । अभिकंखसि *भे दाउं? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-विसोहण-पदं

२५—से णं परो गेत्ता वएज्जा—“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा आहरेयं वत्थं—कंदाणि वा, *मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा विसोहिता समणस्स णं दासामो ।”

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—“आउसो! ति वा, भइणि! ति वा मा एयाणि

१—× (छ) ।

२—पच्छोलेत्ता (छ) ।

तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि । णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए ।”

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहिता दलएज्जा । तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-पडिलेहण-पद

२६—सिया से परो जेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि ।

२७—केवली बूया—आयाण मेयं 'वत्थंतेण उ' बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, •मोत्तिए वा, हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडयाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा०, रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा •एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा ।

सअडाइ-वत्थ-पदं

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—

सअंडं •सपाणं सबीयं सह्रियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा०—संताणगं—

तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

अप्पंडाइ-वत्थ-पदं

२९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण वत्थ जाणेज्जा—
अप्पंडं *अप्पवाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं अणलं अथिरं
अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ—.

तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे
संते° णो पडिगाहेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ५।२३) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं
रोइज्जंतं रुच्चइ—

तहप्पगारं वत्थं—फासुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे
संते° पडिगाहेज्जा ।

वत्थ-परिकम्म-पद

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे वत्थे” ति कट्टु
णो बहुदेसिएण’ सिणाणेण वा, *कक्केण वा, लोद्धेण वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा°,
पघंसेज्ज वा ।

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे वत्थे” ति कट्टु
णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, *उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोलेज्ज वा°, पधोएज्ज वा ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्धिगंधे मे वत्थे” ति कट्टु
णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, *कक्केण वा, लोद्धेण वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।

१-निशीथे (१४।१५) ‘बहुदेवसिएण’ पाठो लभ्यते । आचारागस्य चूर्णविपि (पृ० ३६४)
‘बहुदेवसिएण’ पाठोस्ति, किन्तु तस्य वृत्तौ (पृ० ३६४) ‘बहुदेसिएण’ पाठो व्याख्या-
तोस्ति । प्रतिषु चापि एष एव लभ्यते तेनात्र अयमेव पाठः स्वीकृतः ।

३४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्बिभगंधे मे वत्ये” त्ति कट्टु
णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।^०

वत्य-आयावण-पद

३५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए
पुढवीए, णो ससणिद्धाए^१ पुढवीए, *णो ससरक्खाए पुढवीए,
णो चित्तमंत्ताए सिलाए, णो चित्तमंत्ताए लेलुए, कोलावासंसि
वा दाए जीवपइट्टिए सअडे सपाणे सवीए सहरिए सउसे
सउदए सउत्तिग पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा^०-संतांणाए
आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

३६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि
वा, उसुयालंसि^२ वा, कामजलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगार वत्थं कुलियंसि वा, भित्तिसि
वा, सिलंसि वा, ‘लेलुसि वा’^३ अण्णतरे वा तहप्पगारे
अंतलिक्खजाए *दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा^०, णो पयावेज्ज वा ।

१—ससिणि^० (क, च) ।

२—उमु^० (अ) ।

३—(जाव) (अ) ; × (छ) ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा । तहप्पगारे वत्थे—खंधसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिकखजाए *दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।

३९—से त्तमादाए एगंतमवकमेज्जा, २ त्ता अहे भामथंडिलंसि वा, *अट्टिरासिसि वा, किट्टिरासिसि वा, तुसरसिसि वा, गोमयरसिसि वा° अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, तओ संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।

४०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, *जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि° ।

वीओ उहेसो

णो धोएज्जा-रएज्जा-पदं

४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा । अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलित्तं चमाणे गामंतरेसु, ओमत्तेलिए । एयं खलु वत्थधारिस्स सामगियं ।

सव्वचीवरमायाए-पदं

४२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४३-^०से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं चीवरमायाए बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।

४४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा सव्वं चीवरमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

४५-अह पुणेवं जाणेज्जा-तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए ।

से एवं णच्चा णो सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।^०

पाडिहारिय-वत्थ-पद

४६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'^१ पाडिहारियं वत्थं जाएज्जा—एगाहेण^२ वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा, तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु^३ एव वदेज्जा—“आउसंतो! समणा ।

१-मुहुत्तगं (घ, च, छ, ब) ।

२-जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) , एकाह यावत् पचाहम् (वृ) ।

३-^० मित्ता (घ, च, छ, ब) ।

अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिद्वेज्जा ।
तहप्पगारं 'वत्थं ससंधियं'^१ तस्स चेव णिसिरेज्जा, 'णो णं'^२ साइज्जेज्जा ।

४७—से एगइओ एयप्पगारं^३ णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म—

जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि 'मुहुत्तगं-
मुहुत्तगं'^४ जाइत्ता^५ एगाहेण^६ वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा,
चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय
उवागच्छंति,

तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स
अणुवयंति, 'णो' पामिच्चं करेति, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं
करेति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेति—“आउसंतो!
समणा । अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?”
थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिद्वेति,
तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेति^७,
णो णं सातिज्जंति,

'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं^८ पाडिहारिय वत्थं जाइत्ता

१—मसंधिय वत्थ (अ) ; वत्थ ससंधिय वत्थ (च, छ) ।

२—णो अत्ताण (अ, क, छ), न अत्ताण (व) ।

३—तह^० (व) ।

४—मुहुत्तग (छ) ।

५—जाएज्जा (छ) ।

६—जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, व) ।

७—त चेव जाव णो साइज्जति बहुवयणेण भासियव्वं (क, च, छ) ।

त चेव जाव णो साइज्जति बहुमाणोए भासियव्व (अ) ।

त चेव जाव णो साइज्जति बहुवयणेण भाणियव्व (घ) ।

त चेव जाव णो साइज्जति बहुमाणेण भासियव्व (व) ।

८—मुहुत्त (अ, छ, व) ।

एगाहेण^१ वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा,
पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि ।
अवियाइं एयं ममेव सिया । माडट्टाणं संफासे । णो एवं
करेज्जा ।

वत्य-विक्रिया-पद

४८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं
करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, “अन्नं वा वत्थं
लभिस्सामि” त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो
पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा^२, णो
परं उवसकमित्तु एवं वदेज्जा—“आउसंतो! समणा!
अभिकंखसि मे वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?” थिरं वा
णं संत णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्टवेज्जा ।

जहा चेयं^३ वत्थं पावगं परो मन्नइ । परं च णं अदत्तहारिं
पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ
उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, ^०णो मग्गाओ मग्ग संकमेज्जा, णो गहणं
वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा,
णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाड वा,
सरण वा, सेण वा, सत्थं वा कंखेज्जा^०, अप्पुस्सुए
^०अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए^०, तओ
संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पद

४९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अतरा

१—जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

२—कुज्जा (च) ।

३—वेय (अ, च), मेयं (क, घ, ब) ।

से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थ-पडियाए संपिडिया^१ गच्छेज्जा, *णो तेसि भीओ उम्मगेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं सकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुखहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव^० गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से आमोसगा संपिडिया^१ गच्छेज्जा । तेणं आमोसगा एवं वदेज्जा—

आउसंतो! समणा! आहरेयं वत्थं, देहि, निक्खिवाहि । *तं णो देज्जा, णो णिक्खिदेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलि कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवहेज्जा ।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं त्ति कट्टु, अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रंभंति वा, उह्वंति वा, वत्थं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा ।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु ब्रूया—आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा वत्थ-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रंभंति वा, उह्वंति वा, वत्थं

१—संपिडिया (क, च, व) ।

२—पडिया (अ) ; सपडिया (क, घ, च) ; सपडिया (छ) ।

अच्छिदेति वा, अवहरेति वा, परिभवेति वा । एयप्पगारं
मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए
अवहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ
संजयामेव गामाणुगाम दूइज्जेज्जा ।°

५१—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, °जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।°

छट्ठं अज्जयणं

पाएस्सणा

पढसो उद्देसो

पायजाय-पद

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा पायं एसित्ते,
सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा, तंजहा—
अलाउपायं^१ वा, दारुपायं वा, मट्टिया पायं वा—तहप्पगारं
पायं—

एगपाय-पदं

२—जे निग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसघयणे, से एगं
पायं धारेज्जा, णो बीयं^२ ।

अद्धजोयण मेरा-पद

३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए पाय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

अस्सपडियाए-पद

४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।
तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा, अणीहडं वा, अत्तट्टियं वा अणत्तट्टियं

१—लाउयपाय (क, च, छ) ; अलाउयपाय (घ) ।

२—बितियं (च, छ, ब) ।

वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं
वा-अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

- ५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीय पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहड आहट्टु चेएति ।
तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

- ६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहड आहट्टु चेएति ।
तं तहप्पगारं पाय पुरिसंतरकड वा अपुरिसतरकडं वा,
बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा,
परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—
अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
पडिगाहेज्जा ।

- ७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं,
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तद्वियं वा अणत्तद्वियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

समण-माहणाड-समुद्दिस्स-पाय-पदं

८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तद्वियं वा अणत्तद्वियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा— अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

९—से^१ भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइ, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति ।

१—यद्यपि प्राप्तप्रतिषु “बहवे समण-माहण” इति सूत्रात् पूर्वं “अस्सजए भिक्खु-पडियाए” एतत् सूत्रं लभ्यते, किन्तु वस्त्रौषणाया. (१०-१३) क्रमेण पूर्वं “बहवे समण-माहण” सूत्रं तत्तत्रात् “अस्सजए भिक्खु-पडियाए” एतत् सूत्रं युज्यते, अत एव एव क्रमोऽत्र स्वीकृतः ।

सूत्रस्य विपर्ययो लिपिदोषेण जात इति प्रतीयते । चूर्णौ वृत्तौ च न व्याख्यते इमे सूत्रे । प्राप्तविपर्ययं परिलक्ष्यैव जयाचार्येण सूत्रस्य विचित्रा गतिरिति सकेतितम् ।

तं तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

१०—अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, वहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

भिक्खु-पडियाए कीयमाइ-पदं

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धीयं वा, रत्तं वा, घट्टं वा, मट्टं वा, संमट्टं वा, संपधूमियं वा—तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।

१२—अह पुण एव जाणेज्जा—पुरिसतरकडं, वहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुय एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।^०

पाय-पद

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पादाइं जाणेज्जा विरूव-रूवाइं महद्वणमुल्लाइं, तंजहा—
अय-पायाणि वा, तउ^१-पायाणि वा, तब-पायाणि वा, सीसग-पायाणि वा, हिरण्ण-पायाणि वा, सुवण्ण-पायाणि वा, रीरिय-पायाणि वा, हारपुड-पायाणि वा, मणि-काय-कंस-पायाणि वा, संख-सिग-पायाणि वा, दंत-चेल-सेल-पायाणि वा, चम्म-पायाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं

१—तउय (घ) ।

विरूव-रूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं—अफासुयाइं
 *अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-बंधण-पदं

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा
 विरूव-रूवाइं महद्धणबंधणाइं तंजहा—
 अयबंधणाणि वा, *तउबंधणाणि वा, तंबबंधणाणि वा,
 सीसगबंधणाणि वा, हिरण्णबंधणाणि वा, सुवण्णबंधणाणि
 वा, रीरियबंधणाणि वा, हारपुडबंधणाणि वा, मणि-काय-
 कंस-बंधणाणि वा, संख-सिंग-बंधणाणि वा, दंत-चेल-सेल-
 बंधणाणि वा०, चम्मबंधणाणि वा—अण्णयराइं वा
 तहप्पगाराइं महद्धणबंधणाइं—अफासुयाइं *अणेसणिज्जाइं
 ति मण्णमाणे लाभे संते० णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-पडिमा-पद

१५—इच्चेयाइं आयतणाइं^१ उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा
 चउहिं पडिमाहि पायं एसित्तए ।

१६—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय पायं जाएज्जा,
 तंजहा—

लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा, मट्टिया-पायं वा—तहप्पगारं
 पायं सयं वा णं जाएज्जा, *परो वा से देज्जा—फासुयं
 एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा—पढमा
 पडिमा ।

१७—अहावरा दोच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पायं जाएज्जा, तंजहा—

१—आया० (घ) ।

गाहावइं वा, *गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणि वा,
गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धुयं वा, सुण्हं वा, धाडं वा,
दास वा, दासि वा, कम्मकरं वा०, कम्मकरिं वा,
से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति
वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पायं ? तंजहा—लाउय-पायं
वा, दारु-पायं वा मट्टिया-पायं वा—तहप्पगार पायं सयं वा
णं जाएज्जा, *परो वा से देज्जा—फासुय एसणिज्जं त्ति
मण्णमाणे लाभे संते० पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।

१८—अहावरा तच्चा पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—संगतियं
वा, वेजयंतियं^१ वा—तहप्पगारं पायं सयं वा *णं जाएज्जा,
परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते०
पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ।

१९—अहावरा चउत्था पडिमा—

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं पायं जाएज्जा,
जं चउण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा
णावकंखंति, तहप्पगारं पायं सयं वा णं *जाएज्जा, परो वा
से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते०
पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ।

२०—इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं *पडिवज्जमाणे
णो एवं वएज्जा—मिच्छापडिवन्ना खलु एते भयंतारो,
अहमेगे सम्मं पडिवन्ते,
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जिताणं विहरंति,
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जिताणं विहरामि, सव्वे वे

. ते 'उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्नसमाहीए, एवं च णं विहरंति ।°

संगार-वयण-पदं

२१-से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—
आउसंतो! समणा! एज्जासि तुमं मासेण वा, °दसराएण वा,
पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो!
अण्णयरं पायं दाहामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव
आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा णो खलु मे
कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे
दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि
तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा
णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए
अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि !
त्ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो । अवियाइं वय
पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं
समारब्भ समुद्दिस्स पायं^१ चेइस्सामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं—अफामुयं
अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।°

पाय-अर्भगण-पदं

२२-से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा

१—जाव (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

आहरेयं पायं तेवलेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा'^१ अब्भंगेत्ता वा, *मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं तेवलेण वा (जाव) अब्भगाहि वा मक्खाहि वा अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो तेवलेण वा (जाव) मक्खेत्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पाय—अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-आघसण-पद

२३—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेय पाय सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो ।

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सिणाणेण वा (जाव) आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा (जाव) पघंसित्ता वा दलएज्जा—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-उच्छोलण-पदं

२४—से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा

^१ १—x (क, च, व) ।

आहरेयं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।
 एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुब्बामेव आलोएज्जा-आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा, अभिक्खसि मे दाउं? एमेव दलयाहि ।
 से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा-तहप्पगारं पायं-अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

पाय-विसोहण-पदं

२५-से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा आहरेयं पाय कदाणि वा, मूलाणि वा (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो ।
 एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुब्बामेव आलोएज्जा-आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे पाये पडिगाहित्तए ।
 से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा (जाव) हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा—तहप्पगारं पायं-अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।°

सपाण भोयण-पडिगह-पदं

२६-से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसंतो! समणा! मुहुत्तगं-मुहुत्तगं अच्छाहि जाव ताव अम्हे असणं वा ४ उवकरेंसु वा,

उवक्खडेसु वा, तो ते वयं आउसो! सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दासामो, तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स गो सुट्ठु साहु भवइ ।

से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा गो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा, पाणे वा, खाइमे वा, साइमे वा भोत्तए वा, पायए वा, मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउ? एमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतस्स परो असणं वा ४ उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणं सभोयणं पडिग्गहं दलएज्जा—तहप्पगारं पडिग्गहं—अफासुयं *अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते० गो पडिगाहेज्जा ।

पडिग्गह-पडिलेहण-पद

२७—सिया से परो जेत्ता^१ पडिग्गहं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतिय पडिग्गहं अंतोअतेणं पडिलेहिस्सामि ।

२८—केवली बूया—आयाणमेयं अंतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, *एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो०, जं पुव्वामेव पडिग्गहं अंतोअतेणं पडिलेहिज्जा ।

सअडाइ-पाय-पदं

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—सअडं *सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणं—तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं त्ति मण्णमाणे लाभे संते गो पडिगाहेज्जा ।

१—उवणेत्ता (घ, च, ब) ।

अप्पंडाइ-पाय-पदं

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
 अप्पंडं अप्पपाणं अप्पवीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
 अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं अणल अथिरं
 अधुवं अधारणिज्जं रोइज्जंतं ण रुच्चइ-तहप्पगारं पायं—
 अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो
 पडिगाहेज्जा ।

३१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—
 अप्पंडं (जाव ६।३०) संताणगं अलं थिरं धुवं धारणिज्जं
 रोइज्जंतं रुच्चइ-तहप्पगार पायं-फासुयं एसणिज्जं ति
 मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।

पाय-परिकम्म-पद

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” त्ति कट्टु
 णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए
 वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।

३३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” त्ति कट्टु
 णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा,
 वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघसेज्ज
 वा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “णो णवए मे पाये” त्ति कट्टु
 णो बहुदेसिएण सीतोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण
 वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।

३५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “ट्टुभिगंधे मे पाये” त्ति कट्टु
 णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए
 वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।

३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्भिगंधे मे पाये” त्ति कट्टु
णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा,
वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा,
पघंसेज्ज वा ।

३७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा “दुब्भिगंधे मे पाये” त्ति कट्टु
णो बहुदेसिएण सीओदगवियडेण वा, उसिणोदगवियडेण वा
उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।

पाय-आयावण-पदं

३८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज पायं आयावेत्तए वा,
पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं णो अणंतरहियाए पुढवीए,
णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो
चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि
वा दारुए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे
सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणाए आयावेज्ज
वा, पयावेज्ज वा ।

३९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि
वा, उसुयालंसि वा, कामजलसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा, णो पयोवेज्ज वा ।

४०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए
वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारं पायं कुलियंसि वा, भित्तिसि
वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा—अण्णतरे वा तहप्पगारे
अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो
आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।

- ४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा—तहप्पगारे पाये खंधसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा—अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिकखजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।
- ४२—से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, २ ता अहे भामथंडिलंसि वा, अट्टिरासिसि वा, किट्टिरासिसि वा, तुसरसिसि वा, गोमयरसिसि वा०—अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव पायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।
- ४३—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

वीओ उद्देशो

पडिग्गह-पेहा-पदं

- ४४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए, पविसमाणे' पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजयामेव गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।
- ४५—केवली बूया—आयाण मेयं अंतो पडिग्गहंसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा ।
अह भिक्खूणं पुव्वोदिट्ठा एस पइन्ना, *एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहं, अवहट्टु पाणे,

१—पविट्ठे ° (क, च, चू) ।

पमज्जिय रयं, तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिडवाय-
पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

सीओदग-पदं

४६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए
अणुपविट्ठे समाणे सिया से परो आहट्टु^१ अंतो पडिग्गहंसि
सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं
पडिग्गहं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं
•अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे सते० णो पडिगाहेज्जा ।

उदउल्ल-पदं

४७-से य आहच्च पडिग्गहिए सिया^२ खिप्पामेव उदगंसि
साहरेज्जा^३, सपडिग्गहमायाए पाणं^४ परिट्टवेज्जा, ससणिद्धाए
वण-^५भूमिए णियमेज्जा ।

४८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा, ससणिद्धं वा पडिग्गहं
णो आमज्जेज्ज वा, •पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा,
णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज
वा० पयावेज्ज वा ।

४९-अह पुण एवं जाणेज्जा—विगतोदए मे पडिग्गहए, छिण्ण-
सिणेहे मे पडिग्गहए—तहप्पगारं पडिग्गहं तओ संजयामेव
आमज्जेज्ज वा (जाव ६।४८) पयावेज्ज वा ।

सपडिग्गह मायाए-पदं

५०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिडवाय-पडियाए

१-अभिहट्टु (अ, क, च, छ, व) ।

२-सिया से (अ) ।

३-आहरेज्जा (च) ।

४-वण (अ), एवं (छ) ।

५-वण (घ, च) ; च ण (छ) ।

पविसिउकामे सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।

५१—^०से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमि वा विहार-
भूमि वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा सपडिग्गहमायाए
बहिया वियार-भूमि वा विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा
पविसेज्ज वा ।

५२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे
सपडिग्गहमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५३—अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वासं वासमाणं पेहाए,
तिव्वदेसियं वा महियं सण्णवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा
रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा
सन्निवयमाणा पेहाए,

से एवं णच्चा णो सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-
पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा । बहिया वियार-
भूमि वा, विहार-भूमि वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा,
गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।

पडिहारिय-पडिग्गह-पदं

५४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ मुहुत्तगं-मुहुत्तगं
पाडिहारियं पडिग्गहं जाएज्जा, एगाहेण वा, दुयाहेण वा,
तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-
विप्पवसिय उवागच्छेज्जा,

तहप्पगारं पडिग्गहं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स
देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-
परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—
“आउसंतो! समणा! अभिक्खसि पडिग्गहं धारेत्तए वा,

परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-
पलिच्छिदिय परिद्वेज्जा ।

तहप्पगारं पडिग्गहं ससंधियं तस्स चेव णिसिरेज्जा, णो णं
साइज्जेज्जा ।

५५—से एगइओ एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म—जे भयंतारो
तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं-मुहुत्तग
जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण
वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति,
तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्ण-
मण्णस्स अणुवयंति, णो पामिच्चं करेति, णो पडिग्गहेण
पडिग्गह-परिणामं करेति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेति—
“आउसंतो! समणा! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा,
परिहरेत्तए वा?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-
पलिच्छिदिय परिद्वेति ।

तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेति,
णो णं सातिज्जंति,

‘से हंता’ अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाइत्ता
एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा,
पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि ।

आवियाइं एयं ममेव सिया । माइट्ठाणं संफासे । णो एवं
करेज्जा ।

पायविक्रिया-पदं

५६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं पडिग्गहाइं
विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, “अन्तं
वा पडिग्गहं लभिस्सामि” ति कट्ठु णो अण्णमण्णस्स

देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—“आउसंतो! समणा! अभिकंखसि मे पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा?” थिरं वा णं संतं णो पलिच्चिदिय-पलिच्चिदिय परिट्टवेज्जा ।

जहा चेयं पडिग्गहं पावगं परो मन्नइ। परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स पडिग्गहस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मगाओ मगं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

आमोसग-पदं

५७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा से विहं सिया । सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा पडिग्गह-पडियाए संपिडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मगाओ मगं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्जा समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।

५८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे—अंतरा

से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा । ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—“आउसंतो! समणा। आहरेयं पडिग्गहं देहि, निक्खिवाहि । तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलि कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा ।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रंभंति वा, उद्वंति वा, पडिग्गहं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा ।

तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा पडिग्गह-पडियाए सयं करणिज्जं त्ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधति वा, रंभंति वा, उद्वंति वा, पडिग्गहं अच्छिदेति वा, अवहरेंति वा, परिभवेति वा । एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा । अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।°

५९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

सत्तमं अञ्जयणं
ओग्गह-पडिमा
पढमो उद्देसो

अदिन्नादाण-पदं

१—समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परत्तभोई
पावं कम्मं णो करिस्सामि त्ति समुद्धाए सव्वं भंते!
अदिण्णादाणं पच्चक्खामि ।

२—से अणुपविसित्तां गामं वा, *णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा,
मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा,
आसमं वा, सण्णिवेसं वा, रायहाणि वा°—जेव सयं अदिन्नं
गिण्हेज्जा, जेवण्णेणं^१ अदिण्णं गिण्हावेज्जा, जेवण्णं अदिण्णं
गिण्हंतं पि समणुजाणेज्जा ।

ओग्गह-पद

३—जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसि पि याइं भिक्खू छत्तयं^२ वा,
मत्तयं वा, दंडगं वा, *लद्धियं वा, भिसियं वा, नालियं वा,
चेलं वा, चिलमिलिं वा, चम्मयं वा, चम्मकोसयं वा°,
चम्मच्छेदणगं वा—तेसि पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णाविय
अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज^३
वा ।

तेसि पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय,
तओ संजयामेव ओगिण्हेज्ज^४ वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१—जेवण्णेहिं (घ, छ) ।

२—छत्त (घ, च) ।

३—परिगिण्हेज्ज (अ) ।

४—उ° (घ); उव° (छ) ।

४-से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुणवेज्जा । कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिणातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव' ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

५-से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि? जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए^१ असणं वा ४ तेण ते साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-पडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।

६-से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुणवेज्जा । कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिणातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो ।^०

७-से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि? जे तत्थ साहम्मिया अणुणसंभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियाए^३ पीढे वा, फलए वा, सेज्जा संथारए वा, तेण ते साहम्मिए अणुणसंभोइए समणुण्णे उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-वडियाए उगिज्झिय-उगिज्झिय उवणिमंतेज्जा ।

८-से आगंतारेसु वा, *आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा,

१-एतावता (अ, क, घ, च, छ, व) ।

२,३-^० सित्तए (अ, क, घ, च, छ) ।

पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा, *गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा^०, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा, *बंधंति वा, रंभंति वा, उद्द्वेति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेव्वेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेति वा, मक्खेति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसंति वा पघंसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—

इह खलु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा

अण्णमण्णस्स गायं सीओदग्-वियडेण वा, उसिणोदग्-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
इह खल्लु गाहावई वा (जाव ७।१६) कम्मकरीओ वा गिगिणा ठिआ गिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति, रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए । सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।^०

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—
आइण्णसल्लेक्खं, णो पण्णस्स (जाव ७।१४) चिंताए (सेवं णच्चा ?) तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ।

२२-एयं खल्लु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं^० जं सव्वट्ठेहि समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि^० ।

वीओ उद्देशो

२३-से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुल्लेसु वा, परियावसहेसु वा, अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा—जे^० तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा^० । कानं

१-× (अ) ।

२-^० वित्ता (अ, क, च, व) ।

खलु आउसो। अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'^१ ओग्गहं ओग्गिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

२४-से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा, *मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालियां वा, चेलं वा, चिलिमिलीं वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा^२, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहितो बार्हि णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, सुत्तं^३ वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसि किंचि^३ अप्पत्तियं पडिणीयं करेज्जा ।

अंब-पदं

२५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु *आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं^० विहरिस्सामो ।

२६-से किं पुण तत्थ ओग्गहसि एवोग्गहियंसि ?

अह भिक्खु^४ इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, (पायए वा ?) । सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—

सअंडं *सपाणं सबीयं सहुरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-

१-एताव (अ, घ, च, ब), एतावता (क, छ) ।

२-णो सुत्तं वा णं (अ, ब) ।

३-किंचिवि (क, घ, च, ब) ।

४-भिक्खुण (छ) ।

दग-मट्टिय-मक्कडा-^०संताणगं । तहप्पगारं अवं^२—अफामुयं
 *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अवं जाणेज्जा—
 अप्पंडं *अप्पपाणं अप्पवीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
 अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-^०संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं
 अवोच्छिन्नं—अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे
 संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अवं जाणेज्जा—
 अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—
 फामुयं *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

२९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा अंवभित्तगं वा,
 अंवपेसियं वा, अंवचोयगं वा, अंवसालगं वा, अंवडगलं^१ वा
 भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 अंवभित्तगं वा (जाव) अंवडगलं वा सअंडं (जाव ७।२६)
 संताणगं—अफामुयं *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^०
 णो पडिगाहेज्जा ।

३०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 अवभित्तगं वा (जाव ७।२९) अंवडगलं वा अप्पंडं (जाव
 ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफामुयं
 *अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० णो पडिगाहेज्जा ।

३१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
 अंवभित्तगं^२ वा (जाव ७।२९) अंवडगलं वा अप्पंडं (जाव
 ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फामुयं
 *एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

१—^० डालग (अ, क, घ, च, छ, व) ।

२—अंव वा अवभित्तगं (घ, च, छ) ।

उच्छु-पदं

३२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, *जे तत्थ समहिद्दाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

३३-से कि पुण तत्थ ओग्गहंसिं एवोग्गहियंसि?

अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुंभोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं (पुण?) उच्छुं जाणेज्जा—

सअंडं (जाव ७।२६) *संताणगं । तहप्पगारं उच्छुं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संतें णो पडिगाहेज्जा ।

३४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं *अवो-
च्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संतें णो पडिगाहेज्जा ।

३५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संतें पडिगाहेज्जा ।^०

३६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा^१ अंतरुच्छुयं वा, उच्छुगंडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडगलं वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—
अंतरुच्छुयं वा (जाव) डगलं वा सअंडं (जाव ७।२६)

१—सेज्जं पुण अभिकंखेज्जा (अ) ।

•संताणगं—अफामुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते°
णो पडिगाहेज्जा ।

३७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)

•संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

३८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अंतरुच्छुयं वा (जाव ७।३६) डगलं वा अप्पंडं (जाव ७।२७)

संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फामुयं एसणिज्जं ति
मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।°

लसुण-पद

३९—•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणवणं
उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं
अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं
वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव
साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हस्सामो, तेण परं
विहरिस्सामो ।

४०—से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ?

अह भिक्खू इच्छेज्जा ल्हसुणं भोत्तए वा. (पायए वा ?) सेज्जं
पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—

सअंडं (जाव ७।२६) संताणगं तहप्पगारं ल्हसुणं—अफामुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—

अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—

अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—
अप्पंडं (जाव ७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—
फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।^०

४३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणं^१ वा,
ल्हसुण-कंदं वा, ल्हसुण-चोयगं वा, ल्हसुण-णालगं^२ वा भोत्तए
वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—

ल्हसुणं वा (जाव) ल्हसुण-णालगं^३ वा सअंडं (जाव ७।२६)
•संताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते^०
णो पडिगाहेज्जा ।

४४—•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव
७।२७) संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं
अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

४५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—
ल्हसुणं वा (जाव ७।४३) ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं (जाव
७।२७) संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं
ति मण्णमाणे लाभे संते^० पडिगाहेज्जा ।

ओग्गह-पदं

४६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आगंतारेसु वा, •आरामागारेसु
वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं
जाणेज्जा—जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्टएए, ते ओग्गहं

१—ल्हसुण (च) ; लसण (व) ।

२—^० डालग (अ, घ) ।

३—वीयं (क्वचित्) ।

अणुणविज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।

४७—से कि पुण तत्थ ओग्गहंसि^० एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ पुत्ताण वा इच्चेयाइ आयतणाइ^१ उवाइकम्म ।

ओग्गह-पडिमा-पद

४८—अह भिक्खू जाणेज्जा इमाहिं सत्तहि पडिमाहि ओग्गहं ओग्गिण्हत्तए ।

४९—तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेसु वा, आरामा-गारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा—•जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुणविज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओग्गिण्हि-स्सामो, तेण परं^० विहरिस्सामो—पढमा पडिमा ।

५०—अहावरा दोच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं च खलु अण्णेसि भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामि, अण्णेसि भिक्खूणं ‘ओग्गहे ओग्गहिए’^२ उवल्लिस्सामि” —दोच्चा पडिमा ।

५१—अहावरा तच्चा पडिमा—जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं च खलु अण्णेसि भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओग्गिण्हिस्सामि,

१—आयाणार (क, च) ; आययाणाड (घ) , आयणाड (छ) , आययणा (झ) ।

२—ओग्गहिए ओग्गहे (झ) ।

अण्णेसि भिक्खूणं च ओग्गहे ओग्गहिए णो उवळ्ळिस्सामि”-
तच्चा पडिमा ।

५२-अहावरा चउत्था पडिमा-जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ “अहं
च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्टाए ओग्गहं णो ओगिण्हिस्सामि,
अण्णेसि च ओग्गहे ओग्गहिए उवळ्ळिस्सामि”-चउत्था
पडिमा ।

५३-अहावरा पंचमा पडिमा-जस्सणं भिक्खुस्स एवं भवइ, “अहं
च खलु अप्पणो अट्टाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं,
णो तिण्हं, णो चउण्हं, णो पंचण्हं-पंचमा पडिमा ।

५४-अहावरा छट्ठा पडिमा-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सेव
ओग्गहे उवळ्ळिएज्जा, जे तत्थ अहा समण्णागए, तंजहा-
इक्कडे वा, कडिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा,
तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा^०, पलाले वा ।
तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए^१ वा, णेसज्जिए
वा विहरेज्जा-छट्ठा पडिमा ।

५५-अहावरा सत्तमा पडिमा-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा
अहासंथडमेव ओग्गहं जाएज्जा, तंजहा-पुढविसिलं वा,
कट्टिसिलं वा । अहासंथडमेव तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स
अलाभे उक्कुडुओ वा, णेसज्जिओ वा विहरेज्जा--सत्तमा
पडिमा ।

५६-इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं अण्णयरं *पडिसं पडिवज्जमाणे
णो एवं वएज्जा-मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो,
अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं

१-उक्कडुए (अ, ब) ।

विहरंति, जो य अहमसि एं पडिमं पडिवज्जित्तानं
विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्नोन्न-
समाहीए, एव च ण विहरति ।°

पंचविह-ओगह-पद

५७—सुयं मे आउस । ते णं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु थेरेहि भगवन्तेहि पंचविहे ओगहे पणत्ते, तजहा—
देविंदोगहे, रायोगहे, गाहावइ-ओगहे, सागारिय-ओगहे,
साहम्मिय-ओगहे ।

५८—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगिय, °जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति वेमि° ।

अट्टमं अज्झयणं
ठाण-सत्तिक्कयं

ठाण-एसणा-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा^१ ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसेज्जा 'गामं वा, णगरं वा, *खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, आगरं वा, दोणमुहं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा^२, रायहाणि वा'^३, से अणुपविसित्ता गामं वा (जाव) रायहाणि वा, सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा-

सअंडं^३ *सपाणं सबीयं सह्रियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टियं-मक्कडा-संताणयं, तं तहप्पगारं ठाणं-अफासुयं अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे^० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा-अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टियं-मक्कडा-संताणयं । तहप्पगारे ठाणे पडिलेहित्ता, पमज्जित्ता, तओ संजयाभेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतैज्जा ।

अस्सि पडियाए-ठाण-पदं

३-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा-

अस्सि पडियाए एगं सामम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,

१-^० कंखेइ (अ, घ) ; ^० कखे (च, ब) ।

२-गाम वा जाव सण्णिवेसं वा (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

३-अयड (अ, च) ।

जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्धिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा, परिभुत्ते
वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं
वा, सेज्ज वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

४-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्धिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्धिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, (बहिया
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा,
परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा
णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

५-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्धिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्धिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा (बहिया
णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए वा,
परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा
णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

६-सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्धिस्स पाणाइं,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा
(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते
वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

समण-माहणाइ समुद्दिस्स-ठाण-पद

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वां सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स
कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,
(बहिया णीहडे वा अणीहडे वा), अत्तट्टिए वा अणत्तट्टिए
वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए
वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं,
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

परिकम्मिय-ठाण-पदं

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपधूमिए वा ।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

११-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ
महल्लियाओ कुज्जा,
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा, बहिं वा, ठाणस्स हरियाणि छिदिय-छिदिय
दालिय-दालिय संथारग संथरेज्जा, बहिया णिण्णक्खु ।
तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे),
अणत्तट्टिए, अपरिभुत्ते, अणासेवित्ते णो ठाणं वा, सेज्जं वा
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

१३-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, (बहिया णीहडे),
अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ
संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

बहियानिस्सारिय-ठाण-पदं

१४-से, भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए, उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु ।

तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, (अबहिया णीहडे), अणत्तट्टिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा च्चेतेज्जा ।

१५-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे; (बहिया णीहडे), अत्तट्टिए, परिभुत्ते, आसेविए, पडिलेहिता, पमज्जिता, तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा च्चेतेज्जा ।°

ठाण-पडिमा-पदं

१६-इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म, अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए ।

१७-तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति पढमा पडिमा ।

१८-अहावरा दोच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, अवलंबेज्जा, काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति दोच्चा पडिमा ।

१९-अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जेज्जा, णो अवलंबेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादी, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति तच्चा पडिमा ।

१-आयाणाइ (क, घ, च) ।

२-अवसज्जिस्सामि (चू) ।

२०-अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु^१ उवसज्जेज्जां,
णो अवलंबेज्जा, णो काएण विपरिकम्मादीं, णो सवियारं
ठाण ठाइस्सामि, वोसट्टकाए वोसट्टकेसं-मंसु-लोम-णहे
सण्णिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति चउत्था पडिमा ।

२१-इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं •अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे
णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवण्णा खलु एते भयंतारो, अहमेगे
सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जिताणं विहरंति,
जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जिताणं विहरामि, सब्बे
वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अन्तोन्नसमाहीए एवं च णं
विहरंति ।

संथारग-पच्चप्पण-पद

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा संथारगं
पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं
सबीयं सहुरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-
मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ।

२३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा संथारगं
पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं
अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहुरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-
पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं संथारगं
पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-
आयाविय, विणिद्धुणिय-विणिद्धुणिय, तओ संजयामेव
पच्चप्पिणेज्जा ।

उच्चार-पासवणभूमि-पदं

२४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा वसमाणे वा,
गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं पण्णस्स उच्चार-
पासवणभूमि पडिलेहिज्जा ।

२५—केवली ब्रूया—आयाण मेयं अपडिलेहियाए उच्चार-पासवणं-
भूमिए, भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा विआले वा,
उच्चार-पासवणं परिट्टवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा,

से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं
वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अन्नयरं वा, कायंसि
इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा, भूयाणि वा, जीवाणि
वा, सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा,
संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा,
ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ ववरोवेज्ज वा ।

अहं भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइन्ना, एस हेऊ, एस कारणं,
एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमि
पडिलेहेज्जा ।

ठाण-विहि-पदं

२६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिक्खेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमिं
पडिलेहित्तिए, गण्णत्थ आयरिएण वा उवज्जाएण वा,
पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा,
गणावच्छेइएण वा, बालेण वा, बुद्धेण वा, सेहेण वा,
गिलाणेण वा, आएसेण वा,

अंतेण वा, मज्जेण वा, सप्पेण वा, विसमेण वा, पद्दाएण वा,
णिवाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिए,
पमज्जिय-पमज्जिय बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेज्जा ।

१२७-से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा, बहु-फासुए, सेज्जा-संथारंगं
 संथरेत्ता अभिकंखेज्जा, बहु-फासुए, सेज्जा-संथारए-दुरुहित्तए,
 १२८-से भिक्खू वा, भिक्खुणी वा बहु-फासुए, सेज्जा-संथारए
 १२९-दुरुहमाणे, से पुव्वीमेव, ससीसोवरियं, कायं, पाए, य, पमज्जिय-
 पमज्जिय, तओ संजयामेव, बहु-फासुए, सेज्जा-संथारगे
 १३०-दुरुहेज्जा, १३१-त्ता, तओ संजयामेव, बहु-फासुए, सेज्जा-संथारए
 चिट्ठेज्जा ।

१२८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए
 चिट्ठमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण
 कायं, आसाएज्जा ।
 से अणासायमाणे, तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए
 चिट्ठेज्जा ।

२९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे
 वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए
 वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसय वा, पोसयं
 वा, पाणिणा परिपिहत्ता, तओ संजयामेव ऊससेज्ज वा,
 णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा,
 उड्डुयं वा, वायणिसगं वा, करेज्जा ।

३०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—
 समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा
 भवेज्जा,
 सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया

११. सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा,
 १२. सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा
 भवेज्जा, तहप्पगाराहि सेज्जाहि संविज्जमाणार्हि^० पग्गाहिय-
 तरागं विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा^१ ।
 ३१-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, *जं
 सव्वद्वेहिं समिए सहिए सया^० जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

नवमं अङ्कयणं

णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए,
सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
संअंडं *सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-० मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारं णिसीहियं-अफासुयं अणेसणिज्जं *ति मण्णमाणे०
लाभे संते णो च्चेत्तिस्सामिं (चेएज्जा ?) ।

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए,
सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
अप्पंडं *अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं
अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-० मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारं णिसीहियं—फासुयं एसणिज्जं *ति मण्णमाणे०
लाभे संते च्चेत्तिस्सामिं^३ (चेएज्जा ?) ।

अस्सि पडियाए-णिसीहिया-पदं

३-सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसइं अभिहइं आहट्टु च्चेत्तेति ।

१-से (अ, क, घ, च, व) ।

२-वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेत्तिस्सामिं' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः । प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतं पाठो युज्यते ।

३-वृत्तौ 'गृण्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेत्तिस्सामिं' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतं पाठो युज्यते ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा, अणीहडाए वा), अत्तद्वियाए
वा अणत्तद्वियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

४-सेज्जं पुणं णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहुवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइ,
जीवाइ, सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्चेज्जं
अणिसद्वं अभिहडं आहट्टुं चेतैति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा),
अत्तद्वियाए वा अणत्तद्वियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए
वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं
वा, णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

५-सेज्जं पुणं णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइ, भूयाइ,
जीवाइ, सत्ताइ समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्च अच्चेज्जं
अणिसद्वं अभिहडं आहट्टुं चेतैति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तद्वियाए
वा अणत्तद्वियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतोज्जा ।

६-सेज्जं पुणं णिसीहियं जाणेज्जा—

अस्सि पडियाए बहुवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइ,

भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतैति ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय
समुद्दिस्स पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ
समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु
चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतर-
कडाए वा, (बहिया णीहडाए वा अणीहडाए वा), अत्तट्ठियाए
वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा,
आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा,
णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं,
भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं
अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ ।

तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया
णीहडाए), अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

९-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया, पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कबिए वा, छन्ने
वा, लित्ते वा, घट्टे वा, मट्टे वा, संमट्टे वा, संपधूमिए वा ।
तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया
णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतैज्जा ।

११-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा (बहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा
चेतैज्जा ।

१२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—
अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ
महल्लियाओ कुज्जा,
महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा,
समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा,
विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा,
पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा,
णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा,
अंतो वा बहिं वा णिसीहियाए हरियाणि छिंदिय-छिंदिय,
दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया वा णिण्णक्खु ।
तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, (अबहिया

णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, गिरीहियं वा चेतैज्जा ।

१३-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, (वहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, गिरीहियं वा चेतैज्जा ।

वहियानिस्तारिय-गिरीहिया-पदं

१४-से भिक्खु वा भिक्खुणी वा सेज्ज पुण जाणेज्जा—

अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा,
मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,
फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं
साहरति, वहिया वा गिण्णक्खु ।

तहप्पगाराए गिरीहियाए अपुरिसतरकडाए, (अवहिया
णीहडाए), अणत्तट्टियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो
ठाणं वा, सेज्जं वा, गिरीहियं वा चेतैज्जा ।

१५-अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, (वहिया णीहडा),
अत्तट्टिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहिता, पमज्जिता,
तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, गिरीहियं वा चेतैज्जा ।^०

१६-जे तत्थ दुवग्गा वा तिवग्गा वा चउवग्गा वा पंचवग्गा वा
अभिसंधारेति गिरीहियं गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं
आलिंजेज्ज वा, विलिंजेज्ज वा, चुंवेज्ज वा, दंतेहिं णहेहिं
वा अच्चिद्धेज्ज वा, विच्चिद्धेज्ज' वा ।

१७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जा सेयमिण मणेज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

दसमं अज्भयणं

उच्चारपासवण-सत्तिककयं

पाय-पुंछण-पदं

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपासवण-किरियाए उच्चाहिज्जमाणे^१ सयस्स पाय-पुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाएज्जा ।

थंडिल-पदं

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
सअंडं सपाणं *सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिग-पणग-
दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अप्पमाणं अप्पबीअं *अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-
पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडा-संताणयं,
तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए एगं साहम्मियं समुद्धिस्स *पाणाइं, भूयाइं,
जीवाइं, सत्ताइं समारब्भ समुद्धिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं
अणिसट्ठं अभिहंडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ,
तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा,
(बहिया णीहंडं वा अणीहंडं वा), अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं
वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं

१-उप्पा ° (क) ।

वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

५-से भिक्खू वा भिक्खुणो वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं (जाव
१०१४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०१४) अणासेवियं
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं (जाव
१०१४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०१४) अणासेवियं
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं
(जाव १०१४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०१४) अणासेवियं
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए बहवे समण-माहण-अतिहि-क्किवण-वणीमए
पगणिय-पगणिय, समुद्दिस्स पाणाइं (जाव १०१४) उद्देसियं
चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा (जाव १०।४) अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उक्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।^०

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
बह्वे समण-माहण-किवण-वणीमग-अतिही^१ समुद्धिस्स पाणाइं
(जाव १०।४) उद्देसियं चेएइ ।

तहप्पगारं थंडिलं अपुरिसंतरकडं, (बहिया अणीहडं),
•अणत्तद्धियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं ।^० अण्णयरंसि वा
तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

१०-अहः पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, (बहिया णीहडं),
•अत्तद्धियं, परिभुत्तं, आसेवियं^०। अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि
थंडिलंसि उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ।

११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अस्सि पडियाए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चयं^२ वा, छण्णं
वा, घट्टं वा, मट्ट वा, लित्तं वा, संमट्टं वा, संपधूमियं वा ।
अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं
वोसिरेज्जा ।

१२-से भिक्खू भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, गाहावइपुत्ता वा कंदाणि वा, मूलाणि
वा, •(तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा,
बीयाणि वा^०, हरियाणि वा अंतातो वा बाहिं णीहरंति,
बहियोओ^३ वा अंतो साहरंति । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१-पूर्वपाठेभ्य (१।१७, २।८, ५।१०) अस्य शब्द-विन्यासो भिन्नोस्ति ।

२-पामाच्चियं (अ, क, घ, च) ।

३-ब्राह्मीतो (अ, क) ।

१३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
खंधंसि वा, पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि^१
वा, पासायंसि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अणंतरहियाए पुढवीए, ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए
पुढवीए, मट्टियाकडाए^२, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए
लेलुयाए, कोलावासंसि वा^३ दाख्यंसि जीवपइद्वियंसि
*सअंडसि सपाणंसि सवीअंसि सहुरियंसि सउसंसि सउदयंसि
सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-^० मक्कडा संताणयंसि । अण्णयरंसि
वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा,
*मूलाणि वा, (तयाणि वा?), पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा,
फलाणि वा^०, वीयाणि वा परिसाडेंसु वा, परिसाडित्ति वा,
परिसाडिस्संति वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा,
वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, तिलाणि वा,
कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, 'पतिरिसु वा,

१-हम्मियतलंसि (व) ।

२-एष पाठो निशीथस्य (१४।२३) सूत्रानुसारेण स्वीकृतः । सर्वानु आन्वाराङ्गप्रतिपु
'मट्टिया मक्कडाए' इति पाठोस्ति । असौ न शुद्ध प्रतिभानि ।

३-अस्मिन् सूत्रे प्रतिपु 'वा' शब्दस्य प्रयोगा अधिका दृश्यन्ते, यथा 'वा दाख्यन्ति वा
जीवपइद्वियंसि वा' किन्तु १।५१ सूत्रानुसारेण 'वा' शब्द सकृदेव युज्यते ।

पतिरिति वा^१ पतिरिस्संति वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
आमोयाणि वा घसाणि वा, भिलुयाणि वा, विज्जलाणि वा, खाणुयाणि वा, कडवाणि^२ वा, पगत्ताणि वा, दरीणि वा, पट्टुगाणि वा, समाणि वा, विसमाणि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
माणुस-रंधणाणि वा, महिस-करणाणि वा, वसभ-करणाणि वा, अस्स-करणाणि वा, कुक्कुड-करणाणि वा, लाव्य-करणाणि वा, वट्टय-करणाणि वा, तित्तिर-करणाणि वा, कवोय-करणाणि वा, कपिजल-करणाणि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
वेहाणस-ट्टाणेसु वा, गिद्धपिट्ठ-ट्टाणेसु वा, तरुपडण-ट्टाणेसु^३ वा, 'मेरुपडण-ट्टाणेसु'^४ वा, विसमकखण-ट्टाणेसु वा, अगणिकंडण-ट्टाणेसु^५ वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि (थंडिलंसि?) णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

१-पइरसु वा पइरति वा (घ, च, छ) ।

२-कडवाणि (अ, ब) ।

३-^०पवडण-^० (भ, च, छ) ।

४-X (छ) ।

५-^०फडय-^० (क, ख, घ, च) ; ^०पडण-^० (छ) ।

२१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

२२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउमुहाणि
वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-
पासवणं वोसिरेज्जा ।

२३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
इंगालडाहेसु वा, खारडाहेसु वा, मडयडाहेसु वा, मडय-
थूभियासु वा, मडयचेइएसु वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
णदीआययणेसु वा, पकाययणेसु वा, ओघाययणेसु वा,
सेयणपहंसि^१ वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो
उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
णवियासु वा मट्टियखाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु,
गवायणीसु^२ वा, खाणीसु वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि
थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
डागवच्चंसि वा, सागवच्चंसि वा, मूलगवच्चंसि वा,

१-^० वहसि () ; ^० पथ (छ) ।

२-गवा न (अ, घ) ।

हत्थंकरवच्चंसि वा । अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि
 गो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।

२७—से भिक्खू वा भिक्खुणो वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—
 असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायइवणंसि वा, केयइ-
 वणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि
 वा, 'पुण्णागवणंसि वा' । अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु
 पत्तोवएसु वा; पुप्फोवएसु वा. फलोवएसु वा, बीओवएसु
 वा, हरिओवएसु वा णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।^१

२८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सपाययं वा परपाययं वा गहाय
 से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोयंसि^२
 अप्पपाणंसि^३ अप्पबीअंसि अप्पहरियंसि अप्पोसंसि अप्पुदयंसि
 अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-^०मक्कडा-संताणयंसि अहारामंसि
 वा उवस्सयंसि, तओ संजयामेव उच्चारपासवणं
 वोसिरेज्जा^४ ।

से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि (जाव) मक्कडा-
 संताणयंसि अहारामंसि वा, भामथंडिलंसि^५ वा । अण्णयरंसि
 वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि, तओ संजयामेव
 उच्चारपासवणं परिट्टवेज्जा ।

२९—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,^६ जं
 सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया^० जएज्जासि ।

—त्ति वेमि ।

१—पुण्णागवणंसि वा पुण्णगवणंसि वा (अ) ।

२—अस्मिन् सूत्रे चूर्णौ 'शुक्तागारादय' अनेके शब्दा व्याख्याता सन्ति । ते वृत्तौ प्रतिषु
 च नोपलभ्यन्ते ।

३—^० लोइयंसि (अ) ।

४—वोसिरेज्जा उच्चारपासवण वोसिरित्ता (क्वचित्) ।

५—इष्टक्यम् १।१।३ ।

एगारसमं अञ्जयणं
सद्-सत्तिक्कयं

वित्त-सद्-कण्णसोय-पडिया-पद

१-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा (अहावेगइयाइं सद्दाइ सुणेइ, तंजहा?) मुइंगसद्दाणि वा, 'नंदीमुइंगसद्दाणि वा', भ्ळरीसद्दाणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूव-रूवाणि वितताइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

तत्त-सद्-कण्णसोय-पडिया-पद

२-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ सद्दाइं सुणेइ, तंजहा—वीणासद्दाणि वा, विपंची-सद्दाणि वा, बद्धीसग^२-सद्दाणि वा, तुणय-सद्दाणि वा, पणव^३-सद्दाणि वा, तुंबवीणिय-सद्दाणि वा, ढंक्कुण^४-सद्दाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइ सद्दाइं तताइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

ताल-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

३-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेत्ति, तंजहा—ताल-सद्दाणि वा, कंसताल-सद्दाणि वा, लत्तिय-सद्दाणि वा, गोहिय-सद्दाणि वा, किरिकिरिय-सद्दाणि वा—

१—× (क, च) ।

२—इप्पी ° (घ, च), पप्पी ° (छ), वप्पी ° (क्वचित्) ।

३—पणय (अ, छ, व) ।

४—ढक्कुण (झ) ।

अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं तालसद्दाइं
कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

भुसिर-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

४-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—संख-सद्दाणि वा, वेणु-सद्दाणि वा, वंस-सद्दाणि वा,
खरमुहि-सद्दाणि वा, पिरिपरिय^१-सद्दाणि वा—अण्णयराइं
वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं झुसिराइं^२ कण्णसोय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

विविह-सद्-कण्णसोय-पडिया-पदं

५-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, *उप्पलाणि वा,
पवल्लाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, दावीणि
वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा^३,
सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसर-
पंतियाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं
सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि
वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा—
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१-परि^० (अ, वृ), परिपरिय (क, च, छ, ब) ।

२-प्रथम-चतुर्थ-सूत्रयो 'वितताइ सद्दाइं, तालसद्दाइं' इति पाठोस्ति तथा द्वितीय-चतुर्थ-
सूत्रयो 'सद्दाइ तताइं, सद्दाइ भुसिराइं' इति पाठोस्ति । एवं विशेष्य-विशेषणयो-
र्ध्वत्ययोस्ति ।

७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं, सुणेति, तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं० सद्दाइं *कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, समाणि वा, पवाणि वा—अण्णयाराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं० सद्दाइं *कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं० सद्दाइं *कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१०-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा; चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं० सद्दाइं *कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

११-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तंजहा—महिसद्दाण-करणाणि वा, वसभद्दाण-करणाणि वा, अस्सद्दाण-करणाणि वा, हत्थिद्दाण-करणाणि वा, *कुक्कुडद्दाण-करणाणि वा, मक्कडद्दाण-करणाणि वा, लावयद्दाण-करणाणि वा, वट्टयद्दाण-करणाणि वा, तित्तिरद्दाण-

- करणणि वा, कवोयद्वाण-करणणि वा०, कविजलद्वाण-
करणणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं०
सद्दाइं *कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।
- १२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि
वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, *कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-
जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-
जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा०, कविजल-जुद्धाणि वा—
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-
पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।
- १३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—‘जूहिय-द्वाणाणि’ वा, ह्यजूहिय-द्वाणाणि वा,
गयजूहिय-द्वाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-
रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा
गमणाए ।
- १४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—अक्खाइय-द्वाणाणि वा, माणुममाणिय-द्वाणि वा,
महया ऽहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्प-
वाइय-द्वाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं *विरूव-
रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए० णो अभिसंधारेज्जा
गमणाए ।
- १५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा *अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—कलहाणि वा, डिंवाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि
वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा

१—निशीथे १२ उद्देशके २६ सूत्रे ‘ज्जूहिया द्वाणाणि’ इति पाठो विद्यते ।

तहप्पगाराइं °विरुव-रूवाइं° सद्दाइं °कण्णसोय-पडियाए°
णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१६-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा °अहावेगइयाइं° सद्दाइं सुणेति,
तंजहा—खुड्डियं दारियं परिवुत्तं^१ मंडियालंकियं^२
निवुज्झमाणि पेहाए, एगं पुरिसं वा बहाए णोणिज्जमाणं
पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं °विरुव-रूवाइं° सद्दाइं
कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१७-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरुव-रूवाइं
महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि
वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा
तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं महासवाइं कण्णसोय-पडियाए
णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१८-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरुव-रूवाइं
महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा,
थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि^३ वा, आभरण-
विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि
वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विउलं
असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा, परिभाइंताणि
वा, विच्छेड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा—अण्णयराइं
वा तहप्पगाराइं विरुव-रूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोय-
पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

सद्दासत्ति-पदं

१९-से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहि सद्देहिं, णो

१—परिभुय (क्वचित्) ; मण्डितालकृता बहुपरिवृता (वृ) ।

२—मडिय ° (घ, छ) ।

३—मज्झ ° (छ, ब) ।

परलोइएहिं सद्देहिं, णो सुएहिं सद्देहिं, णो असुएहिं सद्देहि,
 णो दिट्ठेहिं सद्देहिं, णो अदिट्ठेहिं सद्देहिं, णो इट्ठेहिं सद्देहि,
 णो कंतेहिं सद्देहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा,
 णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ।

२०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामगियं, *जं
 सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया० जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

वारसमं अज्जयणं

रूव-सत्तिककयं

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पद

१—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा—गंथिमाणि वा, वेढिमाणि वा, पूरिमाणि वा,
संघाइमाणि वा, कट्टकम्माणि^१ वा, पोत्थकम्माणि वा,
चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, 'दत्तकम्माणि वा'^२,
पत्तच्छेज्जकम्माणि वा, 'विहाणि वा, वेहिमाणि वा'^३—
अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं (रूवाइं ?)
चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

२—^०से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,
तंजहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा,
पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि
वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुजालियाणि वा,
सराणि वा, सागराणि वा, सरपतियाणि वा, सरसर-
पंतियाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं
रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ,

१—कट्टाणि (क, घ, च) ।

२—संतकम्माणि वा मालकम्माणि वा (अ, क, घ, च, छ, व) ; वृत्तौ चूर्ण्या च न
व्याख्यातम् अतो न गृहीतम् ।

३—विविहाणि वा वेढिमाड (अ, क, घ, छ, व) । निशीयस्य १२ उद्देशकस्य १७
सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृतः । आचाराङ्ग-प्रतिपु लिपिदोषाद् वणं-विपर्ययो
जात इति प्रतीयते ।

तंजहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणाणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, समाणि वा, पवाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा; चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

७—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

८—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—महिसट्टाण-करणाणि वा, वसभट्टाण-करणाणि वा,

अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा, कविजलट्ठाण-करणाणि वा—अण्णयराइ वा तहप्पगाराइ विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

९—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइं पासइ, तंजहा—महिस-जुट्ठाणि वा, वसभ-जुट्ठाणि वा, अस्स-जुट्ठाणि वा, हत्थि-जुट्ठाणि वा, कुक्कुड-जुट्ठाणि वा, मक्कड-जुट्ठाणि वा, लावय-जुट्ठाणि वा, वट्टय-जुट्ठाणि वा, तित्तिर-जुट्ठाणि वा, कवोय-जुट्ठाणि वा, कविजल-जुट्ठाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१०—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तजहा—जूहिय-ट्ठाणाणि वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइ विरूव-रूवाइ रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

११—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—अक्खाइयट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाऽहय-णट्टगीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१२—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइ रूवाइं पासइ, तंजहा—कलहाणि वा, डिंवाणि वा, डमराणि वा, दोरजाणि

वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१३—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तंजहा—खुड्डियं दारियं परिव्रुतं मंडियालंकिं निवुज्जमाणि पेहाए, एगं पुरिसं वा बहाए णीणिज्जमाणं पेहाए—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१४—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महासवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

१५—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तंजहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि, वा विउल असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छेद्विडयमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूव-रूवाइं महुस्सवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।

रूवासत्ति-पदं

१६—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहि रूवेहिं, णो परलोइएहि रूवेहिं, णो सुएहि रूवेहिं, णो असुएहिं रूवेहिं, णो

णो दिद्वेहिं रूवेहिं, णो अदिद्वेहिं रूवेहिं, णो इद्वेहिं रूवेहिं,
 णो कंतेहिं रूवेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्जेज्जा,
 णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ।

१७-एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं
 सव्वद्वेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।°

—त्ति बेमि ।

तेरसमं तह चउद्दसमं अज्झयणं
परकिरिया-सत्तिक्कयं^१
अन्नुन्नकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१—(परकिरियं) (अण्णमण्णकिरियं)^२ अज्झत्थियं संसेसियं—णो
तं साइए^३, णो तं णियमे ।

पाद-परिकम्म-पदं

२—(‘से से’^४ परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं आमज्जेज्ज वा,
‘पमज्जेज्ज वा’^५—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा,
वसाए^६ वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज^७ वा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

१—द्वितीय कोष्ठकं मुक्त्वा पठ्यते, तदा त्रयोदशमध्ययन भवति ।

प्रथम कोष्ठकं मुक्त्वा पठ्यते, तदा चतुर्दशमध्ययन भवति ।

२—अण्णोण्ण ° (वृ) । त्रयोदशाध्ययने ‘से भिक्खु वा २’ इति पाठो नास्ति । चतुर्दशा-
ध्ययने प्रतिपु विद्यते । किन्तु वृत्तो उभयत्रापि नास्ति व्याख्यात ।

३—सायए (घ) ।

४—सिया से (क, घ, च) सर्वत्र ।

५—× (अ, क, च, छ, ब) ।

६—निशीथे सर्वत्रापि ‘तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, णवणीएण वा’ इति पाठो
विद्यते ।

७—मिल ° (छ) ।

- ६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वन्नेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- १०—(से से परो) (से अण्णमण्ण) पादाओ खाणु^१ वा, कंटय वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ११—(से से परो) (से अण्णमण्णं) पादाओ पूयं वा, सोणियं वा, णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

काय-परिकम्म-पद

- १२—(से से परो) (से अण्णमण्ण) कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो त साइए, णो तं णियमे ।
- १३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो त णियमे ।
- १४—(से से परो) (से अण्णमण्ण) कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज^२ वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१—खाणुयं (क, घ, च, व) ।

२—मित्तलेज्ज (च) ।

१५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं लोद्धेण^१ वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विर्लिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

वण-परिकम्म-पदं

१९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिर्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं सीओदग-वियडेण

१—लोद्धेण (अ, क) ।

वा, उसिणोद्ग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं
विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

२५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं धूवण-
जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।^१

२६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-
जाएण अच्चिद्धेज्ज वा—विच्चिद्धेज्ज वा—णो तं साइए, णो
तं णियमे ।

२७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि वणं अन्नयरेणं सत्थ-
जाएणं अच्चिद्धित्ता वा, विच्चिद्धित्ता वा, पूयं वा, सोणियं
वा, नीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।

गड-परिकम्म-पदं

२८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंड वा, अरइयं वा,
पिडयं^२ वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—
णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा,

१—२४-२५ सूत्रे कोष्ठकोल्लिखित-प्रतिपु न विद्येते (अ, क, घ, च, छ) ।

२—पुलय (अ, च) ; पुलडय (क, छ, व), पुलडं (घ) । एवं नवासु प्रतिपु 'पिडय'
पाठ नोपलभ्यते, किन्तु उपलब्ध-पाठाना नाथोऽवगम्यते । निशीथे तृतीयोद्देशके
चतुस्त्रिंशत्तम-सूत्रे 'पिडय' पाठ । अस्मिन् प्रकरणे स सम्यग्, इति स पाठ स्वीकृत ।
उक्तप्रतिपाठा लिपिदोषेण विकृता इति प्रतीयते

पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा०, भगंदलं वा तेत्तलेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा०, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा०, भगंदलं वा सीओदग्ग-वियडेण वा, उसिणोदग्ग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अन्नयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।]^१

३३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, *अरइयं वा, पिडयं वा०, भगंदलं वा अन्नयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धेज्ज वा, विच्चिद्धेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

३४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धित्ता

१—२४-२५ सूत्राङ्कानुसारेण अत्रापि कोष्ठकान्तगति सूत्रे युज्येते, परन्तु प्रतिषु नोपलभ्येते ।

वा, विच्छिदित्ता वा पूय वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो तं णियमे ।

मल-णीहरण-पद

३५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) कायाओ सेयं वा, जल्लं वा
णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो त साइए, णो तं
णियमे ।

३६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा,
दंतमल वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

वाल-रोम-पद

३७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) दीहाइ वालाइं, दीहाइं रोमाइं,
दीहाइ ममुहाइं, दीहाइ कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं
कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज^१ वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

लिक्ख-जूया-पदं

३८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) सीसाओ लिक्ख वा, जूयं वा
णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।

पाद-परिकम्म-पदं

३९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

४०—^१(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

१—संबद्धेज्ज (च), सबज्जेज्ज (छ) ।

५५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

वण-परिकम्म-पदं

५६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो
तं साइए, णो तं णियमे ।

५७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमहेज्ज वा—णो
तं साइए, णो तं णियमे ।

५८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेग वा, घएण वा, वसाए वा
मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

५९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा,
वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो
तं णियमे ।

६०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओद्दग-वियडेण वा, उसिणोद्दग-
वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

६१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज
वा, विल्लिपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

- ६२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा,
पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ६३—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धेज्ज
वा, विच्चिद्धेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ६४—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्चिद्धित्ता
वा, विच्चिद्धित्ता वा, पूयं वा, सोणियं वा नीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

गंड-परिकम्म-पदं

- ६५—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।
- ६६—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा संवाहेज्ज वा, पल्लिमहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।
- ६७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिल्लिगेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।
- ६८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं

वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुन्नेण वा, वण्णेण वा
उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

६९—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छ्रोलेज्ज
वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिपेज्ज वा, विलिपेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।]

७०—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

७१—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं
वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता
वा, पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं
साइए, णो तं णियमे ।

मल-णीहरण-पदं

७२—(से से परो) (से अण्णमण्णं) अंकंसि वा, यंकंसि वा

तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा,
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

७३—(से से परो) (से अणमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कणमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं
वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं
णियमे ।

वाल-रोम-पदं

७४—(से से परो) (से अणमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं,
दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

लिक्ख-जूया-पदं

७५—(से से परो) (से अणमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा
विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।^{१०}

आभरण-आर्बिघण-पद

७६—(से से परो) (से अणमण्णं) अंकंसि वा, पलियंकंसि वा
तुयट्टावेत्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं^१ वा,
मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आर्बिघेज्ज^२ वा,
पिणिघेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

१—सुवण्णगेवेय (घ) ।

२—आवघेज्ज (घ, च) ।

पाद-परिकम्म-पदं

७७—(से से परो) (से अण्णमण्णं) आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा
णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज
वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।^१

(एवं गेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि ।)^२

७८—(से से परो) (से अण्णमण्णं) सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं
आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) असुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं
आउट्टे,

(से से परो) (से अण्णमण्णं) गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि
वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा,
कइढेत्तु वा, कइढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए,
णो तं णियमे ।

तिगिच्छा-पदं

७९—कड्डुवेयणा^३ कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेति ।

८०—एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं
सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।

१. २—अस्मात् सूत्रात् पुरतोऽपि 'पादाइ सवाहेज्ज वा' (सू० ३) अत प्रभृति 'सीसाओ
लिक्ख वा' (सू० ३८) पर्यन्तं सूत्राणि युज्यन्ते परन्तु नात्र कश्चित् पूरणीय-संकेत
प्रतिषु प्राप्यते । "एवं गेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि" इति सूत्रमत्रानावश्यकं प्रति-
भाति, किन्तु वृत्तावस्ति व्याख्यातम् । सम्भाव्यते प्रस्तुत-सूत्रस्य पूरणीय-संकेतो
लिपिदोषेण अन्यथा जातः । इत्यपि सम्भाव्यते 'एव गेयव्वा अण्णमण्ण किरियावि'
इति सूत्रं वाचनान्तरगतमस्ति । एकस्यां वाचनाया उक्तसूत्रेणैव त्रयोदशाध्ययनस्य
पाठ प्रवेदितः, अपरस्या च त्रयोदशाध्ययनस्य संक्षिप्तपाठः पुथगरूपेण प्रतिपादित ।
वर्तमाने समुपलब्ध पाठो द्वयोरपि वाचनयोर्मिश्रणं प्रतीयते । तेनाऽस्माभिस्तस्य
कोष्ठक एव स्वीकृतम् ।

३—कम्मकय^० (च) ।

पनरसमं अञ्जयणं

भावणा

भगवओ चवणादि-णक्खत्त-पदं

१-तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगव महावीरे पंचहत्थुत्तरे
यावि होत्था—

- (१) हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते,
- (२) हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए,
- (३) हत्थुत्तराहिं जाए,
- (४) हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ
अणगारियं पव्वइए,
- (५) हत्थुत्तराहिं कसिणे पड्डिपुण्णे अव्वाघाए निरावरणे
अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ।

२-साइणा भगवं परिनिव्वुए ।

गन्म-पदं

३-समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए—सुसमसुसमाए
समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीत्तिकंताए, सुसम-
दुसमाए समाए वीत्तिकंताए, दुसमसुसमाए समाए बहु
वीत्तिकंताए—पण्हत्तरीए^१ वासेहिं, मासेहिं य अद्धणवमेहिं^२
सेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे, अट्टमे पक्खे—आसाढ-
सुद्धे, तस्सणं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं
नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं^३, महाविजय-सिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-

१—पण्हत्तरीए (अ, क, घ, च) ।

२—^० णवमसेसेहिं (क, घ, च) ।

३—जोगोवगएण (अ, च) ।

पुंडरीय-दिसासोवत्थिय-वद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं
सागरोवमाइं आउयं^१ पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं
ठिइक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुद्वीवे^२ दीवे, भारहे
वासे, दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि^३
उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए
माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए सीहोबभवभूएणं अप्पाणेणं
कुच्छिसि गब्भं वक्कंते ।

चवण-पदं

४-समणे भगवं महावीरे तिन्नाणोवगए यावि होत्था—
चइस्सामित्ति जाणइ, चुएमित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ—
सुहुमे णं से काले पन्नत्ते ।

गब्भसाहरण-पदं

५-तओ णं समणे भगवं महावीरे अणुकंपए^४ णं देवे णं
“जीयमेयं” ति कट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे, पंचमे
पक्खे—आसोयबहुले, तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं
हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएणं बासीत्तिहिं राइंदिएहिं
वीइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए चट्टमाणे
दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तिय-कुंडपुर-
सन्निवेसंसि णायानं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स
कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिद्ध-सगोत्ताए
असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करेत्ता, सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं
करेत्ता, कुच्छिसि गब्भं साहरइ ।

१—अहाउयं (क, घ, च) ।

२—^० द्वीवेण (क, घ, च, छ, ब) ।

३—^० वेसमि (छ) ।

४—हियअणु^० (छ) ।

६-जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गम्भे, तंपि य दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए कुच्छिसि साहरइ ।

७-समणे भगवं महावीरे तिष्णाणोवगए यावि होत्था— साहरिज्जिस्सामि त्ति जाणइ, साहरिएमि त्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे वि^१ जाणइ, समणाउसो !

जम्म-पदं

८-तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णवण्हं मासाणं बहु पडिपुण्णाणं, अद्धइमाणं राइंदियाणं वीत्तिककंताणं, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे— चेतिसुद्धे, तस्सणं चेतिसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया ।

९-जण्णं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया^२ अरोयं पसूया, तण्णं राइं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहिं य देवीहिं य ओवयंतेहिं य, उप्पयंतेहिं य^३ एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते^४ देव-कहक्कहे उप्पिजलगभूए यावि होत्था ।

१०-जण्णं^५ रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं^६ रयणिं बह्वे देवाय देवीओ य

१-वि न (च) ; न (छ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

२-आरोया ° (क, घ, च) ।

३-य सपयतेहिं य (क, घ, च) ।

४-° वाते णं (अ, क, च, छ) ।

५-ज (च, छ) ।

६-त (च, छ) ।

एगं महं अभयवासं च, गंधवासं च, 'चुण्णवासं च'^१,
हिरण्णवासं च, रयणवासं च वासिसु ।

११-जण्णं रयणि तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं
अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणि भवणवइ-वाणमंतर-
जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स
भगवओ महावीरस्स कोउगभूइकम्माइं^२ तित्थयराभिसेयं च
करिसु ।

नामकरण-दं

१२-जओ णं पभिइ भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए
कुच्छिसि गब्भं आहुए^३, तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं
हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं
संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ^४ ।

१३-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं
जाणेत्ता णिव्वत्त-दसाहंसि वोक्कंतंसि सुच्चिभूयंसि विपुलं
असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ति, विपुलं असण-पाण-
खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं
उवणिमंतेत्ति, मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेत्ता
बहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुंडग-पंडरगातीण
विच्छड्ढेत्ति, विगोवेत्ति^५, विस्साणेंत्ति, दातारेसु णं दायं^६
पज्जभाएत्ति, विच्छड्ढित्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता,

१-चुण्णवासं च पुष्पवासं च (क, घ, ङ) ।

२-सुइ^० (छ) ।

३-आहुए (क्वचित्) ।

४-पवि^० (अ) ।

५-वित्तो^० (अ, क, घ, च) ।

६-दाणं (घ, छ) ।

दायारेसु णं दायं पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ति, मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गेणं इमेयारूवं णामधेज्जं करेत्ति^१—

जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे आहुए^२, तओ णं पभिइ इमं कुलं विउलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धण्णेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ णं कुमारे “वद्धमाणे” ।

वाल-पदं

१४—तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे, तंजहा—
खीरधाईए, मज्जणधाईए, मंडावणधाईए, खेत्लावणधाईए,
अंकधाईए—अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले
गिरिकदरमल्लीणे^३ व चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संबड्ढइ ।

विवाह-पदं

१५—तओ णं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये^४
विणियत्तवाल-भावे^५ अप्पुस्सुयाइं^६ उरालाइं माणुस्सगाइं
पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्-फरिस-रस-रूव-गंधाइं
परियारेमाणे, एवं च णं विहरइ ।

नाम-पदं

१६—समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते । तस्स णं इमे तिण्णि

१—कारवेत्ति (क, च) ; करावेत्ति (घ) ।

२—आहते (च) ।

३—समल्लीणे (अ, घ) ।

४—^० परिणय (घ, च, छ, व) ।

५—विणिवित्त^० (च) ।

६—अणुस्सुयाइं (अ, व) ।

णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
 अम्मापिउसंतिए “वद्धमाणे”,
 सह-सम्मुइए “समणे”,
 “भीमं भयभेरवं उरालं अंचेलयं परिसहं सहइ” ति कट्टु
 देवेहिं से णामं कयं “समणे भगवं महावीरे” ।

परिवार-पदं

१७—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेणं ।
 तस्स णं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
 सिद्धत्थे ति वा,
 सेज्जंसे ति वा,
 जसंसे ति वा ।

१८—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्म वासिइ-सगोत्ता ।
 तीसेणं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा—
 तिसला ति वा,
 विदेहदिण्णा ति वा,
 पियकारिणी ति वा ।

१९—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए ‘सुपासे’
 कासवगोत्तेणं ।

२०—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया ‘णंदिवद्धणे’
 कासवगोत्तेणं ।

२१—समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा भइणी ‘सुदंसणा’
 कासवगोत्तेणं^२ ।

१—कण्ठिटा (घ, च) ।

२—कासवी ° (च) ।

२२-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया'
कोडिण्णागोत्तेणं ।

२३-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं । तीसेणं
दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा-
अणोज्जा ति वा,
पियदसणा ति वा ।

२४-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं^१ ।
तीसेणं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तंजहा-
सेसवती ति वा,
जसवती ति वा ।

माउ-पिउ-काल-पदं

२५-समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो
पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था । तेणं बहूइं
वासाइं समणोवासग-परियागं पालइत्ता, छ्हं जीवनिकायाणं
संरक्खणनिमित्तं^२ आलोइत्ता निदिता गरहिता पडिक्कमित्ता,
अहारिहं उत्तरगुणं पायच्छित्तं पडिवज्जित्ता, कुससंथारं
दुरुहिता भत्तं पच्चक्खाइंति, भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए
मारणंतियाए सरीर-संलेहणाए सोसियसरीरा^३ कालमासे
कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहिता अच्चुए कप्पे देवत्ताए
उववण्णा ।

तओ णं आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता
महाविदेहवासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति,

१-कोसिया ° (घ) ।

२-सारक्खण ° (घ, च) ।

३-सुसिय ° (अ, घ), भुसिय ° (च), कोसिय ° (व) ।

बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिणिव्वाइस्संति, सव्वदुक्खाणमंतं
करिस्संति ।

अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं

२६—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाते णायपुत्ते
णायकुलविणिव्वत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले
तीसं वासाइं विदेहत्ति कट्टु अगारमज्जे वसित्ता
अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे
चिच्चा हिरणं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा
वाहणं, चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-सावदेज्जं,
विच्छइडेत्ता, विगोवित्ता, विस्साणित्ता. दायारेसु णं 'दायं
पज्जभाएत्ता', संवच्छरं दलइत्ता, जे से हेमंताणं पढमे मासे
पढमे पक्खे—मगसिरबहुले, तस्सणं मगसिरबहुलस्स
दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगएणं
अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था—

[संवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमणं तु जिणवरिदस्स^१।
तो अत्थ - संपदाणं, पव्वत्तई पुव्वसूराओ ॥१॥
एगा हिरण्णकोडी, अट्टेव अणूणया सयसहस्सा ।
सूरोदयमार्इयं, दिज्जइ जा पायरासो त्ति^२ ॥२॥
तिण्णेव य कोडिसया, अट्टासीत्ति च होत्ति कोडीओ ।
असिति^३ च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं ॥३॥
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिड्ढीया ।
बोहिति य तित्थयरं, पण्णरससु कम्म-भूमिसु ॥४॥

१—दाइत्ता परिभाइत्ता (छ) ।

२—^० दाण (अ) ।

३—उ (घ) ।

४—असिय (अ, घ, छ, ब) ।

बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हाराइणो मज्झे ।
 लोगंतिया विमाणा, अट्टसुवत्था असंखेज्जा ॥१॥
 एए देवणिकाया, भगवं वोहिंति जिणवरं वीरं ।
 सब्वजगजीवहियं, अग्गं तित्थं पव्वत्तोहि ॥६॥]

देवागमण-पद

२७-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्वमणा-
 भिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोडसिय-विमाण-
 वासिणो देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं ख्वेहि, सएहिं-
 सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं-सएहिं च्चिधेहिं, सच्चिड्डीए,
 सब्वजुतीए, सब्वबलसमुदएणं, सयाइं-सयाइं जाण विमाणाइं
 दुरुहंति, सयाइं-सयाइ जाणविमाणाइं दुरुहत्ता, अहावादराइं
 पोगगलाइं परिसाडेति, अहावादराइं पोगगलाइं परिसाडेत्ता,
 अहासुहुमाइं पोगगलाइं परियाइंति, अहामुहुमाइं पोगगलाइं
 परियाइत्ता, उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पडत्ता, ताए उक्किट्टाए
 सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं
 ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुदाइं
 वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंजुट्टीवे दीवे तेणेव
 उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छत्ता, जेणेव उत्तरखत्तिय-कुंडपुर
 सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छत्ता, जेणेव
 उत्तरखत्तिय-कुंडपुर सन्निवेसस्स उत्तग्पुरत्थिमे दिसीभाए
 तेणेव ऋत्तिवेगेण उवट्टिया ।

अलकरण-सिवियाकरण-पद

२८-तओ णं सब्बे देविंसे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं
 ठवेति, सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता, सणियं-सणियं
 जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ

पञ्चोत्तरित्ता, एगंतमवक्कमेति, एगंमवक्कमेत्ता, मह्या
वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणति, मह्या वेउव्विएणं
समुग्घाएणं समोहणित्ता, एगं महं णाणामणिकणयरयण-
भत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वति । तस्सणं
देवच्छंदयस्स बहुमज्झ देसभाए एगं महं सपायपीढं
णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं सिंहासणं
विउव्वइ, विउव्वित्ता, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव
उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं
तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, समणं भगवं महावीरं
तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता, समणं भगवं महावीरं
वंदति, णमंसति, वंदित्ता, णमंसित्ता, समणं भगवं महावीरं
गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता,
सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ, सणियं-
सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्स-
पागेहिं तेव्वेहिं अब्भंगेति, अब्भंगेत्ता, गंधकसाएहिं^१
उव्वोल्लेति, उव्वोल्लित्ता, सुद्धोदएणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता,
जस्स जंतपलं^२ सयसहस्सेणंति पडोलतित्तएणं साहिएणं
सीतएणं^३ गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिपति, अणुलिपित्ता
ईसिणिससासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुग्गयं कुसलणरपसंसितं
अस्सलालपेलवं^४ छेयायरियकणगखचियंतकम्मं^५ हंसलक्खण
पट्टजुयलं णियंसावेइ, णियंसावेत्ता, हारं अद्धहारं उरत्थं

१— ° कासायिएहिं (च, छ) ।

२—ण मुल्ल (अ, घ, च, व) ।

३—सरसीएण (क, घ, च) ।

४— ° लालपेसिथं (घ) ; ° लालपेलव (छ) ; ° लालपेसलवं (व) ।

५—मसूरियकणयकणयत ° (घ) ।

एगावलिं पालंबसुत्त-पट्ट-भउड-रयणमालाइ आविधावेति,
आविधावेत्ता गंधिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं मल्लेणं
कप्परुक्खमिव समालकेति, समालकेत्ता दोच्चंपि महया
वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता एणं महं चंदप्पभं
सिवियं सहस्सत्राहिणिं विउव्वइ, तंजहा—

ईहामिय-उसभ-तुरग-गर-मकर-विहग-वाणर-कुजर-रुह-सरभ-
चमर-सदूलसीह-वणलय- विचित्तविज्जाहरमिहुण-जुयल-जंत-
जोगजुत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं, सुणिरूवित्त-मिसिमिसित्त-
रूवगसहस्सकलियं, ईसिभिसमाणं, भिन्धिसमाणं,
चक्खुल्लोयणलेस्सं, मुत्ताहलमुत्तजालंतरोवियं, तवणीय-पवर-
लंबूस-पलवंतमुत्तदामं, हारद्धहारभूसणसमोणय, अहियपेच्छ-
णिज्जं, पउमलयभत्तिचित्तं, 'असोगलयभत्तिचित्तं, कंदलय-
भत्तिचित्तं'^१,^२ णाणालयभत्ति-विरइयं सुभ चारुक्कंतरूवं
णाणामणि-पंचवण्णघंटापडाय-परिमंडियग्गसिहरं पासादीयं^३
दरिसणीयं सुरूवं ।

[सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स ।

ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहिं ॥७॥

सिवियाए मज्झयारे, दिव्वं वररयणरूवचेवइयं^४ ।

सीहासण महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥८॥

आलइयमालमउडो, भासुरबोदी वराभरणधारी ।

खोमयवत्थणियत्थो^५, जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ॥९॥

१—कद ° (च) ।

२—× (अ), अमोगलयभत्तिचित्त (क) ।

३—सुभं चारुक्कत रूवं पासादीय (अ, क, घ, च, व) ।

४—° विचइय (घ) ।

५—खोमिय ° (क, छ, व) ।

छद्वेण उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सोहणेण^१ जिणो ।
 लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहइ उत्तमं सीयं ॥१०॥
 सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं ।
 वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥११॥
 पुव्वि उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्टरोमपुलएहिं^२ ।
 पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरगरुलणागिंदा ॥१२॥
 पुरओ सुरा वहंतो, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।
 अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ॥१३॥
 वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले ।
 सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१४॥
 सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा ।
 सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१५॥
 वरपडहभेरिज्झल्लरि - संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं ।
 गयणतले धंरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ॥१६॥
 ततविततं घणञ्जुसिरं, आउज्जं चउविहं बहुविहीयं ।
 वायंति तत्थ देवा, बहंहिं आणट्टगसएहिं ॥१७॥]

अभिणिक्खमण-पदं

२९-तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे
 पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्सणं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं,
 सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं'^३
 जोगोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए^४
 पोरिसीए, छद्वेणं भत्तेणं अपाणएणं, एगसाडगमायाए,

१—सुदरेण (क, घ, च, व) ।

२—साहट्टु^० (अ, क, च, ब) ।

३—हत्थुत्तर^० (अ, घ, छ) ।

४—बीयाए (छ) ।

चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए^१, सदेवमणुयासुराए परिसाए समणिज्जमाणे-समणिज्जमाणे उत्तरखत्तिय-कुंडपुर संणिवेसस्स मज्झमज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव णायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ईसिरयणिप्पमागं अच्छुप्पेणं भूमिभाणेणं सणियं सणियं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ, ठवेत्ता सणियं-सणियं चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ, पच्चोयरित्ता सणिय-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयइ, आभरणालंकारं ओमुयइ । तओ णं वेसमणे देवे जन्नु-व्वाय-पडिए समणस्स भगवओ महावीररस हंसलवखणेणं पडेणं^२ आभरणालंकारं पडिच्छइ ।

लोय-पदं

३०-तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।

३१-तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नु-व्वाय-पडिए वयरामएणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता “अणुजाणेसि भंते” त्ति कट्टु खीरोयसायरं साहरइ ।

समाइय-गहण-पद

३२-तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ, करेत्ता, “सव्वं मे अकरणिज्ज पावकम्मं” त्ति कट्टु समाइयं चरित्तं पडिवज्जइ, सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेत्ता देवपरिसं मणुयपरिसं च आलिकख-चित्तभूयमिव दृवेइ ।

१-^० वाहिणीयाए (क घ. व.) ।

२-पडिमाटएण (छ) ।

।।दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियाणिणाओ य सक्कवयणेण ।
खिप्पामेव गिलुक्को, जाहे पविज्जइ चरित्तं ॥१८॥

पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसि सव्वपाणभूतहितं ।
साहट्ट^१ लोमपुलया, पयया देवा निसामिति ॥१९॥]

मणपज्जवणाण-लद्धि-पदं

३३-तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं
खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे
समुप्पन्ते—अड्ढाइज्जेहि दीवेहि दोहि य समुद्देहि सणीणं
पंचेंद्रियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं^२ मणोगयाइं भावाइं
जाणेइ ।

अभिग्गह-पदं

३४-तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-
सयण-संबंधिवग्गं, पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं^३
एयारूवं अभिग्गहं अभिग्गहइ—“बारसवासाइं वोसट्टकाए
चत्तदेहे^४ जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति”, तंजहा—दिव्वा वा,
माणुसा वा, तेरिच्छिया^५ वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे
समाणे स अणाइले अब्वहिते अदीणमाणसे तिविह मणवयण-
कायगुत्ते^६ सम्मंसहिस्सामि, खमिस्सामि अंहियासइस्सामि ।”

१-साहट्टु (अ, क, व) ।

२-^{१०} मणुस्साण (छ) ।

३-तओण इमं (छ) ।

४-चियत्त^० (च, छ, व) ।

५-समुप्पज्जति (घ, छ, व) ।

६-तेरिच्छा (च, व) ।

७-x (अ, क, घ, च, व) ।

विहार-पदं

३५—तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं
अभिगिण्हेत्ता 'वोसट्टकाए चत्तदेहे'^१ दिवसे मुहुत्तसेसे
कम्मारं^२ गामं समणुपत्ते ।

३६—तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्टचत्तदेहे अणुत्तरेणं
आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं संजमेणं, अणुत्तरेणं
पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं
बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तिए,
अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए,
अणुत्तरेणं ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मणेणं^३, अणुत्तरेणं सुचरिय-
फलणिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

३७—एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुपज्जिसु^४—दिक्वा वा
माणुसा^५ वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने
समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण-माणसे^६ तिविहमणवयण-
कायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ।

केवलनाण-लद्धि-पद

३८—तओ ण समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं
विहरमाणस्स बारसवासा विइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स
परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे
पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं,

१—वोसट्टचत्तदेहे (क, घ), वोसट्टचियत्तदेहे (छ) ।

२—कुमार (क, घ, च, छ, ब) ।

३—कम्मणे (क, घ, च, छ) ।

४—^० पज्जति (क, घ, व्र) ।

५—माणुस्ता (च) ।

६—अदीण-^० (अ, घ, च) ।

सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं
जोगोवगतेणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए,
जंभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए उजुवालियाए' उत्तरे
कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्टकरणंसि, वेयावत्तस्स
चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालस्खस्स अदूरसामंते,
उक्कुडुयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स,
छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, उड्ढंजाणुअहोसिरस्स, धम्म-
ज्झाणोवगयस्स, भाणकोट्टोवगयस्स, सुक्कज्झाणंतरियाए
वट्टमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अवाहए,
णिरावरणे, अणंते, अणुत्तरे, केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ।

३९-से भगवं अरिहं^२ जिणे जाए^३, केवली सव्वणू
सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ,
तंजहा-आगतिं गतिं ठित्तिं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं
पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं
सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं^४ जाणमाणे पासमाणे,
एवं च णं विहरइ ।

देवागमण-पदं

४०-जणं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स निव्वाणे कसिणे
•पडिपुण्णे अवाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाण-
दंसणे^० समुप्पण्णे, तण्णं दिवसं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-
विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि^५ य, •उप्पयंतेहि

१-उज्जु^० (घ, ब) ।

२-अरहा (अ, छ, ब) , अरहं (क, घ) ।

३-जाणए (घ, च) ।

४-^० भावेण (अ) ।

५-ओवयंतेहि २ (अ, ब) ।

य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे°
उप्पिजलगभूए यावि होत्था ।

धम्मोवदेस-पदं

४१—तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं
च लोगं च अभिसमेक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खति, तओ
पच्छा मणुस्साणं ।

४२—तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे
गोयमाईणं समणाणं णिगंथाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं
छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ भासइ^१ परूवेइ, तंजहा—
पुढविकाए^२ आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए°,
तसकाए ।

सभावण-महव्वय-पदं

४३—पढमं भंते! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं—से सुहुमं वा वायरं वा, तसं
वा थावरं वा—णेवसयं पाणाइवायं करेज्जा, नेवण्णेहिं
पाणाइवायं कारवेज्जा, नेवण्णं पाणाइवायं करंतं
समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा
कायसा, तस्स भंते! पडिक्कामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं
वोसिरामि ।

४४—तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति ।

तत्थिमा पढमा भावणा—

इरियासमिए से णिगंथे, णो 'इरिया-असमिए'^२ त्ति । केवली
बूया—इरिया-असमिए से णिगंथे, पाणाइं भूयाइं जीवाइं

१—भासइ पण्णवइ (व) ।

२—अइरियासमिए (अ), अणइरियासमिते (छ) ।

सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्वेज्ज वा । इरियासमि ए से णिग्गंथे, णो इरिया-असमि ए त्ति पढमा भावणा ।

४५—अहावरा दोच्चा भावणा—

मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे अधिकरणिए^१ पाओसिए, पारित्ताविए पाणाइवाइए भूओवघाइए—तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा । मणं परिजाणाति से णिग्गंथे, 'जे य मणे अपावए'^२ त्ति दोच्चा भावणा ।

४६—अहावरा तच्चा भावणा—

वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया *अण्हयकरा छेयकरा भेदकरा अधिकरणिया पाओसिया पारित्ताविया पाणाइवाइया^० भूओवघाइया—तहप्पगारं 'वइं णो उच्चारिज्जा । जे वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई अपावियत्ति तच्चा भावणा ।

४७—अहावरा चउत्था भावणा—

आयाणभंडमत्तणिकखेवणासमि ए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिकखेवणाअसमि ए । केवली बूया—आयाणभंडमत्तणिकखेवणाअसमि ए से णिग्गंथे पाणाइं, भूयाइं, जीवाइं, सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, *वत्तेज्ज वा; परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा^०, उद्वेज्ज वा, तम्हा आयाणभंडमत्तणिकखेवणासमि ए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिकखेवणाअसमि ए त्ति चउत्था भावणा ।

१—अहियारणकरे कलहकरे (व, वृ) ।

२—णो जे अमणे पावए (च) ।

४८—अहावरा पंचमा भावणा—

आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-
भोयणभोई । केवली बूया—अणालोइयपाणभोयणभोई से
णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा,
°वत्तेज्ज परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्देज्ज वा, तम्हा
आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइयपाण-
भोयणभोई त्ति पंचमा भावणा ।

४९—एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए
किट्टिए अवट्टिए आणाए आराहिए यावि भवइ ।
पढमे भन्ते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ।

५०—अहावरं दोच्चं भन्ते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं वड्ढोसं—से कोहा वा, लोहा
वा, भया वा, हासा वा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, णेवन्नेणं
मुसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण समणुजाणेज्जा,
तिविह तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भन्ते !
पडिक्कमामि °निदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ।

५१—तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा
भावणा—

अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासी । केवली
बूया—अणणुवीइभासी से णिग्गंथे समावेज्जा^१ मोसं
वयणाए । अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासि
त्ति पढमा भावणा ।

५२—अहावरा दोच्चा भावणा—

कोहं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो कोहणे सिया । केवली

१—° वज्जेज्जा (क, घ, च, छ, व) ।

बूया—कोहपत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए । कोहं^१
परिजाणइ, से णिग्गंथे, णो य कोहणे सिय त्ति दोच्चा
भावणा ।

५३—अहावरा तच्चा भावणा—

लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सिया । केवली
बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए । लोभं
परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सिय त्ति तच्चा
भावणा ।

५४—अहावरा चउत्था भावणा—

भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य भयभीरुए सिया । केवली
बूया—भयप्पत्ते भीरु समावदेज्जा मोसं वयणाए । भयं
परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य भयभीरुए सिय त्ति चउत्था
भावणा ।

५५—अहावरा पंचमा भावणा—

हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिया । केवली
बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोसं वयणाए । हासं
परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिय त्ति पंचमा
भावणा ।

५६—एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए *पालिए तीरिए
किट्टिए अवट्टिए^० आणाए आराहिए या वि भवति ।

दोच्चे भंते ! महव्वए *मुसावायाओ वेरमणं^० ।

५७—अहावरं तच्चं भंते ! महव्वयं—

पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं—से गामे वा, णगरे वा,
अरण्णे वा, अप्पं वा, बहूं वा, अणं वा छलं वा चित्तमंतं

६१-अहावरा चउत्था भावणा-

णिग्गंथेण ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं
ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया-णिग्गंथेण ओग्गहंसि
ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अणोग्गहणसीले अदिण्णं
गिण्हेज्जा । णिग्गंथे ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-
अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिय ति चउत्था भावणा ।

६२-अहावरा पंचमा भावणा-

अणुवीइमितोग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो
अणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया-अणुवीइमिओग्गह-
जाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं ओगिण्हेज्जा ।
अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो
अणुवीइमिओग्गहजाई-इइ पंचमा भावणा ।

६३-एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए
किट्टिए अंवट्टिए^० आणाए आराहिए यावि भवइ ।

तच्चे भन्ते महव्वए अदिण्णादाणाओ वेरमणं^० ।

६४-अहावरं चउत्थं भन्ते ! महव्वयं-

पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं-से दिव्वं वा, माणुसं वा,
तिरिक्खजोणियं वा, गेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा, गेवण्णेहिं
मेहुणं गच्छावेज्जा, अण्णंपि मेहुणं गच्छंतं न समणुज्जाणेज्जा,
जावज्जीवाए तिर्विहं तिविहेणं-मणसा वयसा कायसा, तस्स
भन्ते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं^०
वोसिरामि ।

६५-तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति तत्थिमा पढमा भावणा-

णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहइत्तए
सिया । केवली बूया-णिग्गंथेण अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं

कहं कहमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलीपणत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहित्तए सिय त्ति पढमा भावणा ।

६६-अहावरा दोच्चा भावणा-

णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं^१ इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया । केवली वूया-णिग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे, संतिभेया संतिविभंगा *संतिकेवलीपणत्ताओ^० धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिय त्ति दोच्चा भावणा ।

६७-अहावरा तच्चा भावणा-

णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए^२ सिया । केवली वूया-णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे, संतिभेया *संतिविभंगा संतिकेवलीपणत्ताओ धम्माओ^० भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सिय त्ति तच्चा भावणा ।

६८-अहावरा चउत्था भावणा-

णाइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरसभोयणभोई । केवली वूया-अइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयणभोई त्ति, संतिभेदा *संतिविभंगा संतिकेवली-पणत्ताओ धम्माओ^० भंसेज्जा । णो अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा ।

१-मणोहराइ २ (क, व), मणोहराइ रुवाइ मणोहराइं (छ) ।

२-सुमरित्तए (अ, क, घ, छ, व) ।

६९-अहावरा पंचमा भावणा—

णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे, संतिभेया *संतिविभंगा संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिय त्ति पंचमा भावणा ।

७०-एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए *पालिए तीरिए किट्टिए अवट्टिए आणाए° आराहिए या वि भवइ ।

चउत्थे भंते! महव्वए *मेहुणाओ वेरमणं° ।

७१-अहावरं पंचमं भंते! महव्वयं—

सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि°—से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, अचित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं परिग्गहं गिण्हेज्जा, णं हि परिग्गहं गिण्हावेज्जा, अण्णपि परिग्गहं गिण्हंतं ण सम्मं ज्जा, *जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा णं, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पं च बोसिरामि ।

७२-तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा

भावणा—

सोयओ° वि मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ ।

मणुण्णामणुण्णे सद्देहि णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो

ज्जेज्जा ।

विणिग्घायमाव णेग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहि सद्देहि सज्जमाणे

केवली बूया—

घ, च) ।

०) ।

—पच्चाक्खामि (अ, क,
—सोतत्तेणं (अ, क, छ,

रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलि-
पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा ।

ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोयविसयमागता ।

रोगदोसा उ जे तत्थ, ते^१ भिक्खू परिवज्जए ॥

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ त्ति पढमा
भावणा ।

७३—अहावरा दोच्चा भावणा—

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ ।
मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, *णो
गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा^०, णो
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली वूया—मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे
*गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे^० विणिग्घाय-
मावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा *संतिकेवलि-पण्णत्ताओ
धम्माओ^० भंसेज्जा ।

णो सक्का रूवमदट्ठुं, चक्खुविसयमागयं ।

‘रागदोसा उ जे तत्थ, ते’^२ भिक्खू परिवज्जए ॥

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ त्ति दोच्चा
भावणा ।

७४—अहावरा तच्चा भावणा—

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ ।
मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, *णो

१—तं (अ, क, घ, व) ।

२—रागदोसो उ जो तत्थ, तं (अ, क) ।

गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा^०, णो
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया-मणुण्णामणुण्णेहि गंधेहि सज्जमाणे रज्जमाणे
*गिज्जमाणे मुज्जमाणे अज्झोववज्जमाणे^० विणिग्घाय-
मावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा *संतिकेवलि-पण्णत्ताओ
धम्माओ^० भंसेज्जा ।

णो सक्का^१ ण^२ गंधमग्घाउं, णासाविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति त्ति
तच्चा भावणा ।

७५-अहावरा चउत्था भावणा-

जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ ।
मणुण्णामणुण्णेहि रसेहि णो सज्जेज्जा, *णो रज्जेज्जा, णो
गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा^०, णो
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया-णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहि रसेहि सज्जमाणे
*रज्जमाणे गिज्जमाणे मुज्जमाणे अज्झोववज्जमाणे^०
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा *संतिविभंगा संतिकेवलि-
पण्णत्ताओ धम्माओ^० भंसेज्जा ।

णो सक्का रसमणासाउं, जीहाविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ त्ति
चउत्था भावणा ।

१-सक्को (छ) ।

२-X (अ, क, च, ब) ।

७६-अहावरा पंचमा भावणा-

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेइ ।
मणुण्णामणुण्णेहि फासेहि णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो
गिज्जेज्जा, णो मुज्जेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो
विणिग्घायमावज्जेज्जा ।

केवली बूया-णिग्गथे णं मणुण्णामणुण्णेहि फासेहि मज्जमाणे
•रज्जमाणे गिज्जमाणे मुज्जमाणे अज्झोववज्जमाणे०
विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभगा संतिकेवल-
पण्णत्ताओ धम्माओ भसेज्जा ।

णो सक्का ण संवेदेउं, फासविसयमागयं ।

रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसवेदेति त्ति
पंचमा भावणा ।

७७-एतावताव महव्वए सम्म काएण फासिए पालिए तीरिए
किट्टिए अवट्टिए^१ आणाए आराहिए यावि भवइ ।

पंचमे भंते ! महव्वए^२ परिग्गहाओ वेरमणं० ।

७८-इच्चेतेहिं महव्वएहिं, पणुवीसाहिं^३ य भावणाहि संपण्णे
अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्ग सम्मं काएण फासित्ता,
पालित्ता, तीरित्ता, किट्टित्ता, आणाए आराहिए यावि
भवइ ।

—त्ति वेमि ।

१-अहिट्टिए (अ, व, क, घ, च, छ), प्रथममहाव्रतसूत्रे (४९) 'किट्टिए अवट्टिए' इति पाठोऽस्ति, अत्र 'किट्टिए अहिट्टिए' इति पाठो लभ्यते, किन्तु उक्त सूत्रस्य वृत्तेश्चानुसारेणात्रापि 'अवट्टिए' इति पाठो युज्यते, तेन स स्वीकृत ।

२-पणं (छ, व) ।

सोलसमं अज्मयणं

विमुत्ती

अणिच्च-पद

१-अणिच्चमावासमुर्वेति' जंतुणो,
पलोयए सोच्चमिदं अणुत्तरं ।
विऊसिरे^१ विन्नु अगारबंधणं,
अभीरु आरंभपरिग्गहं चए ॥

पव्वत्रय-दिट्ठत-पद

२-तहागअं भिक्खुमणंतसंजयं,
अणेलिसं विन्नु चरंतमेसणं ।
तुदंति वायाहिं अभिद्धवं णरा,
सरेहिं संगामगयं व कुंजरं ॥
३-तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए,
ससद्दफासा फरसा उदीरिया ।
तित्तिक्खए णाणि अद्दुच्चयेसा,
गिरिव्व वाएण ण संपवेवए ॥

रुप्प-दिट्ठंत-पद

४-उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे,
अकंतदुक्खी तसथावरा दुही ।
अलूसए सव्वसहे महामुणी;
तहा हिं से सुस्समणे समाहिए ॥

१-विउ ° (क, च, व); वियो ° (घ); ° वियो (छ) ।

५-विद्व णते धम्मपयं अणुत्तरं,
 विणीयतण्हस्स मुणिस्स भायओ ।
 समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा,
 तवो य पण्णा य जसो य वड्ढइ ॥

६-दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा,
 महव्वया खेमपदा पवेदिता ।
 महागुरू णिस्सयरा उदीरिया,
 तमं व नेजोत्तिदिसं पगासया ॥

७-सितेहि भिक्खू असिते परिव्वए,
 असज्जमित्थीसु चएज्ज पूअणं ।
 अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं,
 णमिज्जति कामगुणेहि पंडिए ॥

८-तहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो,
 धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो ।
 विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं,
 समीरियं रुप्पमलं व जोइणा^१ ॥

भुजंगतय-दिट्ठंत-पद

९-से ह्णु प्परिण्णा समयमि वट्टइ,
 णिराससे उवरय-मेहुणे^२ चरे ।
 भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे^३,
 विमुच्चइ से दुहसेज्ज माहणे ॥

१-जोइणो (अ, घ, ङ) ।

२-^० मेहुणा (क, वृ) ।

३-चए (घ) ।

समुद्-दिट्ठंत-पदं

१०--जमाहु ओह सलिलं अपारगं,
महासमुद्दं व भुयाहि कुत्तरं ।
अहे य' णं परिजाणाहि पंडिए,
से हू मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥

११--जहा हि बद्धं इह 'माणवेहि य'^१,
जहा य तेसिं तु विमोक्ख आहिओ ।
अहा तथा बंधविमोक्ख जे विऊ,
से हू मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ ॥

१२--इमंमि लोए 'परए य दोसुवि'^३,
ण विज्जइ बंधण जस्स किचिवि ।
से हू पिरालंबणे अप्पइट्टिए,
कलंकली भावपहं विमुच्चइ ॥

—त्ति वेमि ।

१-व (अ, क, ब) ।

२-माणवेहि (अ, क)

३-परलोय ते सु वि (. . .)

परिशिष्ट-१

आयारो

संक्षिप्त-पाठ, पूर्व-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्व-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
आगममाणे (जाव) सम्मत्तमेव	८।६५-६६, १२३-१२४	८।७८-८०
एव दक्खिणाओ वा पच्चत्थिमाओ वा उत्तराओ वा उद्धाओ वा (जाव) अन्नयरीओ	१।३	१।१
एवं परिघेतव्वं ति, उट्टवेयव्वंति	५।१०१	१०१
एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए वालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हाण्णीए भट्ठीए भट्ठिमिजाए भट्टाए अणट्टाए	१।१४०	१।१४०
गाम वा (जाव) रायहाणि	८।१२६	८।१०६
घारेज्जा (जाव) गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा (जाव) हुत्त्या	८।२३	८।२१
पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ अहमंसी (जाव) अन्नयरीओ	१।३	१।१
वत्थाडं जाएज्जा (जाव) एयं	८।६४-६७	८।४४-४८
समारढम (जाव) चेएड	८।२४	८।२३

परिशिष्ट-२ आयार-चूला

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और आधार-स्थल निर्देश

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतलिक्ख जाए (जाव) णो	५१३७, ३८	५१३६
अकिरियं (जाव) अभूतोवघाइयं	४१११	४११०
अक्कोसंति वा (जाव) उद्द्वंति	३१६१	२१२२
अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदग वियडादि णिणिणाइ य जहा सिज्जाए		
आलावगा णवरं ओगहवत्तव्वया	७११६-२०	२१५१-५५
अक्कोसेज्ज वा (जाव) उद्द्वेज्ज	३१६	२१२२
अणंतरहियाए पुढवीए (जाव) संताणए	१११०२	११५१
अणेगाह गमणिज्जं (जाव) णो गमणाए	३११३	३११२
अणेसणिज्जं (जाव) णो	१११७, ६३, १०६, १३६	११४
अणेसणिज्जं (जाव) लामे	१११०८, १२१	११४
अणेसणिज्जं. णो	११२१	११४
अणेसणिज्जं ..लामे	११८५, ६७; ८११, ६११	११४
अणेसणिज्जं...लामे सते 'जाव-' णो	१११३५	११४
अणमणमक्कोसंति वा (जाव) उद्द्वंति	२१५१	२१२२
अणयरं जहा पिडेसणाए	७१५६	१११५५
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७१३४, ३५	७१२७, २८

* अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते ।

परिशिष्ट-२

३

अपुस्मिन्तरकडं (जाव) अणासेवितं	११२१, ५११२	१११७
अपुस्मिन्तरकः (जाव) णो	११२४	१११७, १११४
अपुस्मिन्तरकड (जाव) वह्निया		
दणोहृद वा अन्नयरंनि	१०१६	१११७
अपुस्मिन्तरकड (जाव) अणामेविए (ति)	२११०, १०	१११७
अपुस्मिन्तरकडे (जाव) णो	२११४, १६	२१८
अपुस्मिन्तरकडे वा (जाव) अणासेविते	२१३	१११२
अप्पंडा (जाव) मताणए	१११३५	११२
अप्पंडं (जाव) पाडिगाह्वेज्जा		
अतिरिच्छ, च्छिन्नं तिरिच्छ, च्छिन्न		
तहेव	७१३७, ३८	७१३०, ३१
अप्पंडं (जाव) मक्कडा	६१२	११२
अप्पंड (जाव) सताणगं (यं)	२१५८, ५१२६, ७१२७	११२
अप्पंडा (जाव) संताणगा	११४३, ३१५	११२
अप्पंडे (जाव) चेतैज्जा	२१३२	२१२
अप्पापाणं (जाव) संताणगं	२१२	११२
अप्पपाणनि (जाव) मक्कडा	१०१२८	११२
अप्पद्वीयं (जाव) मक्कडा	१०१३	११२
अप्पाइण्णावित्ति (जाव) रायहाणि	३१३	११४३, ३१२
अप्पुम्मुए (जाव) समाहीए	३१२६, ५६, ६१	३१२२
अफामुयं (जाव) णो	१११२, ६४, ८२, ८३, ८७, ६२, ६६, १०७, ११०, १११, १२८, १३३, २१४८, ५१२२, २३, २५, २८, २६, ६१२६, ४६, ७१२६, २७, २६, ३०	११४
अफामुयं (जाव) लामे	१११०६	११४
अफामुयं लामे	११८४, १०२, १०४, १२३	११४
अफामुयाइं (जाव) णा	६११३, १४	११४
अवभंगेत्ता वा तहेव सिणाणाह तहेव		
सीओदयादि कंदादि तहेव	६१२२-२५	५१२३-२५
अभिकंखसि सेस तहेव (जाव) णो	५१२४	५१२३

अभिहणेज्ज वा (जाव) उद्वेज्ज	१५१४७,४८	१५१४४
अभिहणेज्ज वा (जाव) ववरोवेज्ज	२११६,४६	११८८
अयं तेणे तं चेव (जाव) गमणाए	३१११	३१६,१०
अयवंधणाणि वा (जाव) चम्मवधणाणि	६११४	६११३
असणं वा लाभे	११३६,४१,८८,६१	११४
असणं वा ४ अफामुयं	११६२	११६०
असणं वा (जाव) लाभे	११६०	११४
असत्थ परिणयं (जाव) णो	११११३,११५-११६	११६२;११४
असावज्जं (जाव) भासेज्जा	४१२२	४१११
अस्सिं पडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स अस्सि पडियाए बह्वे साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बह्वे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बह्वे समण माहण पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं ४ (जाव) उद्देसियं चेतैति, तहप्पगारं थडिलं पुरिसंतरकड वा अपुरिसतरकडं वा (जाव) बहिया णीहडं वा अणीहडं वा	१०१४-८	१११२-१६
आइवखह (जाव) द्दुइजेज्जा	३१५५	३१५४
आएसणाणि वा (जाव) भवगिहाणि	३१४७	२१३६
आगंतारेसु वा (जाव) परियावसहेसु	२१३४,३५	२१३३
आगंतारेसु वा जावोम्महियंसि	७१४६,४७	७१२३,२४
आमज्जेज्ज वा (जाव) पयावेज्ज	३१३६,६१४८	११५१
आयरि ए वा (जाव) गणावच्छेइए	१११३१	१११३०
इक्कडे वा (जाव) पलाले	२१६५,७१५४	२१६३
ईसरे (जाव) एवोम्महियंसि	७१३२,३३	७१२५,२६
उवज्जाएण वा (जाव) गणावच्छेइएण	२१७२	१११३०

परिमिष्ट-२

५

एग वयणं वएज्जा (जाव) परोदखवयणं	४१४	४१३
एव अनिरिच्छच्छिल्ले वि		
तिरिच्छच्छिल्ले (जाव) पटिगाहेज्जा	८१४४, ४५	७१३०, ३१
एवं पायव्वं जहा सट्ट-पटियाए मत्था		
वाइत्तवज्जा एव पटियाए वि	१२१२-१७	१११५-२०
एवं तमकाए वि	११६८	११६२
एवं पाद णडकण्ण उट्टुच्छिल्लेति वा	४११६	४११६
एवं वहवे माहम्मिया एमं		
माहम्मिणि वहवे माहम्मिणीओ	२१४, ५, ६	२१३
एवं वहवे माहम्मिया एग		
साहम्मिणि वहवे माहम्मिणीओ		
वहवे समगमाहम्मि नहेव;		
पुरिसंतर जहा पिडेमणाए	५१६-११	१११३, १८
एवं वहवे माहम्मिया एग		
माहम्मिणि वहवे माहम्मिणीओ...		
समुद्धिम्म चत्ताणि आलावगा		
भाणियव्वा	१११३-१५	१११२
एवं वहिया विचारभूमि वा		
विहारभूमि वा गामाणुगाम		
दूइज्जेज्जा अहपुगेवा जाणेज्जा		
तिव्वदेमियं वा वास वाममार्व		
पेहाए जहापिडेमणाए णवरं		
सव्व चीवर माथाए	५१४३-४५	११३८-४०
एवं वहिया विचारभूमि वा		
विहारभूमि वा गामाणुगामं		
दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा		
विद्याए वत्येसणाए णवरं		
एत्थ पडिग्गहे	६१५१-५८	५१४३, ५०
एवं सेज्जा गमेणं गेयव्वं (जाव) उदग		
पसूयाई ति	८१२-१५	२१२-१५

एवं सेज्जा गमेणं णेयव्वं (जाव) उदग प्पसूयाइत्ति	९१३-१५	२१३-१५
एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो	१३१४०-७५	१३१३३-३८
एसणिज्ज (जाव) पडिगाहेज्जा	१११८, २३, २१६४	११५
एसणिज्जं (जाव) लाभे	११७, १४३	११५
एसणिज्जं ..लाभे	२१६३, ९१२	११५
एस पइन्ना...जं	६१२८, ४५	११५६
ओवयतेहि य (जाव) उप्पिजल्लगभूए	१५१४०	१५१६
कदाणि वा (जाव) बीयाणि	१०१५	२११४
कंदाणि वा (जाव) हरियाणि	५१२५	२११४
कसिणे (जाव) समुप्पण्णे	१५१४०	१५१३८
कुट्ठीति वा (जाव) महुमेहणी	४११६	आयारो ६८
कुल्लियंसि वा (जाव) णो	७११२	५१३७
खंघंसि वा...अण्णयरे वा तह्वप्पगारे (जाव) णो	७११३	५१३८
खलु (जाव) विहरिस्सामो	७१२५	७१२३
गंडं वा (जाव) भगदलं वा	१३१३०-३३	१३१२८
गच्छेज्जा (जाव) अप्पुस्सुए...तओ संजयामेव	५१४८	३१५६
गच्छेज्जा (जाव) गामाणुगामं	५१४६	३१६०
गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाण वत्तव्वया भाणियव्वा (जाव) वोसिरामि	१५१६४	१५१५७
गामं वा (जाव) .	७१२	११२८
गामं वा (जाव) रायहाणि	११३४, १२२२, २११; ३१२, ८१	११२८
गामंसि वा (जाव) रायहाणिसि	११३४, १२२२, ३१२	११२८
गामे वा (जाव) रायहाणी	३१४५, ५७	११२८
गाहावइं वा (जाव) कम्मकरिं	११६३; ५११८; ६११७	११२५
गाहावइ-कुल्लं (जाव) पविट्ठे	१११६, १७	१११
गाहावइ-कुल्लं (जाव) पविसित्तुकामे	११८, ४४	१११

गाहावइ-कुलं...पविसितुकामे	११३७	१११
गाहावई वा (जाव) कम्मकरीओ	११२१, १२२, १४३	
	२१२, ३६, ५१, ७१६	११४६
गोलेत्ति वा इत्थी गमेण गेत्तव्वं	४११४	४१२
छत्तए वा (जाव) चम्मद्वेदणए	७१२४	२१४६
छत्तगं वा (जाव) चम्मछेदणगं	३१२४	२१४६
जवनाणि वा (जाव) मेणं	३१५६	३१४३
जाएज्जा (जाव) पडिगाहेज्जा	१११४५, ५१९६, ६१२६, १७	१११४१
जाएज्जा (जाव) विहरिस्सामो	७१४६	६१२३
जावज्जीवाए (जाव) वोमिरामि	१५१५७	१५१४३
जीव पडट्ठियनि (जाव) मक्खडा	१०११४	११५१
भामथंडिलिनि वा (जाव) अन्नयरसि	११५१, ५१३६	११३
भामथंडिलिनि वा (जाव) पमज्जिय	१११३५	११३
ठाणं ..चेतेज्जा	२१२८, २६	२११
ठाणं वा (जाव) चेतेज्जा	२१२७, ५१-५५	२११
णगरं वा (जाव) रायहाणिं	८११	११२८
णगरस्स वा (जाव) रायहाणीए	३१५८	११२८
णिवत्तमण (जाव) चिंताए	२१५०	११४२
णिकखमणपवेसाए (जाव) धम्माणुओग	७११४	११४२
णो अणमणस्स अणुवयंति त चेव (जाव)		
णो सात्तिज्जंति बहुवयणेणं भाणियव्वं	५१४७	५१४६
णो रज्जेज्जा (जाव) णो विणिग्घाय	१५१७३, ७४	१५१७२
णो सज्जेज्जा (जाव) णो विणिग्घाय	१५१७५	१५१७२
तं चेव भाणियव्वं णवर चउत्थाए		
णाणत्तं से भिक्खू वा (जाव) समाणे,		
सेज्ज पुण पाणग-जायं जाणेज्जा		
तंजहा...तिलोदगं वा तुसोदगं वा,		
जवोदगं वा, आयाम वा, सोवीर		
वा, मुद्ध वियडं वा अस्सि खलु		
पडिग्घहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव		
पडिगाहेज्जा	१११४६-१५४	१११४२-१४७

तहप्पगारं (जाव) णो	१११४	१४,६२
तहप्पगाराइं णो	१११२-१४,१६	११४
तहप्पगाराइं...सदाइं...णो	१११७-११,१५	११४
थूर्णसि वा ४	७११	५१३६
दंडगं वा (जाव) चम्मछेदणं	७१३	२१४६
दस्सुगायतणाणि जाव विहारवत्तियाए	३१६	३१८
दुब्बद्वे (जाव) णो	७११	५१३६
देज्जा (जाव) पडिगाहेज्जा	१११४४	१११४१
देज्जा (जाव) फासुयं...पडिगाहेज्जा	१११२७	१११४१
देज्जा (जाव) फासुयं...लामे	५११८	१११४१
दोहिं (जाव) सण्णिहिसण्णिचयाओ	११२४	११२१
निक्खमणपवेसाए (जाव) चम्माणुओगच्छिताए	३१२	११४२
निक्खिवाहि जहा इरियाए पाणत्तं		
वत्थपडियाए	५१५०	३१६१
पडन्ना (जाव) जं	२११६,२२:६१२८,४५	११५६
पडिक्कमामि (जाव) वोसिरामि	१५१५०	१५१४३
पडिमं जहा पिडेसणाए	६१२०	१११५५
पडिमाणं जहा पिडेसणाए	५१२१	१११५५
पडिवज्जमाणे तं चेव (जाव)		
अन्नोल्लसमाहीए	२१६७	१११५५
पमज्जेत्ता (जाव) एग	३१३४	३११५
परक्कमे (जाव) णो	३१७	३१६
पागाराणि वा (जाव) दरीओ	३१४७	३१४१
पाडिपट्ठिया (जाव) आउसंतो	३१५७	३१५४
पाणाइं जहा पिडेसणाए	५१५	१११२
पाणाइं जहा पिडेसणाए चत्तारि		
आलावगा । पंचमे बहवे समणमाहणा		
पगणिय-पगणिय तद्देव से भिक्खु		
वा २ अस्संजए भिक्खु पडियाए		
बह्वे समण माहणा वत्थेसणालावओ	६१४-१२	१११२-१८;५१५-१३

पाणाणि वा (जाव) ववरोवेज्ज	२।७१	१।८८
पायं वा (जाव) इंदिय नायं	२।४८	१।८८
पायं वा (जाव) लूसेज्ज	२।७१	१।८८
पिहुयं वा (जाव) चाउलपलंवं	१।७,१।४४	१।८
पुढविकाए (जाव) तसकाए	१।५।४२	२।४१
पुढविकाय समारभेणं एवं आउतेउवाउ-		
वणस्सइ महया तसकाय	२।४१	२।४१
पुरिसंतरकडं (जाव) आसेवियं	१।२२	१।१८
पुरिसंतरकडं (जाव) पडिगाहेज्जा	५।१३	५।११
पुरिसतरकडं (जाव) वहिया णीहडं...		
अण्णयरंति	१०।१०	१।१८
पुरिसंतरकडे (जाव) आसेविए	२।६,१।१,१।३	१।१८
पुरिसंतरकडे (जाव) चेतैज्जा	२।१५,१।७	२।६
पुब्बोवदिट्ठा ४ जं	१।१२३	१।५६
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) चेतैज्जा	२।३०	२।२७
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) जं	१।६१	१।७१
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) जं	२।२३,२।४,२।५,२।७,२।८,२।९;	
	३।६,१।३,४।६,५।२७	१।५६
पुब्बोवदिट्ठा (जाव) णो	१।६५	१।७१
पेहाए (जाव) चित्ताचिह्णं	३।५६	१।५२
फलिहाणि वा (जाव) सराणि	१।१५	१।७।४१ निवतीय
फासिए (जाव) आणाए	१।५।५६	१।५।६६
फासिए (जाव) आराहिए	१।५।७०	१।५।६६
फासुयं (जाव) पडिगाहेज्जा	१।२२,२।५,८।१,१।००,१।४६,	
	५।२०,३।०,७,२।८,३।१	१।५
फासुयं **पडिगाहेज्जा	१।१४१	१।५
फासुयं...लाभे सते (जाव) पडिगाहेज्जा	१।१०१,१।२८	१।५
वहुकंसं...लाभे सते (जाव) णो	१।१३४	१।४
वहु पाणा (जाव) संताणमा	३।४	१।२
वहुबीया (जाव) संताणमा	३।१	१।२

● अत्र जाव शब्दस्य व्यत्ययोऽपि वर्तते ।

बहुरयं वा (जाव) चाउलपलंवं	११८२	११६
भगवंतो (जाव) उवरया	२१२५	११२१
भिकखुणी वा (जाव) पविट्ठे	११५, ६, ७, ११, १२, ४२, ६२, ६२, ६६, ६६, १०१, १०४, १०५, १०७, १०८, १०९, १११	१११
भिकखू वा (जाव) पविट्ठे	११२३, ४६, ५०, ५२	१११
भिकखू वा (जाव) सद्दाई	११११६	१११२
भिकखू वा (जाव) समाणे	११५३, ५५, ५८, ६१, ८३, ८४, ८७, ८९, ९०, ९७, १०२, १०६, ११०, ११२, ११६, १२४, १२५, १२६, १३५, १३६, १४५, १४७, १५१	१११
भिकखू वा (जाव) सुणेति	११११४, १५	१११२
भिकखू वा सेज्जं	११८२, १२८, १३३, १३४, १४४	१११
मणी वा (जाव) रयणावली	५१२७	२१४
मत्ते त्हेव दोन्ना पिडेसणा	१११४२	१११४१
महद्धणमोझाई... लाभे	५११४	११४
महद्धियावो कुज्जा जहा पिडेसणाए (जाव) संथारगं	२११२	११२६
मह्व्वए	१५१५६, ६३, ८४, ९१	१५१४६
मासेण वा जहावत्येसणाए	६१२१	५१२२
मूलाणि वा (जाव) हरियाणि	१०१२	२११४
रज्जमाणे (जाव) विणिग्घाय	१५१७३, ७४	१५१७२
लाडे (जाव) णो विहारवत्तियाए	३११२	३१८
वत्थाणि ..लाभे	५११५	११४
वप्पाणि वा (जाव) भवणगिहाणि	४१२१	३१४७
वायण (जाव) चिताए	२१४६	११४२
स अंडं (जाव) णो	७१३३	७१२६
स अंडं (जाव) णो	७१३६, ४३	७१२६
स.अंडं (जाव) मक्कडा	८११, ९११	११२
स अंडं (जाव) संताणयं (गं)	२११, ५७, ५१२८, ७१२६	११२

स अंडादि सन्धे आलावगा जहा वत्थेसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि (जाव) अण्णय- रसि वा	६१२६-४२	५१२८-३६
स अंडे (जाव) संताणए	२१३१	११२
संति भेया (जाव) भंसेज्जा	१५१६७, ६८, ६९, ७५	१५१६५
संति विभंगा (जाव) धम्माओ	१५१६६	१५१६५
सति विभंगा (जाव) भमेज्जा	१५१७३, ७४	१५१६५
संथारवं **लाभे	२१५७, ५८, ५९, ६०	११४
संथारवं (जाव) लाभे	२१६१	११५
सकिरिया (जाव) भूओवघाइया	१५१४६	१५१४५
सज्जमाणे (जाव) विणिग्घाय	१५१७५, ७६	१५१७२
नत्ताड (जाव) चेएइ तह मगारे, उवस्सए अपुरिसंतरकडे (जाव) अणासेविए	२१७, ८	१११६, १७
सपाण (जाव) मक्कडा	१०१२	११२
सपाणे (जाव) संताणए	११५१	११२
समण (जाव) उवागया	३१३, ४	३१२
समण माहणा (जाव) उवागमिस्संति	११४३	११४२
समणुजाणिज्जा (जाव) वोसिरामि	१५१७१	१५१४३
सम्म (जाव) आणाए	१५१६३	१५१४६
सयं वा (जाव) पडिगाहेज्जा	६११८	१११४१
सयं वा णं (जाव) पडिगाहेज्जा	६११६	१११४१
ससिणिट्ठाए (जाव) सताणए	५१३५	११५१
ससिणिट्ठाए पुढवीए (जाव) संताणए	७११०	११५१
ससिणिट्ठेणसेसं तं चेव एव . ससरक्खे मट्ठिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे येरुय वण्णिअ सेडिय, सोरट्टिय पिट्ठ कुक्कस उवकुट्ट ससट्ठेण		
	११६५-८०	११६४

सामगियं...	१४८,६०,८६,१०३,१२०,१२६,१३७; २१२६,४३	११२०
सामगियं	३१४६;५१४०,५१,७१२२,५८	२१७७
सामगियं (जाव) जएज्जासि	८१३१;१०१२६;१११२०	२१७७
सावज्जं (जाव) णो भासेज्जा	४१२१	४११०
सिणाणेण वा (जाव) आधंसित्ता	५१२३	११२०
सिणाणेण वा (जाव) पघसेज्ज	५१३१	२१२१
सिणाणेण वा तहेव सीओदग- वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ	५१३३,३४	५१३१,३२
सिलाए (जाव) मक्खंडा संताणए	११८२	११५१
सिलाए (जाव) संताणए	११८३	११५१
सीओदग-वियडेण वा (जाव) पओएज्ज	५१३२	२१२१
सीलमंता (जाव) उवरया	२१३८	११२१
सुमणे सिया (जाव) समाहीए	३१४४	३१२६
से आगंतारेसु वा (जाव)	७१६,८	७१४
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभि- कंखेज्जा ल्हसुण वण उवागच्छित्तए तहेव तिसिखि आलावगा णदर ल्हसुणं	७१३६-४२	७१२५-२८
से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा...असरणं वा ४ आउकाय पइट्टियं तह चेव । एवं अगणिकाय पइट्टियं लाभे सति णो पड्डिगाहेज्जा	११६३,६४	११६२
सेमं तं चेव	१४१३-७६	१३१३-७६
हृत्थं (जाव) अणासायमाणे	३१५०-५२	२१७४
हृत्थं वा (जाव) सीसं	२११६	११८८
हृत्थि जुद्धाणि वा (जाव) कविजल	१११२२	१०१८
हृत्थिट्ठाण करणाणि वा (जाव) कविजल	१११११	१०१८

परिशिष्ट-३

वाचनान्तर तथा आलोच्य-पाठ

वाचनान्तर

स्यानाङ्गसूत्रे महापद्मप्रकरणे (६।६१) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे “कंसपाईव मुक्तोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिव तेयसा जलते” इतिपाठे आचारचूलाया भावनाध्ययनस्य समर्पणं सूचितमस्ति । वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवसूरिणाऽपि एतत् संवादि समुल्लिखितम्—“यथा भावनायामाचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्ध-पञ्चदशाध्ययने तथा अयं वर्णको वाच्य इति भाव, क्रियद्दूरं यावदित्याह—‘जाव सुहुये’त्यादि” (वृत्ति, पत्र ४४०) ।

औपपातिकसूत्रे (सूत्राङ्क २७, वृत्ति पृष्ठ ६६) “वक्ष्यमाणवदानां च भावनाध्ययनाद्युक्ते इमे संग्रहाग्राये—

कस्ते संखे जीवे, गयणे वाए य सारए सल्ले ।
पुक्खरयस्ते कुम्मे, विहगे खगे य मारंडे ॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥”

इति वृत्तिकृता भावनाध्ययनगतसंग्रहाग्रायो सूचनं कृतमस्ति ।

एतयोर्द्वयोः समर्पण-सूचनयोः सन्दर्भे भावनाध्ययनं दृष्टं तदा क्वापि समर्पित पाठो नोपलब्धः । भावनाध्ययनस्य वृत्तिरत्यन्तं संक्षिप्ताऽस्ति, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि सकेन आदर्शेषु चापि तस्यानुसूलविशेषः । चूर्णो उक्तपाठस्य व्याख्या समुपलब्धा तेनेति निर्णयं कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्यातात् पाठात् आदर्शगतः पाठो भिन्नोऽस्ति । अयं वाचनाभेद चूर्णिकारस्य समक्षमासौन्वेति नानुमानं कर्तुं किञ्चित् साधनं लभ्यते ।

स्यानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाध्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्य सम्बन्धः चूर्णनुसारि-पाठेनैव विद्यते, तथैव औपपातिकवृत्ते सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव ।

स्यानाङ्गे महापद्मप्रकरणे एव स्त्रीकृतपाठेपि ‘जहा भावणाते’ इति समर्पणमस्ति । तस्यापि सम्बन्धश्चूर्णनुसारिपाठेन विद्यते ।

आलोच्यमानपाठ किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते । तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रस्तूयते । आचाराङ्गचूर्णो पूर्ण पाठोः विवृतो नास्ति । स स्यानाङ्गस्य, कल्पसूत्रस्य, जम्बूद्वीपप्रज्ञेः, आधाराङ्गवर्णेश्च सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं संयोजितः । स च इत्थं सम्भाव्यते—

संयोजित पाठ :

तए णं से भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तवंभयारी अममे अकिचणे छिन्नसोते निहपलेवे कंसपाईव मुक्कोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिह्यगई जच्चकणं पिव जायख्खे आदरिसफत्ते इव पागडभावे कुम्भो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्त व निहपलेवे गगगमिव निरालंबणे अणिलो इव निरालए चंदो इव सोमलेसे सूरो इव दित्ततेए सागरो इव गभीरे विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के मंदरो इव अप्पकपे सारय-सलिल व सुद्धहियए खगविसाणं व एगजाए भासंडपक्खी व अप्पमत्ते कुजरो इव सोडीरे वससे इव जायत्थामे सोहो इव दुद्धरिसे वसुधरा इव सव्वफासविसहे सुद्धुहयासणे इव तेयसा जलंते ।

[कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले ।

पुक्खरपत्ते कुम्भे, विहगे खगो य भारडे ॥१॥

कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।

चंदे सूरे कणणे, वसुंधरा चेव सुद्धुहए ॥२॥]

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिच्चवे भवइ । से य पडिच्चवे चउव्विह्वे पणत्ते, तंजहा—अडए वा पोयएइ वा उगहेइ वा पगहिएइ वा, जं ण जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं ण दिसं अयडिच्चवे सुच्चिभूए लहुभूए अगंगथे संजमेणं अण्णाणं भावेमाणे विहरइ ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एव आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाववेणं खीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुच्चरिय-सोवच्चिय-कठ-परिनिव्वाणमग्गेण अण्णाणं भावेमाणस्स भागतारियाए वट्ट-माणस्स अणंते अगुनरे निव्वान्नाए निरावरणे कणिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

तए णं से भगव अरहे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सनेरइयतितरियनरामरस्स लोमस्स पज्जेव जाणइ पासइ, तजहा—आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववाय तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोक्कम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं तं कालं मणसत्रयसकाइएहिं जोगेहिं वट्टमाण्णां सव्वलोए सव्वजीवाण सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुर लोगं अभिसमिच्चवा समणाणं निर्मांथाणं पंचमहच्चयाइं सभावणाइ छजीवनिकाए धम्मं अक्खाइ (दिसमाणे विहरइ), तंजहा—पुढविकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए ।

स्थानाङ्ग (६।६१) :

तस्स णं भगवंतस्स^१ साइरेगाईं दुवालसवासाईं निच्चं वोसट्टुकाए चियत्तदेहे जे केड उवसग्गा उपाज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सब्बे सम्मं सहिस्सइ, खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ ।

तए णं से भगव अणगारे भविस्सइ इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाण-भडमत्तनिक्खेत्रणासमिए, उच्चवारवासवणखेलजल्लमिंघाणपारिट्ठावणियासमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए गुत्तवंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगथे] वृ० पा० किन्नगथे] निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलते ।

कसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सल्लि ।

पुवखरउत्ते कुम्भे, विहगे खगे य भारडे ॥१॥

कुंजर वसहे सीहे, नगराया चैव सागरमजोहे ।

उदे सूरु कणगे, वसुंधरा चैव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबे भविस्सइ, सेय पडिबे षउव्विहे पन्त्ते, तंजहा—

अंडए वा पोयए वा उग्गाहेइ वा पग्गाहिएइ वा, जं णं णं दिंसं इच्छइ त णं तं णं दिंसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणु-नगंये संजमेणं अग्गाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवतस्स अणुत्तरेण नाणेणं अणुत्तरेणं दसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एव आलएणं विहारिणं अज्जवेण महवेण लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-सजम-तव-गुण-पुचरिय-तोय-विय- (चिय ?)-फट्ट-नरिनिव्वाणमग्गेण अप्पाणं भावेमाणस्स भाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरगे कसिगे पडिउग्गे केवलवरणाणदसणे सनुःगज्जिहिंति ।

तए णं से भगव अरहे जिणे भविस्सति, केवली सब्बन्नू सब्बदरिसी सदेवमणुआमुरस्स लोगस्स परिआग जाणइ पासइ सब्बलोए सब्ब जीवाण आगडं गतिं टियं चयण उववायं तवकं मणोमाणसिय भुत्त कडं परिसेत्रियं आवीकम्म रट्ठोकम्म अरहा अरहस्स भागी तं तं काल मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणार्णं सब्बलोए सब्बजीवाणं सब्बभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ।

तए णं से भगव तेणं अणुत्तरेणं केवलवरणाणदंमणेणं सदेवमणुआमुरं लोग अभिसमिच्चवा समगार्णं निग्गाधारं सणेरइए जाव पंचमहब्बयाइ सभात्रणाईं छजीवनिकाया धम्म देसेमाणे विहरिस्सति ।

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिकखेत्रण।समिए, उच्चारपासवणखेलसिघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मण-समिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिदिए, गुत्तवंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्नगये, निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंबणे ४, वायुरिव अप्पडिबद्धे ५, सारयसलिलं व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्भो इव गुत्तिदिए ८, खगिवासिणं व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुजरो इव सोडीरे १२, वसभो इव जायधामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव अप्पकने १५, सागरो इव गंभीरे १६, चंदो इव सोमलेसे १७, सूर्रो इव दित्तेए १८, जच्चकणगं व जायरूवे १९, वसुधरा इव सव्वफासविसहे २०, सुद्धयहुयासणो इव तेयसा जलंते २१ । एतेसि पदाणं इमातो दुन्नि संघयणगाहाओ—

कंसंते संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य ।

पुक्खरपत्ते कुम्भे, विहगे खगो य भारंडे ॥१॥

कुंजर वसभे सीहे, णगराया चैव सागरमलोभे ।

चंदे सूर्रे कणगे, वसुंधरा चैव ह्यवहे ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबधो भवति । से य पडिबंधे चउरिब्वहे पण्णत्ते, तं जहा—

दब्बओ खेत्तओ कालओ भावओ । दब्बओ णं सच्चित्ताचित्तमीसिएसु दब्बेसु । खेत्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा णहे वा । कालओ णं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लंवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसंजोगे वा । भावओ णं कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा । तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ट गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराईए नगरे पंचराईए वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिबद्ध जीवियमरणे निरवक्खे संसारपारगामी कम्मसंगनिग्घायणट्टाए अन्भुट्टिए एवं च णं विहरइ ।

तस्स णं भगवत्तस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेण चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए सुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमन्नेणं अप्पाणं भावे-माणस्स दुवालस-संबच्छराइं विइक्कंताइं । तेरसमस्स संबच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहमुद्धे तस्स णं वइसाहमुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरीसीए अभिमिवट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजाएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स वहिया उज्जुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स वेईयस्स अदूरसामते सामागस्स गाहावइस्स कट्टकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनि-सिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं ज्ञाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कमिणे पडिपुत्ते केवलवरनाणदंसणे समुप्पत्ते ।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नु सव्वदरिसी सदेवमण्यामुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, मव्वलोए सव्वजीवाण वागइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणे माणसियं भुत्ता कइं पडिसेविय आविकम्म रहोकम्म अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोणे वट्टमाणानं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पाममाणे विहरइ ।

४-जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्ष २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए ईरिआसमिए जाव परिट्टावणिआसमिए मपत्तमिए वयसमिए कायसमिए मणुत्ते जाव गुत्तवंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पत्तते उवसते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुव्वलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकरणग व जावत्त्वे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्भो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तमिव निरुव्वलेवे गगणमिव निरालव्रगे अणिले इव गिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंप्पे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अपडिह्यगइत्ति । णत्थिय णं तस्स भगवत्तस्स कत्थइ पडिबधे, से पडिबधे चउत्थिहे भवंति, तंजहा—

दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे पिया मे भाया मे भगिणी मे जाव संगंयसंयुआ मे हिरण्णं मे सुवण्ण मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सचित्तो वा अचित्तो वा मीसए वा दव्वजाए सेव तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्ये वा खेतो वा खले वा नेहे वा अगणे वा एव तस्स ण भवइ, कालओ पोवे वा लवे वा मूहुत्ते वा अहोरत्तो वा पक्खे वा मासे वा उज्जए वा वयणे वा संबच्छरे वा भन्नयरे वा दीहकालपरि-बंधे एवं तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा नए वा हामे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगव वासावासवज्जं हेमंतगिम्हानु गामे एगराइए णगरे पचराइए वयगयहा

ससोगभ्ररइभयपरिस्तासे णिममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अट्टुठे चंदणाणु-
 लेवणे अरत्ते लेट्टुंमि कंचणंमि असमे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे
 संसारपारगामी कम्ममंगणिग्घायणट्टाए अब्भुट्टिए विहरइ । तस्स णं भगवंतस्स एतेणं
 विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कत्ते समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिआ
 सगडमहंसि उज्जाणंसि णिभोहवरपायवस्म अहे भाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहलस्स
 इक्कारमिए पुव्वण्ह कालसमयंसि अट्टुमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरासाढाणक्खत्तेणं
 जोगमूत्रागएणं अणुनरेणं नाणेणं जाव चरित्तेणं अणुनरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं
 विहारेणं भावणाए खंतीए गत्तीए मत्तीए तट्टीए अज्जवेणं मट्टवेणं लाघवेणं सुचरिअसोवचि-
 अफळनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे
 पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्यण्णे जिणे जाए केवली सवन्नु सव्वदरिसी सणेरइअ-
 त्तिरियनरामरस्स लोग्गस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइ गइं ठिइं उववायं भुत्तं
 कइं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एवमादी जीवाणवि
 सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्खमग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस
 खलु मोक्खमग्गे मम अणोसिं च जीवाणं हियसुह्णस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परम
 सुहसमाण्णे भविस्सइ । तते णं से भगवं समणाणं निमांथाणं य णीमांथीण य पंच महव्वयाइं
 सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसमाणे विहरति, तंजहा—

पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वयाइं सभावणगाइं भाणिअव्वाइंति ।

५-सूत्रकृतांगे (२।२) प्रश्नव्याकरणे (संवरद्वार ५) रायपत्तेणइयसूत्रे (सूत्रांक ८१०-
 ८१२) औपपातिक सूत्रे (सूत्र : २७-२९, ५५२, १५३, १६४) चालोच्चमानपाठेनांशिकी
 ऋचिच्च तदधिकापि तुलना जायते । किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठाः अनगार-वर्णन-संबद्धा-
 सन्ति, ततः पूर्णातुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते ।

आलोच्य-पाठ

(१) हृण पाणे—(आयारो ६।५।११, पृ० ७४) ।

‘छ’ प्रतो ‘हृयमाणे’ इति पाठान्तरं लभ्यते । अस्थाधारेण ‘हृणमाणे’ इति पाठस्य
 कल्पना जायते । अर्थसमीक्षयाऽपि ‘हृणमाणे’ इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति । ‘घायमाणे’
 अत्र कारितस्य ‘हृणओयावि समणुजाणमाणे’ अत्रानुमोदनस्याऽर्थोऽस्ति अस्मिन् संदर्भे यदि
 ‘हृणमाणे’ पाठः स्यात् तदा कृतकारितानुमोदनस्य संगतिर्जायते । चूर्णावपि (पृ० २३०)
 अस्य पाठस्य संवादिविवरणं लभ्यते—‘पुढविकाइयादि जीवे हृणसि हृणावेसि हृणंतीवि’
 योगत्रिककरणत्रिगेण ।

(२) एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए—(आयार-चूला १।२।२६, पृ० १२१) ।

आचार-चूलायाः पाठ-संशोधने षड् आदर्शाः प्रयुक्ताः, चूर्णिद्वैतित्त्वं । तत्र पञ्चादशेषु

उक्तपाठस्थ ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पाददृष्टिषु प्रदर्शिताः सन्ति । वृत्तो (पत्र ३००)
 'एस विलुगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—“गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन
 संस्क्रुर्याद्—यथैष साधु शय्याया. संस्कारे विघातव्ये 'विलुगयामो' त्ति निर्गन्धः अकिञ्चन
 इत्यतः स गृहस्थ्य कारणे सयतो वा स्वयमेव संस्कारयेदिति ।” अस्माभिः 'घ' प्रत्यनुसारी
 पाठः स्वीकृतः । चूर्णावपि (पु० ३३२) 'एस खलु भगवया' इति पाठो लभ्यते । 'सेज्जाए
 अक्खाए' अत्र दोषशब्द अध्याहर्त्तव्यः । वस्तुतः उक्तपाठ व्याहारागतः प्रतीयते ।
 'संयरेज्जा' इति पाठस्यानन्तरं 'तम्हा से संजए' इत्यादि पाठ स्यात्तदानीमपि स खण्डितो
 न प्रतिभाति । वृत्तिकृता उक्तपाठस्थ या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टि-
 जायते । वृत्तिकारस्थ सम्मुखे 'विलुगयामो' पाठ आसीत् स केपुचिदेव आदर्शेषु उपलभ्यते,
 नतु सर्वेषु ।

शुद्धि-पत्रम्

१-आचारो मूल-पाठ

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
२	३	*दक्खिणाओ...अहमंसि-	*दक्खिणाओ...अहमंसि °
८	४१	सत्यं-	सत्यं
८	४६	समुट्टाए	समुट्टाए
९	५५	पास	पासा
११	७३	° ता	° ता
१६	११६	पेवणे	पेवणणे
२४	५	अभिकंत	अभिकंतं
३४	११३	जेह' यं	जहे' यं
३४	११५	आलामो	अलामो
३५	१३०	देहं तराणि	देहंतराणि
३६	१५९	° जासि	° ज्जासि
३९	७	° च्चाइ	° च्चाई
४१	२५	णिकम्म-	णिककम्म-
४२	४५	उवायं	उववायं
४२	४५	पच्चा	णच्चा
४२	४९	लहू °	लहु °
४३	५४	अन्न मन्न-	अन्नमन्न-
४३	५८	उज्झइ	डज्झइ
४३	५९	तीतं कि ?	तीतं ? किं
४६	८६	सगडिन्नि	सगडिन्नि
४८	११	वीर	वीरे
४८	१३	विन्नाणं-	विन्नाण-
५१	२९	दुक्खमिणं ति	दुक्खमिणं ति
५२	४४	दवीए	दविए
५३	५२	जहा-	अहा-

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
८८	७६	अथं	अयं
८८	७७	आहडं च	आहडं च णो
९३	१२३	तवे से अभिसमण्णागए °	•तवे से अभिसमण्णागए
९३	१२६	णगरं वा... णिगमं वा	•णगरं वा .. णिगणं वा ?
१००	१५१	एवमन्नेसि	एवं मन्नेसि
१०२	९३	-दुब्बिभ-	-दुब्बिभ-

२-आयार-चूला (मूल-पाठ)

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
१२०	२६	° मेराए	° मेराए
१२२	३२	सम्मिस्सि °	सम्मिस्सि °
१२७	४३	अप्पमाणा	अप्पपाणा
१३४		परिमायण-पदं	परिभायण-पद
१४७	१०१	पडिग्गाहेण	पडिग्गाहेण
१५१	११०	णो °	° णो
१६२	१३८	-जाएमु	-जाए
१६७	१४४	मुञ्जियं	मुञ्जियं
१६७		अहावरा	१४६-अहावरा
१६८		१४६-१४७-१४८-	१४७-१४८-१४९-
		१४९-१५०-	१५०-१५१-
१६९		१५१-१५२-१५३-	१५२-१५३-१५४-
		१५४-१५५-	१५५-१५६
१६९	१५५	पिड्ढेसणाणं	पिड्ढेसणाण
१६९	१५५	एते	एते
१७७	२२	बंधंतु,	बंधंतु
१८०	२७	पडिलोभे	पडिलोभे
१८७	४१	महया संरंभेणं,	महया संरंभेण, महया समारंभेणं
२०१	२	चित्ताए	चित्ताए
२०३	११	भिकखं	भिकखु
२०५	१४	° गापिणि,	° गामिणि,

पृष्ठ	सूत्र	अशुद्ध	शुद्ध
२०५	१६	वाहाओ	वाहाओ
२०७	२१	तुसीणिओ	तुसिणीओ
२११	३६	जवट्टेज्ज	उवट्टेज्ज
२१४	४७	थूमं	थूमं
२१४	४८	अंतरा	अंतरा से
२२०	६१	करणिज्जं त्ति	करणिज्जं त्ति
२२१		भासा	भासज्जातं
२३८	१५	उट्टाणि	उट्टाणि
२३६	१७	मंगियं	मंगियं
२५०	५०	० ज्जं त्ति	० ज्जं त्ति
२५६	२२	अब्भगाहि	अब्भंगाहि
२६४	४५	पुव्वोदिट्ठा	पुव्वोदिट्ठा
२६५	४७	वण-	वा णं
२६८	५६	मगाओ	मगाओ
२६६	५८	० ज्जं त्ति	० ज्जं त्ति
२७१	६	अणुवोइ	अणुवोइ
२७२	९	० ज्जति	० ज्जं त्ति
२७६	२४	सुत्तं	णो सुत्तं
२८३	५६	ए	एयं
२६८	३	अप्पमाणं	अप्पमाणं
३००	८	उच्चार-	उच्चार-
३०८	१४	माणुममाणिय-ट्टाणि	माणुम्माणिय-ट्टाणाणि
३१७	१०	खाणु	खाणुं
३२१	३७	ममुहाइं	ममुहाइं
३३६	२६	हिरणं	हिरणं
३३६	पं० १	-मउड-	-मउड-
३४०	इलो० ११११	णिविट्ठो	णिविट्ठो
३४२	१८२	तुरिया ०	तुरिय ०
३४२	३४	स अणाइले	अणाइले
३४४	३६	ठित्ति	ठित्ति
३४७	४८	वत्तेज्ज	वत्तेज्ज वा
३५८	इलो० १०११	ओह	ओहं

३-आचारो पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
१	६	चते	चुते
२	५	अण०	अणु०
२	६	—x	६—x
२	७	० वेस्सं (च),	० वेस्सुं (च);
३	४	० सवेयइ	० सवेदयइ
७	५	० हूडसि	० हुडसि
८	२	(च)	(चू)
९	सू० ५०-५२	से वेमि—...उद्दवए	से वेमि—...उद्दवए ^१
९	पा० ४	४—...	४—... ५-x(क,ख,ग,घ,च,छ,वृ)।
९	पा० ८	(वपा)	(वृपा)
१०	सू० ६५	से ^२	से वेमि ^२
१६	पा० १	० त्ति	० त्ति
२७	सू० ४०	य ^२ राओ य	य राओ य ^२
२७	सू० ४२	-समायाणं ^२ ।	-समायाणं ।
२७	सू० ४३	सपेहाए	सपेहाए ^२
२७	सू० ४३	कज्जति ^{१०}	कज्जति ^{१०}
२७	पा० ९	९-दंडं...	९-सपेहाए (क,ख,ग, घ,च,छ) ।
२७	१०	दंड-समायाणं...	१०-दंडं समारभति (चू); दंड-समायाणं...कज्जइ (चूपा) ।
२८	सू० ५२	भूएहि ^{१०}	भूएहिं...सातं ^{१०}
२८	पा० ६	एयं	एवं
२८	७	दुक्खुब्बये	दुक्खुब्बेय
२९	सू० ५६	हतोवहते...अणुपरि- यट्टमाणे ^३	हतोवहते ^३ ...अणुपरियट्ट- माणे
३२	पा० ६	(वपा)	(वृपा)

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्धि
३३	सू० १०४	सत्थेहिं ^१ लोगस्स कम्म-समारंभा	'सत्थेहिं' लोगस्स कम्म- समारंभा ^१
३५	पा० ४	अट्टमेत्तं...	अट्टमेत्तं तु ..
३५	६	विलुंपित्ता	विलुंपित्ता
३६	३	(चपा)	(चूपा)
४६	४	(च)	(चू)
४८	६	मणुस्सवभत्थाणं	मणुस्सवभत्थाणं
४८	६	(च, व)	(च, वृ)
५२	४	अघंस्स	अघंस्स
५४	४	(च, च)	(च, चू)
५४	५	(चपा)	(चूपा)
५५	३	परिच्चमाणे	परिपच्चमाणे
५८	८	०मए	०भए
६७	सू० ८	कुलोहिं ^२ आयत्ताए	कुलोहिं आयत्ताए ^२
६६	पा० १२	(च)	(चू)
७३	सू० ७६	तेहिं ^३ महावीरेहिं	'तेहिं महावीरेहिं' ^३
७३	सू० ७७	फाससियं ^४ समादियंति	'फाससियं समादियंति' ^४
७३	७	(च)	(चू)
७४	सू० ६१	हण ^३ पाणे	'हण पाणे' ^३
७५	सू० ६६	जणवयंतरेसु ^६ वा,	'जणवयंतरेसु वा' ^६ ,
७५	पा० ८	आघवितए'	आघवितए'
७६	८	सिज्जा	सिज्जा
७८	२	विवत्तण (शू) (चिन्तनीय) ।	विवत्तूण (शू) ।
८०	सू० १७	जीवेहिं ^५ कम्म- समारंभेणं	'जीवेहिं' कम्म-समारंभे णं ^५
८६	पा० ३	(च)	(चू)
८८	२	२-चूर्णि...	२-परिणं (क, ख, ग, घ, च, छ); चूर्णि...
८८	४	प्रतीषु	प्रतिपु

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
८६	३	एगाणियं °	एगाणिय °
९९	१२	(च)	(चू)
१०२	श्लो० ६	आसि सु ^१ भगवं उट्टाए	'आसिसु भगवं उट्टाए' ^१
१०४	पा० ७	-वृत्तिचूर्ण्य ..	वृत्तिचूर्ण्य ..
१०५	८	(...चू)	(.. च)
१०६	१	दिगिच्छता	दिगिच्छिता

४-आयार-चूला पाठान्तर

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
११२	पा० ३	थंडिल्लं	थंडिल्लंसि
११२	पा० ६	(अ० दुव्वयंति वृत्तौन्भि)	×
११६	सू० १७	अवहिया ^१ णीहड	'अवहिया णीहड' ^१
११७	सू० १९	णितिए ^१ पिडे दिज्जइ, णितिए	णितिए पिडे दिज्जइ, णितिए ^१
१२१	१	१।८।	१।८।
१२१	८	विलंगयामो	विलुगयामो
१२६	२	(अ,च,क,छ,ब)	(क,छ,ब) ; च (अ) ।
१२८	४	उक्खडि०	उक्खडि०
१४०	१	उक्किट्टा	उक्किट्टु
१४२	१	दुहेज्जा	दु हेज्जा
१५३	६	वेत्तग	वेत्तग
१६०	सू० १३०	'से णेवं वयत' ^४	'से णेव' ^६ वयतं
१६७		४	१
१७०	पा० १		१-एसितए से (अ,ब) ।
१८३	१	° तिणित्ता	° तिणित्ता
१९६	१	विद्ध्यणिय २	विद्ध्यणिय २
२१२	२	पाडिवधेया (क) ; पडि °	पाडिवधेया (क) ; पाडि °
२३०	सू० २५	थूले ति ^२	थुल्ले ^२ ति
२३१	पा० ३	फलिह	फलिह °

८

आयारो तह आयार-चूल

पृष्ठ	पाठान्तर	अशुद्ध	शुद्ध
२३२	सू० ३६	से भिक्खु...सुणेज्जा ^४	से भिक्खु...सुणेज्जा ^४
२३४	पा० १	जुवव	जुववं
२३८	पा० ५	उद्दाणि (अ,क,च,व,वृ)	×
२६५	सू० ४७	वण- ^५	'वा ण' ^५
२७६	सू० २४	सुत्तं	सुत्तं
२७६	पा० २	णा सुत्तं.....	×
२८०	पा० १	-लहसुण	लहसुण
२८१	१	० णारं	० णाहं
३०१	१	()	(अ)
३०२	२	गवा स्	गवाणीसु
३११	३	वण-	वण-
३१७	२	मिल्लं ०	मिल्लं ०
३२१	सू० ३७	संठवेज्ज ^३	संठवेज्ज ^३

५-परिशिष्ट-२

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	६	१।६०	१।६७
५	२१	वासमावं	वासमाणं
६	३	१३।३३-३८	१३।३-३८
१०	१४	२।४	२।२४

आयारो शब्द-सूची

[प्रथम संख्या अभ्ययन और पहली खड़ी पाई के वाद की संख्या सूत्र-क्रमाङ्क का संसूचन करती है । जैसे—अइअच्च ६।३८ अर्थात् अभ्ययन ६ सूत्र-क्रमाङ्क ३८ ।

जहाँ पहली खड़ी पाई के अनन्तर संख्या हो और दूसरी खड़ी पाई के वाद भी संख्या हो, वहाँ सर्वप्रथम संख्या को अभ्ययन, दूसरी संख्या को उद्देशक तथा तीसरी संख्या को श्लोक-क्रमाङ्क समझना चाहिए । जैसे—अइवत्तई ६।१।८ अर्थात् अभ्ययन ६ उद्देशक १ श्लोक ८ ।]

अ

अइअच्च	६।३८	अंतर	२।११, ६।२।१२	अकरणया	६।१।१७
अइरित्त	२।४६	अंतरद्धा	८।८।६	अकरणिज्ज	१।१७५;
अइवत्त		अंतराइय	६।३४		५।५५
-अइवत्तई	६।१।८	अंतसो	८।८।१६ ;	अकसाइ	६।४।१५
अइवातिय	६।१।१७		६।१।५	अकस्मात्	८।७
अइवाय		अतिय	१।३, २।४,	अकाम	५।४४
-अइवाएज्ज	२।१००		४७, ७८, १०७,	अकाल	२।३, ४०
अइय	४।१		१३४, १५८ ;	अकुक्कुय	६।४।१४
अंगुलि	१।२८		५।१।१३ ६।७७,	अकुत्तोभय	१।३७,
अजु	३।५, १।५ ;	अघ	१।२७, ५०, ८१,		३।८१
	४।२८,		११०, १३७,	अकुच्च	६।१।१८
	५।१०२, ६।१।७		१६१, ६।६	अकुच्चमाण	८।३४
अंड	८।१०६, १२६	अघत्त	२।५४	अककंदकारि	६।२६
अंड्य	१।११८	अविल	५।१२६	अक्कुडु	६।४१
अंत	३।२३, ५८	अकड	२।१५, १।४३	अक्खा	
अतो	२।१२६, १३०;	अकम्म	२।३७	-अक्खाइ	६।२
	५।३, ४ ; ८।५	अकरण	३।१८, ५।११६	अक्खाय	१।१,
			८।२२, ५७		६।८ : ६।१।१६

			आयारो
अखेयन्न	२।७२	अच्च	अट्ट (आर्त) १।१३ ;
अगंथ	ना३४	-अक्केइ	२।१२, २।१३, २।१३, ५।१५ ;
अगणि	१।७२, ७५, ८०, ८४, ८८, ८९	अच्चा	१।१४० ; ६।१८, ६५
अगणिकाय	ना४१, ४२		४।२८; ना१०५, अट्ट (अर्थ) १।१४० ;
अगरिह	ना८।१४		१।२५ ; ६।१।११ २।२६, ६९, ८५,
अगार	१।९८, २।६८, ८४ ; ५।५८	अच्छ	३।४४, ६० ;
		-अच्छइ	६।४।४ ५।१ ; ना२१, २२,
अगारत्थ	६।१।६	अच्छायण	२।२ २४ ; ना८।१५, २५
अगिलाण	ना७६	अच्छि	१।२८ ; अट्ट (अष्टन्) ६।४।५
अगुत्त	१।९७		६।१।२० अट्टम ६।४।७
अग	३।३४	अच्छेज्ज	ना२१-२४ अट्टालोभी २।३, ४०
अगह	३।६१	अजाण	५।६५ अट्टि १।१४०
अघाय	६।७९	अजिण	१।१४० अट्टिभिजा १।१४०
अचल	६।१०६ ; ना८।१४ ; ६।३।१२	अज्ज	३।२६, ५० अणइवत्तिय ६।१०२
		अज्जविय	६।१०२ अणगार १।१७, २४,
अचिट्ट	४।१८	अज्जावेयव्व	४।१, २०, ३४, ४०, ४७, ५४,
			२२, २३, ५।१०१ ७१, ७८, ९२, १००,
अचित्त	ना८।२१	अज्जत्थ	१।१४७, १०७, १२७, १३४,
अचित्तमंत	५।३१		५।३६, ना८।५ १।५१, १५८, २।३६,
अचिर	ना८।२०	अज्जत्थिय	५।३६ १०६, ११३, १४७,
अचेयण	ना८।१५	अज्जप्प	५।८७ ५।३७, ६।३६,
अचेल	६।४०, ६०, ६१, ६२ ; ना५।३, ७१, ९३, १११, ११२	अज्जोववण्ण	१।१७३ ; ६।७९ ६।१।४, २२,
		अज्जोववन्न	६।२६ ६।२।१३, ६।३।७
अचेलय	६।१।४	अमंम	५।४४ अणट्ट १।१४०, ५।१
		अमोसयंत	६।७९ अणगुगच्छमाण ५।९४
			अणण ३।४५

अण्णदसि	२।१७३	अणारिय	४।२१	अणुगिद्ध	६।१।२०
अण्णपरम	३।५६	अणासव	४।१२	अणुग्घायण	२।१८१
अण्णाराम	२।१७३	अणासाएमाण	८।१०१	अणुच्चिण	८।१०७, १२७
अणतिवाएमाण	६।७३, ८।३३	अणासादमाण	६।१०५	अणुच्चिन्न	५।७१
अणत्तपन्न	६।५	अणासाय		अणुजाण	
अणभिककत	२।२३, ४।४५	-अणासादए	६।१०५	-अणुजाणइ	३।४६
अणभिमूत	५।११०	अणासेवणया	५।१२	-अणुजाणित्था	६।१।८
अणममाण	६।६७	अणासेवणा	५।८६ ; ८।२४, ४२	अणुट्टाड	२।११० ; ८।३६
अणवकखमाण	६।७३, ८।३३	अणाहार	८।८।८, १३	अणुट्टाण	६।७४
अणवयमाण	५।२६	अणिच्चय	१।११३	अणुट्टिय	४।३, ६।१०२
अणहियासेमाण	६।३२	अणितिय	५।२६	अणुदिसा	१।१, ३, ४, ८
अणाइय	८।५	अणिदाण	४।३८	अणुवम्मिय	६।१।१२
अणाउट्टि	६।१।१६	अणियट्टगामि	४।४२	अणुपरियट्ट	
अणागम	४।१६	अणियाण	८।१६	-अणुपरियट्टइ	२।७४, १८६
अणागमण	६।४७	अणिरय	८।५	-अणुपरियट्टंति	५।१८
अणाढायमाण	८।२	अणिसट्ट	८।२१-२४	अणुपरियट्टमाण	२।५६, १२६
अणादियमाण	२।१७५	अणिह	४।३२, ३३, ५।४४, ६।१०६	अणुभविसित्ता	८।१०६, १२६
अणाणा	१।६७, २।२६, ३२, १६६ ; ५।१०६ ; ६।६१	अणु	५।३१	अणुपस्सि	२।५३, ३।३०, ६०
अणातीत	८।१०७, १२७	अणुक्कंत	६।१।२३, ६।२।१६ ; ६।३।१४ ; ६।४।१७	अणुपाल	
अणारंभजीवि	५।१६	अणुगच्छ		-अणुपालए	८।८।५, १६
अणारद्ध	२।१८३	-अणुगच्छति	५।६४	-अणुपालिया	१।३५
		अणगच्छमाण	५।६४		

अणुपुञ्ज ६।२५, ३२, ७५, ७६ ; ८।२७, १०५, १२५, ८।८।१	अणेगरूव १०१, १०६, १२८, १३६, १५२, १६०, २।५५, ६।७,	अतिअच्च ६।१०; ६।१।६ अतारिस ६।२७ अतिदुक्ख ६।२।१४ अतिवट्ट -अतिवट्टेज्जा ५।११४
अणुपुञ्जसो ६।८	६।२।७, ६	अतिवय -अतिवाएज्ज ६।२३
अणुपुञ्जी ८।८।२	अणेलिस ६२, ८।२६ ;	अतिवाय ६।१।१६
अणुवट्टिय ४।३	८।८।१, १७ ;	अतिविज्ज ३।२८, ३३, ४।३६
अणुवयमाण ६।८०, ६१ ; ८।३	६।१।१६	अतिवेल ८।८।८
अणुवरय ४।३, ५।१८	अणोमदंमि ३।४८	अतिहि २।४१, ६।४।११
अणुवसु ६।३०	अणोवह्निय ४।३	अतीत ३।५६, ६०
अणुवास -अणुवासिज्जासि ५।३८	अणोहंत २।७१	अतीरंगम २।७१
अणुवीइ १।५५, ४।२७, ६।१०३, १०४	अण्ण १।३, १८, २१, २६, ३२, ४१, ४४, ४६, ६३, ७२, ७५, ८०, ८८, १०१, १०४, १०६, ११६, १२८, १३१, १३६, १४३, १५२, १६०, १६८ ;	अत्त १।३८, ६५, ३।६४, ६।१०४
अणुवेहमाण ५।६७	२।४६, ३।४३ ;	अत्तत्त ६।२५
अणुसचर -अणुसचरइ १।४, ८	६।१०४, ८।१८, २०, २४	अत्तसमाहिय ४।३३
अणुसवेयग ५।१०३	५।४१	अत्थ (अर्थ) १।२५, ४८, ७६, १०८, १३५, १५८, २।२
अणुसोय -अणुसोयति २।७६	अण्णत्थ ५।४१	
अणुस्सिय ५।४३	अण्णयर २।१५०	
अणेग १।५३	अण्णयरी १।१, ३	
अणेगचित्त ३।४२	अण्णहा २।११८, ५।५०	अत्थ (अन्न) ४।२०, २२, २३
अणेगरूव १।८, १८, २६, ४१, ४६, ७२, ८०, ८२,	अण्णाण ५।१७ अत्तह ६।४३, ८६	अदत्तहार २।६८, ८४

अद्विय	६।६७	अन्नयर	६।४४, ६२ ,	अपरिणाय	१।६१, ८६,
अदिन्न	८।४		८।११२		१४१, १६६
अदिन्नादाण	१।५७	अन्नहा	५।१३४	अपरिणायकम्म	१।८
अदिस्समाण	२।१०६,	अन्नेस		अपरिन्नाय	२।१३६
	३।२३, ५८	-अन्नेसि	१।१४८,	अपरिमाण	६।३३
अदु	६।३।१०		१७६ , ५।५६	अपरिस्सव	४।१२
अदुवा	१।५७, ५८ ,	अन्नेसि	२।१८१, ५।२१	अपरिहीण	२।२५, २६
	२।४५ , ४।१३ ;	अपज्जवत्ति	८।५	अपलिउच्चमाण	८।४७,
	६।८, ४२;	अपडिण्ण	६।१।२० ,		६६, ८६
	८।५१-५३,		६।२।१५, १६	अपल्लोयमाण	६।३६
	७०, ७१, ६३ ;	अपडिण्णत्त	८।७६	आररगम	२।७१
	६।२।८ , ६।३।१०	अपडिन्न	२।११० ;	अपास	५।६५
अदिज्जमाण	५।५८		८।३६ ,	अपि	१।२७
अद्ध (अध्वत्त)	६।१।२२		६।२।६, ११ ;	अपिक्खित्ता	६।४।६
अद्ध (अर्ध)	६।४।५		६।३।६, १२,	अपुट्ट	६।४।१
अवुव	५।२६, ८।५		१४, ६।४।६,	अपुट्ठा (अपुट्ठ्वा)	८।२५
अन्न (अन्य)	१।४४, ६३,		७, १४, १७	अप्प (आत्मन्)	२।१०४,
	१५५, १६८,	अपडिभाणि	६।१।२१		१३५, ३।३२ ;
	१७७ , ४।८ ,	अपय	५।१३८		८।८।६, १८, ६।२।५
	५।११३, ८।७५,	अपरिग्गह	२।३१	अप्प (अल्प)	२।४,
	११६, ११७,	अपरिग्गहमाण	८।३३		६५, ८१ ;
	११६, ६।१।१५,	अपरिग्गहावन्ती	५।३६		५।३१ ;
	१६, ६।४।८, १०	अपरिजाणय	५।३		८।१०६, १२६ ;
अन्न (अन्न)	८।११६,	अपरिणिब्बाण	१।१२२,		८।८।७ , ६।१।२० ;
	११७, ११६		४।२६		६।३।४
अन्नगिलाय	६।४।६	अपरिण्णत्त	१।३०, ३१,	अप्पग	८।८।२१
अन्नतर	८।१११, ८।८।२५		११४ ; ५।६	अप्पडिन्न	६।१।२३
अन्नमन्न	३।५४				

अप्पतिट्टाण	५।१२५	अब्भाइक्ख		अभिनिवट्ट	
अप्पत्त	६।३।६	-अब्भाइक्खइ	१।३८,	-अभिनिवट्टेज्जा	
अप्पत्तिय	६।४।१२		६५		३।८४
अप्पयुण्ण	६।१।८	-अब्भाइक्खेज्जा	१।३८,	अभिनिव्वुड	८।१०५,
अप्पमत्त	१।६७,		६५		१२५
	३।११, १६, ७५ ;	अब्भंगण	६।४।२	अभिन्नाय	६।४४,
	५।११ ; ५।३७,	अभय	१।६१		६।१।३
	६।२।४	अभिकंख	८।७६,	अभिपत्थ	
अप्पमाद	२।६४		१२०, १२१	-अभिपत्थए	५।१०३
अप्पमाय	५।७४	अभिकंख		अभिभास	
अप्पाण	१।१७५,	-अभिकंखेज्जा	८।८।४	-अभिभासिसु	६।१।७
	२।११७।१३३,	अभिककंत	२।५	-अभिभासे	६।१।८
	३।५५,	अभिककम		अभिमूय	१।६७,
	४।३२, ३३ ;	-अभिककमे	८।८।१४		५।११०,
	५।५५, ७५,	अभिककमाण	५।७०		६।२।१०
	६३, १०३,	अभिगाह		अभिरुज्ज	६।१।३
	८।५७, ६७	-अभिगाहइ	२।३६	अभिवायमाण	६।१।८
अप्पाहार	८।८।३	अभिजाण		अभिसजात	६।२।५
अप्पिय	२।६३	-अभिजाणइ	२।६३,	अभिसंबुद्ध	६।२।५
अक्खल	६।१७, ८।७।		३।६, १०; ५।१७	अभिसंभूत	६।२।५
अबहिमाण	५।१११	अभिजुजियाणं	२।६५	अभिसंवुद्ध	६।२।५
अबहिलेस्स	६।१०६	अभिणिकखत	६।२।५	अभिसमण्णागय	६।६४,
अबहुवाइ	६।२।१०,	अभिणिगिज्ज	३।६४		८।७३,
	६।४।३	अभिणिव्वट्ट	६।२।५		७६, ६५,
अबुज्जमाण	२।५६	अभिणिव्वुड	६।४।१६		११४, १२३
अबोहि	१।२२, ४५, ७६,	अभिभाव	६।४।४	अभिसमन्नागय	३।४,
	१०५, १३२, १५६	अभिनिक्खत	६।२।५		८।५५, ६६, १०३

अभिसमागम्म	६।४।१६	अरय	५।५४	अवकर	-
अभिसमेच्चा	१।३७ , ३।८१ , ४।१२ ; ६।६५, ६८ ; ८।५६, ७४, ८०, ९६, १००, १०४, ११५, १२४ ६।३।७	अरहंत अरिह -अरिहए अरिह अरूवि अलं	४।१ ३।४२ ५।४६ ५।१३७ २।८, १७, २१, ७७, ९५, ९७, ९८; ३।३२ ६।२०, २१ , ८।५७, ७५	-अवकिरिसु अवचडय अवबुज्झ -अवबुज्झति अवमारिय अवयट्ठि	६।३।११ १।११३ , ५।२६ २।८६ ६।१ ६।११३ , ८।१०५, १२५
अभिसेय	६।२५		६।२०, २१ ,	अवर	३।५६ ;
अभिहड	८।२१- २४, ७५	अलद्ध	६।३।८	अवलंब	५।४४ , ८।८।१२
अभोच्चा	६।१।११	अलद्धय	६।४।१३	-अवलवए	८।८।१८
अममायमाण	२।११०, ८।३६	अलाभ अलोम	२।११५ २।३६	अवलदिया अवसक्क	६।१।२२ अवसक्केज्जा २।११७
अमराय		अलोय	३।७०	अवसीयमाण	६।५
-अमरायइ	२।१३७	अल्लीणगुत्त	५।११६	अवहर	-अवहरति २।६८, ८४
अमाडल्ल	६।४।१६	अवकख		अवि	१।६
अमाया	१।३४	-अवकखति	२।३८ , ५।१२०	अविकंपमाण	४।३४
अमुच्छिय	८।८।२५ , ६।४।१५	-अवकखन्ति	१।१४६ ;	अविजाण (अविजानत्)	
अमुणि	३।१		२।६१ , ३।७८	अविज्जा	५।४५ ;
अम्ह	१।१	अवक्कम		-अवक्कमेज्जा	५।५, ११, ३३
अरड	२।२७, ३।७, ६१; ६।२।१०	-अवक्कमेज्जा	८।१०६, १२६	अविजाणय(अविजायक)	
अरत्त	३।४७	अवक्कमेत्ता			१।१३
अरति	२।१६०; ६।७०		८।१०६, १२६	अविज्जा	५।१८

अवितिष्ण	६३४	-असी	६।८७	असण	२८,२९,७५,
अविमण	२।१६० ,	-अहेसि	९।३।६		१०१,११६-
	४।४१	-आसी	१।२ ;		१२१; ९।१।२०
अवियत्त	५।६२		९।२।४,५,७;	असत्त	५।२८
अवियाण (अविजानत्)			९।४।३,१६;	असत्थ	१।६६;
	१।१२०		९।३।१२,१६		३।१७,८२
अविरत	६।९७	-मो	१।१७,४०,६८,	असमंजस	६।८
अवितीयमाण	६।५		९४,११८,१३९	असमणुन्न	८।१,२८,२९
अविहम्ममाण	६।११३	-संति	१।१५,५३,	असमणागय	६।९७
अविहिस	६।९३		८४,११८,	असमारंभमाण	१।३१,
अविहिसमाण	५।२६		१२५,१६४;		६२,८७,११५,
अब्वाहिय	९।२।११		६।९,१२ ;		१४२,१६७
अब्बोच्छिन्न	४।४५		९।१।१३	असमिय (अज्ञमित)	
अस		-सिया	१।१५,१२५;		२।७४,१८६
-अत्थि	१।२,३ ,		२।८८,१५०;	असमिय (असम्यक्)	
	२।६२,७३,		३।५४ ,		५।९६
	१।५७,१७६,		४।८,४६ ;	असय	५।७९
	१।८५ ; ३।७५,		५।४३ ,	असरण (अशरण)	५।१६
	८२,८७ ;		८।४२ ;	असरण (अस्मरण)	
	४।८,१६,२०,		८।८।१९		९।१।१०,१९
	२२,२३,४५,	असइं .	२।४९ , ६।१०	असाय	४।२५,२६
	४६,५३ ;	असजय	२।१८	असासय	१।११३ ,
	५।३०,१३८ ;	असंजोग	४।३		५।२९
	६।३८;८।५,९७	असंदीण	६।७२,१०५	असाहु	८।५
-असि	१।१,३ ;	असंभवंत	६।७९	असिद्धि	८।५
	६।३८; ८।५७,	असण	८।१,२,२१,	असिय	५।९४
	७५,९७; ९।२।१२		२२,२३,२४,	असील	६।८०

अस्साय	१।१२२	अहिय	१४६, १५६ ;	अहो (अघस्)	२।१२५
अह (अघस्)	१।६४, ६५,		३।२	अहोववाइय	४।१७
	२।१७६ ;	अहियास		अहोविहार	२।१०
	४।२०, २२ ,	-अहियासए	५।२८ ,		
	८।१७		६।६६ , ८।२५,	आ	
अह (अथ)	६।८, ३०, ३५,		८।८।१०, १३,	आइ	
	६४ ; ८।८।३ ,		१८, २२ ,	-आइआवए	२।१०७
	६।३।२		६।२।१०, १५ ,	-आइए	२।१०७ ,
अहम्मट्ठि	६।६१		६।३।१, ७		८।५८
अहाइरित्त	८।१२०, १२१	-अहियासेज्जासि		-आइयन्ति	८।४
अहाकड	६।१।१८		६।५८	आइ (आदि)	३।४६ ;
अहाकिट्टिय	८।८१	-अहियासेति	६।६२ ,		५।४८
अहातहा	४।५२ ;		८।१।१२	आइइत्तु	४।५
	६।३०	अहियासमाण	२।१६१	आइक्ख	
अहापरिग्गहिय	८।४५,	अहियासित्तए		-आइक्ख	६।२।१
	६४, ८७, १२०, १२१		८।४।१, ५७, १११	-आइक्खइ	४।२२
अहापरिज्जन्न	८।५०,	अहियासिय	६।६६	-आइक्खति	४।१ ;
	६६, ६२	अहिरिमण	६।४५		६।८२
अहायत	८।८।१६	अहुणा	६।१।१	-आइक्खामो	२।२३
अहासच्च	४।१५	अहे	१।१, ३, ५।१।१७ ,	-आइक्खे	६।१०१,
अहासुय	६।१।१		६।८७, ६।२।१५ ,		८।२६
अहिंसमाण	६।४।१२		६।४।१४	-आइक्खेज्जा	६।१०३
अहिगाह		अहेचर	८।८।६	आइक्खमाग	६।१०४
-अहिगाहंति	२।३१	अहेसणिज्ज	८।४४, ६३,	आइय	८।५८
अहिन्नाय	६।१।११		८६, १२०, १२१	आउ	२।४ ,
अहिय	१।२२, ४५, ७६,	अहो (अहन्)	२।३, ४०,		८।८।६, ११, २५
	१०५, १३२,		४।११		

आजकाय	६।१।१२	आगमेस्स	४।१,३५	-आणवेज्जा	५।८६ ;
आजट्ट		आगम्म	६।१।३		८।२४,४२
-आउट्टे	२।२७	आगयपन्नाण	४।११ ;	आणा	१।३७ ;
आउट्ट	८।५७		६।६७		३।६६,८०,८१ ;
आउट्टि	५।७३	आगर	८।१०६,१२६		४।१२,४५ ;
आउर	१।१४,१२४ ;	आगासगामि	६।१२		५।१०६ ;
	३।११ ; ६।१६	आघा			६।४८,७८
आउस	१।१ ; ८।२२	-आघाइ	४।१३ ;	आणाकखि	४।३२ ;
आउसंत	८।२१,२२,		६।१		५।४४
	४१,७५	आघाय	६।७६ ;	आणुगामिय	८।६१,८४,
आएस	२।१०४		६।१।६		११०,१३०
आकेवलिय	६।३४	आच्छिद		आणुपुब्ब	८।१०५,
आगळ	१।१,३	-अच्छे	१।२७,२८,		१२५
आगति	३।५८ ;		५०,५१,८१,	आत	४।५२
	५।१२०		८२,११०,१११,	आत्ति	५।७
आगन्तार	६।२।३		१३७,१३८,१६१,	आतीतट्ट	८।१०७,१२७
आगम	२।६२ ; ४।१६ ;		१६२	आतुर	१।१४ ; ६।३०
	५।११६, ६।६८	आढा		आदाण	२।१०१
आगममाण	६।६३ ,	-आढामि	८।२२	आदाय	३।६७ ;
	८।५४,७२,	आढायमाण	८।१,		६।३५
	७८,६४,६८,		२८,२६	आभिद	
	१०२,११३,१२२	आणंद	३।६१	-अब्भे	१।२७,२८,५०,
आगमित्ता	५।१२	आणक्ख			५१,८१,८२,११०,
आगमिस्स	३।५६,६०	-आणक्खेस्सामि	८।७७		१११,१३७,१३८,
आगमेत्ता	५।८६ ;	आणव			१६१,१६२
	८।२४,४२	-आणविज्जा	५।१२	आमगंभ	२।१०८

आय	१२,४,४१ ; २२६, ३५२ , ५१०४; ६४६	-आयाणह्	८१४,२६	आरंभट्टि	६६१; ८३
आयक	५२८ , ६८	आयाणिज्ज	२७२ , ४४४, ६५१	आरभमाण	११७२
आयंकर्दसि	११४६ , ३३३	आयाणीय	१२३,४६, ७७,१०६, १३३,१५७ ,	आरत्त	२५८
आयगय	८२३	आयाय	२१४८	आरभ	
आयगुत्त	३१६,५६ ; ८२७	आयार	२७२ ११७१ , ६८२	-आरभे	२१८३, ५५३
आयतचक्खु	२१२५	आयारगोयर	८३,२६	आरभ	२१८३
आयतजोग	६४१६	आयाव		आराम	५७७,११६
आयतजोगया	६४६	-आयावर्द्ध	६४४	आरामागार	६२३
आयतण	२६१	-आयावेज्ज	८४२	आग्नि	२४७,१०६, ११६, ४२२, २४, ५२२, ४०;
आयततर	८८१६	-आयावेत्तए	८४१		८१५, ३२
आयत्त	६८	आयावाड	१५	आरियदसि	२१०६
आयरिय	६७२	आयावादि	५१०५	आरियपण्ण	२१०६
आयव	३४	आरंभ	१३०३१,६१, ६२,८६,८७,११४, ११५,१४१,१४२, १६६,१६७,१७४ ; ४४७, ५६० , ६११२; ८८२	आरुसिय	६१३
आयवज्ज	८८१२			आलीणगुत्त	३६१
आयाए	६३० , ८१०६, १२६			आल्लुप	२३, ४०
आयाण (आदान)	३७३, ८६ , ४४५ ; ६३५, ५६ , ६११६			आल्लुपह्	८२५
				आल्लोय	
				-आल्लोयज्जा	८३५
		आरभज	३१३, ४२६	आवती	४२० , ५११, १५, १६, ३१, ३६
आयाण		आरंभजीवी	३३० ,	आवक्कहा	६१२ ,
-आयाण	६२४		५१५		६५१६

आवज्ज	आसम	ना१०६, १२६	इ	
-आवज्जंति	आसव	४१२, ना१०	इ	
१६४, १६५	आसवसविक	५११७	-एइ	३१४
आवट्ट	आसा	२१८६	-एति	३३१
११६३, २१७४,	आसाएमाण	ना१०१	-एति	११८; ५१७, ७३
१८६, ३१६;	आसाय			
५११८, ११८	-आसाएज्जा	६११०४	इओ	११२
आवडिय	आसीण	ना११७	इंदिय	ना११४, १७
५१७२	आसुपण्ण	ना१६	इच्छ	
आवस	आसेवित्ता	३१४४	-इच्छसि	३१६२
-आवसे	आहच्च	११८४, १६४,	इच्छा	४११६, ना१२३
११६८	ना३५	ना३५	इत्तरिय	ना१०६
आवसत्त	आहट्टु	२१८७,	इति	१११२
५१५८	ना२१, २२, २३	ना२१, २२, २३	इत्य	४१२०, २२, २३
आवसह	२४, ७५, ७७,	२४, ७५, ७७,	इत्थिया	२१५८
ना२१, २२,	११६, ११७, ११८,	११६, ११७, ११८,	इत्थी	५१७७, ८४, १३४,
२३, २४	११९, ६१२१२	११९, ६१२१२		६११६, १७;
आवय	आहड	ना७७, ११६,		६१२१८
-आवातए	११७, ११८, ११९	११७, ११८, ११९	इम	११४, ८
२११३३	आहर		इयर	६१५३
आवील	-आहरे	५१६९;	इयार्णि	११६९; ६१३३
आवीलए	ना११४	ना११४	इरित	५१५
४१४०	आहार	२१११३; ५१८३;	इरिया	ना१२६
आवेसण	ना३६, १०५, १२५;	ना३६, १०५, १२५;	इह	१११
६१२१२	ना११३	ना११३	इहं	११५४
आस	आहारग	११११३	इहजोइय	६१२१६
-आसिसु	आहारेमाण	ना१०१	इहलोग	५१७१
६१२१५				
आसंसा				
२१४५				
आसज्ज				
३१३२,				
६११५				
आसण				
६११२४;				
६१२११, ६१३१२				
आसणग				
६१३१२				
आसणत्थ				
६१४१४				

	ई	उड्ड	११,३,६४,६५ ;	उदीण	४१५२, ६१०१
ईसि	६१२५		२१२५, १७६ ,	उदीरिय	६६१
			४२०, २२ ,	उद्व	
	उ		५१८१, ११७,	-उद्वए	१२६, ५२,
उकक			८१७, ६१४१४		८३, ११२,
-उककसिस्सामि	६१६०	उड्ड (चर)	८१८६		१३६, १६३
-उककसे	८१८१८	उण्ह	५११३०	उद्वडत्त	२१४२
उककुड्डय	६१४४	उत्तम	८१८२०, ६१२१२	उद्वित्त	२१४
उगह	२१११२	उत्तर	१११, ३	उद्वेयव्व	४११, २०,
उच्चागोय	२१४६	उत्तरवाद	६१४६		२२, २३ ,
उच्चालड्डय	३१६३ ,	उत्तात्तइत्त	२११४		५११०१
	६१३१२२	उत्तिग	८१०६, १२६	उद्दा	
उच्चावय	६११०	उदय	१४१, ४४, ४६,	-उद्दायंति	११८५, १६५,
उच्छन्न	५११७		५०, ५१, ६३, ६४ ,		५१७१
उज्जालेत्ताए	८१४१		६११२ ,	उद्देस	२१७३, १८५
उज्जालेत्ता	८१४२	उदयचर	८१०६, १२६	उन्नयमाण	५१६४
उज्जुकड	११३४	उदरि	६११२	उपेह	
उट्टाए	६१२५, ६	उदासीण	६१८८	-उपेहाए	६११२१
उट्टाय	८१०५, १२५,	उदाह		उप्पड्डय	६१६४
	६१११	-उदाहु	२१६४ ,	उव्वाहिज्जमाण	५१७८
उट्टिय	४१३,		५१२८	उभम	
	५१२३, ६६ ,	उदाहर		-उभमे	८१८६
	६१०२, १०६	-उदाहरंति	२११७१,	उन्मिय	११११८
उट्टियवाय	५११७		४१३०	उमय	३१३०
उट्टुभ		उदाहिय	८११५	उम्मग	३१५० ; ६१६
-उट्टुभति	६१३१११	उदाहु	४१२५ , ५१२८		

उम्मुंच	उर्वालप	उवे	
-उम्मुंच	३२६	-उर्वलिपिज्जासि २।४८, १२०	-उवेइ २।६०, ६६ ८५ ; ५।६
उयर	१।२८	उववाइय १।२, ४, ११८	-उवेति २।१५१
उर	१।२८	उववाय ३।४५ ;	-उवेह ४।२७
उराल	६।१।१०	६।८ ; ८।३५	-उवेहइ ६।६१
उवक्कम	८।८।६	उवसंकमत ६।३।६	उवेह
उवगरण	२।२	उवसंकमित्तु ८।२१,	-उवेहाहि ५।६७
उवचइय	१।१०४	२३, ४१	उवेहमाण ३।१५ ;
उवचय	८।३६	उवसत ३।३८ ;	४।५२ ,
उवचर		५।७५, ८६,	५।५०, ५२, ६७
-उवचरंति	६।२।७, ८	६।८०	उवेहा ५।६६
-उवचरे	८।८।८	उवसंति २।१५५	उवेहाए ३।५५ ,
उवट्टिय	३।३६ ; ४।३	उवसग्ग ८।१०७, १२७,	५।३२, ११८
उवणीत	६।११४	८।८।२२ ; ६।२।७, ८ ;	उव्वाह
उवणीय	१।१७३ , ३।१० ; ६।२६, ११३	६।३।३ उवसम ४।४० ; ६।३०, ७७, १०२	-उव्वाहंति ८।४१ उसिण ३।७ उसिय ६।७०
उवदंस		उवहत २।५६	ऊ
-उवदंसेज्जा	५।१००	उवहाणसुय ६	ऊह १।२८
उवमा	५।१३६	उवाइक्कम्म ८।१२	ए
उवरत्त	३।१६	उवाइक्कत्त ८।५०,	एग १।१
उवरय	१।६२ ; ३।३, ८, ४१, ७२, ८५ ; ४।३, ४७, ५२ ; ५।२०, ६० ; ६।५०	उवाइय २।१८ उवादीयमाण १।१७० उवाधि ४।५३ उवाहि ३।१६, ८७	एगइय ६।६६ एगंत ८।१०६ एगचर ६।२।११ एगचरिया ५।१७ ; ६।५२
उवल्लभ	६।७७		

एगतर	६।४४ ; ना१११	एत्य	-१६६, १६७ ; ४।२०, २२, २३,	ओय	५।१२५ , ६।१०० ; ना३५,
एगतिय	५।७१ ; ६।२।१, ८	एय	१।२४	ओयण	६।४।४
एगत्तगय	६।१।११	एयावन्त	१।६, ११	ओस	ना१०६, १२६
एगदा	६।२।२, ३, ११, १५ ; ६।४।३	एलिक्ल	६।३।५	ओह	२।७१ , ५।६१, ६।२७
		एव	१।१०	ओहंतर	२।१६५
		एवं	१।१		
एगप्पमुह	५।५४	एस			
एगयर	२।१५० ; ६।६२, ना११२	-एसए	नाना५, १७	क	१।२
		-एसति	६।२।१३	कओ	४।८, ४६
एगया	२।६, ७, १६, १६, २०, ६७, ६८, ७५, ७६, ८३, ८४ , ५।७१, ६६ ; ६।२।६ ; ६।३।८, ११ ; ६।४।५, ६, ७	-एसित्या	६।४।१२	कख	
		-एसे	६।४।६	-कखेज्ज	६।११३
		एसणा	४।७ ६।५३, ६।४।१०	कखा	५।६२
		एसिया	६।४।६	कंचण	२।१०० ; ५।५३ , ६।२३
		एहा	६।२।१४	कंद	
एगसाड	ना५२, ७०			-कदति	२।१३६
एगागि	ना६७	ओ		-कदिमु	६।१।५ ; ६।३।१०
एगायतण	५।३०	ओबुज्जमाण	६।१		
एज	१।१४५	ओमचेलिय	ना४८, ६७, ६०	कडूय	
एताव	५।१३६			-कडूयये	६।१।२०
एत्य	१।३०, ३१, ६०, ६१, ६२, ८६, ८७, ६२, ११४, ११५, १४१, १४२,	ओमाण	६।१।१६	कंघ	६।१।२२
		ओमोदरिय	६।४।१	कवल	२।११२ ; ६।३१, ना१, २, २१, २२, २३, २४, २८, २६
		ओमोयरिय	५।८०		
		ओमोयरिया	६।४०		

कक्खड	५१३०	कम्म	२१६६, ८५, १०४,	-करिस्सामि	११६० ;
कज्ज	२१४२, ४६		१४६, १५५, १६३,		२११५, १४३ ;
कट्ठु	५१११; ६१६८		१७२; ३१६, १६,		६१६३
कट्ठ	११८४ ; ४१३३		२०, २१, ३६, ४१,	करेइ	२१३५, १४४ ;
कड	२१३४ ;		४८, ५४; ४१८,		३१५४
	६१४६		३१, ३८, ५१; ५६,	-करेति	३३१
कडासण	२११२		१६, १८, २८, ५१,	-करेति	३१२८, ३३
कडि	११२८		५५, ५६, ७१ ;	-कारवे	२११४६
कडिबंधण	८१११		८१६, १७, ३४ ;	-कारवेसु	१६
कड्डुय	५१२६		६१११४, १५, १८	-कारित्था	६१४८
कण्ण	११२८	कम्मकर	२११०४	-कारेइ	२११४६
कत्थ		कम्मकरी	२११०४	कुज्जा	२११४६ ;
-कत्थइ	२११७४	कम्मावह	६१११७		५१८०, ८१, २,
कप्प		कम्मावाइ	११५		२८, २६, ७६,
-कप्पइ	११५८ ;	कय (क्रम)	२११०६	करण	१०६, १२०
	८१७५	कय (कृत)	५१७३	करय	८१७६, १२०
-कप्पति	२११५० ,	कयकिरिय	५१८७	कलह	१६
	८१४१, १११	कयवर	११८४	कलुण	५१८६
-कप्पे	६१४१२	कयाइ	३१५६	कलुण	६१७
कप्पिय	६१११४	कर		कल्लाण	८१५
कब्बड	८११०६, १२६	-अकरिस्सं	१६	कवाल	६१३१०
कम्म	११७, ११, १२, १८,	-अकासी	१६६ ;	कव्वड	८११०६, १२६
	२६, ३३, ४१, ४६,		६१४८	कस	
	७२, ८०, ८६, १०१,	-कज्जइ	२११८, १०५	-कसेहि	४३२
	१०६, १२८, १३६,	-कज्जति	२१४३, १०४	कसाइय	६१२१२
	१५२, १६०, १७५ ;	-करए	११६२	कसाय	५१२२६ ;
		-करिस्सति	५१७६		८११०५, १२५ ,
					८१८३

कसाय		कालपरियाय	ना५६,	कुंभारायतण	ना२१,२३
-कसाइत्था	६।२।११		न२,१०न	कुम्कुर	६।३।३,४ ;
कहं	५।६४	कासंकस	२।१३४		६।४।११
कहा	६।१।१०	काहिय	५।न७	कुचर	६।२।७
कहिंवि	ना२१,२३	किच्चा	ना१०५,१२५ ;	कुज्झ	
काउ	५।१३१		नान३	-कुज्झे	२।५१
काणत्त	२।५४	किट्ट		कुणिय	६।न
काणिय	६।न	-किट्टति	५।७४ ; ६।३	कुप्प	
काम	२।३१,३६,७४,	-किट्टे	६।१०१	-कुप्पति	५।६३
	१२१,१न६ ; ३।१६,	किड्डा	२।६	-कुप्पिज्जा	२।१०२
	३१ ; ५।३ ; ६।१६,	किण		कुम्म	६।६
	३३,३४,७६,१०६ ;	-किणावए	२।१०६	कुम्मास	६।४।४,१३
	नान२३	-किणे	२।१०६	कुल	६।७,न,२५,५३
कामकामि	२।१२३	किणंत	२।१०६	कुव्व	
काय	५।७१ ; ६।११३ ;	किण्ह	५।१२७	-कुव्वह	३।४०
	ना१न,१६,४१,	किरिया	६।१।१६	-कुव्वित्था	६।४।१५
	१०७,१२६,१२७ ;	किरियावाइ	१।५	कुव्वमाण	१।३४
	नान१५,२१ ;	किलेस		कुसग्ग	५।५
	६।१।३, ६।३।७,११	-किलेसति	६।१३,५७	कुसल	२।४न,६५,१२०,
कायर	६।६५	किवण	२।४१		१२१,१न२ ; ४।३०,
कारण	३।५४ ; ६।न४	किस	६।६७		५।४७,६७,१०न
काल	२।३,४०,६२,११०,	कीय	ना२१,२२,२३,२४	कुसील	६।३०
	४।१६, ५।६२,११३ ;	कीरत	६।४।न	कूर	२।६६,न५ ; ४।१न ;
	ना३६,१३न ;	कीरमाण	ना७६,१२१		५।६
	नान११,२५	कुंटत्त	२।५४	केजावंती	४।२० ;
कालकखि	३।३न	कुंडल	२।५न		५।१,१५,१६,३१,३६
कालण	२।११० ; ना३६	कुंत	६।३।१०	केयण	३।४२

कोढि	६।८	खिप्य	दादा६	गढिय	१।२५, ४८, ७६
कोलावासी	दादा१७	खुज्जत	२।५४		१०८, १३५, १५६
कोविय	५।१८	खुज्जिय	६।८		२।२, ६६, ८२, १२६;
कोह	३।४६, ७१, ८४ ; ४।३४, ५।१७ ;	खुड्डय	३।५७		४।४५ ; ६।१०६ ;
	६।१११	खेड	दा१०६, १२६		६।१।१०
कोहर्दसि	३।८३	खेत	२।५७	गति	३।५८ ; ५।६६, १२०
		खेयन्न	१।६६ ; २।११०, १८१ ; ३।१६, १७, ४।२ ; ५।१२५ ;	गढम	३।१४, ३१, ८४ ; ५।७, ४८
			दा३५, ३६	गढमर्दसि	३।८३
खंघा	१।२८		दादा६	गमण	दा७५
खण	२।२४।२८, ५।२१	खेम		गमित्तए	२।७१
खण				गय	१।१४६
खणह	दा२५			गरु	५।१३०
खणण	दा३६	गइय	६।६६	गल	१।२८
खणयन्न	२।११०	गंड	१।२८	गहाय	६।३।५
खम	दा६१, ८४, ११०, १२८	गंडि	६।८	गहीअ	४।१६
		गंथ	१।२४, ४७, ७८, १०७, १३४, १५८, ३।५०, ६।१०६ ; दा२५ ; दादा११	गाम	६।६६ ; दा१४, १०६, १२६, दादा७ ; ६।२।३, ६।३।८ ;
खल					६।४।६
खलईसु	६।३।१२				
खलु	१।८	गंध	३।४, ५।१३६ ;		
खवग	३।६०		६।२।६	गामंतर	६।६६ ;
खाइम	दा१, २, २१, २२, २३, २४, २८, २६, ७५, १०१, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१	गच्छ			दा४७, ६६, ८६
		गच्छइ	६।१।१०	गामतिय	६।३।६
		गच्छंति	६।१७	गामकंटय	६।३।७
		गच्छति	६।१।७, १६	गामधम्म	५।७८, दा४१ ;
खिस		गच्छेज्जा	३।५७ ;		६।४।३
खिसए	२।१०२		४।६ ; ५।६६	गामपिडोलम	६।४।११

गामरक्त्व	१।२।८	गुण	१।६३, २।१, ५।७१	चय	१।११३; ५।२६
गामाणुगाम	५।६२, ८२	गुणाट्टि	१।६८, २।२	चय	
गामिय	१।२।८	गुणासाय	१।६८, ५।५८	-अच्चाइ	६।३०
गाय	८।४१, ८।८।१६, १।१।२०, १।४।२	गुत्त	५।६०	-चए	५।८४
गाहावइ	८।२४, ४१	गुत्ति	८।१०	-चयति	४।२७; ६।७
गाहावति	८।२१, २२, २३, ७५	गुप्फ	१।२८	-चयाहि	६।२६
गाहिय	५।१२४	गुह	५।३	चयण	६।८
गिञ्ज		गेहि	६।३७, १।४।१५	चर	
-गिञ्जे	२।५०	गोमय	१।८४	-अचारी	१।३।२
गिद्ध	३।३१, ५।१३, ६।७६	गोयर	६।८२; ८।२७	-चर	३।४५
गिम्ह	८।५०, ६६, ६२, १।४।४	गोयावादि	२।५०	-चरे	२।६१, ३।६१, ४।७, ६।३५;
गिरिगुहा	८।२१, २३	घाण	२।४, २५	-चरेज्ज	३।५०
गिला		घायमाण	६।६१, ८।३	चरिया	१।२।१
-गिलाइ	२।१६७	घास	१।४।६, १०, १२	चल	६।१०६
-गिलाएब्जा	८।८।३	घोर	४।४६, ६१	चवण	३।४५, ८।३५
-गिलामि	८।१०५, १२५	घ		चाइ	३।७, १।१।४
गिलाण	८।७६	च	१।६	चाय	
गिलायत	८।८।१४	चइत्ता	६।३०	-चाइए	१।२।१५
गिलासिणी	६।८	चउ	१।१।३	-चाएति	१।४।१
गिह	६।६६	चउत्त्य	८।४३	-चाएमि	८।१११
गिहतर	६।६६, ८।७५	चउप्पय	२।६५	चिच्चा	६।४६
गीत	१।१।६	चउरंस	५।१२६	चिट्ठ	
गीवा	१।२८	चंकमिया	१।२।६	-चिट्ठइ	२।६६, ७२
		चक्खु	२।४, १।१।५	-चिट्ठति	१।४।१०
				-चिट्ठति	२।८२, ५।८६

-चिट्ठे	नाना१६,२०	छण		जंघा	११२
-चिट्ठेज्ज	ना२१,२३	-छणावए	३४६	जंतु	६१५
चिट्ठे(दि)	४११८; नाना२०	-छणे	३४६; नाना६	जग्ग	
चित्त	२३,४० ; ६६	छणंत	३४६	-जग्गावती	६१२५
चित्तणिवाति	५६६	छाया	६४३	जण	
चित्तमंत	५३१ ;	छिद		-जणयंति	२६
	६१११३	-अच्छे	१२७,२८,५०,	जण	२३५,६१,८६ ;
चित्तमंतय	१११३	५१,८१,८२,११०,			५७६,
चिरराडं	६६६	१११,१३७,१३८,			६६३,६५,६६,
चिररात	६७०	१६१,१६२		जणग	६२६,२७
चुथ	१२ ; ५४८	-छिदह	ना२५	जणवय	३४३ ; ६६६
चेच्चाण	ना१०७,१२७	-छिदेज्ज	३४६	जणवयान्तर	६६६
चेत		छिज्ज		जत्त	१६७
-चेएइ	ना२३,२४	-छिज्जड	३५८	जम्म	३८४
-चेएसि	ना२२	छिन्न	१११३	जम्मदंसि	३८३
-चेतेमि	ना२१	छिन्नकहकह	ना१०७,	जय	३३८; ४४१,५२;
चोर	२४१		१२७		५६६,७५
		छिन्नपुव्व	६३११	जयमाण	४११; ५४४;
छ	२१५०	छुछुकार			६३६; ६११२१;
छउमत्थ	६४११५	-छुछुकारंति	६३४		६१२४
छंद	११७३; २८६ ;	छेत	२१४,१४२; ना४०	जर	
	५२५ ; ६२६	छेत्ता	२१११	-जरेहि	४३२
छज्जीवणिकाय	११७७,	छेय	५१०	जरा	३१०
	१७८			जराज्य	१११८
छट्ठ	६४७	ज		जहा	१३४; ४३३
छण	२१८०,१८४ ;	जओ		जहा	
	३२१ ; ५४६		नाना१८	-जहाति	२१५६

णायसुय	६१११०	णिद्ध	५११३०	णिवार	
णालिया	६१३१५	णिब्वलासय	५१७६	-णिवारेड	६१३१४
णस	११२८	णिमंत		णिविज्ज	
णिइय	४१२	-णिमतेज्ज	८१२	-णिविज्जति	२११०१
णिकरण	११६०; २११५३	-णिमतेज्जा	८११, २६;	-णिविज्जे	५१६४
णिककमदंसि	३१३४ , ४१५०	णियग	२१७, १६, २०, ७६	णिविट्ठ	४११६
णिकखंत	११३५; ६१८५; ६११११	णियट्ठ		णिव्वाण	६११०२
णिकखम्म	५१११६, ६१७६, ६१२१६, १५	-णियट्ठति	२१२६ ; ५११२२; ६१८४	णिव्विद	२११६२; ३१४७
णिकखित्त	४१२७, ६१३	णियट्ठमाण	६१८२	णिव्वुड	४१३८
णिकखिव		णियम	२१५६	णिव्वुय	८११६
-णिकखिवे	४१५	णियय	२१७६	णिव्वेय	४१६
णिगम	८१०६, १२६	णिय्याग	११३४	णिसन्न	३१४८
णिचय	३१३१, ४११६	णियाणओ	६१७	णिसम्म	६१७६
णिज्जरापेहि	८१८५	णियाय	५१४४	णिसामिया	५१४०
णिज्जा		णिरय	११२४, ४७, ७५, १०७, १५८; ३१४६, ८१५	णिसिद्ध	३१८६
-णिज्जाइ	४१५१	णिरामघ	२११०८	णिसीय	
णिज्जाइत्ता	१११२१	णिरुद्धाज्य	४१३४	-णिसीएज्ज	८१२१, २३
णिज्जोसडत्ता	३१६० , ६१५६	णिरोव	८१८१६	-णिसिएज्जा	८१८१६
णिट्ठियट्ठ	६१६८	णिवज्ज		णित्सार	३१४५
णिट्ठियट्ठि	५१११६	-णिवज्जेज्जा	८१८१३	णित्सिय	११८४
णिडाल	११२८	णिवतित	५१५; ६१४१०	णित्सेयस	८१६१, ८४, ११०, १३०
णिहा	६१२१५	णिवय		णिह	२१७४, १८६
णिहेस	५१११४	-णिवतिसु	६१३३	णिहण	
		णिवाय	६१२१३	-णिहेज्ज	५१४१
				-णिहणिसु	६१३१२

णिहा		तत्थ १।९, १४, १६, ४२,	तसत्त	६।१।१४
-णिहे	२।११६; ४।५	७३, १०२, १२६,	तस्सन्नी	५।६८, १०६
णिहाय	८।३४	१५३; २।५८;	तहा	४।४
णीयागोय	२।४६	६।२८	तहागय	३।६०
णील	५।१२७	तद्धिट्ठिय ५।६८, १०६	ताण	२।८, १७, २१, ७७
णीसंक	५।६५	तन्निवेसण ५।६८, १०६	तारिसय	५।४३
णेत	२।२५; ४।४५	तप्पुरक्कार ५।६८, १०६	तालु	१।२८
णो	१।२, ५७; २।११;	तम ४।४५, ६।६	ति	८।१५, ४३; ६।४।५
	८।८।४	तम्मुत्तिय ५।१०६	तिउट्ट	
ण्हाण्णी	१।१४०	तम्मोत्तिय ५।६८	-तिउट्टति	८।८।२
		तर	त्तिण्ण	५।६१;
		-तरए		८।१०७, १२७
त्त		-तरति	तितिक्व	
त	१।१	-तरे	-तितिक्वए	५।३७;
तइय	८।६२	तरित्तए		८।८।३
तओ	२।६, १६, ६७, ७५;	तव २।५६; ६।२१, ६४;	तितिक्वमाण	६।४४
	५।३	८।२१, ५५, ७३, ७६,	तितिक्खा	८।८।२५
तंजहा	१।१, ३, ११८;	६५, ६६, १०३, ११४,	तित्त	५।१२६
	२।४, ५४, १०४	१२३	तिन्न	२।१६५; ६।६६
तंस	५।१२६	तवस्सि	तिप्प	
तक्क	५।१२३	तस १।११८	-तिप्पति	२।१२४
तक्कय	८।२६	तस	तिप्पमाण	८।८।१०
तच्च	४।४	-तसंति	तिरिक्ख	२।६२
तण	१।८४, ६।६१;	तसकाय १।१२८, १३१,	तिरिक्ख	२।१३३
	८।१०६, १११, ११२,	१३६, १४३, १४४;	तिरियि	१।६४, ६५;
	१२६; ८।८।७, ६।३।१	६।१।१२		२।१२५, १७६;
ततो	२।८३	तसजीव ६।१।१४		३।८४; ४।२०, २२;

तिरियं ५१११७; ८११७	थावर	६१११४	-अदकलु ६१११०, १७,
६११५, २१ ,	थावरत्त	६१११४	१८
६१४१४	थी	२१६०	दक्खिण ११३
तिरिय-दंसि ३१८३	थूल	५१३१	दग ८११०६, १२६
तिविह २१६५, ८१	थोव	२११०२	दट्ठं ४५१, ५१७५
तिहा ८१८१२			दढ २१६१, ६३६
तीत ३१५६	द्व		दम २१५६
तीर २१७१	दइय	६१७३	दय
तुच्छ २११७४	दंड ११६८; २१४२, ४६;		-दयड ८१३८
तुच्छय २११६७	४३, २७, ५१८५ ,		दया ६१०१, ८१३८
तुट्ट ६१११२	६३, ८१८, १६,		दलय
तुयट्ट	२०, ३४ , ६११८ ,		-दलडस्सामि ८१११६,
-तुयट्टेज्ज ८१२१, २३	६१३१७, १०		११७, ११८, ११६
-तुयट्टेज्जा ८१८८	दंडजुद्ध ६११६		-दलएज्जा ८१७५
तुला १११४८	दंडभी ८१२०		दविय १११४६, ३१७० ,
तुसिणिय ६१२११२	दंत (दन्त) ११२८, १४०;		४१४४; ६१६६, ६७,
तेइच्छ २११४१	६१४२		८१८११, ६१२१५,
तेइच्छा ६१४१	दंत (दान्त) ३१५० ,		६१४१३
तेउ ६१६१; ८११११,	६१६३		दसम ६१४१७
११२, ६१३१	दंस ६१६७, ८११११,		दसमाण ६१३४
तेउकाय ६१११२	११२, ६१३१		दह
	दसण ३१७२, ८५ ,		-दहह ८१२५
थ	५१६७, १०८, ६११११		दा
थडिल ८१८१७, १३	दसणलूत्ति ६१८२		-देति २११०२
थण ११२८	दक्ख		दाढा ' १११४०
थण	-अदकलु २११०६,		दायाय २ ६८, ८४
-थणत्ति ६१७	५११७, २०, ११०		दान्ण ४:४६

दास	२।१०४	दुक्ख	१।१०, २०, ४३,	दुब्धि	६।५५, ६।२।६
दासी	२।१०४		७४, १०३, १२२,	दुम्मय	४।२२
दाह	२।६८		१३०, १५४; २।२२,	दुरणुचर	४।४२
दाहिण	१।१; ४।५२;		६३, ६६, ७४, ७८,	दुरतिक्रम	२।१२१;
	६।१०१; ८।१०१		८५, ९२, १५१, १७१		५।६५
दागिच्छता	६।४।१०		१८६; ३।२, ६, १३,	दुरभिगंध	५।१२८
दिट्ठ	१।६७; ४।६, ६, २०		६४, ६६, ७७, ८४;	दुरहियास	
दिट्ठपह	२।१५७		४।२५, २६, २६, ३०,	-दुरहियासए	६।३२
दिट्ठभय	३।३७		३५, ५।६, २४, २५;	दुल्लह	४।४६
दिट्ठिम	६।१०७		६।१५, १८	दुवालसम	६।४।७
दिया	६।७५, ७६	दुक्खदंसि	३।८३	दुविह	८।८।२; ६।१।१६
दियापोय	६।७४	दुक्खसह	६।३।१२	दुच्चसु	२।१६६
दिवा	६।२।४	दुक्खसह	६।३।१२	दुक्खिन्नाय	४।२२
दिच्च	८।८।२४	दुक्खि	२।७४, १८६	दुस्संबोह	१।१३
दिसा	१।१, ३, ४, ८,	दुगंछणा	१।१४५	दुस्सुय	४।२२
	१२३; २।१७६,	दुगंछमाण	२।३६	दुहओ	२।१११; ३।६८;
	४।२०, २२; ८।१७	दुच्चर	६।३।२		८।४०, ८।८।४
दिस्स		दुच्चरग	६।३।५	दुइज्ज	
-दिस्सति	२।५६	दुज्जात	५।६२	-दुइज्जेज्जा	५।८२
दीण	६।६४	दुज्जोसिय	५।४१	दुइज्जमाण	५।६२
दीव	६।७२, १०५	दुत्तितिकखा	६।१।६	दूर	५।३, ४
दीह	५।१२६	दुदिट्ठ	४।२२	दूरालइय	३।६३
दीहराय	५।३७	दुन्निक्खत	६।८५	देव	२।४१
दीहलोगसत्थ	१।६६	दुपय	२।६५	देह	८।३६;
दु	६।१।११, ६।४।६	दुप्पडिलेहिय	४।२२		८।८।१०, २१, २२
दुक्कड	८।५	दुप्पडिवूहण	२।१२२	देहंतर	२।१३०
		दुप्परक्कंत	५।६२	दो	३।२३, ५।८, ८।६२

दोणमुह	८१०६, १२६	धुण		नाम	५१०१
दोस	३१८४, ४१२०, २२, २३, ५११७	-धुणाइ	४१४४	निकाय	४२५
दोमदसि	३१=३	-धुणे	२११६३, ४३२,	निक्खम्म	२३७
			५१५६	निग्गथ	३७
		धुय	६	निघाय	६३७
घ		धुव	८२, ५	निप्पील	
घम्म	२१६३, ६६; ३१०, ६७, ४२, ५, ५११७, २६, ४०, ६३०, ३५, ४८, ५६, ७२, ६०, ६१, १०३, ५०४, १०७, ८२, ६, ८, १४, २६, ३२, ८१, ८१२, १२, २०, ६१२	धुवचारि	२१६१	-निप्पीलिए	४१४०
		धुयवाद	६२४	निमत	
		धूया	२१२, १०४	-निमतेज्जा	८२८
		धोय		नियग	२१६
		-धोणुज्जा	८४६, ६५, ८८	नियच्छ	
				-नियच्छति	३६०
		धोय	८४६, ६५, ८८	निया	
				-नियाड	२११११,
घम्मय	१११३	न्त			८४०
घम्मव	३४	नगर	६१६६	निरय	३८३
घम्मविउ	३५	नगरतर	६१६६	निरयदंसि	३८३
घम्मविट्टु	४२८	नच्चा	११४६	निरालंबणया	५११०
घम्मि	६४७	नड	५१७	निरुवट्टाण	५१०६
घाति	२१०४	नर	४२८, ६८६	निवाय	६२१३
घार		नरा	३८४	निग्गिन्नचारि	५५४
-घारेज्जा	८४४, ४६, ६४, ६५, ८७, ८८	नह	११४०	निसामिया	८३१
		नाणव	३४	निस्सिय	१५३
घारित्तए	८१११	नाणा	४१६	नूम	८१२४
घिति	३४०	नाणि	३५६	नो	११
घोर	२११, ८६; ३३४, ६५८, ८२५, ८८१	नाम		प	
		-नामे	३७६	पअ	२१८०, ४१२

पइण्णा	दा७७	पगाम	६।२।५	पडिघाय	१।१०,२०,
पंडित	२।१४१	पगार	दा७५		७४,१०३,१५४
पंडिय	२।२४,५१,१३१, ४।३२, ५।४०,४४, ६।७३,६८, दा३१, दादा६	पग्गह	दादा२०	पडिच्छादण	दा११२
पंत	२।१६४; ५।६०, ६।३।२	पग्गहियतरग	दादा११	पडिणगत	दा७६
पंथ	दा२, ६।१।२१	पच		पडिणिक्खमित्तु	६।३।६
पथणिज्जाति	५।६६	-पचह	दा२५	पडिपुन्न	५।८६
पंसु	६।३।११	पच्चक्खा		पडिबुज्झ	
पकप्प		-पच्चक्खाएज्जा	दा१२६	-पडिबुज्झ	दादा२४
-पकप्पयति	४।१६	पच्चत्तियम	१।१,३	पडिबुद्धजोवि	५।१०२
-पकप्पेति	४।१०, ६।८६	पच्चास		पडिमोय	
पकर		-पच्चासि	२।१३२	-पडिमोयए	२।१२८, १७८
-पकरेति	१।१७४	पच्छन्न	६।६	पडियक्क	दा१७
पकुब्ब		पच्छा	२।७,१६,२०,७६, ४।४६; ५।२६,८५	पडियाइक्ख	
-पकुब्बइ	६।१८	पच्छाणिवाड	५।४२	-पडियाइक्खे	दा२२ ; ६।१।१५
-पकुब्बति	२।१५२	पज्जवजाय	३।१७	पडिलेह	
पकुब्बमाण	२।६६,८५, ५।६	पज्जालेतए	दा४१	-पडिलेह	२।५२, ३।२७
पक्खालण	६।४।२	पज्जालेता	दा४२	-पडिलेहंति	२।३२
पक्खि	६।२।७	पट्टण	दा१०६,१२६	-पडिलेहाए	२।१३१; दा२७
पगथ	६।४२,८६	पडिक्कल	२।६३	पडिलेहाए	२।३८,१५३, ३।२०,५४; ५।१२, ८६,१२०; दा४२
पगड	३।३६	पडिक्कम		पडिलेहिता	१।१२१; दादा२०
पगप्प	दा७६	-पडिक्कमे	दादा१५		
पगव्व		पडिक्कममाण	५।७०		
-पगव्वमति	५।५१	पडिग्गह	२।११२, ६।३१, दा१,२,२१,२२, २३,२४,२८,२६		
		पडिघाय	१।४३,१३०		

पडिलेहिय	३।२२, ६।१०६, १२६	पडुप्पन्न	४।१	पन्नाणमत	४।४७ ; ५।६०; ६।३, ०६
पडिलेहिया	८।८।७	पणग	८।१०६, १२६, ६।१।१२	पप्प	२।७२
पडिलेहे	६।१।१३	पणय	१।३६, ६।३७, ६।३।१२	पवुद्ध	५।६०
पडिवण्ण	१।३४	पणियसाला	६।२।२	पभंगुर	६।१७; ८।३६
पडिवन्न	४।१३, २६, ८।५०, ६६, ६२; ६।१।२२	पणीय	४।१६	पभिइ	६।३५
पडिवयमाण	६।६४	पणुन्न	५।५	पभु	५।११०
पडिवूहणया	२।१३६	पण्ण	८।८।२२	पभूयदसि	५।७५
पडिसख		पण्णव		पभूयपरिन्नाण	५।७५
-पडिसंखाए	५।१०४	-पण्णवेत्ति	४।१	पमज्ज	
पडिसंजल		पण्णण	२।२५, ६।७७	-पमज्जाए	८।८।६
-पडिसजलिज्जामि	४।३६	पत्त	१।८४, ४।१३	-पमज्जिया	६।१।२०
पडिसवेद		पत्तेय	१।१२१, २।२२, ७८, ४।२५, ५।२४, ५२	पमज्जिय	८।१०६, १२६
-पडिसवेदयति	४।१७	पत्तेरस	६।२।४	पमत्त	१।६८, ६८, २।२, १३; ३।७५, ४।११, १४, ५।३७, ५८
-पडिसवेदेइ	१।८, २।५५	पत्य		पमत्य	
-पडिसवेदेत्ति	६।१०	-पत्यए	८।८।४	-पमत्यति	४।३३
पडिसेव		पदिस	१।१२३	पमाइ	३।१४
-पडिसेवे	६।४।५	पदेसिय	६।७२	पमाद	
पडिसेवमाण	६।३।१३	पन्नव		-पमादेत्ति	३।६८
पडिसेहिअ	२।१०२	-पन्नवेमो	४।२३	पमाय	१।६६; २।५५, ६५, ५।१७, ६।४।१५
पडोण	४।५२; ६।१०१	-पन्नवेह	४।२२	पमाय	
पडोयार	८।८।१२	पन्नवेमाण	८।६	-पमाए	३।५६
पडुच्च	५।१०४	पन्नाण	१।१७५, २।२६, ३।५, ५।५५, ६।७७; ८।५७	-पमायए	२।११, ५।२३

पमुंच		परक्कममाण	६११६ ;	-परिचिद्धिसु	४५२
-पमुच्चवइ	३१३६		६१४१५	परिच्चज्ज	३६१
-पमुच्चवति	३११५	परट्ट	६१४६	परिच्छादण	८१११
पमुक्ख		परम	३१२८, ३३, ५१७७,	परिजाण	
-पमोक्खसि	३१६, ६४		८१८२५	-परिजाणामि	८१२२
पमोक्ख	२११८१; ५१३६	परमन्नकु	५१३४	परिजाण	५६
पय	५११३८	परमदंसि	३१३८	परिजाणियव्व	१७, ११
पयणुय	६१६७; ८१०५;	परलोइय	६१२६	परिजुण	११३, ६१६०
	१२५; ८१८३	परवागरण	५१११३ ,	परिजुन्न	८६२
पया	३१४७, ५११८, ५४		८१२४	परिट्टव	
पयाव		परिकम्म		-परिट्टवेज्जा	८१५०,
-पयावेज्ज	८१४२	-परिक्रमे	८१८१६		६६, ६२
-पयावेत्तए	८१४१	परिकह		परिट्टवेत्ता	८१५०, ६६,
पर	११३, २१६६, ८५;	-परिकहिज्जइ	२११३६;		६२
	३१७८, ८२, ६१०४,		४६	परिणम	
	८११, २, २८, २६,	परिकिल्ल	८१८१६	-परिणमिज्जा	२१०२
	४२, ७५, ६१११६;	परिणिज्म	२१५८, ६५	परिणिज्जमाण	५११३
	६१३६	परिणिलायमाण	८१३७	परिणिब्बाए	११२१
परक्कम		परिणह	२१११०, ११७;	परिणिब्बुड	६१०७
-परक्कमे	६११२२,		३१४३; ६१६३; ८१३६	परिण	५११३५
	६१४१२	परिणहावती	५१३१,	परिणन्नारि	२१७६
-परक्कमेज्ज	८१२१, २३		८१३३	परिणणा	१६, १६, ४२,
-परक्कमेज्जासि		परिघासेउं	८१३३		७३, १०२, १२६, १५३;
	२११५६; ३१२५;	परिघेतव्व	४११, २०,		२१५४, १७१
	४१११, ५१११६;		२२, २३; ५११०१	परिणणाए	६१६८; ६१४२
	६१६८	परिचिट्ट		परिणणा	२१४
परक्कमंत	६१२६, ६१;	-परिचिट्टति	४११८		
	८१११२				

परिण्णात १।३१, ३३ ; ५।६	परिताव -परितावए ६।१६	परिवय (परि+वद्) -परिवएज्जा २।७, ७६
परिण्णाय (परिजात) १।१२, ३१, ३३, ६२, ६४, ६६, ८७, ८९, १।१५, १।१७, १।४२, १।४४, १।५३, १।५४, १।६२, १।६७, १।६९, १।७८, ३।२४, ५०, ५८, ८।१८, २० ; ६।१।१७	-परितावेति १।१४, १२४ परिताव ४।४६ परितावेयव्व ४।१, ५।१०१ परिदेवमाण ६।२६ परिन्ना ४।३० परिन्नाय २।६१, ३।५०, ४।३१, ५।७३	-परिवयंति २।७६ परियाय ५।२७, १०५, ६।५१ परिवज्ज ५।८७ -परिवज्जए ५।८७ परिवज्जिया ६।१।१३ परिवज्जियाण ६।१।१६ परिवय (परि+वज्) -परिव्वए २।१०८, ३।११, ३८, ६१, ५।३७, १।१६ ; ६।४४, ५।४, १०६ -परिव्वयंति ५।६२ परिवहित्तए ८।१०५, १२५ परिवित्त -परिवित्तसेज्जा ६।११० -परिवित्तसति ६।९।११
परिण्णाय (परिजाय) १।३२, ६३, ८८, १।१६, १।४३, १।६८, १।७७, २।४६, १०८, १।३२, १।५८, १।७२, १।८४, ३।२४, ५०, ५८ ; ५।४३, ५।१, १।१६, १२०, ६।३७, ५।१ ; ६।१।६	परिन्नाविवेग ५।४७ परिपच्चमाण ५।१६ परिपाग ६।८ परिमडल ५।१२६ परियट्ठण २।२ परियाव २।२, ३।४३ परियावेयव्व ४।२०, २२, २३ परियाण ३।५ -परियाणड ३।५ परियावज्ज -परियावज्जति १।८५, १।६५	परिवुसित ८।४३, ६२, ८५, १।११ परिवुसिय ६।४०, ६० परिवेवमाण ८।४१ परिसह ८।३६, १०७, १२७ परिस्सव ४।१२
परिण्णातकम्म १।३३, ६४ परिण्णायकम्म १।१२, ८६, १।१७, १।४४, १।६६, १।७८	परितप्प -परितप्पति २।१२४ परितप्पमाण २।३, ४०	

परिहर		पवंच	३।७०	पवेदित	१।४२, १०२ ;
-परिहरंति	२।०२	पवयमाण	१।१७, ४०,		२।१७१; ५।२२, २५,
-परिहरेज्जा	२।२०,		७१, १००, १२७, १५१;		४०; ४४; ५।७८ ;
	११८		२।१४१; ५।१७		६।११, ६५; ८।६,
परिहरंत	६।४।१२	पवा	६।२।२१		१४, २८, ३२, ५६,
परिहा		पवाय	५।११२		७४, ८०, ९६, १००,
-परिहिस्सामि	६।६०	पवाय			११५, १२४
परिहायमाण	२।४	-पवायंते	६।२।१३	पवेथ	
परीसह	६।३२; ८।८।२१,	पविस		-पवेयंति	६।२।१३
	२२; ६।३।११	-पविसिस्सामो	६।२।१४	पवेसिया	६।१।६
परुव		पविसे	६।४।६	पव्वइय	६।१।१
-परुवेति	४।१	पवील		पव्वहिय	१।१४; २।६०,
-परुवेमो	४।२३	पवीलए	४।४०		१५३
-परुवेह	४।२२	पवुच्च		पसंसिअ	२।१६१, १२८,
पलालपंज	६।२।२	-पवुच्चइ	१।६२ ;		१६८, १७८
पलास	६।६		२।१५४, १७०; ४।४	पसार	
पलिय	४।२७; ५।१७;	-पवुच्चति	१।६८,	-पसारए	८।८।१५
	६।४२, ८६		११६; २।३६	पसारित्तु	६।१।२२
पलिच्छिदय	४।५०	-पवुच्चति	५।४६	पसारेमाण	५।७०
पलिच्छिदियाणं	३।३४	पवेइय	१।६, १६, ५६, ७३,	पस्स	
पलिच्छिन्न	४।४५		१२६, १५३, २।४७,	-पस्स	६।६४
पलिमोक्ख	५।१८		७०, ११३, ११६,	पहाय	६।१।७
पलियंतकर	३।७२, ८५		१७१, ४।२, १२ ;	पहु	१।१४५
पलियट्टाण	६।२।२		५।६५; ८।२६, १०४	पहेण	२।१०४
पलीव	५।६६	पवेद		पा	
पलेमाण	४।१०; ८।२	-पवेदइस्सामि	६।२४	-पाएज्ज	८।२
पलेह		-पवेदए	६।१०२	-पाएज्जा	८।१, २८, २६
-पलेहि	६।३।६				

पार्ङ्गण	१।६४, ६५; ४।५२, ६।१०१	पाणि	३।५०	पावाद्युय	४।२५	
पाठ	ना०।१७	पामिच्च	ना२१, २२,	पास		
पाठं	१।५८	पाय (पाद)	१।२८, ५।१,	-पास	१।१४, १।६, ३।६,	
पाठ्ठ	२।३०, ८६	८२, १।११, १।३८, १।६२		५।५, ७०, ६६, १।२४,		
पाञ्चण		पाय (पात्रं)	ना४३, ६२,	१।२६, १।५०, २।६७,		
-पाञ्चिस्सामि	६।६०	८५, ६।१।१६		६६ ; ३।१२, ५।२;		
पाण (प्राण)	१।१५, १।८, २।६, ४।१, ४।६, ५।३, ७।२, ८०, ८४, १०।१, १०।६, १।१८, १।२२, १।२३, १।२५, १।२८, १।३६, १।५२, १।६०, १।६४, २।६३, १।५३,	पायए	ना७५	४।११, २।७, ३।७,		
३।११, ५।०, ४।१, २।०, २।२, २।३, २।६, ५।६८, ७।१;	पायपुच्छण	२।१।१२, ६।३१, ८।१, २, २।१		५।३७, ६।०, ६।८, १।४, २।०, २।२, ६।६		
६।६, १।२, १।३, ५।७, ६।१, १०।३, १०।४, १०।५, ना३, २।१ से २।४, ३।४, १०।६, १।२६, ना७, ६।१०, ६।१।३, ६।२।७ ६।३।७	पायरास	२।१०४		-पासति	१।६४, २।३७, १।३० ; ५।५, १।१६	
	पार	२।३४, ७।१		-पासह	४।४८, ५।१३, २।६, ६।१, ६।५,	
	पारंगम	६।१।१३		६।७, १०।८; ना३७		
	पारग	ना८।२		-पासहा	५।५।७, १।१७	
	पारगामि	२।३५		-पासिम	३।७०	
	पारय	ना८।१।१, २।५, ६।१।२, ६।३।८		-पासे	३।२६, ४।६	
	पाव	१।१७५, २।४४, १।४६ ३।१६, २।८, ३।३, ३।६, ४।१, ४।८, ५।४, ४।३८, ५।१६, २।८, ५।५, ८।७, ८।५, ९।१, १।६, ३।४			पास (पाञ्चर्वा)	१।२८
	पाव	१।१७५, २।४४, १।४६ ३।१६, २।८, ३।३, ३।६, ४।१, ४।८, ५।४, ४।३८, ५।१६, २।८, ५।५, ८।७, ८।५, ९।१, १।६, ३।४			पास (पाञ्च)	३।२६
	पावग	६।१।१५, १।८; ६।४।८			पास (पण्यत्)	ना६
	पावय	६।६६			पासग	२।७३, १।८५, ३।७२, ८।५, ८।७, ४।५३
	पावाड्य	४।३०			पासणिय	५।८७
					पासमाण	१।६४
					पासय	२।१।१८
					पामिय	३।११, ४।५; ५।६६

			आयारं
पिड	६।६३	पुड्ड (स्पृष्ट)	६।५८, ८४, ६६;
पिंड	६।४।१३		८।२५, ५७, ७५;
पिच्छ	१।१४०		८।८।८, १३,
पिट्ट	१।२८		६।३।६; ६।४।१
पिट्टओ	६।१।२१	पुड्ड (पृष्ट)	६।१।७
पिड्ड		पुड्डा (पृष्ट्वा)	८।२।५
-पिड्डति	२।१२४	पुड्डवि	१।१८, २१, २६, ३२, ३३, ८४, ६।१।१२
पिता	६।६३		
पित्त	१।१४०	पुड्डो	१।१४, १५, १६, ३६, ५६, ५६, ७०, ६६, १२४ से १२६, १५०; २।५७, १०४, १३०, १५२; ३।७६, ४।१२, १६, २०, ३६; ५।२५; ६।१।१४
पिय (पितृ)	२।२		
पिय (प्रिय)	२।५७, ६४		
पियजीवि	२।६३		
पियाज्य	२।६३		
पिह			
-पिहिस्सामि	६।१।२		
पिहिय	६।१।११, ६।२।१४		
पीडसणि	६।८	पुण	१।३; २।७४, १८२, १८६; ३।१४, ३१; ४।२३, ६।८५, ८।५०, ६६, ६२, ६।२।६
पीह			
-पीहए	२।४६		
पुच्छ	१।१४०	पुणो	१।६८; २।२, ३, ३३, ४०, १३४, ४।१०; ५।८, १४; ६।८६
पुच्छ			
-पुच्छिमु	६।२।११		
-पुच्छिस्सामो	४।२।५		
पुड्ड (स्पृष्ट)	१।८४, १६४, २।२६; ३।६६; ५।२६, २८;	पुण्ण	२।१७४
		पुत्त	२।२, १०४
		पुरतो	६।४।११
		पुरत्थिम	१।१, ३
		पुरा	४।४६
		पुराण	६।४।१३
		पुरिस	१।८; २।१२३, १३४, १७७, ३।४२ ६२, ६४, ६५; ४।४४; ५।३४, १३४; ६।२।८
		पुलाग	६।४।१३
		पुन्व	४।४०; ५।४४, ६।३०, ६६, ८।७५; ८।८।२०; ६।३।६, ८
		पुन्वं	१।६६; ३।५६; ४।२।५, ५।२६, ८।५
		पुन्वि	२।७, १६, २०, ७६
		पुन्वुट्टाड	५।४२
		पूत्ति	२।१३०
		पूयण	१।१०, २०, ४३, ७४, १०३, १३०, १५४ ३।६८
		पूरइत्तए	३।४२
		पेच्च	२।४१
		पेच्चा	१।२
		पेज्ज	३।८४
		पेज्जदंसि	३।८३
		पेय	५।२६
		पेसल	६।१०६

पेह		फास	५।१४, २६, २८, ८५, १३६, ६।८, १०, ४३, ४८, ५८, ६१, ६२, ६६; ८।२५, ४१, ५७, १११, ११२, ८।८।८, ६।२।१०, ६।३।१	वहिया	२।१४७, ३।५२, ६२; ४।११, २७, ५।३७
-पेहाए	२।१३८; ६।१।२१				
पेहमाण	६।२।११, ६।४।७			वहु	२।११६, ३।३६, ७६; ५।१७, ३१, ६५, ६।१५, १८, १६, ६।१।३, ५;
पेहा	२।२३, ८।२३				
पेहाए	२।५, ११, ४३, १३८, ६।४।१०	फास			६।३।३, १०
		-फासे	४।३६	वहुग	२।६५, ८१
पेहि	६।१।२१	फुस		वहुमाड	२।१३४
पोयय	१।११८	-फुसति	५।२८	वहुसो	६।१।२३, ६।२।१६, ६।३।४, ६।४।१७
पोरिसी	६।१।५		६।८, ६१, ६६; ८।२५, ११२	वाल	१।१४०, २।६०, ६६, ७४, ८५, १४५, १४६, १८६, ३।३२; ४।४५; ५।५, ६, १६, ४८, ६।१८, ८६, ६१.
पोस					
-पोसेति	२।१६	फसिय	५।५		
-पोसेज्जा	२।१६	व			
फ		वघ	२।१८१; ४।४६, ५।३६		
फरिस	१।१६४				
फरस	६।७६, ८८, ६।१।६, ६।३।१३	वघण	४।४५		६।१।१४, १५
फरसासि	६।३।५	वंभचेर	४।४४, ५।३५, ६।३०, ७८	वालभाव	५।१००
फरसिया	३।७	वभव	३।४	वालया	५।११, ६।८१
फल	६।३।१०	वक-कस	६।४।१३	वाहा	६।६७
फलग	६।११३. ८।१०५, १२५	वज्भओ	५।४५	वाहि	२।१२६
फारसिय	६।७७	वद्ध	२।१२८, १७८, १८२	वाहिरग	४।५०
फास	१।८, २।४, २।५, ५।५, १६१, ३।४, ४।१७, ३६,	वल	२।४१	वाहु	१।२८, ६।१।२२
		वलण्ण	२।११०, ८।३६	विज्य	३।४४
		वहि	८।८।५, ६।२।६	विनिय	५।११; ६।८१
		वहिरस्त	२।५४	वीय	८।१०६, १२०. ६।१।६२

बुद्धय	५१६३; ६१२१	वेमि	१३६, ६६, २६,	भमुह	११२८
बुद्धि	११११३		५८, ६६, ७५, ६२,	भय	२१४३, ३१७५
बुद्ध	४१४७; ६१११;		६८, ११२, ११३,	भव	
	८१२८, ८१८२		८१, २, १०, २०, २४,	-भवइ	१११, ४, १३४,
बू			२८, २६, ४२, ६१,		१५८, २१६५ ६७, ८१,
-आहंसु	६१३१४		८४, ११०, १३०,		४११७, ६१६०,
-आहु	४१२६, ५११८		८१२१५, ६११२३;		६६, १०५, ८१८५,
-बूया	४१२६; ५१६७,		६१२१६; ६१४१७		६७, ६६, १०३
	८१२१, ४१;	भइणी	२१२	-भवति	११७, ११, १२,
	६११२३, ६१३१४	भजग	६१७		३०, ३१, ३३, ६१,
-वेमि	१११२, २७, ३३,	भगव	१११, ६, १६, २४,		६२, ६४, ८६, ८७,
	३४, ३८, ५०, ५३,		४२, ४७, ७४, ७८,		८६, ११४, ११५,
	६४, ६५, ८१, ८४,		१०२, १०७, १३०,		११७, १४१, १४२,
	८६, ११०, ११३,		१३४, १५३, १५८,		१४४, १६६, १६७,
	११७, ११८, १२२,		२११३, ६१६५, ७३,		१६६, १७८, ३१४,
	१३७, १४०, १४४,		८१८, ५६, ७४, ८०,		५१८६, ६१२, ६७,
	१६४, १६६, १७८,		६६, १००, १०४,		६५, ६६, १११; ८१३
	२१२६, ४८, ७४,		११५, १२४;	-भवति	११२, २४, ४७,
	१०३, १२०, १४०,		६१११, ४, १५, १८, २३,		७८, १०७; २१८३;
	१४७, १५८, १६५,		६१२१५, ६, १५, १६,		५१६, १७, ३२, ४१,
	१८६,		६१३१७, १२, १३, १४,		६२, ६८; ६१६४,
३१२५, ५०, ७०, ८७,			६१४१३, ५, ६, १२,		८५, ८१, ८४, ८६,
४१११, १५, २६,			१६, १७		५५, ५७, ६२, ७५,
३६, ४५, ५३,			४१		७६, ६५, १०५,
५११२, १८,	भगवत		२१२		१११, ११४, ११६
३०, ३५, ३८, ४१,	भज्जा		६१८		से ११६, १२३, १२५
६१, ८६, ८८, ८६,	भहु		६१३३		
६२, १०५, ११६,	भत्त				

		भुज		क्व	
-भविस्सामो	२।३१				
-भवे	५।४४	-भुजति	वावाए	मड	५।१२४
भाग	२।१२५	-भुजह	वा२१	मडम	१।६१, २।१३२;
भाय	२।२	-भुजित्या	६।१।२, १।६		३।१२, २५, ६।१।२३
भावण	२।११०	-भुजे	६।४।६, ७	मडमंत	वावा१
भास		भुजिय	वा२	मडम	वा१४, ६।२।१६,
-भासति	३।५६, ४।१	भुज्जो	५।६५, ६।६१,		६।३।१४, ६।४।१७
-भासह	४।२२		वा११२, ६।३।५	मड	५।१३०
-भासामो	४।२३	भूत	३।२७; ४।१	मता	१।६१; ३।१२
भासिय	५।४७	भूय	१।१२२, २।५२,	मंथु	६।४।४
भिक्खलायरिया	वा७५		४।२०, २२, २३, २६;	मद	१।१२०, २।३०,
भिक्खु	२।११०,		६।१०३ से १०५,		५।५, ११, ६।वा१;
	५।६२, ६।६०, ७०,	भेउर	वा६६, ५।२६,		६।४।१२
	१०३, १०४, वा२१		वा१०७, १२७-	मस	१।१४०, ४।७३,
	से २५, ३६, ४१ से		वावा२३		६।६७, वावा६,
	४३, ५७, ६२, ६८,	भेत्त	२।१४, १।४२		६।३।११
	७६, ८५, ९१, १०१,	भेद	६।३३	मक्कड	वा१०६, १२६
	१०५, १११, ११६	भेय	६।११३, वावा२२	मग्ग	२।४७, ११६; ४।४२
	से ११६, १२५,	भेरव	६।५६; वा१०७,		५।२२, ३०; ६।३
	वावा३, ६।२।१२		१२७	मच्चिय	२।१२७, ३।२६
भिक्खुणी	वा१०१	भो	१।५४, २।६१,		४।५०
			४।२५	मच्चु	३।१०-४।१६
भिज्ज		भोग	२।७६	मज्ज	
-भिज्जड	३।५८	भोत्तए	वा७५	-मज्जेज्जा	२।११४
भित्ति	६।१।५	भोम	५।वा६	मज्झ	४।४६
भीम	६।२।७, ६	भोयण	२।२, १८, ६६,	मज्झाय	५।वा६
भीय	६।१।५		वा२, १०५	मज्झत्य	वावा५

मञ्जिम	८३०	मह	२१२; ३५७; ५६४,	माणदंसि	३८३
मट्टिय	८१०६, १२६		१११, ११६;	माणव	२४, ५७, ८०,
मडव	८१०६, १२६		८१३, ३४		१०५, १७१, ३५०,
मण	५८४	महत	३४६		५६ ४१३; ५१८,
मणि	२५८	महब्भय	११२२, २१६६,		२५, ६३, ६१, १६,
मण्णमाण	२१५, ४४,		४२६, ५३२,		४६
	१४३; ५१६, ६६;		६१४, २२	माणवादि	२५०
	६१७, ६३	महाजाण	३१७	माणुस्स	८८८
मति	२१५६	महामुणि	६२५, ३७;	माता	६६३
			१०५	मामग	६४८; ८६
मत्तिम	२१५६; ८२६	महामोह	२६४	मायण्ण	२११०, ८३६
मत्ता	२६५, ८१; ३६६	महावीहि	१३६	मायदंसि	३८३
मद्विय	६१०२	महावीर	६४, ६६, ७३;	मायन्न	६११२०
मन्न			६१११३, ६२११,	माया (मातृ)	२१२
-मन्नति	३३२		६३३८, १३,	माया (मात्रा)	२११३,
-मन्नसि	५१०१		६४८, १४		३५६
ममाइय	२१५६, १५७	महासङ्घि	२१३७	माया (माया)	३१७१,
ममाय	५८७	महुमेहणि	६८		८४; ५१७;
ममायमाण	२५७; ६३३	महुर	५१२६		६१११; ८८२४
मय	४६, २०	महेसि	३६०; ५६०	मार	१२४, ४७, ७८,
मरण	११०, २०, ४३,	महोवगरण	२६७, ८३		१०७, १३४, १५८;
	७४, १०३, १३०, १५४;	मा	२१३२		२६२; ३६६, ८४,
	२५६, ६१, ६६; ३१५,	माइ	३१४		५३
	३६; ५७, १२१; ६८;	माण	३४६, ७१, ८४,	मारदंसि	३८३
	८८४, १७		५१७, ६१११	माराभिसकि	३१५
मसग	६६१; ८१११,	माणण	११०, २०, ४३,	माक्य	६१२१३
	११२; ६३१		७४, १०३, १३०,	मास	६११३, ४; ६१४४, ६
			१५४; ३६८		

माहण	३४५; ४२०; ८१४,२६; ८८२०,२४; ६११२३; ६१२१०,१६; ६३११४; ६३४३, ११,१७	मुणि	५१४४,५०,५६, ६१,७८; ६२२,२७, ५६,११३; ८८१७,१४; ६११६,२०, ६१२४	मेहावि	६१५४,७३,६०, ६८, ८१८,१०,३१; ६१११५
मित्त	२४१; ३६२	मुणिआ	८८८१३	मोक्ख	२१४४,१८१, ६१७
मिला		मुत्त	२११६५; ५१६१; ६१६६	मोण	२११०३,१६३, ५३६८,५७,५६,८८
-मिलाति	१११३	मुत्ति	६१३	मोयण	१११०,२०,४३, ७४,१०३,१३०,१५४
मिहो	६१११०	मुय	४२८	मोह	११२४,४७,७८, १०७,१३४,१५८; २१३०,३३,८६,६२, ३८४, ५१७,८,६४
मीसीभाव	६१११७	मुह	४१६	मोहन्सि	३८३
मुच		मुहुत्त	२१११; ६१३३		
-मुच्चइ	३१७०	मुहुत्ताग	६१२६	अ	
मुड	६१३६	मूढ	२१६०,६६,८५,६३, १३४,१५१, ३१०ः	य	११६
मुक्क	२१२८,१८२		५१६,१७	र	
मुच्छ		मूढभाव	२१६	रइ	३१७; ६१२१०
-मुच्छति	११६५	मूय	६१८	रज्ज	
मुच्छमाण	११६५	मूयत्त	२१५४	-रज्जइ	५१४८
मुज्झ		मूल	३१२१,३४	-रज्जति	२११६०
-मुज्झति	५१६४	मूलट्टाण	२११	-रज्जेज्जा	८८८१३
मुट्ठि	६१३१०	मूसियार	६१४११	रण्ण	८११४; ८८८१७
मुट्ठिजुद्ध	६१११६	मेहावि	११३२,६३,६६, ८८,११६,१४३, १६८,१७७, २१२७, ४६,१५८,१८१, ३१२४,४१,६६,८०, ८४ ; ५१४०,११४,	रत्ति	२१६,१६०
मुणि	१११२,३३,६४,८६, ११७,१४४,१६६,१७८, २१३२,७०,६७,१५७, १६३,१६५,१६६, ३११,५,३७,५४;			रत्त	२१५८, ८४६, ६५,८८

रम	रीय	रुट्टि	दा३।५
-रमति १।१७१	-रीडत्था ६।३।१३	लद्ध	२।३१, १६, ११३;
-रमति ५।१६; ६।२८	-रीयई ६।२।१०		५।१२, ६।४।१३
रय (स्त) ४।३; ५।१७, ३०, १२१	-रीयति ६।१।२३; ६।२।१६, ६।३।१४;	लद्धु	२।१०२, ११६; ३।५०
रय (रजस्) ५।८६	६।४।१७	लभ	
रय (रजू)	-रीयति ६।४।३	-लभति	६।७
-रण्जा ८।४६, ६५, ८८	-रीयत्या ६।१।१	-लभति	५।६३
रस २।४; ३।४, ५।१३६; ६।१।२०; ६।४।१०	रीयंत ६।३६, ७०	लभिय	८।२
	रीयमाण ६।६६, ८०	लह	
	रुक्खमूल ८।२१, २३, ६।२।३	-लहई	६।६
रसग ६।१२	रुव	लहु	५।१३०
रसय १।११८	-रुवंति ६।२६	लहुमूयगामि	३।४६
रसेसि ६।४।१०	रुह ५।१३२	लाघव	६।६३
राइं ६।२।४	रुव १।६४, ६५; ३।४, १५.५७, ५।१३, २६, ४६, १३६, ६।७; ६।४।१५	लाघविय ६।१०२, ८।५४, ७२, ७८, ६४, ६८, १०२, ११३, १२२	
राओ (अ) २।३, ४०, ४।११, ६।७५, ७६, ६।२।६, ११, १५	रोग २।१६, ७५, ६।८, १६, ६।४।१	लाढ ६।३।२, ३, ६, ८	
राय (गजन्) २।४१, ६८, ८४, १०४	रुंभ ४।४५	लाभ २।११४	
राय (रात्र) ५।४४	रुज्ज ८।१६	लाल २।१३२	
रायंसि ६।८	रुज्जामो ८।१६	लालप्पमाण २।६०, १५१	
रायहाणि ८।१०६, १२६	रुंभ ४।४५	लिप्प	
रायोवराय ६।४।६	रुज्ज ८।१६	-लिप्पई २।१८०	
रिच्च	रुज्जमाण १।१६, ३६, ७०, ६६, १२६, १५०	लुच्च	६।३।११
-रिक्कासि ६।१।४		-लुच्चिमु २।१४२	
रीय] ५।७१		लुपडत्त २।१४	
		लुंपित्त २।१४	

लुकव	५।१३०	लोक	५।१, १५, १६, ३६,	वक्त्र	३।५
लुप्य			५३, ६०, ६।१४, ३०;	वज्ज	८।८, १८
-लुप्पती	६।१।१५		८।५, ६।४।१४	वज्जत	६।४।१२
लूस		लोगविजय	२	वज्जभूमि	६।३।२.५
-लूसिसु	६।३।३, ६	लोगविपस्ति	२।१२५	वज्जमाण	६।१०४
लूसग	६।६५, ६६	लोगसन्ना	२।१५६,	वट्ट	५।१२६
लूसणय	६।३।४		१=४: ३।२५	वट्टमग	५।१२१
लूसि	६।१११	लोगसार	५	वडभत्त	२।५४
लूसिय	६।४१	लोगावाइ	१।५	वड्ड	
लूसियपुव्व	६।१।८	लोभ	२।३६.३७, १३४,	-वड्डुति	३।३२
लूह	२।१६४, ५।६०,		३।४६.७१, ६।१११,	-वड्डेति	२।१३५
	६।१०६, ६।४।४		८।८।२३	वणस्सइ	१।१०१, १०४,
लूहदेसिया	६।३।३	लोभदत्ति	३।८३		१०६, ११६, ११७
लेलु	६।३।१०	लोह	३।८४: ५।१७	वत्तए	२।१६७
लोग	२।१०४, १२५,	लोहिय	५।१२७	वत्य	२।११२, ६।३१,
	१५६, ३।३, २५,				६० ८।१, २, २१ से
	५१, ७८, ८१, ४।७				२४, २८, २६, ४३ से
	२७, ५२, ५।३१,	वइ	५।४०, ८।३१		४६, ५०, ६२ से ६५,
	३२, ४३, ५०, ७७,	वडगुत्त	५।८७		६६, ८५ से ८८, ९२;
	६।४७, १०१-८।३३	वड्डगुत्ति	८।२७		६।१।२, ४, १६, २२
लोक	१।३, ११, १२ से	वड्डत्ता	६।६३	वत्यग	६।१।४
	१४, २५, ३७, ३८, ४८,	वओगोयर	८।१०	वत्यवारि	८।४६
	६५, ७६, ६६, १०८,	वंक	१।६८, ५।५८	वत्यु	२।५७
	१३५, १५६, २।२,	वंकाणिकेय	४।१६	वद	
	६०, १६६- ३।७, ५,	वता	२।१५६, ३।२५,	-वदति	४।२०, ६।२६,
	३८, ५८, ७०, ७७,		७१, ७८ ६।१११		७६, ८८
	४।२, १२, २०, २७, ३७,	वक्खाय	५।१२१	-वदिस्सामि	६।१।१

वदंत	ना४२,७५	वह		विअंतिकारय	ना२३, १०६,१२६
वन्न	ना२२३	-वहति	११४०	विअंतिकारिय	ना६०
वन्नाएसि	५१५३	वह	२१६३, ३१४३, ४६; ४४६; ६१७	विइय	ना२५
वमन	६१४१२	वा	११२, ३, २४, ४७, ७८, १०७, १३४, १५८, २१२, ५०, ५६, ६५, ६८, ७६, ७७, ८१; ४३, ५११, ६३०, ८२, ८४, १०२, ना१, २, ५, १४, २० से २४, ४१, ४२, १०६, १२६; ना२१७, ६३११३, ६१४१६, ११, १३ ६१७५, ७६ १११५२, १५५, १६०, १६८, १६९ ६१११२ ११३ ५१५ ना१०१ ६१४१० ना५ ६१६६, ६११११, ६१२१, ३, ४ ६१२	विउंज	ना५
वय (वद्)				-विउंजति	ना२
-वयंति	११७२ ; २१६१ ; ४१६			विउकम्म	ना२
-वयासि	४१२२			विउक्कस	६१८८
वय (वयस्)	२१५, १२, २३ ; ना३०			-विउक्कसे	६१८८
वय (व्रत)	२१५२			विउट्ट	
वय (वचस्)	५१६३			-विउट्टंति	११५६
वयण	४१२१, २४ ; ना२२, ४१			विउत्ता	ना२
वयणिज्ज	६१८६	वाइय		विउग्गमे	ना२१०
वव्हार	३११८	वाउ		विउसिज्ज	ना२५, १३
वस	३११०, ६१६५	वाउ		विउसिज्जा	६१३१
वस		वाउकाय		विओवाय	६११३३
-वसह	ना२१	वागरण		विककय	२११०६
-वसे	२१२	वात		विगय	६१४१५
वसा	१११४०	वाम		विगिच	
वसित्ता	४१४४ ; ६१३०, ७८	वायस		-विगिच	२१८६, ३१३४, ४१३४, ४३
वसु	६१३०	वाया		-विगिचइ	३१७६, ६१५१
वसुम	१११७५, ५१५५, ना५७	वास		विगिचमाण	३१७६
वसुमंत	ना२१	वासग		विग्गह	५१२१
				विज्ज	
				-विज्जइ	३११८, ८७, ५११२३

-विज्जए	५।१३६	विदिता	१।६१, २।१२७,	विष्यमाय	२।१५२
-विज्जति	४।५३		१।५६, ३।२५	विष्यमुक्क	५।३०
विज्जहिन	१।३५	विदिताण	८।८।२	विष्यग्कम	
विजहा		विदिमप्यन्न	५।५४	-विष्यग्कमति	६।४
-विजहिज्जा	८।८।१२	विदायमाण	६।८७	विप्परामुम	
विजाण		विद्धसण	५।२६	-विप्परामुमहे	२।१५०
-विजाणानि	५।१०४	विधार		-विप्परामुमनि	५।१, २
विड्ढमाण	६।७६	-विधारण	६।७०	-विप्परामुमह	८।२५
विणएत्तु	५।११६	विधूणिया	८।८।२४	विप्परिणाम	
विणय	१।१७२	विधूतवप्य	३।६०, ६।५६	-विप्परिणामेति	६।८३
विणयण	२।११०;	विन्नाण	४।१३	विप्परियाम	२।६०, ६६,
	८।३६	विन्नाय (विज्ञान)	४।६,		८।५.१५१; ५।६
विणन्त			५।१०८	विष्यसाय	
-विणन्तड	२।८४	विन्नाय (विज्ञाय)	८।८।७	-विष्यमायए	३.५५
-विणन्सति	२।६८	विन्तु	४।२७	विप्पिय	६।१०६
विणा	२।३७	विपरवकम		विक्कमाण	४।३७
विणियट्टमाण	५।७०	-विपरवकमा	५।३४	विक्कन्त	६।६६
विणियिट्ट	२।३४०,	विपरिणाम	१।११३,	दिनन्त	८।२
	६।६		५।२६	विमण	
विण्णाय	४।२०	विगिणिट्ट	२.६६, ८३	-विमय	६।१०१
विण्ह	६।६०	विगुट्ट	८।८.८	-विमयति	२.६८, ८८
विण्ह	२।५०, ८।८।७	विप्पज्ज	६.२७	विप्पमा	१।५८; ६।६
वित्तिमिन्त	६।१६	विण्णिकन्त	८।६	विप्पुक्क	८।३५
वित्त	५।२२	विप्पियेण		विप्पारण	८
विनिगिच्छा	३।५४,			विप्पो	८।८।१.५
	५।६३	विप्पियेणेनि	५।७५	विप्पो	८।८।१.५
विनिच्छेण	६।११२	विप्पियेण		विप्पो	८।८।१.५
		-विप्पियेणेनि	५।७५		
		विप्पियेण			
		-विप्पियेणेनि	५।७५		

वियक्खाय	५।११७	विरुवरुव	न।१०७,	-विहरे	न।न।२०
विगड	६।१।१८; ६।२।१५		१११,११२,१२७, ६।२।१०; ६।३।१	विहरंत	६।३।६
वियाण	न।न।११	विलुप		विहरमाण	न।२।१,२३
वियाहित	२।१६५ ; ५।१०५; ६।४६, ६२,११२; न।१३	-विलुंपति	२।६८,८४	विहारि	५।६६
		-विलुपह	न।२५	विहि	६।१।२३; ६।२।१६; ६।३।१४
वियाहिय	१।३।५,५४, ६६, ४।३८,४४; ५।२७,६१,११७; ६।६,६६,११३ ; न।१६,३४	विलुंपित	२।१४,१४२	विहिस	
		विवाद	४।२०	-विहिसइ	१।२६
		विवित्त	२।२;	-विहिसति	१।१८,४१, ४६,७२,८०,१०२, १०६,१२८,१३६, १५२,१६०
			न।न।१०,११		
		विवित्तजीवि	३।३८	-विहिसंति	न।न।१०
		विविह	६।४।११	वीर	१।३६,६७, २।६४, १०१,१२८,१६०, १६४,१६८,१७८, १८० ; ३।८,१६, ४६,५०,५६,७८, ४।११,४१,४२,४४, ५२ , ५।२८,६०, ११६; ६।६८,६६
विरत	२।१६५, ३।४६, ५।३७,६१; ६।३६, ६०; न।२२,८१	विवेग	५।७३,७४, न।१३		
		विसभणया	न।१०७,१२७		
		विसण्ण	६।६२,१०६		
विरति	६।१०२	विसाण	१।१४०		
विरत्त	२।५८	विसोग	६।१।१०		
विरम		विसोत्तिया	१।३५; ६।४६		
-विरमेज्ज	५।११८	विस्पेणि	६।६८		
विरय	५।३०, ६।६६, ७०; ६।४।३	विह	न।५८		
		विहण			
विराग	३।५७	-विघातए	३।५३	वीरायमाण	६।६३
विरुवरुव	१।८,१८,२६, ४१,४६,७२,८०, १०१,१०६,१२८, १३६,१५२,१६०; २।२६,४२,५५,१०४, ६।६१,	-विघायए	५।१०२	वीरिय	५।४१
		विहर		बुइय	६।१।२१
		-विहरिंसु	६।१।३; ६।३।५	बुद्धि	३।२६
		विहरित्था	६।१।१३	बुत्त	६।४७
				वेज्ज	५।७२

वेद	मकुत्रेमाण	५१७०	मजोग	३१७८; ४,३,४०,	
वेदेति	३१७	संक्कि	६१११६	६१३०	
वेद्यण	५१७२	गन्वा	८११२	मजोगट्टि	२१३,४०
वेद्यव	३१४	गन्वाण	६१४३,८०,	मजोय	२१६६, ४१४५
वेद्यवि	४१५१; ५१७८,		६१११.१३	मंन	८१११, ६११११
	११८, ६१०१	गन्वाय	२१५०, ६१०७,	नत्तमत्तर	८१५१
वेद्यावडिय	८११,२,२८,		८११२२	सत्ताणय	८१०६,१२६
	२६,७६,१२०,१२१	गग	१११७८, २११४५,	मनि	१११४६, २१६६,
वेर	२११३५, ३१८,३२		३१६,३२, ५१३३.		६११०२
वेवड	६१८		१११७,१३३,	मयर	
वोवहम			६,३८ १०८	-मंयरे	८१८७
-वोक्कमिस्सामि	६१६०	मगथ'	२१२	-मयरजेज्जा	८१०६,१२६
वोमज्ज	६११४,२२;	मगक्क	५१८६	मयरत्ता	८१०६,१२६
	६१३१७	मगाम	६१११३,	मयव	४११७
वोमट्टकाय	६१३.१२		६१३१८,१३	मथुय	२१२
वोमिर		सघउदसि	४१५२	सवा	
-वोसिरे	८१८२१	मंवाडी	६१२१४	-सवाति	२१५५
वोच्छिद		मघाय	११८४,८५,	-मविस्सामि	६१६०
-वोच्छिदजेज्जा	५१८३		१६८,१६५	-मंवेड	११८
		मचर		मत्रि	२१०६,१२७,
स्स		-सचारेज्जा	८१०१		३१५१, ५१२०,
स (तत्त)	५१०१, ६१३४	सचाय			३०,४१,६८
स (स)	६१२१२	-सच्चाएमि	८१४१,१११	सवेमाण	६१७१
सड	६११०, ६१४१५	सच्चिक्ख		सग्गिल्लेहाए	८१२४
सकप्प	५११७	-सच्चिक्खति	६१४०	सपमार	
संकमण	२१६१, ८१७५	सजत	११६७	-सपमारए	११२६,५२,
सकुब		संजम			८३,११२,१३६,१६३
-सकुचए	८१८१५	-सजमति	५१५१		

संपय		सवस		सढ	५।१७
-सपयति	१।८४, १६४	-संवसति	२।७, १६,	सण्ण	५।१३५
सपलिमज्जमाण	५।७०		२०, ७६	सण्णिवेस	८।१०६, १२६
संपव्वयमाण	५।८६	सविद्धपह	५।५०	सतत	२।६३
संपसारय	५।८७	सविहूणिय	८।१०७,	सत्त (सत्त्व)	१।१२२,
संपाडम	१।१६४		१२७		४।२०, २२, २३, २६,
संपातिम	१।८४	संवुड	५।८७; ८।८।२२,		२७, ६।१०३, १०४,
संपुण्ण	२।६०		६।३।१३		१०५, ८।२१ से
संपेहाए	२।६६, ४।३२,	संसप्पग	८।८।६, ६।२।७		२४; ६।१।१४,
३४; ५।४४; ६।८		ससय	५।६		६।४।१०
संफास	५।७१, ६।२।१४	संसार	१।११६; ४।१३,	सत्त (सत्त)	१।१७४;
संवाहण	६।४।२		५।६		६।७, १६
सबाहा	५।६५	ससिच्चियाण	२।६५	सत्ता	५।१३७
संबुज्जमाण	१।२३, ४६,	ससिच्चवमाण	३।३१	सत्तिहत्थ	६।२।८
७७, १०६, १३३,		ससेयय	१।११८	सत्थ	१।१८, २१, २६, ३०,
१५७, २।१४८,		संसोहण	६।४।२		३१, ३२, ४१, ४४,
४।१२, १३; ८।१५,		सक्क	५।५८		४६, ५५, ५६, ५६,
३०, ६।२।६		सक्ख			६१ से ६४, ७२, ७५,
		-सक्खामो	६।२।१४		८०, ८६ से ८८,
संभवंत	६।८७	सगडिभि	३।७३, ८६		१०१, १०४, १०६,
संभूय	२।६७, ८३	सच्च	३।४०, ६५, ६६;		१।१४ से १।१७, १।२८,
संमुच्छिम	१।११८		४।५२, ५।६५,		१३१, १३६, १४१
संलुंचमाण	६।३।६		८।१०७, १।२७		से १।४४, १।५२, १।५५,
संवच्छर	६।१।४	सन्नवादि	८।१०७, १।२७		१।६०, १।६६ से १।६६,
सवट्ट		सज्ज			१।७७, १।७८, २।३,
-संवट्टेज्जा	८।१०५,	-सज्जेज्जा	८।८।४		४०, १०४, ३।३, १।७,
१२५		सङ्घि	३।८०; ५।६६		७२, ८२, ८५;
					८।३६

सत्थार	६।७६	समणस	८।२२	समभिजाणिया	५।११५;
सदा	४।५२, ५।८७, १।१६	समणजाण			८।५६, ७४, ८०, ६६, १००, १०४, ११५, १२४
सद्	१।६४, ६५; २।१६१, ३।४, १।५, ५।१३६, ६।४३, ६।२।६, ६।४।१५	-समणुजाणड	१।२१, ४४, ७५, १०४, १३१, १५५, २।१०७, १०६	समय	३।३, ४।२५; ५।६६; ८।१०५, १०६, १२५, ६।१।१०, ६।४।१०
सद्दह		-समणुजाणेज्जा	१।३२, ६३, ८८, ११६, १४३, १६८, १७७; २।४६, ८।१८		
-सद्दहे	८।८।२४	समणुजाणमाण	६।४१; ८।३	समयण्ण	२।११०; ८।३६
सद्धा	१।३५	समणुन्न	१।६, २।७४, १८६, ५।६६, ३।७६, ८।१, २८, २६	समया	३।५५;
सद्धि	२।७, १।६, २०, ७६	समणुपस्स		समहिजाणमाण	८।८१
सन्त	४।१४	-समणुपस्सति	३।६७	समादहमाण	६।२।१४
सन्ना	१।१, २।३३	-समणुपासह	५।६६	समादा	
सन्नियय	२।१८, १०५	समणुवास		-समादियति	६।७७
सन्निवेस	६।७	-समणुवासिज्जासि	२।२६, ५।८८, ६।२६	समादाय	२।१६३
सन्नहाण	८।३६	-समणुवासेज्जासि	२।१०३	समाधि	५।६३
सन्नहि	२।१८, १०५	समन्नागय	१।१७५, ५।५५, ६।६७, ८।५७	समायाए	५।५६
सपज्जवसित	८।५	समभिजाण		समायाण	२।४२
सपेहिया	८।८।२३	-समभिजाणाहि	३।६५	समायाय	३।२२
सकल	४।५१	-समभिजाणिज्जा	८।६७	समायाण	१।६८, ५।५८
सवलत्त	२।५४	-समभिजाणिया	८।६५	समारभ	१।७.११, १२, १८, २६, ३३, ८१, ४६, ६४, ७२, ८०, ८६, १०१, १०६, ११७, १२८, १३६, १४४, १५२, १६०, १६६, १७८, २।१०४. ८।१७
सभा	६।२।२				
सम	५।८६				
समण	२।४१; ४।२०, ६।६६, ८।२१, २२, ४१; ६।१।१; ६।२।४. ६।३।४ ५, ६।४।११				

समारंभ	समारब्ध	८२१ से २४	समुद्राद्	२३,४०
-समारंभद् ११२१,७५,	समारभ		समुद्राए	११२३,४६,७७,
१०४	-समारभेज्जासि	३१५०		६०,१०६,१३३,
-समारंभति ८१६	समावन्त	५१६३		१५७; २३१,
-समारंभति ११४४,	समासज्ज	८८१,१७,२१		१४८; ६१६३
१३१,१५५	समाधि	५१६३	समुद्धित	८३०
-समारंभावेद् ११२१,	समाहि	६१७६; ८८५५;	समुद्धिय	२११०,१०६;
७५,१०४,१३१	६१२११; ६१४७,१४		३१४४; ६३,७१;	
-समारंभावेज्जा ११३२,	समाहिय	६३३; ८१०५;		८१५
६३,८८,११६,	८८११४; ६१२४		समुद्धिस	८२१ से २४
१४३,१६८,१७७;	समिच्च	४२, ६१११६	समुप्यज्ज	
२१४६, ८१८	समित	२१५३; ३३८;	-समुप्यज्जंति	२१६,७५
-समारंभावेति ११४४,		४१५२	-समुप्यज्जे	८८१८
१५५	समिय	४१४१; ५१७५;	समुप्याय	२१६,७५
-समारंभेज्जासि ८२०	६१२१०, ६१३११,		समुप्येहमाण	५३०
समारंभंत ११२१,३२,	६१४१६		समुत्सय	४१४४
४४,६३,११६,१४३,	समिय (सम्यक्)	५१६६	समुत्सिण	
१५५,१६८,१७७;	समिय (शमित)	५१७१,	-समुत्सिणाति	८२३,
२१४६; ८१८	८८११४			२४
समारंभमाण ११२६,	समियवंसण	६१४६,१००	-समुत्सिणासि	८२२
३०,४१,४६,६१,	समिया (शमिता)	५१२७	-समुत्सिणोमि	८२१
७२,७५,८०,८६,	समिया (समता)	५१४०,	समे	
८८,१०१,१०४,	८२३२, ६१२१५		-समेति	६१८
१०६,११४,१२८,	समिया (सम्यक्)	४१२६,	समेमाण	४११०, ८२
१३१,१३६,१४१,	५१६६,६७,१०५		सम्म	२१२६; ४१४८,
१५२,१६०,१६६	समीर			५१३८,५७,६१,
समारंभमाण १११८,१०६	-समीरए	८८११७		११५, ८२७

सम्मत	४, ६६५ ; ना५६, ७४, ८०, ६६, १००, १०४, ११५, १२४	सर	५१२२	सव्वसो	२१७२, १८४ ; ४३१, ५५१ ; ना८२१, ६११२२,
सम्मतदंसि	२१६४ ; ३२८ ; ४२६, ५१६०	सरण	२१८, १७, २१, ७७ ; ५११६, ६२८, १०५	सररि	४३२, ६१७, ११३
सम्मय	ना११	सररिग	२१६३ ; ५१५६ ; ना१०५, १२५	सव्वावतो	१७, ११ ; ना१७, ३३
सय	२१५१, १५२	सल्ल	२१८७	सव्विदिय	ना३७
सय		सवंत	२१३०	सह	१८ ; २१५, ५८ ; ३१७
-सए	ना११३	सवयस	ना२२	सह	
सय	११२१, ३२, ३८, ४४, ६३, ६५, ७५, ८८, १०४, १०६, १३१, १४३, १५५, १६८, १७७ ; २१४६, ना१८, ६११६, १७, ६१४८, १६	सव्व	११४, ८, ११३, १७५ ; २१६३, ६४, १७६ ; ना५७	-सहते	२१६०
सयण (स्वजन)	२१२	सव्वओ	६२, ३६	सहसक्कार	२३, ४०
सयण (जयन)	६११६, ६१२१, ४, ७	सव्वतो	२१७५ ; ३१७५, ४२०, ५१६०, ११५, ६१३८, ६५, १११, ना१७, ५६, ७४, ८०, ६६, १००, १०४, ११५, १२४	सहसम्मइयाए	१३ ; ५११३, ना२४
सययं	३१०, ५११७	सव्वत्त	६१६५, १११ ; ना५६, ७४, ८०, ६६, १००, १०४, ११५, १२४	सहसाकार	
सया	११६७, ३१, ३८, ५६ ; ४११, ४१, ५१४४, ७५ ; ६२६, ५६, ६८, ६१२१० ; ६१३१	सव्वत्थ	ना११	-सहसाकारेह	ना२५
सर		सव्वया	५११५	सहि	२१२
-सरति	३१५६			सहित	३३८, ६७, ६६, ४१४१, ५२ ; ५१७५
				सहिय	६११५
				साड	६१२५
				साइम	ना१, २, २१से२४, २८, २६, ७५, ६०१, ११६ से १२१
				साडय	ना५
				सागारिय	५११० ; ६११६
				सात	२१५२, ३२७

साति	सिक्खं	सुक्क	६।४।१३
-सातिज्जति ६।४।१	-सिक्खेज्ज	वावा६	५।१२७
-सातिज्जिस्सामि	सिद्धिल	५।५८	६।१।८
वा७६, ७७, ११६ से	सिणाण	६।४।२	सुण
११६, १२१	सिद्धि	वा५	-सुणेति १।६४
सामगिय वा४६, ६८,	सिय (अत्रित)	१।११६	-सुणेह ६।८
६१	सिय (सित)	१।१५ ;	सुणमाण १।६४
सामत्त २।५४		५।६४	सुणय. ६।३।४, ६
सामास २।१०४	सिल्लिवय	६।८	सुणिया ५।४४
साय २।२२, ६३, ७८;	सिलोय	६।६६	सुणिसंत वा३
४।२५, ५।२४, ५।२	सिसिर	६।१।२२;	सुणहा २।२, १०४
सारक्खमाण ५।८६		६।२।१३; ६।४।३	सुत्त (सुप्त) ३।१
सारय ४।४१	सिस्स	६।७५, ७६	सुत्त (सूत्र) ६।६०
सासय ४।२; वावा२४	सीओसणिज्ज	३	सुद्ध ४।२; ६।५३;
साह	सीतोद	६।१।११	वावा५
-साहिस्सामो ४।५२	सीय	३।७; ५।१३०,	सुण्णागार ६।२।३
साहम्मिय वा७६, १२०,		६।६१, वा४१, ५७,	सुन्नागार वा२१, २३
१२१		१११, ११२; ६।३।१	सुपडिबद्ध ५।३४
साहर	सीयापिड	६।४।१३	सुपडिलेहिय ४।२०,
-साहरे वावा१४	सील	५।४४	५।११५; ६।२
साहारण वावा१५	सीलमंत	६।८०	सुपणिहिय ६।३५
साहिय (स्वाहित)	सीव		सुयन्नत्त वा८
वावा१२	-सीवीस्सामि	६।६०	सुपरिणाय ६।१११
साहिय (साधिक)	सीस	१।२८; ६।११३,	सुब्भ (भू) भूमि ६।३।२
६।१।३, ४, ११,		६।३।८, १३	सुब्भिम ६।५५, ६।२।६
६।४।६	सुअक्खाय	६।५६; वा८	सुब्भिगंध ५।१२८
साहु वा५	मुकड :	वा५	सुय १।१; ४।६, २०,
सिग १।१४०			५।३६

सुबिसुद्ध	६।४।६	सेवे	६।१।६, १८	हंत	२।१४, १४२;
सुव्वय	६।६३	सेवेज्जा	नान२३		३।५३; ५।१०२,
सुसमाहितलेस	नान१	सेस	२।१८		नान५
सुसाण	नान१, २३, ६।२।३	सोच्चा	१।३, २४, ४७, ७८, १०७, १३४,	हतव्व	४।१, २०, २२, २३, ५।१०१, १०३
सुत्सूस			१५८; ५।४०, ११३,	हंता	३।३२, ६।१।५,
-सुत्सूस	६।२४		६।७६, नान४, ३१		६।३।१०
सुत्सूसमाण	६।१०२	सोणिय	१।१४०; ४।४३;	हण	
सुह	२।६३; नान६१, ८४, ११०, १३०		६।६७. नान।६	-हण	६।६१, नान३
सुहट्टि	२।१५१	सोत	५।११७	-हणह	नान५
सुहुम	नान२३	सोय (श्रोत्र)	२।४, २५	-हणिया	३।४६
सुइ	६।६०	सोय		-हणे	२।१७५
सुइय	६।४।१३	-सोयए	२।११५	हण्य	६।६१, नान३
सूणिय	६।८	-सोयति	२।१२४	हणुय	१।२८, नान१०१
सूर	६।३।१३	सोय (स्रोतस्)	३।६, ५०; ४।४५, ५०,	हत	२।५६
सूवणीय	५।३४		५।८६, ११६;	हत्य	१।२८
सेज्जा	६।२।१, ६।३।२		६।१।१६	हम्म	
सेय	२।१७६; ३।६७, नान५८	सोय (शोक)	३।४६	-हम्मड	३।५८
सेव		सोयविय	६।१०२	हय	६।४१
-सेवड	६।२।५	सोलस	६।८	हयपुव्व	६।१।८, ६।३।१०
-सेवए	३।४४, ५।१०	सोवट्टाण	५।१०६	हरय	५।८६, ६।६
-सेवति	२।१६४, ५।६०	सोवहिय	४।३, ६।१।१५	हरिय	नान१०६, १२६; नान।१३; ६।१।१२
-सेवती	६।१।१६	सोवाग	६।४।११	हरिस	
-सेविसु	६।३।२	सोहि	६।४।१६	-हरिसे	२।५१
-सेवित्था	६।२।१, ६।४।६			हव्व	२।३४
		हं	४।२५	हव्ववाह	५।३३

५२					आयारो
हस्त	२।६; ५।१२६	हित	ना०२५	हुरत्था (दि)	५।१२ ;
हालिद्	५।१२७	हिमग	६।२।१४		ना२१,२३
हास	३।३२,६१	हिमवाय	६।२।१३	हेउ	१।१०,२०,४३,७४,
हिस		हिय	ना६१,८४,११०,		१०३,१३०,१५४
-हिसिसु	१।१४०;	हियय	१३०	हेमंत	ना५०,६६,६२;
	६।१।३; ६।३।३	हिरण	१।२८,१४०		६।१।१,२
-हिसति	१।१४० ;	हिरि	२।५८	हो	
	५।५१	हिरी	ना१११	होइ	५।६६
-हिसिस्सति	१।१४०	हीण	६।४५	होउ	५।६६,१०७
हिच्चा	४।४०; ६।३०,	हु	२।४६	होति	६।५२
	७७,६३		१।१२,१५४	होदु	१।२८

*

आयार-चूला : शब्द-सूची

अ	अंड	७१०, २६ से	अतलिकखजाय	११८७;
अइदूरगय	११३६	३१, ३३, ३८, ४० से		२१८, १६;
अइपत		४५; ८१, २, २२,		५१३६ से ३८;
-अइपतति	२३०	२३, ६१, २,		६३६ से ४१;
अइमत्त	१५१६८	१०२, १४		७११ से १३
अईव	१५११२, १३	अत (अन्त)	२१७२;	अंतो
अक	१३३६ से ७६;	८२६, ६१२;		१२६, ४१, १३५,
	१४३६ से ७६;	१५२५		१३६; २१२;
	१५१४	अंत (अन्तस्)	१५२८	६४५, ७२४,
अककरेलुय	१११३	अतकड	१६१०, ११	८१२; १०१२
अकघाई	१५१४	अतरा	१४२, ४३, ५०,	अंताहितो
अगारिय	१११६	५३, १३६, ३१, ४,		७२४
अंगुलिया	१६२,	५, ७, ८, १०, १२ से		अंतोअंत
	३१६, ४७	१४, ३४, ४१, ४३,		५२६, २७,
अजण	११७२, ७३	४५, ४७, ४८, ५१,		६२७, २८
अंजलि	३६१, ५१५०,	५३ से ६१; ५४६,		अं
	६१५८	५०, ६१७, ५८		७२६ से २८
अड	११२, ४३, ५१, ८२,	अतरिज्जग	५१६	अंवचोयग
	८३, १०२, १३५;	अंतरिया	१५३८	७२६ से ३१
	२११, २, ३१, ३२,	अंतश्छुय	११३३;	अंबडगल
	५७ से ६१, ६८, ६६,		७२६ से ३१	७२६ से ३१
	३५, ५२८ से ३०,			अवपलव
	३५, ६२६ से ३१, ३८;	अतलिकख	४१७	११०८
				अवपाणग
				७२६ से ३१
				अवमित्तग
				७२६ से ३१
				अंबवण
				७२५; १०२७
				अवसरडुय
				१११०
				अवसालग
				७२६ से ३१
				अंवा
				४३२

अंबाडगपलव	१११०८	अक्कोसति	५१५०; ६१५८;	अग्गपिड	१११६, ४६, ६१
अंबाडगपाणग	१११०४		७११६	अग्गवीय	१११५
अंबाडगसरडुय	११११०	-अक्कोसंतु	२१२२.	अग्गलपासग	११५०;
अविल	१११००, १३८;	-अक्कोसेज्ज	३१६, ११		३१४१, ४७,
	४१३७	अक्खाइ	२१४४		४१२१, २२
अंसुय	५११४	अक्खाइयट्टाण	११११४;	अग्गला	११५०; ३१४१,
अक्कंत	१६१४		१२१११		४७; ४१२१, २२, २६
अक्ककस	४१११, १३, १५,	अक्खाय	११२६, ४१८;	अग्गि	१६१५
	२२, २४, २६, २८,		७१५७	अग्घा	
	३०, ३२, ३४, ३६	अग्ग	३१४८	-अग्घाइ (ति)	१५१७४
अक्कडुय	४१११, १३, १५,	अग्गमह	११२४	अग्घाउं	१५१७४
	२२, २४, २६, २८,	अग्गडिय	११५७	अग्घाय	१११०५
	३०, ३२, ३४, ३६	अग्गणि	११८४, ८५, ६५;	अच्चित्त	८१७ से २०,
अक्करणिज्ज	११३२;		२१४६, ३१५५		१०१२८
	१५१३२	अग्गणिकाय	१६१४, ६५;	अच्चित्तमंत	४१८;
अक्कसिण	११५		२१२१, २३, २६,		१५१५७, ७१
			४१, ४२	अच्चेल्या	१५११६
अकालपडिबोहि	३१८, ६	अग्गणिफंडणट्टाण	१०११६	अच्चाइण्ण	३१२
अकालपरिमोइ	३१८, ६	अग्गणिय	२१४६	अच्चि	१५१२८
अक्किचण	७११	अग्गरहिय	११२३	अच्चुय	१५१२५
अक्किरिय	४१११, १३,	अग्गार	२१३६, ३७, ३६	अच्चुसिण	११६६
	१५, २२, २४,		से ४२, १५११,	अच्छ	११५२; ३१५६
	२६, २८, ३०,		२६; १६११	अच्छ	
	३२, ३४, ३६	अग्गारि	२१३६, ३७,	-अच्छाहि	६१२६
अक्कंत	११३५		३६ से ४२	अच्छि	२११८; ३१२८
अक्कोस		अग्गिद्ध	११५७	अच्छिद्ध	
-अक्कोसति	२१२२,	अग्ग	१५१२८	-अच्छिद्धेज्ज	३१६, ११,
	५१; ३१६१;	अग्गजाय	११११५		६१; ५१५०; ६१५८;

-अच्छिद्रेज्ज ३६, ११, ६१, ५५०, ६५८, ६१६; १३१२६, ३३, ६३, ७०, १४१२६, ३३, ६३, ७०	अज्झवसाण १५१२८, १०	अट्ट (अष्टम्) १५१२६, गा० २, ५
-अच्छिद्वेत्ति ५१, ५०; ६५८	अज्झोववज्ज -अज्झोववज्जेज्जा ११११६; १२११६, १५१७२ से ७६	अट्टमं १५१३ अट्टमी ११२१
अच्छिद्वित्ता १३१२७, ३४, ६४, ७१, १४१२७, ३४, ६४, ७१	अज्झोववज्जमाण १५१७२-७६	अट्टासीत्ति १५१२६, गा० ३ अट्टि ११३५
अच्छिद्वमल १३१३६, ७३; १४१३६, ७३	अज्झोववन्न १११०५	अट्टिय १११०४, १३४, १३५
अच्छुप्प १५१२६	अट्ट १०१३३, १११६; १२१६	अट्टिरासि ११३, ५१, १३५, ५३६, ६४२
अच्छेज्ज १११२ से १७, २६; २३ से ८, ५१५ से १०, ६४ से ६, ८३ से ८; ६३ से ७, १०१४ से ६	अट्टालय १०१२१; १११६, १२१६	अट्टाइज्ज १५१३३
अच्छेयगक्करी ४१११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६	अट्ट (अर्थ) ११२०, ३०, ४१, ४८, ५६, ६०, ८६, १०३, १२०, १२१, १२३, १२६, १३७, १४६, १५३, २१२३, २६, २८, २६, ३८, ४३, ७७, ३१२३, ४६, ६२, ४११८, ३६, ५१२२, ४०, ५१; ६१२१, ४३, ५६; ७६, २२, ५० से ५२, ५३, ५८, ८३, ११, ६११७, १०१२६; १११२०; १२११७; १३१८०, १४१८०; १५११३	अणंत १५११, ३८, ४०; १६१२, ६
अजाण (अजानत्) १११३६, ४१		अणतरहिय ११५१, १०२, ५३५, ६३८, ७११०; १०११४
अज्झत्थवयण ४३, ४		अणंबिल ११६६
अज्झत्थिय १३११; १४११		अगगार ७१, १५१७८
		अणगारिया १५११
		अणज्झोववण्ण ११५७
		अणणुन्त(ण्ण)विय ११५४, ७३; १५१५६
		अणणुवीड १५१५८, ६२
		अणणुवीड्ढासि १५१५१

अणह्यंकरौ ४।११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६	अणालोड्य १।१२७; १५।४८	अणिस्तिव १६।७
अणत्तद्विय १।१२ से १७, २१, २४; २।३ से ८, १०, १२, १४, १६; ५।५ से १०, १२; ६।४ से ६, ११; ८।३ से ७, ८, १०, १२, १४; ९।३ से ८, १०, १२, १४; १०।४ से ६	अणावाय १।४४, ५।६ से ५८, १२३; १०।२८	अणीहड १।१२ से १६; २।३ से ७, ५।५ से ६; ६।४ से ८; १०।४, ६
अगभिव्कंत १।४: ३।१	अणासाळं १५।७५	अणु १५।५७, ७।१
अगभिव्कंतकिरिया २।३७	अणासायमाण २।७४; ३।२७, ३५, ५०, ५२; ८।२८	अणुकंपय १५।५
अणल ५।२६: ६।३०	अणासेविय(त) १।१२ से १६, १७, २१, २४; २।३ से ८, १०, १२, १४, १६; ५।५ से १०, १२; ६।४ से ६, ११; ८।२; ९।३: १०।४ से ६	अणुगच्छ -अणुगच्छाहि ५।२२; ६।२१
अणहि १।१३५	अणिकंप २।४६; ५।३६ से ३८; ६।३६ से ४१; ७।११ से १३	अणुजाण -अणुजाणवेज्जा ७।२५ -अणुजाणावेज्जा ७।३२, ३६ -अणुजाणेसि १५।३१
अणाइल १५।३४, ३७	अणिच्च १६।१	अणुण -अणुणविज्जा ७।२३ -अणुणवेज्जा २।४७; ७।४, ६, ४६
अणागय ४।७	अणिमंतेमाण १।४१; २।४८	अणुण(न्त)विय १।५४; १५।५६; ७।३
अणागयवयग ४।३, ४	अणिसट्ट १।१२ से १७; २।३ से ८; ५।५ से १०; ६।४ से ६: ८।३ से ८; ९।३ से ७; १०।४ से ६	अणुत्तर १५।१, ३६, ३८, ४०; १६।१, ५
अणागाढ २।१८	अणिव्वणकरी ४।११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६	अणुपत्त १५।२६
अणाढायमाण १।२७	अणिरिय ४।१	
अणापुच्छिता १।१३०	अणायार ४।१	
अणामंतिय १।१२७	अणारिय ३।८, ६	
अणारिय ४।१		
अणारिय ४।१		
अणारिय ३।८, ६		

अणुपदा	अणुपेहा	१४२, ४३;	अणोसणिज्ज	५५ से १०,
-अणुपदेज्ज	७६	२४६ से ५६; ३२,	१२, १४, १५, २२ से २५,	
-अणुपदेज्जा	१११	३, ७१४ से २१	२८, २९; ६४ से ८,	
अणुपदातब्ब	११३६	अणुप्पसूय	१११२	११, १३, १४, २१ से २६,
अणुपविट्ठ	११, ४ से ८,	अणुल्लिप		२६, ३०, ४६; ७२६,
११ से १७, २१, २३,		-अणुल्लिपति	१५२८	२७, २९, ३०, ३३,
२४, ३६, ४२, ४३,		अणुल्लिपित्ता	१५२८	३४, ३६, ३७, ४०,
४६, ५०, ५२, ५३,		अणुवय		४१, ४३, ४४;
५५, ५८, ६१, ६२,		-अणुवयति	५४७, ६५५	८१, ८१
८२ से ८४, ८७, ८९,		अणुवीड	२४७, ४३, ५,	अणोग्गहणसील
९०, ९२ से ९४, ९६		३८, ७४, ६, ८,	२३, ४६, ४६;	१५६०,
से ९६, १०१, १०२,		१५५८, ६२		६१
१०४ से ११६, १२३		अणुवीड्ढासि	१५५१	अणोज्जा
से १२६, १२८, १३३		अणूणा	१५२६, गा०२	१५२३
से १३६, १४४ से		अणोगाह	३१२, १३	अणोवयमाण
१४७, १५१ से १५४,		अणेल्लिस	१६१२	२३७
६४६		अणोसणिज्ज	१११, ४, ६,	अणण(न्न)
अणुपविस		१२ से १७, २१, २४,		१३३, १०५;
-अणुपविसिस्सामि	१४६	३५, ३६, ४१, ६९ से		२३०; ४५, १६;
-अणुपविसेज्जा	११२३,	८०, ८२ से ८५, ८७,		५२०, ४८; ६१६,
२३०, ३५६, ६०,		८८, ९० से ९६,		५६; ७२, ५० से ५२;
५४८, ४६; ६५६,		१०२, १०४, १०६ से		१५४३, ५०
५७, ८१		११६, १२१, १२३,		अणणतर(यर)
अणुपविसित्ता	१३३,	१२८, १३३ से १३६,		१३, २४,
४७, २१; ७२, ८१		२४८, ५७ से ६०;		३१, ५१, ८८, ९६,
अणुपविसेत्ता	११२३			१०४, १०६ से
अणुपविस्समाण	१३५			१११, ११३ से ११६,

अणतर(यर) ७५६;	अतिहि १।१६, १७, २१,	अदिन्न(ण) ७।२ ;
१०।४ से ८; ११।१ से	२४, ४६, ५५, ५८,	१५।५७ से ६२
१८; १२।१ से १६;	१४७, १५४ ; २।७,	अदीणमाणस १५।३७
१३।८, ९, १७, १८,	८, ३६, ३७, ३९, ४०;	अदुगुच्छिय १।२३
२४ से २७, ३२, ३४	३।२ से ५ ; ५।९,	अदुट्ट १६।३
अणत्थ २।१७, ७३ ;	१०, २० ; ६।८, ९,	अदुवा ४।२
८।२६	१९; ८।७, ८; ९।७,	अदूरगय १।१२७, १३६
अणमण १।३२; २।५।१	८, १०।८, ९	अदूरसामंत १५।३८
से ५४, ७४; ५।४६,	अतीत ४।७	अदीणमाणस १५।३४
४७, ४८ ; ६।५४ से	अतुरियभासि ४।३८	अद्धजोयण १।२६; ३।१४;
५६; ७।९, १६ से १९;	अतेण २।३०	५।४; ६।३
८।२८, ९।१६	अत्तद्वियं १।१२ से १६, १८,	अद्धम १५।८
अणमणकिरिया	२२; २।३, ७, ९, ११,	अद्धणवम १५।३
१।४।१ से ७८	१३, १५, १७ ; ५।५	अद्धमासिय १।२१
अणयरी २।२५	से ९, ११, १३; ६।४	अद्धहार २।२४; ५।२७;
अणया १५।८	से ८, १०, १२; ८।३	१३।७६; १४।७६;
अणसंभोइय ७।७	से ७, ९, ११, १३, १५;	१५।२८
अण्हयकर १५।४५, ४६	९।३ से ७, ९, ११, १३,	अघारणिज ५।२९;
अण्हयकरी ४।१०, १२,	१५; १०।४ से ८, १०	६।३०
१४, २१, २३, २५,	अत्थ १५।२६, गा० १	अविकरणीय १५।४५, ४६
२७, २९, ३१, ३३,	अत्थिय १।११८	अधुव ४।२. ५।२९, ६।३०
३७,	अथिर ५।२९ ; ६।३०	अनिट्टुर ४।११, १३,
अतिरिच्छिन्न १।४;	अदट्टुं १५।७३	१५, २२, २४, २६,
७।२७, ३०, ३४, ३७,	अदत्तहारि ५।४८, ६।५६	२८, ३०, ३२, ३४, ३६
४१, ४४	अदिट्ट ११।१९, १२।१६	अन्नउत्थिय १।८ से ११
अतिथि १।४२, ४३	अदिण्णादाण ७।१,	अन्नत्थ १।१२४
	१५।५७ ६३	अन्नमन्न २।२२

अन्नयर १।२५, ३३, ६३, ८७, १०१, १०८, १०९, ११३, ११५, ११६, २।१८, १९, २१, ४६, ७१	अपरिभुक्त ६।४ से ९, ११; ८।३ से ८, १०, १२, १४, ९।३ से ८, १०, १२, १४, १०।४ से ९	अप्य(अल्प) २।२, ३२, ५१ से ६१, ६६, ७६; ३।५, ४०, ४४ ४५; ५।२, २६, ३०, ६।२, ३०, ३१, ७।२७, २८, ३०, ३४, ३५, ३७, ३८, ४०, ४१, ४२, ४४, ४५, ८।२, २३, ३०; ९।२; १०।३, २८; १५।५७, ७१
अन्नोन्नकिरिया- सत्तिक्रय १४ अन्नोन्न १।१५५.२।६७, ५।२१, ८।२०, ७।५६, ८।२१	अपरिसाह २।७६, ८।३० अपरिहृगिता २।३४ अपरिहारिय १।८ से ११, १२७, १३६ अपलिञ्चमाण ५।४१ अपमु ७।१ अपाणय १५।२६, ३८ अपारग १६।१० अपावय १५।४५ अपाविय १५।४६ अमुत्त ७।१ अपुरिसंतर १।१२ से १७, २१, २४, २।३ से ८, १०, १२, १४, १६, ५।५ से १०, १२; ६।४ से ९, ११, ८।३ से ८, १०, १२, १४, ९।३ से ८, १०, १२, १४, १०।४ से ९	अप्य (आत्मन) १।५७, १२१, २।२३, २८, २९, ३८, ३।२२, ४४, ५६ से ६१, ५।२२, ४६, ४९, ६।२१, ५४ से ५८; ७।६, ५३, १५।३, ३६, ४१, ४३, ५०, ५७, ६४, ७१
अपडिसुणमाण ४।१२ से १५ अयमज्जिय १।५४, ७।३ अपरिणय १।६६, ११२ अपरितावणकरी ४।११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६ अपरिभुक्त. १।१२ से १७, २१, २४, २।३ से ८, १०, १२, १४, १६, ५।५ से १०, १२;	अप्य (अल्प) १।२, ४३, ५१, १२१, १३३, १३४, १४४, १५१;	अप्यडट्टिय १६।१२ अप्यजूहिय १।४४ अप्यडिहारिय २।५९ अप्यतर ३।१४ अप्यत्तिय ७।२४ अप्यसावज्जकिरिया २।४२ अप्याङ्गण ३।३

अप्याण ११३३, ३६; ३१२२, २६, ४४, ५६, ६१	अवहिया ११७, २१, २४; २।८, १०, १२, १४, १६; ५।१०, १२; ६।१०, १२; ८।३ से ८, १०, १२, १४; ९।३ से ८, १०, १२, १४, १०।४ से ८, १०	अभिकंख -अभिकंखसि १।६३, ६६, १३५; ५।२२ से २४, ४६ से ४८; ६।२१ से २४, २६, ५४ से ५६
अप्पुस्सुय ३।२२, २६, ४४, ५६, ६०, ६१; ५।४८, ४९; ६।५६ से ५८, १५।१५	अवहिलेस्स ३।२२, २६, ४४, ५६ से ६१; ५।४८, ४९; ६।५६ से ५८	-अभिकंखेज्ज ६।३८ -अभिकंखेज्जा २।१, २८, २९, ५७, ६८, ६९, ७२, ७३; ५।१, ३५ से ३८, ६।१, ३९ से ४१; ७।२५, २६, ३२, ३६, ३९, ४३; ८।१, २२, २३, २६, २७, ९।१, २
अफस्स ४।११, १३, १५, २२, २४, २६, २८, ३०, ३२, ३४, ३६	अब्भंग -अब्भंगाहि ६।२२ -अब्भंगेज्ज २।२१; ६।३२, ३५; १३।१४, ५१; १४।१४, ५१	अभिककंत १।५, ३।२६ अभिककंतकिरिया २।३६ अभिकखण २।३३; १५।६१, ६५
अफासुय १।१, ४, ६, १२ से १७, २१, २४, ३६, ४१, ६३ से ८०, ८२ से ८५, ८७, ८८, ९० से ९६, १०२, १०४, १०६ से ११६, १२१, १२३, १२८, १३३ से १३६; २।४८, ५७ से ६०; ५।५ से १०, १२, १४, १५, २२ से २५, २८, २९; ६।४ से ८, ११, १३, १४, २१ से २६, २९, ३०, ४६, ७।२६, २७, २९, ३०, ३३, ३४, ३६, ३७, ४०, ४१, ४३, ४४; ८।१; ९।१	अब्भगेत्ता ६।२२; १५।२८	अभिकिण्ह -अभिकिण्हइ १५।३४ अभिकिण्हेत्ता १५।३५ अभिकिण्ह १५।३४, ३५ अभिकिण्हमण १५।२६, गा० १, १५।२७; अभिकिण्हचारिय ३।४४
	अब्भुवगय ३।१ अभज्जिय १।४ अभासा ४।९ अभिकखं ४।१० से १५, २० से ३६	

अभिद्व	१६।२	अभिहय	१।३५	अरह	१५।२६, गा० ६
अभिपवुट्ट	३।१	अभीरु	१६।१	अरहंत	४।७
अभिप्याय	१५।२६, २७	अभूतोवधाइया	४।११,	अराय	३।१०, ११
अभिमुह	१५।२८, २९		१३, १५, २२, २४,	अरिह	१५।३९
अभिह्व	४।२०, २२, ३०		२६, २८, ३०, ३२,	अरोय	१५।८ से ११
अभिसंवार			३४, ३६	अलं	५।३०, ६।३१
-अभिसंघारेज्ज	१।३५,	अभेयणकरी	४।११, १३,	अलंकार	१५।२९
	४२, ४३		१५, २२, २४, २६,	अलकिय	२।२४, ११।१६;
-अभिसंघारेज्जा	१।२६,		२८, ३०, ३२, ३४,		१२।१३
	२८, २९, ३२, ३४,		३६	अलसग	२।२१
	५।४, ६।३; ११।१	अमणुण्ण	१५।७२ से ७६	अलाउपाय	६।१
	से १८, १२।१ से १६	अमयवास	१५।१०	अलाभ	२।६५, ६६;
-अभिसंघारेति	९।१६	अमाया	२।४४		७।५४, ५५
अभिसंघारेमाण	१।२९	अमिल	५।१४	अलित्त	३।१९
अभिसंभूय	३।१	अमुग	४।१३	अलूसय	१६।४
अभिसमेक्ख	१५।४१	अमुच्छिय	१।५७	अल्लीण	१५।२४
अभिसेय	१५।११	अम्मा	१५।१८	अवउज्जिय	१।८९
अभिहट्ट	१।१३५, १३६	अम्मापिउ	१५।२६	अवंगुण	
अभिहड	१।१२ से १७,	अम्मापिउसतिय	१५।१६	-अवंगुणिज्ज	१।५४
	२९, २।३ से ८,	अम्मापियर	१५।१३, २५	-अवगुणेज्जा	२।३०
	५।५ से १०, ६।४	अम्ह	१।१२१	अवकख	
	से ९, ८।३ से ८,	अयपाय	६।१३	-अवकंखति	१।१४७,
	९।३ से ७; १०।४ से ९	अयवघण	६।१४		१५४; ५।२०; ६।१९
अभिहण		अरइय	१३।२८ से ३४,	अवकमेत्ता	५।३९
-अभिहणेज्ज	१।८८ ;		६५ से ७१; १४।२८	अवक्कम	
	२।१९, ४६, ७१ ;		से ३४, ६५ से ७१	-अवकमेज्जा	५।३९
	८।२५; १५।४४,	अरण	१५।५७	-अवक्कमे	१०।२८
	४७, ४८				

-अवकमेज्जा १२,३, ४४,५१,५६,५८, १२३,१३५; ३११५, ६१४२; १०१२८	अवहर -अवहरंतु ३१४० -अवहरेति ५१५०, ६१५८	अस -संति ११३२,४६,१२१, १२२,१३०; २१४४ -सिया १२,२८,३४, ३६,५१,५७,८७, १०२,१२३,१३१, १३३,१३५,१३६, १४३; २११८,२८, ३११२ से १४,२५, २६,३०,३४,३७, ४४,६०; ५१२२,२३, २६,२७,४७,४९; ६१२७,४७,५५,५७, १५१५२ मे ५५,६०, ६१,६५ से ६७,६९
-अवकमेति १५२८	-अवहरेज्ज ३१६,११, ६१; ५१५०; ६१५८	
अवकमेत्ता १२,३,४४, ५१,५६,५८,१२३, १३५, ३११५; ६१४२; १५१२८	अवहार १५१५ अवहाराड ११४९	
अवद्विय १५१४९,५६, ६३,७०,७७	अवि १११ अविदलकड ११४	
अवड्डुमाय १११६	अविद्धत्थ ११६६,११२; ३१७,१३	
अवणीयउवणीयवयण ४१३,४	अवियाई ११५७,१२१, १३०, २१३८; ३१५४,५७, ५१२२, ४७, ६१५५	असई ११७ असईय १०११ असखेज्ज १५१२६,गा० ५, १५१२७
अवणीयवयण ४१३,४		असंजय ११२६,१०२, ५११२
अवमाण ११३५	अनुक्कंत ११११२	असथड ४१३२
अवमाणिय ४११६	अवोच्छिन्न ७१२७,३०, ३४,३७,४१,४४	असंलोय ११४४,५६,५७, ५८,१२३; १०१२८
अवयव २११८		असंविज्जमाण ५१३
अवर १५१२८, गा० १३	अव्वहित(य) १५१३४, ३७	असंसट्ट ११८१,१४१, १४३,१४८
अवलव -अवलंवेज्जा ८१७ से २०	अव्वाघाय १५११ अव्वाहय १५१३८,४० अव्वोक्कंत ११६६ अव्वोच्छिन्न ११४,	
वलंविय ११६२; ३१४२		
वल्लय ३११६		
वहट्टु ११८८; ६१४४, ४५		

असञ्चामोसा ४६, १०, ११	असिणाणय २।२७	अहापञ्जत्त १।१३०
असज्ज १६।७	असित १६।७	अहापरिग्गहिय ५।४१
असण १।१, १।१ से १।७, २।१, २।३ से २।५, ३।६ से ४।१, ४।४, ४।५, ५।६, ५।७, ६।३ से ६।५, ६।४, ६।५, ६।७ से ६।८, १।२१, १।२३, १।२७, १।२९, १।४१, १।४२, १।४५, १।४८, १।४९, १।५२, २।२८, ४।८, ४।२, २।३, २।४ ; ६।२६ ; ७।५; १।१।१८, १।२।१५, १।५।१३	असुद्ध १।३।७८; १।४।७८	अहापरिण्णात्त २।४७, ७।४, ६।८, २।३, २।५, ३।२, ३।९, ४।६, ४।९
असणवण १।०।२७	असुभ १।५।५	अहाबद्ध २।६०, ६।१
असत्यपरिणय १।१०६ से १।१०, १।१३ से १।१९	असुय १।१।१९-१।२।१६	अहावावर १।५।२७
असमणुन्नाय १।१।२८	असुर १।५।२८, गा० १।२, ३।३, १।५।२९, ३।९	अहामग्ग १।५।७८
असमाहड १।३।६	असोगलया १।५।२८	अहाराम १।०।२८
असमिय १।५।४४, ४।७	असोगवण १।०।२७	अहारिय ३।२।२, ३।४ से ३।६
असावज्ज ४।१।१, १।३, १।५, २।२, २।४, २।६, '२८, ३०, ३।२, ३।४, ३।६	अस्स १।५।२८	अहारिह १।५।२५
असासिय १।५	अस्संजय १।६।२, ६।३, ६।५, ६।८, ६।९, ६।१५, ६।६, १०।४, २।१०, १।२, १।४, १।६, २।१, ३।१४; ६।९; ८।१०, १।२, १।४ ; ९।१०, १।२, १।४	अहालंद २।४।७, ७।४, ६। ८, २।३, २।५, ३।२, ३।९, ४।६, ४।९
असिणाइ १।४।९	अस्सकरण १।०।१८	अहावर १।१।४२ से १।५।३; २।६।४ से ६।६, ५।१।८ से २०, ६।१।७ से १।९; ७।५० से ५।५, ८।१८ से २०; १।५।४।५ से ४।८, ५।०, ५।२ से ५।५, ५।७, ५।९ से ६।२, ६।४, ६।६ से ६।९, ७।१, ७।३ से ७।६
	अस्सजुद्ध १।१।१२-१।२।९	अहासंथड २।६।६; ७।५।५
	अस्सट्ठाणकरण १।१।११, १।२।८	अहासमण्णागय २।६।५, ७।५।४
	अस्सादा	
	-अस्सादेइ १।५।७।५	
	अह(अथ) १।१।८	
	अह(अहन) १।५।१।३	
	अहाकप्प १।५।७।८	
	अहाणुपुब्बी १।५।१।४	

अहासुय	१५।७८	आइणसलेख	७।२१	आउसंत	१।३२, ५७,
अहासुहुम	१५।२७	आईणपाउरण	५।१५		१०१, १२७,
अहिय	१५।२८	आईय	१५।२६, गा० २		१३०, १३५; २।४७;
अहियास		आउ	१५।३		३।१७ से २१, ४४,
-अहियासइस्सामि		आउकाय	१।६३; २।४१,		४५, ५१, ५३, ५४,
	१५।३४		४२; १५।४२		५६ से ५८, ६१;
-अहियासेइ	१५।३७	आउकखय	१५।३, २५		५।१३, २२, ४६ से
अहुणा	३।१	आउज्ज	१५।२८,		४८, ५०, ६।२१,
अहुणाधोय	१।६६		गा० १७		२६, ५४ से ५६;
अहे(अघस्)	१।२, ३, ३२,	आउट्ट			७।४, ६, ८, २३, २५,
	५१, १३५; ५।३६;	-आउट्टामो	१।३२		३२, ३६, ४६, ४९
	१५।२७ : १६।१०	-आउट्टावेज्जा	२।२५;	आएस	१।१२४; २।७२;
अहेगामिणी	३।१४		१३।७८; १४।७८		३।४७; ८।२६
अहेसणिज्ज	२।४४; ३।२,	-आउट्टे	१३।७८;	आएसण	२।३६ से ४२;
	३; ५।४१		१४।७८		४।२१, २२
अहो(अघस्)	१५।३८	-आउट्टेज्जा	२।२५	आकस	
अहोगंध	१।१०५	आउट्टित्तए	२।२५	-आकसाहि	३।१७
अहोणिसी	१५।३२,	आउय	१५।३	-आकसिस्सामो	३।१८
	गा० १६	आउस	१।२५, ६३, ६६,	आकसित्तए	३।१८
आइ(ति)	१५।१३, ४२		१०१, १२३, १३०,	आगतार	१।१०५;
आइक्ख			१३५, १४३, २।३४,		२।३३ से ३५, ४७,
-आइक्खइ	१५।४२		४२, ४७, ६३, ६४ ;		७।४, ६, ८, २३, ४६,
-आइक्खह	३।५४ से ५८		४।१३, १५ ; ५।१८,		४६
-आइक्खेज्जा	३।४५,		२२ से २६, ६।१७,	आगति	१५।३६
	५४ से ५८		२१ से २७; ७।४;	आगय(त)	३।६, ११,
आइण	१।३५, ४२, ४३		६, ८, २३, २५, ३२,		४।२; १५।७२ से ७६
आइणसंलिख	२।५६		३६, ४६, ४६, ५७	आगर	१।२८, ३४, १२२,

शब्द-सूची

६५

आगर २१, ३२, ३, ४५, ५७, ५८, ७२, ८१	आदि ८१७ से २०	आमोसग ३६०, ६१;
आगरमह ११२४	आविष १३१७६;	५१४६, ५०;
आगसह	-आविषेज्ज १३१७६;	६५७, ५८
-आगसह ३१४४	१४१७६	आयकं ५१२; ६१२
-आगसेज्जा ३१४४	आभरण ५११५; १११८;	आयक ५११४
आगाढ २१८	१२११५; १५१२८,	आयतण ११३३६; २३३६
आघंस	गा० ६; १५१२६	से ४२, ६२; ३१४७,
-आघंसंति २१५३;	आभरणविचित्त ५११५	४५, २१, २२;
७१८	आम ११११५ से ११६	५११६; ६११५;
-आघंसाहि ६१२३	आमंति ४११२ से १५	७१४७; ८११६
-आघसेज्ज २१२१;	आमंतेमाण ४११२ से १५	आयरिय ११३०, १३११;
५१३१, ३३,	आमग १११०६ से ११०,	२१७२; ३१४६ से
६१३३, ३६	११३, ११४	५१; ८१२६
आघंसित्ता ५१२३,	आमज्ज	आया
६१२३	-आमज्जेज्ज ११५१,	-आयए ११३३१
आघा	३१३१, ३२ से ३८,	आयाए १३३७, ३८, ४०,
-आघाएज्जा १११०५	३६, ६१४८, ४६,	४४, ५१, ५६, ५७,
आजिणग ५११४	१३१२, १२, १६,	१२३, १३०, १३११;
आणट्टग १५१२८, गा० १७	२८, ३६, ४६, ५६,	३११५, ४११, ५१४५;
आणा १११५५, २१६७,	६५, ७७, १४१२,	६१४७ से ५०, ५३
५१२१, ६१२०	१२, १६, २८, ३६,	से ५८; १०१२८,
७१५६, ८१०१,	४६, ५६, ६५, ७७	१५१२६
१५१४६, ५६, ६३,	आमज्जमाण ११८५	आयाण(आदान) ११२६,
७०, ७७, ७८	आमडाग ११११२	३२, ३५, ५१, ५६,
आतंक १३११, २१२१	आमय १११११	८५, ८८, ९१, ९५,
आदाए १११२७, ५१३६,	आमलगपाणग १११०४	१२३; २११६, २१
६१४२, ७१	आमोय १०११७	से २५, ४६, ७१,

आयाण(आदान) ३१६, ११,१३,४२,४६; ५१२७; ६१२८,४५; ८१२५	आरामागार ११०५; २१३३ से ३५,४७; ७४,६,८,२३,४६, ४६	१२३,१२७,१३१, १३५,१३६,१३८, १४३; २६३,६४; ५११८,२२ से २६; ६११७,२१ से २७; ७१६
आयाणभंडमत्त- णिकखेवणा १५१४७	आराहिय " १५१४६,५६, ६३,७०,७७,७८	६११७,२१ से २७; ७१६
आयाम ११०१,१५१	आरुह	आलय ११६२
आयाय ११२	-आरुहइ १५१२८, गा १०	आलोगणा २१२५
आयार २१३६,३७,३६ से ४२; ४१	-आरुहेज्जा ११८८	आवज्ज -आवज्जेज्जा ११३२; १५१७२ से ७६
आयाव	आलइय १५१२८, गा ६	आवज्जमाण १५१७२ से ७६
-आयावेज्ज ११५१; २१२१; ३१३१,३६; ५१३५ से ३६; ६१३८ से ४२,४८,४६	आलय १५१३४	आवज्जमाण १५१७२ से ७६
आयावण १५१३८	आलिग	आवडिय ११३५
आयाविय २१६६; ८१२३	-आलिगेज्ज ६११६	आवास १६११
आयावेत्तए २१२६; ५१३५ से ३८, ६१३८ से ४१	आलिप	आविइत्ता १११२६
आयावेमाण १५१३८	-आलिपेज्ज १३१८,१७, २४,३२,४५,५४, ६१,६६; १४१८, १७,२४,३२,४५, ५४,६१,६६	आविघ -आविघावेत्ति १५१२८
आयाहिण १५१२८	आलिक्ख १५१३२	आविघावेत्ता १५१२८
आरंभ २१४१,४२, १६११	आलोइत्ता १५१२५	आवीकम्म १५१३६
आरंभकड ४१२२,२४	आलोइय १५१४८	आवीलियाण ११०४
आराम ११२,३२,१३५; १०१२०; १११८; १२१५; १३१७७; १४१७७	आलोएत्तए १५१६६	आस ११५२; ३१४५,५६
	आलोएमाण १५१६६	आसण ४१२६; १५१६६
	आलय	आसम ११२८,३४,१२२; २११; ३१२,३,४५, ५७,५८; ७१२; ८११; १११७; १२१४
	-आलोएज्जा ११२५,५७, ६३,६६,१०१,	

शब्द-सूची

६७

आसय	२।७५; ८।२६	-आहंसु	१।४६, १३८	-आहारेष्वा	१।३३, ४७,
आसव		-आहु	१६।१०		१२३
-आसवति	३।२२	आहञ्च	१।२, १३५, १३६,	-आहारेज्जासि	१।१३६
आसवमाण	३।२२		२।१८, ६।४७	आहारातिणिय	३।५७,
आसाढसुद्ध	१५।३	आहट्टु	१।१२ से १७,		५२, ५३
आसाय	१।१०५		२५, २६, ५६, ५७,	आहारेत्तए	१।३३
आसाय			६३, ८६, ६५, १०२,	आहिज्ज	
-आसाएज्जा	२।७४,		१०४, १२३, २।३ से	-आहिज्जंति	१५।१६,
	३।२७, ३५, ५०, ५२;		८; ५।५ से १०,		१७, १८, २३, २४
	८।२८		६।४ से ६, ४६;	आहिय	१६।११
आसित्ता	१।३१		८।३ से ८,	आहुय	१५।१२ १३
आसेविय(त)	१।१२ से	आहड	१।१२३	आहेण	१।४२, ४३
	१६, १८, २२, २।३	आहय	१।१।४, १२।११		
	से ७, ९, ११, १३, १५,	आहर			
	१७, ५।५ से ६, ११,	-आहर	३।१८, ६१,		
	१३; ६।४ से ८, १०,		५।२२ से २५, ५०,		
	१२; ८।३ से ७, ९,		६।२१ से २५, ५८		
	११, १३, १५;	-आहरई	१।१३२		
	६।३ से ७, ९, ११, १३,	-आहरह	१।१३८, १३६		
	१५, १०।४ से ८,	आहाकम्मिय	१।२६,		
	१०		१२१, १२३, २।३८,		
आसोत्थववाल	१।१०६		६।२६		
आसोत्थमथु	१।१११	आहार	१।३३, ४७, १२३,		
असोय	१५।५		१२७		
आह		आहार			
-आहिज्जंति	१५।२३,	-आहरिस्सामि	१।१३६		
	२४				

इक्कड २।६३, ६५; ७।५४	ईसाण १५।२८, गा० ११	उगह १।५४
इक्कागकुल १।२३	इसि १५।२८, २९	उच्चार १।५१; २।१८,
इच्छ	ईहामिय १५।२८	३०, ७१; १०।१ से २८
-इच्छइ १।१३०	उ	उच्चार
-इच्छेज्जा ७।२६, ३३,	उउ १।२१	-उच्चारिज्जा १५।४६
४०; ८।१६	उंछ २।४४; ३।२, ३	उच्चारपासवणभूमि
इट्ट ११।१९, १२।१६	उंवरमंथु १।१११	२।७०, ७१; ८।२४, २५
इट्टि १५।२७	उक्कंविय २।१०; ८।१०,	उच्चारपासवण-
इतरेतर १।३३, ४७;	६।१०	-सत्तिककय १०
३।३८ से ४०	उक्कस	उच्चावय २।२३ से २५;
इयराइयर २।४१।४२	-उक्कसाहि ३।१७	३।२६, ४४
इति १।२५	-उक्कसिस्सामो ३।१८	उच्छु १।११६; ७।३३ से
इत्थ १।४६	-उक्कसेज्जा ३।१४	३५
इत्थिय २।२०	उक्कसित्तए ३।१८	उच्छुगंडिय १।१३३,
इत्थिविगह १।३२	उक्किट्ट १५।२७	७।३६ से ३८
इत्थी ४।५, १४, १५;	उक्कज्जिय १।८९	उच्छुचोयग १।१३३,
७।१४; ११।१८;	उक्कट्ट १।८०	७।३६ से ३८
१२।१५; १५।६५,	उक्कडुय २।६५, ६६;	उच्छुडगल १।१३३;
६६, ६७, ६९; १६।७	७।५४, ५५; १५।३८	७।३६ से ३८
इत्थीवयण ४।३, ४	उक्क १।२१, २४	उच्छुमेरग १।११३
इदाणि १।१३६	उक्कलुंपिय १।६२	उच्छुमेला १।१३३
इम २।४४	उक्कित्त २।४४; १५।२८,	उच्छुवण ७।३२
इयर २।४१	गा १२	उच्छुसालग १।१३३;
इरिया १५।४४	उक्कित्तप्प ३।६	७।३६ से ३८
इहलोइय ११।१९	उक्कित्तप्पमाण १।४९	उच्छोल
ईसर २।४७; ७।४, ६, ८,	उगिज्जिय ७।५, ७	-उच्छोल्लेति २।५४,
२३, २५, ३२, ३९,	उगकुल १।२३	७।१९
४६, ४९	उगय १५।२८	

-उच्छ्रोलेज्ज	१।६३, २।१८, २१; ५।३२, ३४, ६।३४, ३७, १३।७, १६, २३, ३२, ४४, ५३, ६०, ६६, १।४।७, १६, २३, ३२, ४४, ५३, ६०, ६६	उज्झिम्य	१।१३३, १३४, १।४७, १।५४	उत्तिग	२।१, २, ३१, ३२, ५।७ से ६१, ६८, ६६; ३।१, ४, ५, २१, २२, ५।२८, २६, ३०, ३५; ६।२६ से ३१, ३८; ७।१०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८।१, २, २२, २३; ९।१, २: १०।२, ३, १४, २८
-उच्छ्रोलेहि	१।६३, ५।२४, ६।२४	उज्जु	१।५।२७, ३८	उदल्ल	१।६४, ६५, १०.२, ३।३०, ३१, ३७, ३८, ६।४८
उच्छ्रोलेत्ता	१।६३, ५।२४, ६।२४	उज्जुगामिणी	३।१४	उदग	३।२५ से ३०, ३७, ५५; ६।४७
उज्जुवालिया	१।५।३८	उज्जुमिय	१।६२, ३।१६, ४७	उदगदोणि	४।२६
उज्जाण	४।२६, ३०; १०।२०; ११।८, १२।५; १३।७७, १४।७७, १५।२६	उत्तम	१।५।२८, गा० १०	उदगपमूय	३।५५
उज्जाल		उत्तर		उदगप्पसूय	२।१४; ८।१४; ९।१४
-उज्जालेतु	२।२३	-उत्तरेज्जा	३।४२	उदय(उदक)	१।२, ४२, ४३, ५।१, ८२, ८३, १०.२, १३५; २।१, २, ३१, ३२, ४६, ५।७ से ६१, ६८, ६६; ३।१, ४, ५, ७, १३, १४, २०, २२, ३४ से ३६, ४५, ५५, ५६, ६०;
-उज्जालेज्ज	२।२१, २३, २६	उत्तरगुण	१।५।२५		
उज्जालिया	२।४०, ४१	उत्तरपुरत्तियम	१।५।२७, ३८		
उज्जालेत्ता	२।२१	उत्तरिज्जग	५।१६		
उज्जुय	१।५०, ५२, ५३, ६१, २।४४; ३।६, ७, ४१, ४३	उत्तस			
उज्जोय	१।५।६, ४०	-उत्तसेज्ज	३।४६		
उज्झर	१।१।५; १।२।२	उत्ताण	१।१३१, ७।६		
		उत्तिग	१।२, ४२, ४३, ५१, ८२, ८३, १०.२, १३५;		

उदय(उदक) ५।२८ से	-उद्वेतु २।२२	उब्भव १५।३
३०, ३५, ४८, ४९;	उद्वणकरी ४।१०, १२,	उब्भिन्न ३।१
६।२९ से ३१, ३८,	१४, २१, २३, २५,	उब्भिय १।८३, १३६
५६, ५७; ७।१०, १४,	२७, २९, ३१, ३३, ३५	उब्भिदमाण १।९१
२६ से ३१, ३३ से ३८,	उद्विसिय १।६२; २।६३;	उम्भग ३।२८, ४०, ५९,
४० से ४५; ८।१, २,	३।४७; ५।१७; ६।१६	६०; ५।४८, ४९;
२२, २३; ९।१, २;	उद्वेसिय १।२९;	६।५६, ५७
१०।२, ३, १४, २८	१०।४ से ९	उम्भस्स १।१, २
उदयो(उदय) १५।२६गा२	उद्वट्टु ३।६	उरत्थ १३।७६; १४।७६;
उदर १।८८; २।१९, ४६,	उपासग ४।१३	१५।२८
७१; ३।२१; ८।२५	उप्पइत्ता १५।२७	उराल १५।१५, १६
उदरी ४।१९	उप्पज्ज	उल्लोयण १५।२८
उदाहु १।१३६	-उप्पजंति १५।३४	उल्लोल
उदि १।१३६	उप्पण १५।४१, ४२	-उल्लोलेज्ज १३।६, १५,
-उदेउ ४।१६	उप्पणि	२२, ३१, ४३, ५२,
उदीण १।२७, १२१,	-उप्पणिति १।८२	५९, ६८; १४।६, १५,
१४३, १५०;	-उप्पणिसु १।८२	२२, ३१, ४३, ५२,
२।३६ से ४२	-उप्पणिसंति १।८२	५९, ६८
उदीरिय १६।३, ६	उप्पय	-उल्लोलेति १५।२८
उदूहल १।८८, २।१६	-उप्पयंति १५।२७	उल्लोलेत्ता १५।२८
उद्व १।८८, २।१६	उप्पयत १५।९, ४०	उवणस १।५६, ८५, ९१,
-उद्वंति ३।६१;	उप्पल १।११४; १।१५;	९५, १२३; २।१९,
५।५०; ६।५८	१।२।२	२१ से २५, २७ से ३०,
-उद्वेति २।२२ से ५१;	उप्पलनाल १।११४	४६, ७१; ३।९, ११,
७।१६	उप्पिजलग १५।९, ४०	१३, ४९; ५।२७;
-उद्वेज्ज ३।९, ११;	उप्पील	६।२८, ४५; ८।२५
१५।४४, ४७, ४८	-उप्पीलावेज्जा ३।१४	
	उप्फेस ३।२५	

उवकर		उवट्ट		उवरय	११२१; २१२५, ३८; १६१६
-उवकरेसु	६१२६	-उवट्टेज्ज	११५१;	उवखरि	३१२२
-उवकरेज्ज	१११२३, २१२८	३१३१; ६१४८, ४६;		उवलित्त	११५१
-उवकरेहि	१११२३, ६१२६	-उव्वट्टेज्ज	२१२१	उवल्लिय	
उवकरेत्ता	६१२६	उवट्टाण	२१३५	-उवल्लिएज्जा	३११ से ३; ७५५४
उवक्खड		उवट्टिय	१११५५; २१६७, ५१२१, ६१२०;	-उवल्लियइ	२१३०
-उवक्खडावेत्ति	१५११३		७५५६; ८१२१;	-उवल्लिस्सामि	
-उवक्खडेमु	६१२, ६		१५१२७		
-उवक्खडेज्ज	१११२३; २१२८	उवणिक्खित्त	११८७, १४३		७५५० से ५२
-उवक्खडेहि	१११२३, ६१२६	उवणिमंत		उवल्लीण	२१५५; ७१२०
उवक्खडावेत्ता	१५११३	-उवणिमत्तेत्ति	१५११३	उववण्ण	१५१२५
उवक्खडिज्जमाण	१११२४	-उवणिमतेज्जा	१११३५, ७५५, ७	उववाय	१५१३६
उवक्खडिय	११४५, २१२८, ४१२३, २४	उवणिमतेत्ता	१५११३	उवसंकम	
उवक्खडेत्ता	१११२३; ६१२६	उवणीय	१५१२८, गा०७	-उवसंकमत्ति	११४६
उवगय(त्ति)	१५१४, ७, ८, २६, २६, ३८	उवणीयअवणीयवयण		-उवसंकमामि	११४६
उवगरण	३१६०, ६१		४१३, ४	उवसंकमित्तु	११३२, १२४, ३१२२, ६१; ५१४६, ४७, ४८, ५०; ६१५४ से ५६
उवचरय	३१३०, ३१६, ११	उवणीयवयण	४१३, ४	उवसंखडिज्जमाण	११४४
उवच्चिय	४१२६	उवदसिय	३११६	उवसग्ग	२१७६, ८१३०; ६५१३४, ३७
उवज्झाय	१११३०, १३१ २१७२, ३१४६ से ५१, ८१२६	उवदिट्ठ	११५६, ८५, ६१, ६५, १२३; २११६, २१ से २५, २७ से ३०, ४६, ७१; ३१६, ११, १३, ४६, ५१२७, ६१२८, ४५; ८१२५	उवसज्ज	
				-उवसज्जेज्जा	८११७ से २०

उवस्सय १२, २६, ३२, १३५; २१ से ८, १०, १२, १४, १६, १८ से २५, २७ से ३२, ३८, ४५ से ५६, ६५; ४२६; ७१४ से २१; १०२८	उवागच्छित्तए ७२५, ३२, ३६ उवागच्छिता २१३८ से ४२; १५१२७ से २६ उवागत(य) ११४२; ४३; ३२ से ५; १५१३, ५ उवातिणावित्ता २१३४, ३५ उवासिया ४११५ उवित्तु १११४३ उवे -उवेति १६११ उवेह -उवेहेज्जा ११५७, १२३; ३१७ से २१, २४, ५४ से ५८, ६१; ५१५०; ६१८ उवेहमाए १६१४ उव्वट्ट -उव्वट्टेति २१५३; ७११८ -उव्वट्टेज्ज २१२१ उव्वत्तमाण ११८५ उव्वल -उव्वलेति २१५३; ७११८ -उव्वलेज्ज ११५१; २१२१; ३१३१, ३२, ३६;	-उव्वलेज्ज ६१४८, ४६; १३१६, १५, २३, ३१, ४३, ५२, ५६; १४१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६ उव्वाय १५१२६, ३१ उव्वाह -उव्वाहेज्जा २१२१ उव्वाहिज्जमाण २१३०; १०११ उव्वेड्डु -उव्वेड्डिज्ज ३१२५ उस ११५१, ८२, ८३, १०२, १३५; २११, २, ३१, ३२, ५७ से ६१, ६८, ६९, ५१२८ से ३०, ३५, ६२६, ३०, ३८; ७११०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८११, २, २२, २३, ६११, २; १०१२, ३, १४, २८ उसम १५१२८ उसमवत्त १५३, ६ उसिण ४१३७ उसिणोदग ११६२; २११८, २१, ५४;
---	---	--

उसिणोदग	५।२४, ३२, ३४; ६।२४, ३४, ३७; ७।१६; १३।७, १६, २३, ३२, ४४, ५३, ६०, ६६; १४।७, १६, २३, ३२, ४४, ५३, ६०, ६६	ऊसस -ऊससेज्ज	२।७५; ८।२६	एगज्ज एगत्तिय एगया एगवयण एगाभोय एगावली	१।३२ १।५७ २।७६ ४।३, ४ ३।१५ २।२४; ५।२७; १।५।२८
उमुयाल	५।३६, ६।३६, ७।११	एग	१।१२, १।४	एगाह	३।१२; ५।४६; ४७; ६।५४, ५५
उस्सविय	१।८८	एगइय	१।३१, ३२, ४६, ४७, ५७, १२१ से	एज्ज	
उस्सास	१।५।२५		१२३, १३०, १३१, १३२, १३८, १४३,	-एज्जासि -एज्जाहि	६।२१ ५।२२
उस्सासमाण	२।७५; ८।२६		१।५०; २।३६ से ४२, ४४; ४।१६ से २१, ३५, ३६; ५।४६, ४७; ६।५४, ५५;	एताव एत्ता	१।५।४६ २।४७, ७।४, ६, ८, २३, २५, ३२, ३६, ४६, ४६
उस्सिच्च			१।११ से १६, १।२।१ से १३	एत्तो	१।२५, ६३, १०१, १३८; २।६३, ६४, ३।५४ से ५६, ५८, ५।१८; ६।१७
-उस्सिच्चहि	३।२०		१।२, ३, ४४, ५१, ५६, ५८, १२३, १३५; ३।१४;	एत्त्य	१।६८; २।३०; ३।४५; ४।२
-उस्सिच्चेज्जा	३।१४		५।३६; ६।४२, १।५।२८	एय	१।२६
उस्सिच्चण	३।२०, २१	एगंतगय	३।२२, २६, ४४, ५६ से ६१; ५।४८, ४६; ६।५६, ५७, ५८; १०।२८	एयप्पगार	६।१२१, १३५; २।२५, ३६, ३।२२, २५, ४५, ६१; ४।१२ से १६, २० से ३६;
उस्सिच्चमाण	१।८५				
उस्सिच्चियाण	१।१०१				
उस्सुय	१।५।१५				
उस्सुयभूय	१।३३				
उस्सेइम	१।६६				
ऊ					
ऊरु	१।८८, २।१६, ४६, ७१; ३।२१, ८।२५				
ऊस	१।६८, ६६				
ऊसढ	१।५७, २।१६, ४।२४, ३४				

एय्यपगार	५।२२ से २५,४७,५०; ६।२१ से २५,५५,५८	एसिय	१।३३,४६,१२३, ७।५,७	ओघाययण	१०।२४
एयाणि	५।२५	एसियकुल	१।२३	ओट्टुच्छिन्न	४।१६
एयारूव	१५।३४	ओ		ओणमिय	१।६२; ३।१६, ४७
एरिसिय	२।२४	ओगाह		ओद्धट्ट	१।१०२
एव	१।२	-ओगाहिस्सामि	३।२६	ओभास	
एवं	१।१८	-ओगाहेज्जा	३।१४	-ओभासेज्ज	१।५८,
एस	१।५६	ओगिण्ह			५६,१२४
एसणा	१।६१; २।४४, ५।२२,६।२१,१६।२	-ओगिण्हिस्सामि		ओमचेलिय	५।४१
एसणिज्ज	१।५,७,१८, २२,२३,२५,३६, ८१,१००,१०१, १२८,१४१ से १४६, १५१ से १५४; २।६१,६३,६४; ५।११,१२,१३,१७ से २०,३०; ६।१०, १२,१६ से १६,३१, ७।२८,३१,३५,३८, ४२,४५, ६।१	ओगिण्हिस्सामो	७।४, ६,८,२३,२५,३२, ३६,४६,४९	ओमाण	१।३५
एसमाण	५।२२, ६।२१	-ओगिण्हेज्ज	७।३,१० से २१	ओमुय	
एसित्तए	२।१,५७,६२; ५।१,१६; ६।१,१५	-ओगिण्हेज्जा	१५।६०, ६२	-ओमुयइ	१५।२६
एसित्ता	१।१२३	ओगिण्हत्तए	७।४८	ओयंसि	४।२०
		ओग्गह	७।३ से २१,२३ से २६,३२,३३,३६, ४०,४६ से ५५,५७, १५।६०,६१	ओयत्तियाणं	१।१०१
		ओग्गहणसीलय	१५।६०, ६१	ओयस्सि	२।२५
		ओग्गहपड्डिमा	७	ओयारेमाण	१।८५
		ओग्गहिय	७।५,७,९,२४, २६,३३,४०,४७, १५।६०,६१	ओल्पमाण	१।६१
				ओल्लित्त	१।६०,६१
				ओवय	
				-ओवएज्जा	२।३३
				-ओवयंति	२।३६,३७
				ओवयंत	१५।६,४०
				ओवयमाण	२।३०,३६, ३७, १५।२७
				ओवाय	१।५३
				ओविय	१५।२८

ओस	११२, ४२, ४३, ३१९, ४, ५	कंद	८१४; ६१४; १०१२, १५, १३१७८, १४१७८	कज्जलाव	
ओसविकय	११६५	कदर	१५१४	-कज्जलावेति	३१२२
ओसत्त	१५१२८ गा० ७	कदरकम्मत्त	२१३६ से ४२, ३१४७, ४१२१, २२	कज्जलावेमाण	३१२२
ओसप्पिणी	१५१३	कदलया	१५१२८	कट्टु	११२२, १३१, १३८, २१२१, २६, ३६, ६, ११, १४, २२, ६१; ५१३१ से ३४, ४८, ५०, ६१३२ से ३७, ५६, ५८; ७६; १५१५, १६, २६, ३१, ३२
ओसहि	११४, ५, ४१३३, ३४	कदलीऊमुय	११११६	कट्टु	११५१
ओसित्त	१११, ३५	कवल	३१६, ११, ६१	कट्टुकम्म	१२११
ओह	१६११०	कंबलग	५११४	कट्टुकम्मत्त	२१३६ से ४२; ३१४७, ४१२१, २२
ओहरिय	११८६, ६५	कस (पाय)	६११३	कट्टुकरण	१५१३६
		कसतालसद्	१११३	कट्टुसिला	७५५५
		कक्क	२१२१, ५३, ५१२३, ३१, ३३, ६१२३, ३३, ३६, ७१८; १३१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८; १४१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८	कडग	२१२४; ५१२७
		कक्कस	४११०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २६, ३१, ३३, ३५	कडव	१०११७
		कक्कखड	४१३७	कडिय	२११०, ८११०; ६११०
		कक्खरोम	१३१३७, ७४, १४१३७, ७४	कडुय	१११३८; ४११०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २६, ३१,
		कच्छ	३१४८, १११६; १२१३		
		क			
कओ	३१५१, ५३				
कख					
-कखेज्जा	३१४६, ५६, ६०, ५१४८, ४६, ६१५६, ५७				
कचि	११६३				
कटकवोदिय	११५४				
कंटय(ग)	११५३, १३४, १३५, १३१०, ४७, १४११०, ४७				
कंत	११११६; १२११६, १५१२८				
कद	२११४, ३१५५, ५१२५; ६१२५,				

कडुय	४३३, ३५, ३७	कणसोय	१११ से १८	कम्मकरी	२२२, २५, ३६ से
कडुवेयणा	१३१७६; १४१७६	कणसोहणय	७६		४२, ५१ से ५५, ६४,
कड्ढावेत्तु	१३१७८; १४१७८	कण्ह	४३७		५१८; ६१७,
कड्ढेत्तु	१३१७८; १४१७८	कण्हराइ	१५२६ गा०५		७१६ से २०
कट्ठिण	२१६३, ६५; ७५४	कन्न	११६६	कम्मभूमि	१५२६ गा०४
कण	१११६	कपिजलकरण	१०१८	कम्मार	१५३५
कणकुडग	१११६	कप्प		कय	१०१११; १५१६
कणग(य)	५१५; १५२६, २८	-कप्पइ	११२१, १२३, १३५; २२५, ३०, ३८; ५२२, २५,	कयाइ	१५१८
कणगकत	५१५			कर	
कणगखडय	५१५			-अकासी	२३०
कणगपट्ट	५१५			-करिसु	१५११
कणगफुसिय	५१५	-कप्पेज्ज	१३३७, ७४, १४३७, ७४	-करिस्संति	१५२५
कणगावलि	२२४; ५२७	कप्प	२३४, ३५, ३४, ५, १५२५, २६ गा० ५	-करिस्सामि	७१
कगपूयलिय	१११६	कप्पखल्ल	१५२८	-करेइ	३४४; १५२८, ३०, ३२
कणियारवण	१५२८ गा० १५	कम	१५३६	-करेति	५४७; ६५५, १५१३
कणुय	११४	कम्म	२४१, ४२; ७१; १५११, २८	-करेज्जा	१३३, ४६, ४६, ५७, ६१, १२३, १२५ से १२७, १३० से १३२, १३८; २२७, ७५; ३१५, २५, २८, ४०, ५१ ; ५४६ से ४८; ६५४ से ५६; ७२४; ८२६; १५४३
कण्ण	३२८	कम्मकर	१२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३; २२२, २५, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४;		
कण्णच्छिन्न	४१६				
कण्णमल	१३३६, ७३; १४३६, ७३				

-कारवेज्जा	१५।४३	कविट्टसरड्डय	१।११०	कामभोग	१५।१५
-कीरति	१।१३६	कवोयकरण	१०।१८	काय	१।३५, ५।१, ८८;
-कुञ्जा	१।२६, २।१२, ३।६१; ५।४६, ४८, ५०, ६।५४, ८।१२; ९।१२	कवोयजुद्ध	१।१।२, १।२।६	२।१६, २।१, ४६, ७१, ७३, ७४, ३।१५, २।१, २।७, ३० से ३२, ३४ से ३६, ५०, ५२, ५६, ६०, ४।२५, २६, ५।४८, ४६, ६।५६, ५।७, ८।१७ से २०, २५, २७, २८, ९।१६, १३।१२ से ३५, ४६ से ७२, १४।१२ से ३५, ४६ से ७२, १५।३४, ३५, ३७, ४३, ४६, ५०, ५६, ५।७, ६३, ६४, ७०, ७१, ७७, ७८	
करत	१५।४३	कव्वड	१।२८, ३४, १२२, २।१, ३।२, ३, ४५, ५।७, ५८, ७।२, ८।१	कसाय	१।१२६, १।३८, ४।३७
करणिज्ज	३।६१; ४।२१, २३, ५।५०, ६।५८, ७।६	कसिण	१।४, १।५।१, ३८	कसेस्सा	१।१।३३
करीरपणग	१।१०४	कहइत्तए	१।५।६५	कहक्कह	१।५।६, ४०
करेत्ता	३।१५, १।५।५, २८, ३२	कहमाण	१।५।६५	कहा	१।५।६५
करेमाण	२।७५, ८।२६	कहिं	३।५।१, ५।३	कहिय	१।५।३६
कलंकलीभाव	१।६।१२	काणग	१।१।१६	काणिय	४।१६
कलह	१।१।१५, १।२।१२	काम	१।१।३०, १।३६; २।४७, ७।४, ६८, २३, २५, ३२, ३६, ४६, ४६	कामगुण	१।६।७
कलिय	१।५।२८	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	कामभोग	१५।१५
कलुण	२।२१, ३।६१, ५।५०, ६।५८	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	काय	१।३५, ५।१, ८८;
कलोवाइ	१।२१, २।४	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	२।१६, २।१, ४६, ७१, ७३, ७४, ३।१५, २।१, २।७, ३० से ३२, ३४ से ३६, ५०, ५२, ५६, ६०, ४।२५, २६, ५।४८, ४६, ६।५६, ५।७, ८।१७ से २०, २५, २७, २८, ९।१६, १३।१२ से ३५, ४६ से ७२, १४।१२ से ३५, ४६ से ७२, १५।३४, ३५, ३७, ४३, ४६, ५०, ५६, ५।७, ६३, ६४, ७०, ७१, ७७, ७८	
कल्लाण	४।२१, २३	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	काय(पाय)	६।१३
कवाल	१।३५	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	कायक	५।१४
कविजलजुद्ध	१।१।१२, १।२।६	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	काय(बंधग)	६।१४
कविजलट्टाणकरण	१।१।११; १।२।८	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	कायव्व	१।१।३६
कविट्टुपणग	१।१०४	कामजल	५।३६, ६।३६, ७।११	कारण	१।५।६, ८।५, ९।१, ९।५ १२३; २।१८, १६, २१ से २५, २७ से २९, ४६, ७१; ३।६, ११, १३, ४६, ५।२७, ६।२८, ४५; ८।२५

कारिय १०११	किरिया २।३४, ३५;	कुक्कुडकरण १०१८
काल १।३३, ४७, १०६;	१०१	कुक्कुडजाइय १।६१
१५।१, ४, ८, २५,	किलाम	कुक्कुडजुद्ध ११।१२, १२।६
२६, २८ गा० १४	-किलामेज्ज १।८८,	
काल्माय १५।२६	२।१६, ४६, ७१;	कुक्कुडट्टाणकरण ११।११;
काल्मास १५।२५	८।२५	१२।८
कालाइवकंत २।३४	किलीब १।३२	कुक्कुस १।७६, ८०
कास	किवण १।१६, १७, २१,	कुच्चग २।६३, ६५, ७।५४
-कासेज्ज २।७५; ८।२६	४२, ४३, १४७,	कुच्चमाण २।४४
कासमाण २।७५; ८।२६	१५४; २।७, ८, ३६,	कुच्छि १५।३, ५, ६, १२, १३
कासवगोत्त १५।५, १५,	३७, ३६, ४०; ३।२	
१७, १६, २०, २१, २३	से ५; ५।६, १०, २०;	कुट्टि ४।१६
कासवणालिय १।११८	६।८, ६, १६; ८।३	कुणिय ४।१६
किचि १।१२६, १३१	से ८; ६।३ से ७,	कुपक्ख ४।१२, १४
किच्च २।४१, ४२	१०।८, ६; १५।१३	कुप्प
किच्चा ३।१५, ३४;	किविण १।२४, ४६	-कुप्पति ४।१६, २०
१५।२५	कीय १।१२, १७; २।३	कुमार १५।१३
किट्टरासि १।३, ५१,	से ८; ५।५ से १०,	कुमारी २।२४
१३५, ५।३६; ६।४२	१२; ६।४ से ६;	कुराइ १।४१
किट्टिता १५।७८	८।३ से ८; ६।३ से	
किट्टिय १५।४६, ५६,	७, १०।४ से ६	कुल १।१, ४ से ८, ११ से
६३, ७०, ७७	कीयगढ १।२६	१७, १६, २१, २३,
किण	कुजर १५।२८, १६।२	२४, ३३, ३६, ३७,
-किणेज्ज २।२६; ३, १४	कुंडल २।२४, ५।२७,	४० से ४७, ४६, ५०,
किण्हमिगाईणग ५।१५	१५।२६ गा० ३	५२ से ५५, ५८, ६१,
किम् ३।५१	कुमिपक्क १।११८	६२, ८२ से ८४, ८७,
किरिकिरियसद्द १।१३	कंभीमुह १।२१, २४	८६, ९०, ९२ से ९४,

कुल १।६६ से ६८, १०१, १०२, १०४ से ११६, १२२ से १२६, १२८, १३३ से १३६, १४४ से १४७, १५१ से १५४, २।२१, ३०, ३३ से ३५, ४७ से ५०, ५।४२, ४५, ६।४४ से ४६, ५०, ५३, ७।४, ६, ८, १५, २३, ४६, ४९, १५।१२, १३, ३८	कूरकम्म ३।२६ केयइवण १०।२७ केवइय ३।४५ ५७, ५८ केवलवरनाणदंसण १५।१, ३८, ४० केवलि १।२८, ३२, ३५, ५१, ५६, ८५, ८८, ९१, ९५, १२३; २।१६, ४६, ७१; ३।६, ११, १३, ४२, ४६; ५।२७, ६।२८, ४५; ८।२५, १५।३६, ४४, ४७, ४८, ५१ से ५५, ५८ से ६२, ६५ से ६६, ७२ से ७६	कोडिण्णागोत्त १५।२२ कोयहा(वा?) ५।१४ कोलज्जाय १।८६ कोलपाणय १।१०४ कोलमुणय १।५२; ३।५६ कोलावास १।५१, ८२, ८३, १०२; ५।३५; ६।३८; ७।१०; १०।१४ कोसम १।१४५, १५२ कोसियगुत्त १५।२४ कोह ४।१, ३८, १५।५०, ५२ कोहण १५।५२ कोहि १५।५२	
कुलत्थ १०।१६ कुलिय ४।२६, ५।३७, ६।४०, ७।१२	केस ८।२०; १५।३१ कोउगभूइ १५।११ कोकतिय १।५२; ३।५६ कोट्ट	खत्ति १५।३६ खंदमह १।२४ खंध १।८७, २।१८; ७।३८; ६।४१; ७।१३; १०।१३ खंधजाय १।११५ खघवीय १।११५ खच्चियंत १५।२८ खञ्जरपाणम १।१०४ खञ्जूरिमत्त्यय १।११५	खत्त
कुविद ३।२१ कुवमाण २।४४ कुस २।६३, ६५; ७।५४, १५।२५	कोट्टित्ति १।८२ कोट्टिस्सित्ति १।८२ कोट्टेसु १।८२ कोट्टागक्क १।२३ कोट्टिमत्तल १५।१४ कोट्टियाओ १।८६ कोडालसगोत्त १५।३, ६ कोडि १५।२६ गा०२, ३		
कुसपत्त ३।२१ कुसल १५।२८, १६।४ कुसुम १५।२८ गा०७, १४, १५ कुसुमिय १५।२८ गा० १४ कूडागार ३।४७, ४।२१, २२			

खणित्तु १३।७८; १४।७८	खाणी १०।२५	खेमपद १६।६
खत्तिय १।४१; १५।५	खाणु १।५३; १३।१०,	खेल १।५१; २।१८
खत्तियकुल १।२३	४७; १४।१०; ४७	खेल्लावणघाई १५।१४
खत्तियाणी १५।५, ६,	खाणुय १०।१७	खोमय ५।१४; १५।२८
८ से. १३	खारडाह १०।२३	गा० ६
खद्ध १।४६, ५७, १२४,	खिप्पामेव ३।२५, २६, ४०;	खोमिय ५।१, १७
१३०	१५।३२ गा० १८	खोल १।११२
खम	खिव-	
-खमइ १५।३७	-खिवाहि ३।१७	च
-खमिस्सामि १५।३४	-खिविस्सामो ३।१८	गंड १३।२८, ३४, ६५ से
खय १५।३	खिवित्तए ३।१८	७१; १४।२८ से ३४,
खरमुहिसद्द ११।४	खीर १।४६	६५ से ७१
खलु १।१६	खीरघाई १५।१४	गंडागकुल १।२३
खहचर ३।४६	खीरिज्जमाणी १।४४	गंडी ४।१६, २६
खाइम १।१, १।१ से १७,	खीरिणी १।४४, ४५	गंतुं २।५०; ४।२६, ३०;
२१, २३ से २५, ३६,	खीरिया १।४५	७।१५
४१, ४४, ४५, ५६,	खीगेयसायर १५।३१	गंधिम १।२।१; १५।२८
५७, ६३ से ८१, ८४,	खुज्जिय ४।१६	गंध १।१०५; ४।३७;
८५, ८७ से ९८, १०१,	खुहु २।२०; ७।१४	१५।१५, ७४
१२३, १२७, १२६,	खुडाय १।४६	गंधकसाय १५।२८
१४१, १४२, १४५,	खुड्डिया १।२६, २।१२,	गंधमंत ४।८
१४८, १४९, १५२;	४५; ८।१२; ९।१२;	गधवास १५।१०
२।२८, ४८; ४।२,	११।१६; १२।१३	गच्छ
२३, २४; ६।२६;	खुड्डु २।४५	-गच्छवेज्जा १५।६४
७।५; ११।१८;	खेड १।२८, ३४, १२२,	-गच्छिहिह ३।५१, ५३
१२।१६; १५।१३	२।१; ३।२, ३, ४५,	-गच्छे १।२७
खाओवसमिय १५।३३	५७, ५८, ७।२; ८।१	

गच्छेज्जा ११५०, ५२, ५३, ५७, ६१, १२७, १३०, १३१, १३६; ३१६, ७, ४०, ४१, ४३, ५६ से ६१, ५४८ से ५०; ६५६ से ५८, ७६, १५६४	गच्छेत्त १४१, १५६४	गच्छेत्ता १५७, १२७, १३०, १३१, १३६, ७६	गज्जदेव ४१६	गज्जल ५१४	गड्डा ३४१, ४७, ४२१, २२	गद्विय ११०५	गण १७२८ गा० १४, १५	गणाराय ३१०, ११	गणहर ११३०, १३१, २१७२; ८२६	गणावच्छेदय ११३०, १३१, २१७२, ८२६	गणि ११३०, १३१ २१७२; ८२६	गति १५३६	गठ्भ १५११, ३, ५, ६ १२, १३	गच्छिभय ४३४	गमण ११२६, २८, २६, ३२, ३४, ३५, ४२, ४३, ३८ से १४, ५४, ६३; ६१, २, १६; ११११ से १८, १२११ से १६	गमणिज्ज ३१२, १३	गय १५३३, १६१२	गयजूहियट्टाण १११३, १२११०	गयण १५२८ गा० १४, १५, १६	गरहिता १५२५	गग्निह -गरिहामि १५४३, ५०, ५७, ६४, ७१	गरुय २१५८	गरुल १५२८ गा० १२, १३	गत्रायणी १०१५	गहण ३४२, ४८, ५६, ६०, ५४८, ४६, ६५६, ५७, ११६; १२१२	गहाय ११३५; ३१७, १८ २४ से २६, ४८, १०२८; १५२८	गा ४२७, २८	गात(य) २२१, ५२ से ५४	गाम १२८, ३४, ४६, १२२; २११; ३२, ३, ४५, ५७, ५८, ७२, ८१, ११७, १२१४; १५३५, ५७	गामंतर ५४१	गामवम्म १३२	गामपिडोल्लग १५५, ५८, ३४५	गामरवत्तकल १२३	गामससारिय ३६१; ५४५०; ६५८	गामाणुगाम १११०, ३६, ४०, ४६, १२२, १३८ १३६; २१७०; ३१, ४ से १४, ३२ मे ३४, ३६ से ४४, ४७ मे ५०, ५२ से ६१; ५४४ ४५, ४८ मे ५०, ६५२, ५३, ५६ मे ५८, = २४	गामि १५२६ ३८
--	--------------------	---	-------------	-----------	---------------------------	-------------	-----------------------	----------------	------------------------------	---------------------------------------	----------------------------	----------	------------------------------	-------------	--	-----------------	---------------	-----------------------------	----------------------------	-------------	--	-----------	-------------------------	---------------	---	---	------------	----------------------	---	------------	-------------	-----------------------------	----------------	-----------------------------	--	--------------

गाय ७१७ से १६	गाहावइओग्गह ७५७	गिरिकम्मंत २।३६ से
गायंत १११६; १२।१५	गाहावइणी १।३२, ४६,	४२; ३।४७;
गारत्थिय १।८ से ११	१२१, १२२, १४३;	४।२१, २२
गामी १।४४, ४५	२।२२, २५, ३६ से	गिरिमह १।२४
गाहावइ १।१, ४ से ८, ११	४२, ५० से ५५,	गिल
से १७, १६, २१,	७।१६ से २०	-गिलाइ १।१३८, १३६
२३ से २५, ३२, ३६,	गिज्झ	-गिलाएज्जा २।७६
३७, ४०, ४२ से ४६,	-गिज्झेज्जा १।११६,	गिलाण १।१२४, १३८;
४६, ५०, ५२ से ५५,	१२।१६;	२।७२, ८।२६;
५८, ६१ से ६३, ८२	१५।७२ से ७६	१३।७८; १४।७८
से ८४, ८७, ८९, ९०,	गिज्झमाण १५।७२ से ७६	गिलासिणी ४।१६
९२ से ९४, ९६ से	गिण्ह	गिह २।४८; ४।२६
९६, १०१, १०२,	-गिण्हंति ५।४७, ६।५५	गिहेल्लुग ५।३६; ६।३६;
१०४ से ११६, १२१,	-गिण्हवेज्जा ७।२;	७।१०
१२२, १२४ से १२६,	१५।७१	गीय(ट्टाण) १।११४;
१२८, १३३ से १३६,	-गिण्हहि १।१०१	१।२।११
१४३ से १४७, १५१	-गिण्हिस्सामो २।४७	गुंजालिया ३।४८; १।१५;
से १५४; २।२१,	-गिण्हेज्ज ७।३	१।२।२
२५, २७ से ३०, ३३	-गिण्हेज्जा १।१०१;	गुच्छ ३।४२
से ४२, ४७, ५०, ५५,	५।४६, ६।५४;	गुज्झाणुचरिय ४।१७
६४, ३।२२, २६, ६१,	७।२	गुण २।२४; ५।२७
५।१८, ४२, ४५, ५०;	गिण्हंत ७।२; १५।७१	गुणमंत १।१२१, २।२५,
६।४४ से ४६, ५०,	गिद्ध १।१०५	३।८
५३, ७।४, ६, ८, ९,	गिद्धपिट्ठट्टाण १०।१६	गुत्त १५।३४, ३७
१५ से २०, २३, ४६,	गिम्ह १५।३, ८	गुत्ति १५।३६
४७, ४९; १०।१२,	गिरि १५।१४; १६।३	गुम्म ३।४२
१५, १६, ३८		गुर्य ४।३७।

गुल	१४६	घ	चउत्य	११४४, १५१,
गोणह		घंटा	१५२८	२६६, ४६; ५२०,
गोण्हावेज्जा	१५१७,	घडदास	४१२, १४	६१६, ७५२,
	७१	घट्ट	२१०, ५१२,	८२०, १५३, ३८,
गोण्हाहि	३२४		६६, ८१०.	४७, ५४, ६८, ७०,
गोण्हज्जा	१५१७		६१०, १०११	७५
गोण्हज्जा	१५१८, ६१,	घण	१५२८ गा० १७	चउप्यय
	७१	घय	१४६; २२१, ५२,	११४७, १५४
गोण्हंत	१५१७		६२२, ३२, ३५,	चउमुह
गोख्य	११७४, ७५		७१७, १३५, १४,	१०२२; ११२०
गोवेय	१३१७६, १४७६		२१, ३०, ४२, ५१,	चउम्मह
गोण	१५२, ३५४, ५६,		५८, ६७, १४५, १४,	१२१७
	४२५, २६		२१, ३०, ४२, ५१,	चउयाह
गोदोहिया	१५३८		५८, ६७	३१२, ५४६,
गोपुर	१०२१; ११६,	घसी	१५३	४७, ६५, ५५
	१२६	घाण	१५१७४	चउवग
गोप्लेहिया	१०२५	घात	३२६, ४४	६१६
गोमयरासि	१३, ५१,	घास	१६१	चंगवेर
	१३५, ५३६,	घोस	१५३२ गा० १८	४२६
	६४२			चंदण
गोयम	१५४२			१५२८
गोयर	२३६, ३७, ३६ से	च	१४६	चदणियय
	४२	चडत्ता	१५११, ३, २५	१६२
गोरमिगाईणग	५१५	चड	१२१, २४; २६२,	चदणभा
गोरह	४२७		६७	१५२८, २६
गोल	४१२, १४	चउक्क	१०२२;	१५२६
गोसीस	१५२८		१११०, १२१७	१५२८
गोहियसह	११३			गा० १५
				चपय
				१५१४
				चक्क
				३१३, ५६
				चक्कु
				१५२८, ७३
				चक्कुदसण
				१२११ ने १६
				चक्कर
				१०२२ १११०.
				१२३
				चत्त
				१५३४ ने ३६
				चमर
				१५३८

चम्म	२।४६	चलाचल	२।४६; ५।३६	चित्तमंत	६।३८; ७।१०;
चम्मकोस	२।४६	से ३८;	६।३६ से ४१;	१०।१४; १५।५७, ७१	
चम्मकोसग(य)	३।२४,	७।११ से १३		चित्तचिल्लड	३।५६
	७।३, २४	चवल	१५।२७	चित्तचिल्लडय	१।५२
चम्मग	३।२४	चाउमासिय	१।२१	चिय	४।२६
चम्मछेदग	२।४६	चाउल	१।६, ७, ८, २,	चिराघोय	१।१००
चम्मछेदणग	३।२४;	१।६, १।४४		चिलिमिली	२।४६;
	७।३, २४	चाउलपिट्ठ	१।११६	३।२४, ७।३, २४	
चम्मपाय	६।१३	चाउलोदग	१।६६	चीणमुय	५।१४
चम्मवधग	६।१४	चामर	१५।२८ गा० ११	चीवर	३।२५; ५।४२ से
चम्मय	७।३, २४	चार	३।४६		४५
चय		चारिय	४।१२, १।४	चीवरधारि	३।२५
-चड्ससामि	१।५।४	चारु	१।५।२८	चुंब	
-चए	१।६।१	चालिय	१।६।२	-चुवेज्ज	६।१६
-चएज्ज	१।६।७	चिचापाणग	१।१।०४	चुण्ण(न्न)	२।२।१, ५।३,
चयण	१।५।३६	चिघ	१।५।२७		५।२।३, ३।१, ३।३;
चयमाण	१।५।४	चिच्चा	१।५।२६		६।२।३, ३।३, ३।६,
चयोवचइय	४।८	चिट्ठ			७।१।८; १।३।६, १।५,
चर		-चिट्ठेज्जा	१।४।४, ५।५,		२।२, ३।१, ४।३, ५।२ ५।६,
-चरे	१।६।६		५।६, ५।८, ६।२, १।२।३;		६।८, १।४।६, १।५, २।२,
चरंत	१।६।२		३।३।० से ३।७;	चुण्णवास	१।५।१०
चरित्त	१।५।३।२, ३।३		८।२।७, २।८	चुय	
	गा० १।८; १।६।३।३	चिट्ठमाण	१।५।७, ८।२।८	-चुएमि	१।५।४
चरिम	१।५।२।५	चित्त	१।५।२।८	चुय	१।५।१, ३, २।५
चरिया (चर्या)	२।४।४	चित्तकम्म	१।२।१	चेइय	३।४।७, ४।३।८
चरिया (चारिका)		चित्तमंत	१।५।१, ८।२, ८।३,	चेइयकड	३।४।७; ४।२।१,
	१।०।२।१, १।१।६,		१।०।२; ५।३।५;		२।२
	१।२।६				

जण १।५७; ३।४५; १६।३	जल्ल	१३।३५, ७२;	-जाणेज्जा	१।६६ से
जणग ४।१२, १४		१४।३५, ७२		१०२, १०४, १०६
जणवय ३।० से १३	जव	१०।१६	से	११६, १२२,
जत्य १।२०, ४६, १३६;	जवजव	१०।१६	१२४ से	१२६,
३।२ से ५	जवस	३।४३, ४५, ५६	१२०, १३३, १३४,	
जन्न १५।२६, ३१	जवोदग	१।१०१, १५१	१३६, १४०, १४३ से	
जय	जस	१६।५	१४७, १५१ से	१५४;
-जए १।२०, ३०, ४१,	जसस	१५।१७	२।१ से	१०, २०,
४०, ६०, ८६, १०३,	जसंसि	४।२०	३१, ३२, ४५, ४८ से	
१२०, १२६, १३७,	जसस्सि	२।२५	६२, ६०, ६६, ३।२ से	
१५६; २।२६, ४३,	जसवती	१५।२४	५, १२, १४, १५, २६,	
७७; १३।००;	जसोया	१५।२२	३०, ३२, ३७, ३६,	
१४।०	जहाठिय	१।१३०	६०, ४।२, २, ६, ६	
-जएज्जा ६।१७	जहेव	१।१३६	से	११; ५।१, ५ से
-जएज्जासि ३।२३,	जाइ	१५।५०, ६२	१६, १६, २० से	३०,
४६, ६२; ४।१०, ३६;	जाइत्ता	१।५१; ५।४७,	४५, ४६; ६।१, ४ से	
५।४०, ५१; ६।४३,		६।५५; ७।६	१३, १५, १०, २६ से	
५६; ७।२२, ५०,	जाण		३१, ४६, ५३, ५७,	
८।२१; ६।१७;	-जाणइ	१५।४, ७, ४६	७।१२ से	२१, २६
१०।२६; ११।२०;	-जाणिज्जा	७।१०, ११	से	३१, ३३ से
१२।१७			३० से	४२, ४४, ४५,
जय			४८; ८।२ से	१५,
-जयउ ४।१६			२३, ६।१ से	१४,
जरा १५।२० गा० ७			१०।२ से	२७,
जल ३।१४, १५, ३४;			११।१७, १८;	
१५।२० गा० ७			१२।१४, १५	
जलच(य)र ३।४६, ५४,			जाण(जानत्) १।१३६;	
४।२५, २६			३।५४ से	५०, ४।१

जाण (यान)	४२६, १५२७, २८	जाव	११३३, १४४; २३७ से ४२, ४७, ५१ से ५६, ५६ से ६१, ३२, ३, ३२, ४८, ४६, ६१; ४१२ से १५.२२ से ३६, ५२३, २५, ३०, ६२२, २३, २५, २६, ३१, ४६; ७४, ६, ८, १४ से २१.२३, २५, २८ से ४६, ८१; १०५ से ६	जीव	११२ से १७, ५१, ८२, ८३, ८५, ८८, १०२; २३ से ७, १६, ४६, ७१, ५१५ से १०, २२, ३५; ६४ से ६, २१, ३८, ७१०; ८३ मे ८, २५, ६३ से ७, १०४ से ६, १४, १३७६; १४७६; १५२५, २६गा०६, १५३६, ४२, ४४, ४७, ४८, ७२ से ७६
जाणगिह	२३६ से ४२, ३४७, ४२१, २२				
जाणमाण	१५३६				
जाणसाला	२३६ से ४२; ३४७, ४२१, २२				
जाणु	१५३८				
जाणेतता	३१५, १५११३, २७				
जातिमंत	४३०				
जाय		जावद्वय	११२७, १३०, १३५		
-जाइज्जा	१५१				
-जाएज्जा	१२५, ६२, १४१ से १४५, १४७ से १५२, १५४; २४७, ६३, ६४, ६६, ३४२, ६१; ५११७ से २०, ४१, ४६, ५०, ६१६, १७, १६, ५४, ५८; ७४, ६, ८, २३, ४६, ४६, ५५; १०१	जावज्जीव	१५४३, ५०, ५७, ६४, ७१		
जाय	१११२, १५११, ३६	जिण	११५५; २६७, ५२१, ६२०; ७५६, ८२१, १५३६; १६६		
जायणा	३६१; ५५०, ६५८	जिणवर	१५२६ गा०६ १५२८ गा० ७, ८		
जालंधरायण	१५३, ६	जिणवरिद	१५२६ गा० १		
		जिठ्ठा	१५७५		
		जीय	१५१५		
		जीविज	२१६, ४६, ७१; ८२५		
		जीहा	१५७५		
		जुगमाया	३६		
		जुगव	५२, ६२		
		जुण्ण	१६६		
		जुनि	१५२७		
		जुत्त	१५२८		
		जुयल्ल	१५२८		
		जुवगव	४२८		
		जुवराय	३१०, ११		
		जूय	१२३८, ७५; १४३८, ७५		
		जूहियट्ठाण	१११३ १२१०		

जेठु	१५।२०, २१	ठवेत्ता	७६; १५।२८, २९	णंगल	४।२९
जोड	१६।८	ठा		णविवद्वण	१५।२०
जोइसिय	१५।६, ११, २७, ४०	-ठाडस्सामि	८।१७ से २०	णक्क	३।२८
जोग	१५।३, ५, ८, २६, २८, २९, ३८	ठाइत्तए	८।१, १६	णक्खत्त	१५।२६, २९, ३८
जोग्ग	४।२७, २९, ३०	ठाण	१।८८; २।१ से २५, २७ से ३२, ४४, ४६,	णगर	१।२८, ३४, १२२; २।१, ३।२३, ४५, ५७, ५८; ७।२; ८।१;
जोयण	३।१४		४९ से ५६, ७१; ८।१ से २०; ९।३ से १५, १५।३६		१।१७, १।२४; १५।२८, ३८, ५७
	क्क				
भक्ति	१५।२७	ठाणसत्तिक्कय	८	णग्गोहपवाल	१।१०९
भल्लरी	१५।२८ गा० १६	ठिडक्खय	१५।३, २५	णग्गोहमथु	१।१११
भल्लरीसद्	११।१	ठिति	१५।३९	णच्चंत	१।१।१८; १।२।१५
भाणकोट्टु	१५।३८	ठिय	२।५५, ७।२०	णच्चा	१।२६, ४०, ४२, ४३, ४४, ४५, ७५, २।५१; ३।१ से ५; ६।५३, ७।१४ से २१
भामथंडिल	१।३, ५।१, १३५, ५।३९; ६।४२, १०।२८		ड		
भाय	१६।५	डमर	१।१।१५; १।२।१२	णट्टु(ट्टाण)	१।१।१४, १।२।११
भिज्जिभरिपलंब	१।१०८	डहर	१।१।१८; १।२।१५		
भिमिय	४।१९	डागवच्च	१०।२६	णत	१६।५
भूसिर	१।१।४; १।५।२८ गा० १७	डाय	१।५७	णत्तुई	१।५।२४
		डिडिम	१।१।४५, १।५।२	णदी(ई)	३।४८, १।५।३८
		डिव	१।१।१५, १।२।१२	णदीआययण	१०।२४
			ड	णपुसक	४।५
टाल	४।३१	डंकुणसद्	१।१।२	णपुंसकवयण	४।३, ४
			घा	णभदेव	४।१६
ठव		णईमह	१।२।४	णम	
-ठवेति	१५।२८, २९	णं	१।२।५	-णमिज्जति	१६।७

णमस	णाम १।४६; १३८, १३९;	णिक्रमण १।४२, ४३;
-णमसंति १५।२८	२।२७; १५।१६, ३३	२।५०, ५३; ७।१४
णमसिता १५।२८	णामगोय २।४८	से २१
णमोक्कार १५।३२	णामघेज्ज १५।१३, १६	णिक्रमण १।६, ३८;
णर १५।२८; १६।२	से १८, २३, २४	२।४५, ४६. ५।४३,
णव ५।३१, ३२; १५।८	णाय १५।५	६।५१
णवणीय १।४६; २।२१,	णायकुल १५।२६	णिक्रित्त १।८४, ८५;
५२, ६।२२, ३२, ३५;	णायपुत्त १५।२६	२।४४
७।१७	णायव्व १।२।	णिक्रिप्पमाण १।४६
णवय ६।३१ से ३४	णायसंड १५।२६	णिक्रिव
णवर १।३४	णालिएरपाणग १।१०४	-णि(नि)क्खिवाहि
णविय १०।२५	णालिएरिमत्थय १।११५	३।६१, ५।५०;
णह ८।२०; ६।१६	णावा ३।१४ से २२,	६।५८
णहच्छेयणय ७।६	२५, २६	-णिक्रिवेज्जा ३।६१;
णहमल १३।३६, ७३;	णावागत ३।१७ से २१,	५।५०, ६।५८
१४।३६, ७३	२४, २५	
णाग १५।२८ गा० १३	णासा १५।७४	णिगच्छ
णागमह १।२४	णिकाय १५।२६ गा०६	-णिगच्छइ १५।२६
णागवण १०।२७	णिक्रम	णिगच्छिता १५।२६
णागिद १५।२८	-णिक्रमिस्सामि १।४६	णिगम १।२८, ३४, १२२;
गा० १२	-णिक्रमेज्ज १।८, ६,	२।१, ३।२३, ४५,
णाण १५।३३, ४१, ४२	१६, ३७, ३८, ४०,	५।७, ५८; ७।२,
णाणा १५।२८	४४, ४५, ५४, १२२,	८।१, १।१७.
णाणि १६।३	१२३, २।४५, ४६,	१२।४
णात्त १५।२६	५।४२, ४३, ४५,	
णांति १५।१३, १४	६।४४, ४५, ५०,	णिगिण २।५५: ७।२०
णाभि ४।२६	५१, ५३	णिगूह
		-णिगूहेज्जा १।१३१

णिग्गंथ १।३५; ५।१; १५।४२, ४४ से ४८, ५१ से ५५, ५८ से ६२, ६५ से ६९, ७२ से ७६	णिद्ध १।५७, ४।३७ णिप्फज्ज -णिप्फज्जउ ४।१६	णिलुक्क १५।३२ गा० १८ णिवइय ४।१७ णिवाय(त) १।२९; २।१२, ७२, ७६; ८।१२, २६, ३०; ९।१२
णिग्गथी ५।३	णियंत्तु १।२९, ३२	णिविट्ठु १५।२८ गा० ११ णिव्वत्त १५।१३ णिव्वाण १५।३६, ४० णिव्वेड्डु -णिव्वेड्डिज्ज ३।२५
णिग्घोस १।१२१, १३५; २।२५, ३८; ३।२५; ५।२२ से २५, ४७, ६।२१ से २५, ५५	णियंसाव -णियंसावेड १५।२८ णियंसावेत्ता १५।२८	
णिज्झर १।१।५; १।२।२	णियच्छ -णियच्छेज्जा २।२३, २४, ३।२६, ४४	
णिज्झाडत्ताए १५।६६	णियत्तिय १।५९	णिसम्म १।३३, १।२१, १।३५, २।२५, ३८; ३।२५; ४।१, ५।२२ से २५, ४७, ६।२१ मे २५, ५५
णिज्झाएमाण १५।६६	णियत्थ १५।२८ गा० ९	
णिज्झाय -णिज्झाएज्जा १।६२, ३।१६, ४७ से ४९	णियम -णियमेज्जा ६।४७	
णिट्ठाभासि ४।३, ५, ३८	णियम १।३।१ से ७८, १।४।१ से ७८	णिज्जम्मभासि ४।३८
णिट्ठिय १।१२१	णियाग २।४४	णिसिट्ठु १।१२८
णिणाय १५।२८ गा० १६, १५।३२ गा० १८	णिरालवण १६।१२	णिसिर -णिसिरामि १।१३६ -णिसिरामो १।१२१; २।३८
णिण्णक्खु -णिण्णक्खु ७।१२, १४, १६; ८।१२, १४, ९।१२, १४	णिरावरण १५।३८ से ४० णिरासस १६।९ णिख्वसग्ग २।७६, ८।३०	
णितिय १।१९	णिल्लिह -णिल्लिहेज्ज ३।३१, ३२, ३९; ६।४८, ४९	-णिसिराहि १।१३० -णिसिरेति ५।४७, ६।५५
णितिलमाण १।१९		
णिदाण ५।४८; ६।५६		

-गिसिरेज्जा	११३०, ५१२६, ४६, ६१२७, ५४	णीसासमाण	२१७५; ८१२६	णेत	५१२२ से २६; ६१२२ से २७
गिसीय		णीहट्टु	११३६, ६४६	णेत्य	१५१२७
-गिसीयड	१५१२६	णीहड	११२ से १८, २१, २२, २४, १२८, २१३ से १७, ५१५	णेत्यज्जिय	२१६५, ६६, ७५४, ५५
गिसीयाव				णो	१११
-गिसीयावेड	१५१२८			त्त	
गिसीयावेत्ता	१५१२८			त	१११
गिसीहिय	२३ से २५, २७ से ३२, ५० से ५६, ८१ से १५, ६१ से १५			तड्य	४१६
				तज्जाय	६१३
				तज्जवण	६१४
				तत्रो	११२
गिसीहियाखत्तिकक्य	६	णीहर		तंजहा	११२३, २८, ४१, ४६, ६१, ६३, ६६, १०६, १११, १२१, १२२, १३०, १३८, १४३, १४५, १५१, २११, १६, ३६, ४२, ४४, ६३ से ६६, ३५४, ४३, ६, १६ से ३६, ५१, १४, १५, १७ से १६, ७५४, ५५, ५७, १११ से १८, १५१६
गिस्सकिक्य	१६५	-णीहरति	१०१२		
गिस्सयर	१६६	-णी(नी)हरेज्ज	१३१०, ११, ३४ से ३६, ३८, ४७, ६४, ७१ मे ७३, ७५, १४१०, ११, ३४ से ३६, ३८, ४७, ६४, ७१ से ७३, ७५		
गिस्सास	१५१२८			णीहरेत्ता	१३१७६, १४१७६
गिस्सेणि	११८, २१६			णूम	३४८, ११६, १२३
णिहट्टु	११३५, १४३			णूमगिह	३४७, ४११, २२
णीण				तति (ट्टाण)	१११४; १२११
-णीणेज्जा	७१२४				
णीणिज्जमाण	१११६, १२१३				
णीपुरपवाल	११०६				
णील	४३७				
णीलमिगाईणग	५११५				
णीसस					
-णीससेज्ज	२१७५, ८१२६				

तंवपाय	६१३	तत्थ	५१७; ७४ से ६,	तत्संघिचारि	२३०
तंवबंधण	६१४		२३ से २६, ३२, ३३,	तह	१६१
तक्कलिभत्थय	१११५		३६, ४६, ४७, ४६,	तहप्पगार	१११, ३, १२
तक्कलिसीस	१११५		५४, ५५; १५७२	से १५, २१, २३ से	
तग्गंध	२१७		से ७६	२५, २६, ३२, ३५,	
तच्च	११४३, १५०;	तम	१६६	३६, ४२, ४३, ४६,	
	२६५; ५१६;	तम्हा	१३२	५१, ६३ से ८१, ८२,	
	६१८, ७५१;	तया	३५५; ५२४;	८४, ८५, ८७ से ९६,	
	८१९; १५५, ४६,		६२५; १३७८;	१०१, १०२, १०४,	
	५३, ५७, ६०, ६३,		१४७८; १६६	१०६ से १११, ११३	
	६७, ७४	तरच्छ	१५२; ३५६	से ११६, १२१ से	
तज्जिय	१६२	तरुण	५२; ६२	१२३, १४१ से १५४,	
तडागमह	१२४	तरुणिय	१४, ५; २२४	२११ से ७, १०, १२,	
तण	१५१; २६३, ६५;	तरुपडणट्टाण	१०१६	१४, १६, १८ से २५,	
	३४२, ७५४	तल	१५२८ गा० १४	२७ से ३२, ३६, ३८	
तणपुंज	२३१, ३२		से १६	से ४०, ४५, ४६, ४६,	
तत	११२; १५२८	तल (ट्टाण)	१११४;	५६, ६१, ६३, ६४,	
	गा० १७		१२११	६८, ७६; ३२, ३६,	
तत्थ	१२५, ३३, ४२, ४६,	तलाग	३४८	११ से १४, ३२, ३६;	
	५१, ५७, ६३, ८८,	तव	१५३६; १६५	४१६; ५१, ३, ५ से	
	१०५, १२३, १२७,	तवणीय	१५२८	१०, १२, १४, १५,	
	१३०, १३१, १३६,	तवस्सि	२२५, ३०	१७ से १९, २३, २४,	
	१४८; २१८, ३४ से	तस	१४०; ३६; ५४५;	२८ से ३०, ३५ से	
	३६, ३६ से ४१, ४६,		६५३; १५४३;	३६, ४६ से ४८;	
	४७, ६३, ६५, ७१;		१६४	६१, ४ से ८, ११, १३,	
	३४२, ४६, ५१, ५३;	तसकाय	१६१, ६८;	१४, १६ से १९, २२ से	
			२४१, ४२	२६, २६ से ३१, ३८	
				से ४२, ४६, ५४, ५५)	

तहृप्पगार ७१० से २१,	तितिकख	तिलपप्पड	१११६
२६; नऱ से ७,	-तितिकखइ १५३७	तिलपिट्ट	१११६
६३ से ७; १०२	-तितिकखए १६३	तिलोदग	११०१, १५१
से २८; १११ से	तित्त ४३७	तिवग	६१६
१८, १२१ से १६;	तित्तय ११३८; १५२८	तिविह	१५३४, ४३,
१५४६; १६३	तित्तिरकरण १०१८		५०, ५७, ६४, ७१
तहा ४१६	तित्तिरजुद्ध १११२,	तिव्वेसिय	१४०,
तहागय १६२	१२६		५४५, ६५३
तहाठिय ११३८	तित्तिरट्टाणकरण	तिसरग	२२४; ५२७
तहेव ११३६	११११; १२१	तिसला	१५५, ६, ८, ६,
ता ३१७	तित्तय १५२६ गा० ६		१० से १३, १८
ताइ १६६	तित्तय्यर १५११, २६	तीयवयण	४३, ४
ताल(ट्टाण) १११४,	गा० ४	तीर	३३०, ३७
१२११	तिन्नाण १५४	तीरित्ता	१५७८
तालसद् ११३	तिमासिय १२१	तीरिय १५४६, ५६, ६३,	
तालपलंब ११०८	तिय १०२२, १११०,		७०, ७७
तालमत्थय १११५	१२७	तुंबवीणियसद् ११२	
तालियट १६६	तियाह ३१२, ५४६,	तुचच्चय ६२६	
ताव २४७; ६२६,	४७, ६५४, ५५	तुट्ठि १५३६	
७४, ६, ८, २३, २५,	तिरिक्खजोणिय १५५४	तुड्य ५२७	
३२, ३६, ४६, ४६	तिरिच्छ १४०; ३६,	तुडिय २२४	
तावइय ११२७, १३०,	१५, ५४५, ६५३	तुडिय(ट्टाण) १११४,	
१३५	तिरिच्छच्छिन्न १५;		१२११
ति १२१	७२८, ३१, ३५, ३८,	तुणयसद् ११२	
तिदुग १११८	४२, ४५	तुट्ट	
तिकखुत्तो १७, १५२८	तिरिय १५२७	-नुत्ति १६२	
तिगुण २३५	तिरियगामिणि ३१४		
	तिल १११६, १०१६		

दंसण	१५४१, ४२	दरिसि	१५१३६	-दाहामि	११३०
दग	३३७	दरी	३४१, ४७; ४२१,	-दाहामो	५२२, ६२१
दगछड्डुगमतय	१६२		२२, १०१७	-दाहिसि	१२५, ६३,
दगमवण	१६२	दल		१०१; २६३, ६४;	५१६; ६१७
दगमट्टिय	१२, ४२, ४३,	-दलएज्जा	१२५, ५६,	-दिज्जइ	११६;
५१, ८२, ८३, १०२,			५७, ६३, ६५, ६६,	१५२६ गा०२	
१३५, २११, २, ३१,			१०२, १०४, १२३,	-देज्ज	६६ से १६; ७६
३२, ५७ से ६१, ६८,			१३५, १३६, ५२३,	-देज्जा	१११, २५, १०१,
६६; ३१, ४, ५,			२४; ६२२ से	१४१ से १४५, १४७,	
५२८ से ३०, ३५.			२६, ४६	१४८, १५२, १५४;	
६२६ से ३१, ३८,		-दलयाहि	१६३, ६८,	२६३, ६४, ३६१,	
७१०, २६ से ३१,			१३५, १४३, ५२२	५१७ से २०, ४६,	
३३ से ३८, ४० से			से २४, ६२१ से	४८, ५०, ६१६ से	
४५, ८१, २, २२,			२४, २६	१६, ५४, ५६, ५८	
२३, ६१, २,		-दलाति	११३०	-देहि	३६१, ५५०,
१०१२, ३, १४, २८				६५८	
दगलेव	११४५, १५२	दलडत्ता	१५२६	दाइय	११३१
दट्टण	३६	दविय	३४८	दाड	१६३, ६६, १३५,
दट्टण	११३१	दव्वी	१६३ से ८१	५२२, २८, ६१७,	
दधि	१४६	दस	१५१३	२१ से २४, २८	
दढमकम्मत	२३६ से ४२,	दसमी	१५२६, २६, ३८	दाडिमपाणग	११०४
३४७, ४२१, २२		दसराय	५२२, ६२१	दाडिमसरड्डुय	१११०
दम्भ	४२७	दस्सुगायतण	३८, ६	दाता(या)र	१५१३, २६
दरिमह	१२४	दह	३४८	दाय	१५१२, २६
दरिसणिज्ज	२२५,	दहमह	१२४	दायच्च	१२५, १३१
४२०		दा		दार	१:२१; ११६:
दरिसणीय	४२०, २२,	-दासामो	५२३, २५,		१२६
३०; १५२८			६२२ से २६		

दारग	३२४	दाहीण	२३६ से ४२	दुक्खखम	१६।८
दारिग(य)	३२४;	दाहिणड्ढभरह	१५।३	दुक्खि	१६।४
	११।१६	दाहिणमाहणकुंडपुर		दुक्खुत्तो	१।७
दारिया	१२।१२		१५।३, ५, ६	दुग्गुण	२।३५
दारुपाय	६।१, १६, १७	दिज्जमाण	१।२६, ३५	दुग्गुल्ल	५।१४
दारुय	१।५१, ८२, ८३, १०२; २।२१, २८; ५।३५; ६।३८; ७।१०; १०।१४	दिट्ठ	११।१६; १२।१६	दुग्ग	३।५६, ६०; ५।४८, ४६; ६।५६, ५७
दाल्लिय	१।२६; २।१२; ८।१२; ९।१२	दिण्ण	१।२५; ६।२६; १५।२६ गा० ३	दुग्गध	२।२७
दास	१।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३, २।२२, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४; ५।१८; ६।१७, ७।१६ से २०	दिन्न	१।५६, १३६	दुग्गिण(न्नि)क्खित्त	२।४६; ५।३६ से ३८; ६।३६, ४१, ७।११ से १३
दासी	१।२५, ४६, ६३, १२१, १२२, १४३; २।२२, २५, ३६ से ४२, ५१ से ५५, ६४, ५।१८; ६।१७; ७।१६ से २०	दिव्व	१५।२७, २८ गा० ७, ८; १५।३२ गा० १८, १५।३४, ३७, ६४	दुत्तर	१६।१०
दाह	३।३६	दिसा	१५।३; १६।६	दुपय	१।१४७, १५४
दाहिण	१।२७, १२१, १४३, १५०; २।२६ से ४२; १५।२८ गा० १३; १५।३०	दिसीभाय	१५।२७, ३८	दुप्पण्णवणिज्ज	३।८, ९
		दीव	१५।३, २७, ३३	दुब्बद्ध	२।४६; ५।३६ से ३८, ६।३६ से ४१; ७।११ से १३
		दीविय	१।५२; ३।५६	दुब्बिभ	१।१२५
		दीह	१३।३७, ७४; १४।३७, ७४	दुब्बिभांगंघ	४।३७; ५।३३, ३४; ६।३५ से ३७
		दीहवट्ट	४।३०	दुम्मण	३।२६, ४४
		दीहिया	३।४८, ११।५; १२।२	दुयाह	३।१२; ५।४६, ४७; ६।५४, ५५
		दु	२।४१	दुरुक्क	१।१११
		दुक्ख	१।३१, २।२१; १५।२५		

दुग्ध		-दूइज्जेज्जा ३१, ४ से ७,	देवगड	१५१२७
-दुग्धति	१५१२७	६, ११, १३, ३२, ३३,	देवच्छदय	१५१२८
-दुग्धहेज्ज	३११४	३६, ४०, ४२, ४४ से	देवत्ता	१५१२५
-दुग्धहेज्जा २१७३, ३११५,		४७, ४६ से ६१,	देवपरिसा	१५१३२
१६ ५६ ६०; ५१४८,		५१४४, ४५, ४८ से	देवराय	१५१२८, ३१
४६, ६१५६, ५७		५०; ६१२२, ५३,	देवलोग	१५१२६
दुग्धमाण ११८८, २१७३,		५६ से ५८	देवाणदा	१५१३, ६
३११६; ८२७	दूइज्जमाण १११०, ३६,		देविठ	१५१२८, ३१
दुग्धित्तए २१७३; ८२७	४६, १२२, १३८,		देविठोम्मह	७५७
दुग्धित्ता १५१२५, २७	१३६, २१७०, ३६		देवी १५१६ से ११, २७,	
दुग्धेत्ता २१७३, ८२७	से ८, १०, १२, १४,		४०	
दुग्ग	६१६	३३, ३४, ४०, ४१,	देसभाय	१५१२८
दुग्गण	४३, ४	४३, ४७, ४८, ५० से	देसराग	५११४
दुवार २१४१, ४२, ४४	६१; ५१४४, ४६, ५०;		देह	१५१३४ से ३६
दुवारवाह ११५४, २३०	६१२, ५७, ५८,		दो	११२१
दुवारसाहा ११६२	८२४		दोच्च	१११४२, १४६;
दुवारिया ११२६; २१२,	दूस १११०४		२१६४; ५११८,	
४५, ८१२, ६१२	देव १५१५, ६ से ११.		६११७, ७५०,	
दुसद् ४३५, ३६	१६, २६ गा० ४, ६;		८११८, १५१८, २८,	
दुसमसुसभा १५१३	१५१२७, २८ गा० १२,		३८, ४५, ५०, ५२,	
दुसन्नप्य ३१८, ६	१७, १५१२६, ३२		५६, ५६, ६६, ७३	
दुहसेज्ज १६१६	गा० १६; १५१३६		दोष्क	४१२७
दुहि १६१४	से ४१		दोणमुह ११२८, ३४, १२२;	
दूइज्ज	देवकुल २१३६ से ४२,		३११ से ३, ४५, ५७,	
-दूइज्जेज्जा १११०,	३१४७, ४१२१, २२,		५८; ७२, ८१	
३६, ४०,	१०१२०, १११८,		दोच्चलिय ३१२६	
	१२१५		दोमासिय ११२१	

दोरज्ज ३११०,११; ११११५; १२११२	घाड(त्ति) २१२२,२५, ३६ से ४२,५१ से ५५,६४; ५११८; ६११७; ७११६ से २०;	-धूवेज्ज १४१६,१८, २५,३२,४६,५५, ६२,६६
दोस १५१५०,७२ से ७६	५५,६४; ५११८; ६११७; ७११६ से २०;	धूवणजाय १३१६,१८, २५,३२,४६,५५, ६२,६६; १४१६,१८, २५,३२,४६,५५, ६२,६६
घ	१५११४	
घण ५११४; ६११३,१४; १५११२,१३,२६	घायइवण १०१२७	६२,६६; १४१६,१८, २५,३२,४६,५५, ६२,६६
घण्ण १५११२,१३,२६	घार -घारेज्जा ५१२,३,४१; ६१२	६२,६६
घम्म १११२१; २१२५, ३८; १५१६५ से ६६, ७२ से ७६	-घारेहि ३१२४	वेणु ४१२८
घम्मज्जाण १५१३८	घारणिज्ज ५१३०; ६१३१	घोय ५११२,४१; ६१६
घम्मपय १६१५	घारि १५१२८ गा० ६	घोय -घोएज्जा ५१४१
घम्मपिय ४११३,१५	घारेत्तए ५१४६ से ४८; ६१५४ से ५६	च
घम्माणुओर्गिचिता ११४२, ४३, २१४६ से ५६, ३१२,३; ७११४ से २१	घिडम १६१८	नंदीमुइंगसद्द ११११
घम्मिय १११३३,१३४, १४७,१५४, ३१६१; ४११३,१५, ५१५०, ६१५८	धुव ११३३, ४१२,५१३०; ६१३१	नक्कच्छिन्न ४११६
घर १५१२६ गा० ४, १५१४१,४२	धूया ११२५,४६,६३, १२१,१२२,१४३; २१२२,२५,३६ से ४२,५१ से ५५,६४, ५११८; ६११७, ७११६ से २०; १५१२३	नक्खत्त १५१३,५,८
घरणि १५१२८ गा० १६	धुव -धूवेज्ज १३१६,१८,२५, ३२,४६,५५,६२,६६;	नालिय २१४६; ३१२४; ७३,२४
घाड(त्ति) ११२५,४६, ६३,१२१,१२२, १४३;		निडय २१४५
		निद -निदामि १५१४३,५०, ५७,६४,७१
		निदित्ता १५१२५
		निकाय १५१२५,४२
		निक्खमण २१४६; ३१२
		निक्खत्त १११०२

निर्गम्य	६।२	पङ्गणा(न्ना)	२।१६, २।१	पंडिय	१६।७, १०
निट्टुर	४।१०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५	से	२५, २७ से ३०, ४६, ७१, ३।६, १।१, १३, ४६, ५।७७, ६।२८, ४।१, ८।२५	पंत	१।१३१
निमित्त	१।५।२५	पञ्चम	२।२१, ५३; ५।२३, ३१, ३३, ६।२३, ३३ ३६, ७।१८	पंय	२।५०, ३।१, ७।१५
निरावरण	१।५।१	पञ्चमलया	१।५।२८	पक्क	५।३१, ३३
निवृज्जमाण	१।१।१६, १।२।३३	पञ्चमसर	१।५।२८ गा० १४	पक्क	२।४१; १।५।३, ५, ८, २६, २६, ३८
निवृद्धदेव	४।१६	पञ्चोय	५।१७	पक्कल	
निव्वाण	१।५।३८	पंकाययण	१।०।२४	-पक्कलेज्ज	१।५।१
निसाम		पच	७।५३	पक्कलमाण	१।५।१
-निसामिति	१।५।३२ गा० १६	पंचदस	३।४५	पक्कि	३।४६, ५।४; ५।२५, २६
निसिद्ध	१।५।७	पंचम	१।१।४५, १।५।२; ७।५३; १।५।५, ४८, ५।५, ६।२, ६।६, ७।६	पक्किव	
निस्सीहिय	२।१, २, ४४, ४६	पञ्चमासिय	१।२।१	-पक्किववह	३।२५, २६
निस्सिचमाण	१।८।५	पंचमुट्टिय	१।५।३०, ३२	-पक्किवेज्जा	३।२६
नीलिय	४।३३	पञ्चराय	५।२।२; ६।२।१	पक्खेव	१।५।५
नीहर		पंचवग्ग	६।१६	पगणिय	१।१६, २।७, ३।८, ५।६; ६।८; ८।७; १।०।८
-नीहरेज्ज	१।३।२७	पंचविह	७।५।७	पगत	१।०।१७
पडट्टिय	१।५।१, ८।२, ८।३, ६।२ से ६।५, ६।७, ६।८, १।०।२, ५।३५; ६।३८, ७।१०; १।०।१४	पञ्चाह	३।१।२, ५।४६, ४।७, ६।५४, ५।५	पगर	
पङ्गणा(न्ना)	१।५।६, ८।५, ६।१, ६।५, १।२३,	पचेदिय	१।५।३३	-पगरेज्जा	२।१।८
		पडग	१।५।६६	पगरेमाण	२।१।६
		पंडरग	१।५।१३	पगासय	१।६।६
				पगिज्जिअय	१।६।२; ३।१६, ४।७ से ४।६
				पगिण्ह	
				-पगिण्हेज्ज	७।३, १० से २।१

पगह	१५।३६	पच्चपिण	पज्ज
पगहित(य)राग	१७६;	-पच्चप्पिणेज्जा	२।६८,
	८।३०	६६; ७।६; ८।२२,	-पज्जेहि ३।२४
पगहिय	१।१४६, १।५३	२३	पज्जत्त १।५।३३
पघंस		पच्चपिणित्तए	२।६८,
-पघसंति	२।५३; ७।१८	६६, ८।२२, २३	पज्जभाएत्ता १।५।१३, २६
-पघंसाहि	५।२३;	पच्चाडक्ख	पज्जभाय
	६।२३	-पच्चाडक्खिस्सामि	-पज्जभाएति १।५।१३
-पघंसेज्ज	२।२१;	१।१२३	पज्जवजाय १।१४४, १।५।१
	५।३१, ३३;	पच्चावाय	१।५।३६
	६।३३, ३६	१।३२	पज्जाल
पवसिता	५।२३; ६।२३,	पच्चोत्तर	-पज्जालेतु २।२३
	२४	-पच्चोत्तरति १।५।२८	-पज्जालेज्ज २।२१,
पचवंत	१।१।१७, १।२।१४	पच्चोत्तरिता १।५।२८	२३, २६
पचवंतिक(य)	३।८, ६	पच्चोयर	पज्जालेत्ता २।२१
पच्चक्ख		-पच्चोयरड १।५।२६	पट्ट १।५।२८
-पच्चक्खखार्डति	१।५।२५	पच्चोयरिता १।५।२६	पट्टण १।२८, ३४, १।२२;
-पच्चक्खख्खाएज्जा		पच्छा १।२६, ३२, ४२,	२।१; ३।२, ३, ४५,
	३।१५, ३४	४३, ४६, १।२१;	५७, ५८; ७।२, ८।१,
-पच्चक्खखामि	७।१;	२।२८, २६, ३८, ४५,	१।१७, १।२।४,
	१।५।४३, ५०, ५७,	४६, ४८, ५।३, २२;	१।५।२८
	६४, ७१	६।२१, १।०।१,	पड
पच्चक्खक्खवयण	४।३, ४	१।५।२८ गा० १२,	-पडड ४।१६
पच्चक्खख्खाइत्ता	१।५।२५	१।५।४१	पडह १।५।२८ गा० १६
पच्चक्खख्खाएत्ता	३।१५, ३४	पच्छाकम्म १।६१, १।४४,	पडाय १।५।२८
		१।५।१, २।२७	पडिकूल २।२७
		पच्छासंथुय १।४६, १।२२,	पडिक्कम
		१।३०	-पडिक्कमामि १।५।४३,
		पजूहिय १।४५	५०, ५७, ६४, ७१

शब्द-सूची

पडिक्कमिक्ता १५२५	पडिग्गह ६२७, २८, ४७	पडिय १५२६, ३१
पडिगाह	से ५०, ५३ से ५८	पडिया १११, ४ से ११
-पडिगाहेज्जा ११४ से	पडिग्गह(ग) १११३५,	से १७, १६, २१, २३,
७, १२ से १८, २१	१३६, १४३, ६२६,	२४, २६, २८, २९,
मे २५, ३६, ४१, ६३	२७, ४४ से ४६, ४९,	३२, ३४ से ३७,
से ८२, ८५, ८७ मे	५६, ५७	४०, ४२ से ४६,
१०२, १०४, १०६ से	पडिग्गहधारि १११४३	४६, ५०, ५२, ५३,
११६, १२१, १२३,	पडिग्गाहिय १११४४,	५५, ५८, ६१, ६२,
१२८, १३३ से १३६.	१५१, ६४७	८२ से ८५, ८७, ८९
१४१ से १४६, १५१?	पडिग्गाह	से ९६, १०१, १०२,
से १५४, २१४८,	-पडिगाहेज्जा ११	१०४ से ११६; २१३
५७ से ६१, ६३, ७४,	पडिग्गाहिय २१२, १३३,	से ७, १०, १२, १४,
५१५ से १५, १७ से	१३६	१६, २१, २७ से २९;
२०, २२ से २५, २८	पडिच्छ	३११४, ६०, ६१, ५१४
से ३०, ६४ से १४,	-पडिच्छड्ड १५२६, ३१	से ८, १२, ४२ से ४५,
१६ से १९, २१ मे	पडिच्छिक्ता १५१३१	४६, ५०, ६४ से ७,
२६, २९ से ३१, ४६,	पडिणीय ७२४	११, ४४, ४६, ५०,
७२६ से ३१, ३३ से	पडिपह ११५२, ३१५४ से	५३, ५७, ५८, ७५,
३८, ४० से ४५, ८१?	५९, ५१४८, ६१६	७; ८३ से ५, १०,
पडिगाहित्तए ११३५,	पडिमुण्ण ४२६, १५११,	१२, १४, ६३ ४,
५२५; ६२५	८, ३८, ४०	५, १०, १२, १४,
पडिगाहिय ११३५, १३५	पडिबद्ध २१५०, ७१५	१०१४ मे ६, ११;
पडिगाहेत्ता ११३३, ४७,	पडिवोह	११११ से १८,
५७, १२५ से १२८,	-पडिवोहेज्जा ७२४	१२११ से १६
१३० से १३२	पडिमा १११५५, २१६२	पडिल्ल ४२०, २२, ३०
पडिगाह ११४६, १०१,	से ६७, ५११६ से २१,	पडिल्लेह
१३१, १३७, ३६,	६११५ से २०, ७४८	-पडिल्लेहिज्जा ५२७,
११, २१,	से ५६, ८१६ से २१	६२८; ८२४

-पडिलेहिस्सामि ५।२६; ६।२७	पडिवज्जित्तु १५।३२ गा० १६	पढम ६।१६; ७।४६; ८।१७; १५।८, २६,२६,४४,४६, ५१,५८,६५,७२
-पडिलेहेज्जा २।७०, ७१; ३।१५,४०, ८।२५	पडिवज्जेत्ता १५।३२ पडिवण्ण(न्त) १।१५५, २।४४,६७; ५।२१; ६।२०, ७।५६; ८।२१, १५।३३	पणम (य) १।१,२,४२, ४३,५१,८२,८३, १०२,१३५; २।१, २,३१,३२,५७ से ६१,६८,६९; ३।१, ४,५,१३; ५।२८ से ३०,३५, ६।२६ से ३१,३८; ७।१०, २६ से ३१,३३ से ३८,४० से ४५; ८।१,२,२२,२३; ९।१,२, १०।२,३, २४,२८
पडिलेहमाण १।३२	पडिविसज्ज -पडिविसज्जेत्ति १५।३४	
पडिलेहित्तए २।७२, ८।२६	पडिविसज्जेत्ता १५।३४ पडिसवेद -पडिसवेदेइ १५।७६	
पडिलेहिता २।२, ६, ११, १३, १५, १७, ३२; ८।२, ६; ९।६, ११, १३, १५	पडिसुणित्तए ५।२२, ६।२१	
पडिलेहिय १।३, ५१, ५४, १३५; २।६६, ७२; ५।३६; ६।४२; ७।३; ८।२३, २६	पडिसुणेत्तए ५।२२ पडिसेविय १५।३६ पडिसेहिय १।५६	
पडिलेहेत्ता ३।१५	पडोण १।२७, १२१, १४३, १५०, २।३६ से ४२	पणवसइ १।१२
पडिलोम २।२७	पडुप्पन्न ४।७	पणियगिह २।३६ से ४२, ३।४७, ४।२१, २२
पडिवज्ज -पडिवज्जइ १५।३२, ३२ गा० १८	पडुप्पन्नवयण ४।३, ४	पणियसाला २।३६ से ४२; ३।४७; ४।२१, २२
पडिवज्जमाण १।१५५; २।६७; ५।२१, ६।२०; ७।५६; ८।२१	पडुप्पवाइयट्टाण १।११४ १।२।११	पणीय १।५।६८ पणुवीस १।५।७८
पडिवज्जित्ता १।५।२५	पडोल १।५।२८	पण्ण १।४२, ४३, २।४६ से ५६, ७०, ७१; ३।२, ३; ७।१४ से २१; ८।२४, २५
पडिवज्जित्ताणं १।१५५, २।६७; ५।२१; ६।२०; ७।५६; ८।२१	पढम १।१४१, १४८; २।६३; ४।६; ५।१७,	

पणग(न्न)त्त	७५७;	पघूव	पमज्जित्ता	२२,६,११,	
१५१४,६५ से ६६,		-पघूवेज्ज	१३,१५,१७,३२;		
७२ से ७६		२५,३२,४६,५५,	८२,६; ६६,११,		
पणगरस	१५३६ गा० ४	६२ से ६६; १४६,	१३,१५		
पणगव		१८,२५,३२,४६,	पमज्जिय	१३,५१,५४,	
-पणग्विसु	४१७	५५,६२,६६	१३५; २६६,७२,		
-पणगविस्सति	४१७	पघोव	७३, ५३६;		
-पणगवेत्ति	४१७	पघोएज्ज	६४२,४५; ७३;		
पणगव	४१६	५३२,३४,	८२३,२६		
पणगहत्तरी	१५३	६३४,३७, १३१७,	पमज्जेत्ता	३१५,३४	
पणगा	१६१५	२३,३२,४४,६०,	पमाण	१५२६	
पतिरि		६६, १४१७,२३,३२,	पमेइल्ल	४२५	
-पतिरिंसु	१०१६	४४,६०,६६	पयत्तकड	४२२,२४	
-पतिरिति	१०१६	-पघोवेत्ति	२५४,७१६	पयथ	१५३२ गा० १६
-पतिरिस्सति	१०१६	-पघोवेहि	५२४,	पयल	
पत्त(पत्र)	१५१,६६,	६२४	-पयलेज्ज	१५१,८८,	
२१४; ३५५;		पघोवेत्ता	५२४, ६२४	२१६,४६,७१;	
५२५; ६२५,		पभिड	१५१२,१३	३४२, ८२५	
८१४; ६१४,		पमज्ज		पयलमाण	१५१,८८,
१०१२,१५		-पमज्जेज्ज	१५१;	२१६,४६,७१;	
पत्त(प्राप्त)	१५१२ से ५५	३३१,३२,३८,३६,	३४२; ८२५	पयायसाला	४३०
पत्तच्छेज्जकम्म	१२१	६४८,४६; १३२,	पयाव		
पत्तुण	५१४	१२,१६,२८,३६,	-पयावेज्ज	१५१; २२१;	
पन्नोवय	१०२७	४६,५६,६५,७७,	३३१,३२,३६;		
पद्मग	१०१७	१४२,१२,१६,२८,	५३५ से ३६; ६३८		
पवार		३६,४६,५६,६५,७७			
-पवारैज्जा	१५१४५	-पमज्जेज्जा	१८५		

पयावेत्तए २।१६; ५।३५	परक्कमाण १।५१; ३।४२	परिट्टिविय २।४१, ४२, ४४
से ३८, ६।३८ से ४१	परग १।१४३, २।६३,	परिट्टिवेज्जमाण १।४६
पयाहिण १।५।२८	६५; ७।५४	परिट्टिवेमाण २।७१;
पर १।१, २।५, २।६, ५।६,	परदत्तभोइ ७।१	८।३५
५।७, ६३, १०।१, १२३	परम १।५।२८ गा० १६	परिणम
१२७, १२८, १३०,	परळोडय १।१।१६	- रिणमेज्जा १।३१
१३५, १३६, १।४१ से	परय १।६।१२	परिणय १।१००, १।५।१५
१।५४, २।४७, ६३,	परिएसिज्जमाण १।२१	परिणाम २।२१, २६;
६४, ३।१४, १।७, १।८	से २४	३।१४, ५।४६ से
२१, २।५, २।६, ३३,	परिग्गह १।५।७१, ७७;	४८; ६।५४, ५५
३६, ४३, ४४, ५६;	१।६।१	परिणिव्व
५।४, १।७ से २०, २२	परिघासिय १।३५	-परिणिव्वाडस्संति
से २६, ४६ से ४८;	परिजाण १।५।२५	परिण्णचारि १।६।८
६।३, १।६ से १६, २१	-परिजाणड १।५।४५,	परिण्णा(न्ना) ३।१।७ से
से २७, ४६ ५४ से	५२ से ५५	२१, २४, ५४ से ५८;
५६; ७।५, ७;	-परिजाणाहि १।६।१०	१।६।६
१०।२८, १३।२ से	-परिजाणेज्जा ३।१।७	परिण्णात(य) ७।४, ६, ८,
३६, ४१, ४६, ४४,	से २१, ५४ से ५८	२३, ३२, ३६, ४५, ४६
१।६।७	परिजीविय ३।३३	परितावणकारी ४।१०,
परकिरिया १।३।१ से ७८	परिट्टव	१२, १४, २१, २३,
परकिरियासत्तिक्कय १३	-परिट्टवेइ १।१२५,	२५, २७, २६, ३१,
परक्कम १।२०, ५।२, ५।३,	१।२।७	३३, ३५
६१, ३।६, ७, ४१,	-परिट्टवेति ५।४७,	परिनिव्वुय १।५।२
४३	६।५५	परिपिहित्ता २।७५;
-परक्कम -	-परिट्टवेज्जा १।३, १२६,	८।२६
-परक्कमेज्जा १।५०,	१३५, ५।४६, ४८,	परिपिहित्य १।५४
५।२, ५।३, ६१, ३।६,	६।४७, ५४, ५६,	
७, ४१, ४३	१०।२८	

परिपीलियाण ११०४	परिभुत्त ६।३ से ७,६,	परियावसह ११०५,
परिभव	११,१३,१५,	२।३३ से ३५,४७;
-परिभवेज्ज ३।६,११;	१४।४ से ८,१०	७।४,६,८,२३,४६,
५।५०; ६।५८	परिमंडिय १५।२८	४६
-परिभवेति ३।६१;	परियट्ट १।२१	परिवज्ज
५।५०; ६।५८	परियट्टण १।४२,४३;	-परिवज्जए १५।७२ से
परिभाइत ११।१८,	२।४६ से ५६; ३।२,	७६
१२।१५	३; ७।१४ से २१	परिवड्ड
परिभाइज्जमाण १।४६	परिया	-परिवड्डइ १५।१२,१३
परिभाइय २।४४	-परियाइंति १५।२७	परिवस
परिभाएत्ता १।१३५,	परियाइत्ता १५।२७	-परिवसंति १।४६,
१३६; ६।४६	परियाग(य) १५।५,२५,	१२२, ३।४५
परिभाएमाण १।५७	३८	परिवाइय १।३२
परिभाय	परियारणा १।३२;	परिवायय १।३२
-परिभाएज्जा १।५७	२।५५	परिवासिय १।१
-परिभाएह १।५७,	परियारेमाण १५।१५	परिवुड १५।१४
१३६	परियाव	परिवुत्त ११।१६;
-परिभाएहि १।५७	-परियावेज्ज १।८८,	१२।१३
परिभुजंत ११।१८,	२।१६,४६,७१;	परिवुसिय ३।४,५
१२।१५	८।२५; १५।४४,	परिवूढ ४।२५,२६
परिभुज्जमाण १।४६	४७,४८	परिव्वय
परिभुत्त १।१२ से १६,	परियावज्ज	-परिव्वए १६।७
१८,२२,३५; २।३	-परियावज्जेज्ज १।५३	परिसड
से ६,६,११,१३,	-परियावज्जेज्जा ३।२८;	-परिसडड १।११३,
१५,१७,४४, ५।५	६।४५	१२७
से ६,११,१३; ६।४	परियावण्ण(न्) १।१२७,	परिसा १५।२६
से ८,१०,१२; ८।३	१३६,१४५,१४६,	परिसाड २।७६, ८।३०
मे ७,६,११,१३,१५;	१५२,१५३	

परिसाड	पलिमह	पवाय(त) १।२६; २।१२,
-परिसाडिंति १०।१५	-गलिमहेज्ज १३।३, १३,	७२, ७६; ८।१२,
-परिसाडिस्संति	२०, २६, ४०, ५०,	२६, ३०; ६।१२
१०।१५	५७, ६६; १।४।३,	पवाल १।५।१२, १३
-परिसाडेति १।५।२७	१३, २०, २६, ४०,	पवालजाय १।१०६
-परिसाडेसु १०।१५	५०, ५७, ६६	पविट्ठ १।५।५, ५८
परिसाडेत्ता १।५।२७	पलियंक १३।३६ से ७६	पविस
परिसर १।५।२; ३।५।६	पलोय	-पविसड २।३०
परिसह १।५।१६	-पलोयए १६।१	-पविसिस्सामि १।४६
परिस्साविद्याण १।१०।४	पल्लल १।१।५, १।२।२	-पविसेज्ज १।८, १।९,
परिहरित्तए ५।४६ से	पव	३७, ३८, ४०, ४४,
४८; ६।५।४ से ५६	-पवेज्जा ३।२६ से २८	४५, ५४, ५८, ५९,
परिहारिय १।८ से ११	पवज्ज	१२२, १२३; २।४।५,
परुद्ध	-पवेज्जेज्जा ३।८ से १३	४६; ५।४।२, ४३,
-परुवेइ १।५।४२	पवड	४५; ६।४।४, ४५,
परोक्खवयण ४।३, ४	-पवडेज्ज १।५।१, ८८;	५०, ५१, ५३
पलंब १।६, ७, ८, ९, ८४	२।१।९, ४६, ७१;	पविसमाण १।९, ३८;
पलंबंत १।५।२८	३।४।२; ८।२।५	२।४।५, ४६; ५।४।३;
पलंबजाय १।१०।८	पवडमाण १।५।१, ८८;	६।४।४, ५१
पलाल २।६।५, ७।५।४	२।१।९, ४६, ७१;	पविसित्तु(उ)काम १।८,
पलालग २।६।३	३।४।२; ८।२।५	१।९, ३७, ४४;
पलालपुज २।३।१, ३।२	पवत्ति १।१।३०, १।३।१;	५।४।२; ६।५।०
पलिउंचिय १।१।३८	२।७।२; ८।२।६	पविसेत्ता १।३।७६;
पलिच्छाय	पवर १।५।३, २८	१।४।७६
-पलिच्छाएति १।१।३१	पवा २।३।६ से ४२;	पवुट्ठदेव ४।१।६
पलिच्छदिय ५।४।६ से	३।४।७; ४।२।१, २।२,	पवेदित १।६।६
४८; ६।५।४ से ५६	१०।२०; १।१।८;	
	१।२।५	

पवेस १।४२, ४३, २।४६, ५०, ३।२, ३, ७।१४ से २१	पहोय -पहोएज्ज १।६३, २।१८, २१, १३।१६, ५३, १४।१६, ५३	पाण(पान) १।१, १।१ से १७, १।६, २।१, २।३ से २५, ३।६, ४।१, ४।४, ४।५, ५।६, ५।७, ६।३ से ८।१, ८।४, ८।५, ८।७ से ९।८, १०।५, १२।१, १२।३, १२।७, १२।६, १४।१, १४।२, १४।५, १४।६, १५।२, २।२०, २।८, ४।८; ४।२, २।३, २।४, ६।२६, ४।७, ७।५ १।४; १।१।१८, १।२।१५, १।५।१३, ४।८, ५।६, ६।८
पवेस -पवेसेज्जा ७।२४	पहोएहि १।६३	
पव्वइय १।५।१, ३।४		
पव्वत्त -पव्वत्तई १।५।२६ गा०१	पा -पीएज्ज १।२, ५।७, १।३६	
पव्वत्त १।५।२६ गा०६	पाइम ४।२५	
पव्वय ३।४८, ४।२६, ३०, १।१।६	पाईण १।२७, १।२१, १।४३, १।५०; २।३६ से ४।२, १।५।२६, ३।८	
पव्वयगिह ३।४७, ४।२।१, २।२	पाड १।३२	
पव्वयदुग्ग १।१।६, १।२।३	पाउण	पाण(प्राण) १।१, २, १।२
पव्वयविदुग्ग ३।४८	-पाउणेज्ज ३।१२	से १।७, ४।०, ४।२, ४।३, ५।१, ६।१, ८।२, ८।३, ८।८, १०।२, १।१२, १।३।५: २।१ से ७, १।६, ३।१, ३।२, ४।६, ५।७ से ६।१, ६।८, ६।९, ७।१; ३।१, ४।५, ७, १।३, ५।५ से १०, २।२, २।७ से ३०, ३।५, ४।५; ६।४ से ६, २।१, २।६ से ३।१, ३।८, ४।४, ४।५ ५।३,
पसंसित १।५।३८	-पाउणेज्जा ३।२६	
पसिण ३।४५	पाउणित्तए ३।३०, ३।७	
पसु २।२०, ३।५।४, ४।२।५, २।६, ७।१।४, १।५।६।६	पाएसणा ६	
पसुय ३।४६	पाजोसिय १।५।४।५, ४।६	
पसूय ४।३।४, १।५।८ से १।१	पागार १।५।४।६	
पह १।६।१२	पाडिपहिय ३।४।२, ४।५, ५।१, ५।३ से ५।६, ५।८ से ६।१	
पहेण १।४।२, ४।३	पाडिहारिय २।६०, ६।१, ५।४।६, ४।७, ६।५।४,	
पहोडत्ता १।६।३	५।५; ७।६	

पाण(प्राण)	७१०, २६ से ३१, ३३ से ३८, ४० से ४५; ८१ से ८, २२, २३, २५; ६१ से ७; १०२ से ६, १४, २८, १३१७६; १४१७६; १५३२ गा० १६, १५४४ से ४७, ४८	पामिच्च	८३ से ८, ६३ से ७; १०४ से ६	पायच्छित्त	१५२५
पाणम	६२६	पामिच्च		पायत्तए	११२१
पाणगजाय	१६६, १०१, १०२, १०४, १२६, १५१ से १५४	-पामिच्चेज्ज	२२६; ३१४	पायमुंछण	३६, ११, ६१; १०१
पाणाइवाडय	१५४५, ४६	पामिच्चय	१०११	पायय	१०२८
पाणाइवाय	१५४३, ४६	पाय(पाद)	१११, ३५, ८८, १४६, १५३; २१८, १६, ४५, ४६, ७१, ७३, ७५; ३६, १५, २०, २१, २७, ३४ से ३६, ४०, ५०, ५२, ८२५ २७, २८; १३२ से ११, ३६ से ४८; १४२ से ११, ३६ से ४८; १५२८, गा०८	पायरास	१५२६ गा०२
पाणि	११४३, १४५, १४६, १५२, १५३; २१७५; ३४२, ७६; ८२६	पाय(पाद)	१११, ३५, ८८, १४६, १५३; २१८, १६, ४५, ४६, ७१, ७३, ७५; ३६, १५, २०, २१, २७, ३४ से ३६, ४०, ५०, ५२, ८२५ २७, २८; १३२ से ११, ३६ से ४८; १४२ से ११, ३६ से ४८; १५२८, गा०८	पायव	१५१४
पाणसणा	११४०, १४८ से १५५	पाय(पात्र)	१३५, १३५, १३६, ३६१, ६१ से ६, ११, १३ से १६, २१ से २५, २६ से ४२, ४६	पारय	३३०, ३७
पादच्छिन्न	४१६	पायए	१३, १२३, १३६; २२८; ६२६; ७२६, ३३, ३६, ४३	पारिताविय	१५४५, ४६
पामिच्च	११२ से १७, २६; २३ से ८; ५५ से १०, ४६ से ४८, ६४ से ६, ५४ से ५६;	पायए	१३, १२३, १३६; २२८; ६२६; ७२६, ३३, ३६, ४३	पालइत्ता	१५३, २५
		पायखज्ज	४३१	पालंब	२२४; ५२७; १३१७६; १४१७६
				पालंबसुत्त	१५२८
				पालित्ता	१५१७८
				पालिय	१५४६, ५६, ६३, ७०, ७७
				पाव	७१
				पावकम्म	२४१, ४२, १५३२
				पावग(य)	५४८; ६५६; १५४५
				पावार	५१४
				पाविय	१५४६
				पास	
				-पासइ	१२१ से १३; १५१७३
				-पासह	३५४ से ५८
				-पासेज्जा	४१६ से २२

शब्द-सूची

११७

पास	१५२८	पिडवाय	१११,४ से न,	पिप्लि	१११०७
	गा० ११,१३		११ से १७,१९,२१,	पिप्लिल्लिचुण्ण	१११०७
पासग	४२१		२३,२४,३३,३६,	पिवित्ता	११३१
पासमण	१५१३९		३७,४०,४२ से ४७,	पियकारिणी	१५११८
पासवण	१५११; २११८,		४९,५०,५२,५३,	पियदंसणा	१५१२३
	३०,७१; न२५;		५५,५८,६१,६२,	पिया	१५११७
	१०११ से २८		८२ से ८४,८७,८९,	पिरिपिरियसद्	१११४
पासाइ(दि)य	४२०,		९०,९२ से ९४,९६	पिलुंखुपवाल	१११०९
	२२,३०		से ९९,१०१,१०२,	पिलुंखुमथु	१११११
पासाद	३१४७, ४१२१,		१०४,१०६ से ११९,	पिह	
	२२		१२४ से १२६,१२८,	-पिहेहि	३१२१
पासादीय	१५१२८		१३३,१३४ से १३६,	पिहण	२१४१,४२
पासाय	४२९,३०;		१४४ से १४७,१५१	पिहय	३११९
	५१३८, ६१४१;		से १५४, २१४४,	पिहाण	२१४४
	७११३, १०११३		५१४२,४५, ६१४४,	पिहुण	११९६
पासावच्चिज्ज	१५१२५		४६,५०,५३	पिहुणहत्थ	११८२
पासित्ता	६१२१	पिंडेसणा	१, १११४० से	पिहुय	११६,७,८२,१४४
पाह			१४७,१५५	पीढ	११८८; २११६,
-पाहामो	१५५७,	पिट्ट	११७८,७९		३१२,३, ४१२९;
	११३,१२७	पिट्ठर	१११४३		७७, १०११३;
पाहुड	२१३८ से ४३	पिणिवा			१५१२८, गा०८
पाहुडिय	२१४४	-पिणिवेज्ज	१३१७६;	पीढसप्पि	४११९
पिंड	१११९,४६,१३८		१४१७६	पीय	१५१३९
पिंडणियर	११२४	पित्त	११५१, २११८	पुडरीय	१५१३
पिंडय	१३१२८ से ३४,	पित्तिय	१५११९	पुग्गल	१५१५
	६५ से ७१; १४१२८	पिप्ल	२१६५; ७१५४	पुच्छ	
	से ३४,६५ से ७१	पिप्लग(य)	२१६३;७९	-पुच्छेज्जा	३१४५

पुच्छण ११४२, ४३;	पुष्कोवय १०१२७	पुल्य १५१२८ गा० १२,
२१४६ से ५६; ३२,	पुम ४१२२, १३	१५१३२ गा० १६
३, ७१४ से २१	पुरजो ३६, १६, २२, ६१;	पुव्व ११३५, ५५, ५६, ५८,
पुट्ट ३१४५	५१५०; ६१५८;	८५, ६१, ६५, १२१,
पुढविकाय ११६२, २१४१,	१५१२८ गा० १३	१२३; २१६, २१ से
४२; १५१४२	पुरत्व १५१२८, २६	२५, २७ से ३०, ३८,
पुढविसिला २१६६;	पुरा ११४४, ४५, ४६, ५६,	४१, ४२, ४४, ४६,
७५५	१२३; २१४५, ४६	७१; ३६, ११, १३,
पुढवी ११५१, १०२;	पुराणग ११११२	४६; ४१ से ६;
५३५; ६३८;	पुरिस ४५; ११११६,	५१२७; ६१२८, ४५;
७१०; १०११४	१८; १२११३, १५	८१२५; १५१२६
पुढवीकाय ११६१	पुरिसंतर १११२ से १६,	गा० १, ४१
पुण १११	१८, २२; २३ से ७,	पुव्वकम्म २१२७
पुण्ण ३११४	६, ११, १३, १५, १७,	पुव्वामेव ११२५, ४६, ५१
पुण्णागवण १०१२७	५१५ से ६, ११, १३;	५४, ५७, ६३, ६६,
पुत्त १२२५, ४६, ६३,	६१४ से ८, १०, १२;	१०१, १२२, १२३,
१२१, १२२, १४३,	८३ से ७, ११, ११,	१२७, १३१, १३५,
२१२२, २५, ३६ से	१३, १५; ६३ से ७,	१४३; २१४८, ६३,
४२, ५१ से ५५, ६४,	६, ११, १३, १५;	६४, ७०, ७१, ७३ से
५१८; ६११७; ७६,	१०१४ से ८, १०	७५; ३१५, २६,
१६ से २०, ४७;	पुरिसवयण ४३, ४	३४, ४०; ५१८, २२
१०१२२, १५, १६	पुरे ११२६, ३२, ४२, ४३	से २७; ६१७, २१
४११२६; २११४;	पुरेकड १६१८	से २८, ४४, ४५;
३१५५; ५१२५;	पुरेकम्मकय ११६३, ६४	७३, ६
६१२५, ८११४;	पुरेसथुय ११४६, १२२,	पुव्वकीलिय १५१६७
६११४; १०११२, १५	१३०	पुव्वरय १५१६७
न्तर १५३		पुव्वं १५१२८ गा० १२

शब्द मुक्ती

११६

पद्म	६६१७	पोतगच्छिणी	३१४८	फलोवन	१०१२७
पदपिण्डनाम	१११६२	पोतगच्छ	११११४	फाणिय	११४६
पनि	२११८	पोतगच्छविभग	११११८	फालिय	५११४
पुनित्थान्तम	११११३	पोतगच्छ १११३५. १५१२७		फास	५१३७; १५१७६
पुन ११८६.५१, १३१११,		पोतग(य)	५११, १७	फासमन	४१८
२७.६४, ७१;		पोतगकम्म	१३११	फामविमय	१५१७६
१४१११, २७, ६८, ७१		पोतगजाय	११११५	फासिन्ता	१५१७८
पुन्नि १२११; १५१२८		पोतगवीय	११११५	फामिय	१५१४६, ५६,
पेत्तना	११८६	पोतगिमी	१५१२६, ३८		६३, ७०, ७७
पेत्तुगिण्डज	१५१२८	पोतग	२१७५, २१२६	फामुय	१५१, ७, १८, २२,
पेत्तय	१५१२८	पोतगिय	१२११		२३, २५, २९, १००,
पेम	५११५				१०१, १२८, १४१
पेमन्त्रम	५११५	फ			से १४६, १५१ से
पेहमाण	३१६	फन्नि	१५११५		१५३, २१४, ६१,
पेत्ताग ११४, ५, २१, २४,		फरग	११६२. ५११, १०,		६३, ६४, ७२ से ७४,
२५, ४०, ४२ से ४५,			१२, १४, २१, २३,		३२, ३, ५१११ से
५२, ५४ से ५६, ५८,			२५, २७, २६, ३१,		१३, १७ से २०, ३०;
६१, ६३, १२३,			३३, ३५, १६३		६१०, १२, १६ से
१२८, २२४, ६८,		फल	२११४, ३१५;		१६, ३१, ७२८,
३२२, ४३, ५६;			४३२; ५२५,		३१, ३५, ३८, ४२,
४२३ से ३४,			६२५; ६२४,		४५; ६२
५११८ से ४५, ४८,			६२४, १०११२,	फुम	
६१७, ४४, ४५, ५३,			१५; १५३६	-फुमाहि	११६६
५६; ११११६,		फल्ग(य)	११८८; २११६;	-फुमेज्ज	११६६
१२११३			३२, ३; ७१७	-फुमेज्ज	१३१४, ४१,
पोक्कत्तालियकुल १२३		फलिह	४२६; १११५,		१४४, ४१
पोक्कवर १११५, १२२			१२२	फुमिता	११८२

व्व	वहिया	७२४; ८३ से	वायर	१५४३
बंध		७, ९, ११ से १५;	वारस	१५३४, ३८
-बंधति	२१२२, ५१;	९३ से ७, ९, ११ से	वाल	२७२; ३९, ११,
	३६१; ५५०;	१५; १०४ से १०,		२६, ४४; ८२६;
	६५८; ७१६	१५३८		१५१५
-बंधंतु	२१२२	बहु	वासीति	१५५
-बंधेज	३९, ११	११३, १५ से १७,	वाहा	१६२; ३२५, २६,
बंध	१६११	२४, ४२, ५७, ६१,		४४, ४७ से ४९
बंधण	६१४; १६१, १२	१२७, १४५, १४७;	वाहाओ	३१६, ४७
बंध	१५२६ गा० ५	२१७, ३६, ३७, ३९,	वाहि	७२४; १०१२
बंधचारि	११२१;	४०, ७२ से ७४;	बाहिरग	१४६
	२१२५, ३८	३१ से ५, ४५, ६०;	वाहु	१८८; २१९, ४६,
बंधचेरवास	१५३६	४२६; ५६, ९, १०,		७१; ३२१; ८२५
बद्ध	५२७; १६११	२०, ४९; ६५, ७,	वित्तिय	५२
बद्धीसगसद्	११२	८, ११, १९, ५७;	विल	१८३, १३६
बल	३२६; १५२६, २७	१०५, ७, ८, ९;	वीय(वीज)	११, २, ४२,
बलत्र	५१; ६२	१५८, २५, ५७, ७१		४३, ५१, ८२, ८३,
बलाहग	४१७	यहखज्जा		१०२, १३५; २११,
बहि	१२९, ४१; २१२	बहुणिवट्टिम		२, १४, ३१, ३२, ५७
बहिया	१९, १२ से १६,	बहुवेसिय		से ६१, ६८, ६९;
	१८, २२, ३८, ४०,	५३१ से ३४;		३१, ४, ५, ७, १३,
	१२८; २३ से ६,	६३२ से ३७		५५; ५२५, २७ से
	९ से १३, १५, १७,	बहुफासुय		३०, ३५; ६२५,
	५५ से ९, ११, ४३,	८२६ से २८		२९ से ३१, ३८, ४५,
	४५; ६४ से ८, १०,	यहुमज्ज		७१०, २६ से ३१,
	१२, ५१, ५३;	१५२८		३३ से ३८, ४० से ४५;
		बहुरज		
		१६, ७, १४४		
		बहुरय		
		१८२		
		बहुल		
		१५५, २६, २९		
		बहुवयण		
		४३, ४		
		बहुसंभूय		
		१३१ से ३४		

वीय(बीज) ८१,२,१४, २२,२३; ६१,१,२, १४, १०१,३,१२, १४,१५,२८	-वेमि ४१८,३६; ५४०, ५१; ६४३,५६, ७२२,५८; ८३१, ६१७; १०१२;	भगव ११२६; ७५७; १५१ से ४,७ से २६; १५१२६ गा० ६, १५१२७ से ३६, ३८,४०,४१,४२
वीय(द्वितीय) ४६०; ६१२	११२०; १२१७,	
वीयगा ११०४	१३१०, १४१०	भगवई ४१५
वीयोवय १०१७	बोदि ६५२८ गा० ६	भगवन्त ११२१; २१५, ३८; ४७, ७५७
बुड्य ४१६,२०	बोद्धव्व १५२६ गा० ५	भगि(ङ)णी ११२५, ६३, ६६, १०१, १२३, १३५, १३६; २६३, ६४, ४१५; ५१८, २२ से २६; ६१७, २१ से २७, १५२१
बुज्ज	बोह	
-बुज्जिस्सति १५१२५	-बोहिति १५१२६ गा० ४, ६	
बूड्ड २१७२, ८१६		
बू ११२८, ३२, ३५, ५१, ५६, ८५, ८८, ६१, ६५, १२३; २१६, २४, ४५, ७०; ३६, ११, १३, २२, ४२, ४६, ६१, ५१२७, ६१८, ४५; ८२५, १५४४, ४७, ४८, ५१ से ५५, ५८ से ६२, ६५ से ६६, ७२ से ७६	बन ११६६	भज्जा १५२२
	भंग ५११, १७	भज्जिज्जमाण ११२४
	भंगिय १३७ से ३६; ३१५	भज्जिम ४३३
	भंडग ३१५	भज्जिय १५ से ७, ८२
	भंडभारिय ३१५	भण -भणेज्जा ११३६
	भते ७१, १५३१, ४३, ४६, ५०, ५७, ६४, ७१	भत्त ११६, १२२, १२३; २१२०; ३१५, ३४, ४५, ७१४, १५१२५, २८ गा० १०, १५१२६, ३८
	भंस	भत्ति १५१२८
	-भंसेज्जा १५१६५ से ६६, ७२ से ७६	भट्टय ११३२; ४२४
-वेमि ११२०, ३०, ४१, ४८, ६०, ८६, १०३, १२०, १२६, १३७, १५५; २१२६, ४३, ७७, ३२३, ४६, ६२,	भगंदल १३२८ से ३४, ६५ से ७१; १४१८ से ३४, ६५ से ७१	

भमुह ~ १३३७, ७४;	भवणगिह २३६ से ४२;	-भासेज्जा ३५३; ४३,
१३३७, ७४	३४७, ४२१, २२	५, १० से १६, १६
भय १५१६, ५०, ५४	भवणवइ १५६, ११,	से ३६, ३८; १५५०
भयंत १४६, १५५;	२७, ४०	भासंत १५५०
२३४ से ४२, ६७;	भविता १५११	भासजाय(त) ४६
५२१, ४७; ६२०,	भाय ११६; १५१२०	भासज्जाय ४१७
५५; ७५६; ८२१	भायण १६३ से ८१	भासमाण ३५१, ५३
भर १५१२८ गा० १४,	भायणजाय ११४३	भासा ३५१, ५३; ४३,
१५	भारह १५१३	५, ६ से १६, १६ से
भव	भारिया १२५, ६३;	३६, ३८
-भवइ (ति) १३५,	२६४; ५१८;	भासिज्जभाणी ४६
१२१; २२५, २७,	६१७	भासिय ४६
३४ से ४३;	भाव ३६१; ५१५०;	भासुर १५१२८ गा० ६
३२५; ६२६;	६१५८; १५१५,	भिद
७५० से ५३;	३३, ३६; १६१	-भिदंति १८३
१५१४६ से ५३, ५६,	भावणा १५१४४ से ४८,	-भिदिपु १८३
६३, ७०, ७७, ७८	५१ से ५५, ५८ से	-भिदिस्संति १८३
-भवति १३२, १२१,	६२, ६५ से ६६,	-भिदेज्ज २२६
१४३, १५०; २२५,	७२ से ७६, ७८	भिक्खाग १४६, १३८,
२७, २६, ३६ से ४२,	भावमाण १५१३६	१३६
४४; ४८; १५१४४,	भास	भिक्खायरिया १४६
५१, ५८, ६५, ७२	-भासइ १५१४२	भिक्खु ११, ४ से ७, १६
विस्सामि ७१	-भासंति ४१७	से २१, २३, २४, २६,
वेज्जा २७६; ८३०	-भासावेज्जा १५१५०	२७, २६, ३०, ३२ से
१५१३	-भासिसु ४१७	३४, ३६ से ४४,
खय १५१३, २५	-भासिस्संति ४१७	४६ से ४६, ५२ से
	-भासेज्ज ३५१, ५३	५६, ५८,

भिकखु ११६० से ६२, ८२ से ६६, १०१ से १२०, १२२ से १२६, १३३ से १४०, १४४ से १४७, १५१ से १५४, १५६; २११, २, ७, ८, १०, १२, १४, १६, १८ से ३२, ४३ से ४६, ४८ से ६६, ६८, ७७, ३२, ३, ६ से १६, २२, २३, २७ से २६, ३१, ३३ से ३६, ३८, ४०, ४१, ४३, ४५ मे ६२; ४११, ६, ६ से ३६; ५११, ४ से १०, १२, १४ से २०, २७ मे ३८, ४० मे ४४, ४६, ४८ से ५१; ६११, ३ से ६, ११. १३ मे १६, २६ से ४१, ४३ से ४६, ४८, ५० से ५२, ५४, ५६ से ५६; ७३, १० से २२, २५ से ४६, ४८, ५० मे ५५, ५८;	भिकखु ८११, २, ७, ८, १०. १२, १४, १६, २२ मे ३१, ६११, २, ७, ८, १०, १२, १४, १७, १०११ से ६, ११ से २६; ११११ से २०; १२११ से १७; १५१७२ से ७६, १६१२, ७, ८ भिकखुणी १११, ४ से १७, १६ से २१, २३, २४, २६, २७, ३०, ३६ से ४२, ४४, ४६, ५०, ५२ से ५५, ५८, ६० मे ६२, ८२ मे ८४ ८६, ८७, ८६, ६०, ६२ से ६४, ६६ मे ६६, १०१ मे १२०. १२२, १२४ से १२६, १३३ मे १३७, १४४ मे १४७, १५१ मे १५४, १५६; २११, २, १०, १२, १४, १६, १८, २०, २६, ३० मे ३२, ६३, ४७, ४८ मे ६१, ६३ मे ६६ ६८ मे ८८.	भिकखुणी ३१२, ३, ६ मे ८, १०, १२, १४ मे १६, २२, २३, २७, २६, ३१, ३३ मे ३६, ३८, ४०, ४१, ४३, ४५ मे ४८, ५० मे ६२; ४११, ६ मे ३६. ५११, ४ मे १०, १२, १४, १५, १७ मे २०, २८ मे ३८, ४० मे ४४, ६६, ४८ मे ५१, ६१, ६३ मे ६, ११, १३, १४, १६ मे १६, २६ मे ४१, ४३, ४४, ४६, ८८, ५० मे ५२, ५४, ५६ मे ५६; ७११० मे २२, २५, २७ मे ३२, ३१ मे ३६, ४१ मे ४६, ५१, ५५, ५८; ८११, ३, ७, ८, १०, १२, १४, २२ मे २४, २६ मे ३१, ६१, ६, ७, ८, १०, १२, १४, १६, १८, २० मे ६, ११ मे ६६ ११११ मे ८८. १८१३ मे १३
---	--	---

भिच्छुडग	१५१३	-भुजे	११२५	भूय(त)	६४ से ६,२१;
भित्ति	५३७; ६४०;	-भुजेज्ज	१२,५७,१३६		नार से न,२५,
	७१२; १५२८	-भुजेज्जा	१२६,१२६,		६३ से ७; १०४
भिन्ननुक्क	२१२६		१३८,१३६;		से ६; १३१७६;
भिन्मिसमाण	१५२८		१५५६		१४१७६; १५३,६,
भिल्ला		-भुजेज्जासि	११२४		३२ गा०१६, १५४०,
-भिल्लिगेज्ज	१३१५, २१,	भुजमाण	१२५,५७,६३	भूयमह	१२४
	३०,४२,५८,६७;	भुजावेत्ता	१५१३	भूसण	१५१२८
	१४५,२१,२३,२२,	भुजिय	४२	भेद(य)	१५६५ से ६६,
	५८,६७	भुजंगम	१६६		७२ से ७५
भिल्ला (य)	१५३;	भुज्जतर	३१४	भेदकर	१५४५,४६
	१०१७	भुज्जिय	१६,७,१४४	भेयणकरी	४१०,१२,
भिस	१११४	भुज्जो	२३३,३४		१४,२१,२३,२५,
भिसमाण	१५२८	भुत्त	१३१; १५३६		२७,२३,३१,३३,३५
भिसमुणाल	१११४	भुया	१=१०	भेरव	१५१६
भिसिभिसित	१५२८	भूश्रोवघाड्य	१५४५,४६	भेरि	१५२८ गा० १६
भिसिय	२४६; ३२४;	भूओ(तो)वघाड्या		भो	१३२
	७३,२४		४१०,१२,१४,२१,	भोइ	१५४८,५६,६८
भीम	१५१६		२३,२५,२७,२६,	भोगकुल	१२३
भीय	३५६,६०; ५४८,		३१,३३,३५	भोच्चा	१४६,१२५,
	४६; ६५६,५७	भूमिभाग	१५२६		१३२,१३५
भीरु	१५५४	भूमी	६४७; ७६	भोत्तए	१३,१२१,१२३,
भीरुय	१५५४	भूय(त)	११२ से १७,		१३६, २१२८,
भुंज			८८; २३ से ७,१६,		६२६; ७२६,२६,
-भुंजह	१५७,१२७,		४६,७१; ४३२;		३३,३६,४०,४३
	१३६		५५ से १०;		
-भुजावेत्ति	१५१३				

शब्द-सूची

१२५

भोयण ११३१, ६२६; मसु
 १५१४८, ५६, ६८ मकर
 भोयणजात(य) ११२५, मककड
 ६३, १२५, १२७,
 १३१ से १३५, १३८,
 १३६, १४३, १४५ से
 १४६; २१८

न्

मउड १३१७६; १४१७६,
 १५१२८, १५१२८
 गा० ६

मउय ४३७
 मंच १८७; २१८;
 ५३८; ६४१,
 ७१३; १०१३

मडावणघाई १५१४
 मंडिय १११६; १२१३
 मत २१५; ७२०
 मत

-मंतेति २१५, ७२०

मथु १६७, ८२, १४४

मंथुजाय ११११

मस १४६, १२४, १३४,
 १३५, ४२६

मंसखल १४२, ४३

मंसग ११३५

मंसादिय १४२, ४३

नर० मक्क
 १५१२८ मक्खेत्ता
 १२, ४२, ४३,
 ५१, ८२, ८३, १०२,
 १३५; २११, २, ३१,
 ३२, ५७ से ६१, ६८,
 ६६; ३१, ५,
 ५१२८, २६, ३५;
 ६२६ से ३१, ३८;
 ७१०, २६ से ३१,
 ३३ से ३८, ४० से
 ४५, ८१, २, २२,
 २३; ६१, २;
 १०१२, ३, १४, २८

मक्कडजुद्ध १११२,
 १२६
 मक्कडट्टाणकरण ११११,
 १२८

मक्क

-मक्खाहि ६२२

-मक्खेज्ज २१२१,
 ६३२, ३५; १३१५,
 १४२१, ३०, ४२,
 ५१, ५८, ६७, १४५,
 १४, २१, ३०, ४२,
 ५१, ५८, ६७

-मक्खेति २१२, ७१७

२१५१

६२२

१४२, ४३; ३१,
 ४, ५, ४०, ५८ से
 ६०; ५१४८, ४६,
 ६५६, ५७, १५३६

मगग ३१६

मगगो १५२६, २६

मगसिर ११२४, १३४

मच्छ १४२, ४३

मच्छखल ११३५

मच्छा १४२, ४३

मच्छादिय १४६, ११२

मज्ज १५१४

मज्जणघाई १५१२८

मज्जाव -मज्जावेइ १५१२८

मज्जावित्ता १५१२८

मज्ज २१७२; ८२६,
 १५२६, १५२६

गा० ५

मज्जमज्ज २१५०,
 ७१५; १५२६

मज्जतो ३१६

मज्जयार १५२८ गा०८

मज्जिम १११८, १२११

मट्टियलाणिया १०१

मट्टिया १६७, ६८, ६९,
 ६१; ३७, १३, २,
 ४०, १०१, ३;

मट्टियाकड १०१४	मणुयपरिसा १५३२, ३६	मण्ण(न्न)माण ७२६ से
मट्टियापाय ६१, १६, १७	मणुस्स १५२; ३४५,	३१, ३३ से ३८, ४० से
मट्ट २१०, ५१२, ६६;	५४, ५६; ४२५, २६,	४५; ८१, ६१, २
८१०; ६१०;	१५३२ गा० १८,	मत्त १३२, ६३ से ८१,
१०११	१५४१	१०२, १४१ से १४३,
मड्य १२८, ३४, १२२,	मगोमाणसिय १५३६	१४८, १४९; २४६;
२११; ३२, ३, ४५,	मणोसिला ११७?, ७२	३२०
५७, ५८; ७२; ८१	मणोहर १५६६	मत्तग(य) ३२४,
मड्यचेद्दय १०२३	मण्ण	७३, २४
मड्यडाह १०२३	-मण्णेज्जासि ६१७;	मन्न
मड्यथूमिय १०२३	१३१०; १४८०	-मन्नइ ५४८; ६५६
मण २२३, २४; ३२२,	मण्ण(न्न)माण १११, ४ से	मय ३४०
२६, ६१; ५५०,	७, १२ से १८, २१ से	मरण १५२८ गा० ७
६५८; १५३३,	२५, ३६, ४१, ६३ से	मल १६८
३४, ३७, ४३, ४५,	८५, ८७, ८८, ९० से	मलय ५१४
५०, ५७, ६४, ७१	१०२, १०४, १०६ से	मल्ल १५२८
मणपज्जवणाण १५३३	११६, १२१, १२३,	मल्लदाम १५२८ गा० ७
मणि २२४, ५२७, ६२,	१२८, १३३ से १३६,	मसग २१७६; ८३०
१५१४, २८,	१४१ से १४६, १५१ से	मह २४१, ४२, ३२, ३,
१५२८ गा० ११	१५४; २४८, ५७ से	३६, ५६, ६०; ५१४
मणि (पाय) ६१३	६१, ६४; ५५ से	४८, ४९; ६१३,
मणिकम्म १२१	१०, १२ से १५, १७	१४, ५६, ५७;
मणिबंधण ६१४	से २०, २२ से २५,	१११४; १२११;
मणुण्ण(न्न) १५७, १३१	२८ से ३०, ६४ से	१५६, १०, २८, ४०
१३८, १३६; ४२४;	१४, १६ से १६,	महरिह १५२८ गा० ८
१५१७ से ७६	२१ से २६, २६ से	महल्ल ४२८ से ३०
मणुय १५२६	३१, ४६;	

महल्लिया ११२६; २११२; ८११२, ६११२	महिस ११५२, ३१५४ से ५६; ४१२५, २६	माणुस्सग १५११५
मह्वव्य ४१२८, १५१४२, ४३, ४६, ५०, ५६, ५७, ६३, ६४, ७०, ७१, ७७, ७८; १६१६	महिसकरण १०११८ महिसजुद्ध ११११२, १२१६	मातुल्लिगपाणग १११०४ माया ४११, ३८ मारणतिय १५१२५ माल ११८७; २११८; ५१३८; ६१४१; ७११३; १०११३, १५१२८ गा० ६
महागुरु १६१६	महिसट्टाणकरण १११११, १२१८	माला १५१२८
महामह ११२४	महु ११४६, १११२	मालिणीय १५१२८
महामुणि १६१४	महुमेहुणि ४११६	मालोहड ११८७ से ८६
महालय ११४६; ३१३६, ५६, ६०, ४१३०; ५१४८, ४६; ६१५६, ५७	महुर १११३८, ४१३७ महुस्सव ११११८	मास(मास) ३१४, ५, ५१२२, ६१२१, १५१३. ५. ८, २६, २६
महावज्जकिरिया ११३६	मा ११५७, ६३	मास(माप) १०११६
महावाय ११४०, ५१४५, ६१५३	माड ४१२, १४	मासिय ११२१
महाविजय १५१३	माडट्टाण ११३३, ४६, ४६, ५७, १२३, १२५ से १२७, १३० से १३२, १३८; ३१४०,	माहण १११६, १७, २१, २४, ४२, ४३, ४६, ५५, ५८, १४७, १५४; २१७, ८, ३६, ३७, ३६, ४०, ४६; ३१२ से ५; ५१६, १०, २०; ६१८, ६, १६; ७१२४; ८१७, ८; ६१७, ८; १०१८, ६; १५१३, ६, १३; १६१६
महाविदेह १५१२५	५१४७; ६१५५	
महाविमाण १५१३	माण ४११, ३८	
महावीर १५११, ३, ४, ७ से ३६, ३८, ४० से ४२	माणव ४११६, २०; १६१११	
महासमुद्द १६११०	माणिक १५११२, १३	
महासव ११११७, १२११४	माणुम्माणियट्टाण ११११४, १२१११	
महासावज्जकिरिया २१४१	माणुस १५१२८ गा० १२; १५१३४, ३७, ६४	
महिद्धिय १५१२६ गा० ४	माणुसरंघण १०११८	
महिय ११४०; ५१४५; ६१५३		

माहणी	१५३,६	मुणि	१६५,१०,११	मेहुण	११२१; २२५,
मिओ(तो)ग्गह	१५५८,	मुत्तजाल	१५२८		३८; १५६४,७०;
	६२	मुत्तदाम	१५२८		१६६
मिग ३४६ ; ४२५,२६		मुत्तावली	२२४; ५२७	मेहुणवम्म	१३२; २५५;
मिच्छा ११५५; २६६,		मुत्ताहल	१५२८		७२०
५२१; ६२०;		मुत्ति	१५३६	मोत्ति	१५३६
७५६; ८२१		मुद्दियापाणग	११०४	मोत्तिय	२२४; ५२७,
मित्त १५१३,३४		मुल्ल	६१३		१५१२,१३
मिरियचुण्ण	११०७	मुसा	१५५०	मोय	२२७
मिरिया	११०७	मुसावाइ	४०,१४	मोरग	२६३,६५; ७५४
मिलक्खु	३८,६;	मुसावाय	१५०,५६	मोल्ल	५१४; १५२८
१११८; १२१४		मुह	१६६; २१८; ३१८		गा० ६
मिहुण	१५२८	मुहुत्त	१५२६,३५,३८	मोसा	४६,१०;
मीसजाय	१२६	मुहुत्तग	५४६,४७,		१५५१ से ५५
मुङ्गसद्	१११		६२६,५४,५५	मोहत	१११८; १२१५
मुङ्ग	१५१	मूय	४१६	अ	
मुगुंदमह	१२४	मूल	२१४; ३५५;	य	१२
मुग्ग	१०१६		५२५; ६२५;	र	
मुक्क			८१४; ६१४;	रज्ज	
-मुक्किस्संति	१५२५		१०१२,१५;	-रज्जेज्जा	१११६;
			३३७८; १४७८		१२१६;
मुक्खिय	११०५	मूलजाय	१११५		१५७२ से ७६
मुज्झ		मूलवीय	१११५	रज्जमाण	१५७२ से ७६
-मुज्जेज्जा	१११६;	मूलग	१०२६	रज्जुया	३१७,१८
	१२१६;	मूलगवच्च	१०२६	रत्त	५१२,४१; ६६;
	१५७२ से ७६	मेरा	१२६; ३१४;		१५२८
मुज्जमाण	१५७२ से ७६		५४; ६३	रमंत	१११८; १२१५
मुट्ठि	१३५	मेरुपडणट्टाण	१०१६		

रम्म	१५।१४, २८	रहकम्म	१५।३६	रंभ	
	गा० १६	राइ	१।४१, १५।६	-रंभंति	२।२२, ५१;
रय(रजस्)	१।३५, ४०,	राइंदिय	१५।५, ८		३।६१; ५।५०;
	५।४५, ६।४४,	राइणकुल	१।२३		६।५८; ७।१६
	४५, ५३	राओ	१।३२, २।३०, ४५,	-रंभतु	२।२२
रय(रत्त)	२।४४		४६, ७१; ८।२५	-रंभेज्ज	३।६, ११
रय		राग	१५।७२ से ७६	रुक्ख	३।४२, ४७, ५६, ६०,
-राएज्ज	१३।४, ४१;	रातिणिय	३।५२, ५३		४।२१, २२, २६, ३०,
	१४।४, ४१	राय(रात्र)	३।४, ५		३७, ५।४८, ४६;
रयण	१५।२६, २८,	राय(राजन्)	४।१६		६।५६, ५७, १५।३८
	१५।२८गा० ८, ११	रायंसि	४।१६	रुक्खगिह	३।४७; ४।२१,
रयणवास	१५।१०	रायपेसिय	१।४१		२२
रयणावली	२।२४; ५।२७	रायवसट्ठिय	१।४१	रुक्खमह	१।२४
रयणी	४।१६, १५।१०,	रायसंसारिय	३।६१,	रुच	
	११, २६		५।५०; ६।५८	-रुचइ	५।२६, ३०;
रस	४।३७, १५।१५, ६८,	रायहाणी	१।२८, ३४,		६।३०, ३१
	७५		१२२; २।१, ३।२,	-रुच्चिंति	१।८३
रसमत	४।८		३, ४५, ५७, ५८,	-रुच्चिसु	१।८३
रसय	१।१		७।२, ८।१, ११।७,	-रुच्चिस्संति	१।८३
रसवती	४।२८		१२।४	रुद्धमह	१।२४
रसिय	१।५७, ४।२४	रायोग्गह	७।५७	रुप्प	५।६८
रसेसि	१।६१	रीय		रुह	५।२८
रह	३।४३, ५६, ११।१७,	-रीएज्जा	३।६, २२,	रुद्ध	४।३४
	१२।१४		३४ से ३६	रुव	४।१६ से २२, ३२,
रहजोग्ग	४।२७	रीयमाण	३।३५, ३६		३७, १२।१ ने १३,
रहस्सिय	१।३२, २।५५,	रीरियपाय	६।१३		१५।१५, २७, २८,
	७।२०	रीरियवघण	६।१४		१५।२८ गा० ८,
					१५।७३

रुवग	१५२८	लसुणनाल	१११७	लावयकरण	१०१८
रुवसत्तिककय	१२	लसुणपत्त	१११७	लावयजुद्ध	१११२,
रोइज्जंत	५२६, ३०;	लसुणवण	१११७		१२१६
	६३०, ३१	लहुय	२५६ से ६१;	लावयट्टाणकरण	
रोग	२२१		४३७		११११; १२२८
रोम	१३३७, ७४;	लाइम	४३३	लिकला	१३३८, ७५;
	१४३७, ७४;	लाउयपाय	६१६, १७		१४३८, ७५
	१५२८ गा० १२	लाढ	३८ से १३	लित्त	२१०; ८१०,
रोय	१३१	लाभ	११, ४ से ७, १२		६१०; १०११
रोयमाण	२३६, ३७,	से १८, २१ से २५,		लुक्ख	१५७
	३६ से ४२	३६, ४१, ६३ से ८२,		लूस	
		८५, ८७ से १०२,		-लूसेज्ज	११८८; २११६,
ल		१०४, १०६ से ११६,			४६, ७१
लंबूस	१५२८	१२१, १२३, १२८,		लेलु	१३५; ५३७;
लक्खण	१५१५, २८, २६	१३३ से १३६, १४१			७१२
लट्ठिय	२४६; ३२४;	से १४६, १५१ से		लेलुय	१५१, ८२, ८३;
	७३, २४	१५४; २४८, ५७ से			५३५; ६३८, ४०;
लत्तियसद्द	११३	६१, ६३ से ६६;			७१०; १०१४
लभ		५५ से १५, १७ से		लेवण	२४१, ४२, ४४
-लमिस्सामि	१४६,	२०, २२ से २५, २८		लेस	
	५४८; ६५६	से ३०, ६४ से १४,		-लेसेज्ज	११८८; २११६,
-लभेज्जा	१३२, २१५	१६ से १६, २१ से			४६, ७१, ८२, ५;
लभित्ता	११३८, १३६	२६, २६ से ३१, ४६;			१५४४, ४७, ४८
लभिय	४२-	७२६ से ३१, ३३ से		लेसा	१५२८ गा० १०
लया	३४२; १५२८	३८, ४० से ४५, ५४,		लेस्सा	१३६; १५२८
लविय	१५३६	५५; ८१; ६१, २		लोग	१६७
लसुणकंद	१११७	लाल	१५२८	लोगतिय	१५२६
लसुणचोयग	१११७				गा० ४, ५

लोण	१७३, ७४, ८३, १३६	व	वज्रक	४२५
लोद्ध	२१२१, ५३, ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६; ७११८, १३१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८, १४१६, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८	व(वा)	वट्ट	
लोभ	४११, ३८, ८२०, १५१५३	व(व)	-वट्ट	१६१६
लोभणय	१५१५३	वड	-वट्टनि	२३८ मे ४०
लोमि	१५१५३	वाय्	वट्टमाण	१२८, २१२३, १५१५, ३८
लोम	८१, १५१३२ गा० १६	वज्ज	वट्टयकरण	१०१६८
लोय(ग)(लोक)	१४६, १३८, १५१३६, ४१; १६११२	वइसाह	वट्टयजुद्ध	११११२, १२१८
लोय(लोच)	१५१३०, ३२	वंत	वट्टयट्टाणकरण	१११११; १२१८
लोह	१५१५०	वंता	वडिया	११६०५; ३३६
लोहिय	८३७	वंद	वट्ट	
लहमुण	७८० मे ४५	-वदति	-वट्ट	१६१५
लहमुणवद	७४२ मे ४५	वदित्ता	वग	३१८८, ५६, ६०; ४१२८, ३०, ५१४८, ४८; ६१४७, ५६, ५७, १०१२०, ११६८, १२१५
लहमुणनोया	७८३ मे ४५	वदिय		१३१६ मे ३, ५६ मे ६४, १४१६ मे २७, ५६ मे ६८
लहमुणगालग	७४३ मे ४५	वंस		
लहमुणवना	७३६	वंससद्द		
		वकरंत		
		वक्ककम्मत्त		
		वग्ग		
		वग्घ		
		वच्च		
		वच्चन		
		वच्चसि		
		वच्चमि		
		वच्चत्तिरिप्पा		

वणसंड १०२०, १११८; १२१५; १५२०८ गा० १४	वत्त -वत्तेज्ज ११८८; २१६, ४६,७१; ८२५; १५४४,४७,४८	वद्धकम्मंत २१३६ से ४२, ३१४७; ४२१, २२
वणस्सइ ११६१	वत्तिय ३१८ से १३	वद्धमाण १५३, १३, १६
वणस्सइकाय ११६७, २१४१, ४२, १५१४२	वत्तय २१३८; ३६, ६१, ६१, ५११ से १०, १२, १४ से २०, २२ से ३८, ४१, ४६ से ५०; १५२० गा० ६	वप्प ११५०; ३१४१, ४७, ४२१, २२; १११५; १२२
वणिमग १५११३	वत्थत ५१२७	वम -वमेज्ज ११३१
वणीमग(य) १११६, १७, २१, २४, ४२, ४३, ४६, १४७, १५४, २१७, ८, ३६, ३७, ३६, ४०, ३२ से ५, ५१६, १०, २०, ६१, ८, ६, १६; ८१७, ८, ६१७, ८, १०१, ६	वत्थधारि ५१४१	वय -वएज्जा ११५७, ६२, १२७, १३०, १३५, १५५, २१६७; ३११७ से १६, २१, २६, ४४, ५१, ५५, ५६; ४४, १२ से १६, १६ मे ३६; ५२१ से २५; ६२० से २६; ७५६, ८२१, ३०
वण्ण(न्न) २१२१, ५३, ४११६, ५१२३, ३१, ३३; ६१२३, ३३, ३६, ७११८, १३, १५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८, १४१५, २२, ३१, ४३, ५२, ५६, ६८; १५२०८	वत्थेसणा ५	
वण्णमंत ४१८; ५१४८, ६१५६	वद -वदति २१३० -वदिससामि ४१४ -वदेति ५१४७, ६१५५ -वदेज्जा ११५७, १०१, ३१२०, २४, २५, ४५, ५३, ५४, ५७, ५८, ६१; ५१२२, ४६, ४८, ५०; ६१२१, ५४, ५६, ५८	वयइ ११३० -वयंति ४११ -वयह ११४६ वय(वच्चस्) १५१४३, ५०, ५७, ६४, ७१
वणिण्या ११७५, ७६	वदंत ११२५, ५७, १०१	वयंत ११६३, १२३, १२७, १३०, १३५; ३१२६; ५१२२ से २४, ६१२१ से २६
वतिमिस्स ११३२	वदित्तए २१३०	

वयण १५।३२ गा० १८, १५।३४,३७,५१ से ५५	वसा २।२१,५२, ६।२२, ३२,३५, ७।१७; १३।५,१४,२१,३०, ४२,५१,५८,६७, १४।५,१४,२१,३०, ४२,५१,५८,६७	वाय -वायति १५।२८ गा० १७ वाय(वात) १६।३ वायत ११।१८, १२।१५ वायण १।४२,४३; २।४६ से ५६, ३।२,३, ७।१४ से २१
वदमत १।१२१, २।२५, ३८	वसित्ता १५।२६ वसुल ४।१२,१४ वह ३।२६,४०,४४, ११।१६; १२।१३	वायणिसग्ग २।७५,८।२६ वायस १।६१ वाया १६।२
वयरामय १५।३१	वहति १५।२८, गा० १२,१३	वाल १३।३७,७४, १४।३७,७४
वर १५।२८, २८ गा० ८,६,१६	-वा १।१,२ वाड्य ११।१४, १२।११	वालग १।१०४ वावी ११।५, १२।२
वरग १।१४३	वाड १।६१ वाउकाय २।४१,४२, १५।४२	वास १५।१० वास(वर्ष) १।४०, ३।४, ५,१३, ४।१६; ५।४५; ६।५३, १५।३,५,२५,२६, ३४,३८
वलय ३।१६,४८	वाड ३।४६,५६,६०, ५।४८,४६, ६।५६,५७	वासमाण १।४०, ५।४५, ६।५३
वल्लो ३।४२	वाणमतर १५।६,११, २७,४०	वासावास ३।१ से ३
ववरोव	वाणर १५।२८ वात १५।२८ वाम १५।३०,३२ वाय(वाच्) ३।२२; ४।१	वासि १५।२७
-ववरोवेज्ज १।७४; २।१६ से ४६,७१, ८।२५		
वस		
-वसति १।१२७,१३६ -वसामो ७।४,६,८,२३, २५,३२,३६,४६,४६ -वस्सिस्सामो २।४७		
वसभकरण १०।१८		
वसभजुद्ध ११।१२, १२।६		
वसमट्टाणकरण ११।११, १२।८		
वसमाण १।४६,१२२, १३८,१३६, २।७०, ८।२४		

वासिट्ट	१५५	विगदूमिय	११११६	विज्ज	-
वासिट्टमगोत्त	१५१८	विगिच्च		-विज्जड	१६१८
वाह		-विगिच्चिज्ज	३१२६	विज्जाहर	१५१२८
-वाहेहि	३११६	विगिच्चिय	११२	विज्जुदेव	४१२६
वाहण	१५१२६	विगोव		विज्जभाव	
वाह्मि	४१२७	-विगोवेति	१५११३	-विज्जभावेतु	२१२३
विआ(या)ळ	११३२, ५२, २१३०, ४५, ४६, ७१, ३१५६; ८१२५	विगोत्रयमाण	११११८, १२११५	-विज्जभावेज्ज	२१२३
विङ्ककंत	४१६, १५१३८	विगोविता	१५११३, २६	विडिमसाला	४१३०
विउ(ट्ट)	५६१५, ११	विचिगिच्छ	११३६	विगिग्घाय	१५१७२ से ७६
विउज		विचित्त	१५१२८, २८२२८ गा० ११	विणिद्धुणिय	२१६६, ८१२३
-विउंजति	४११	विच्छड्डु		विणियत्त	१५११५
विउल	११११८, १२११५, १५११३	-विच्छड्डंति	१५११३	विणिव्वत्त	१५१२६
विउव्व		विच्छड्डिता	१५११३	विगीयतण्ह	१६१५
-विउव्वति(इ)	१५१२८	विच्छड्डियमाण	११११८, १२११५	विण्णव	
विउव्विता	१५१२८	विच्छड्डेत्ता	१५१२६	-विण्णवेति	२१५५; ७१२०
विउस		विच्छिद		विण्णाय	३११, १५११५
-विउसेज्जा	३१६, ५६, ६०; ५१४८, ४६, ६१५६, ५७	-विच्छिदेज्ज	६११६, १३१२६, ३३, ६३, ७०, १४१२६, ३३, ६३, ७०	वित्त	११११, १५१२८ गा० १७
विउसिर		विच्छिदित्ता	१३१२७, ३४, ६४, ७१; १४१२७, ३४, ६४, ७१	वित्तस	
-विअसिरे	१६११			-वित्तसेज्ज	३१४६
वेकुज्जिय	३१४०			वित्ति	११४२, ४३; ३१२, ३
वेग	११२२, ३१५६			वित्त्यार	५१३
वेगओ(तो)दय	३१३२, ३६; ६१४६	विजय	१५१२६, ३८	विदलकड	११५
				विदेह	१५१२६

विदेहजच्च	१५।२६	विमुक्क	१६।८	विरड्य	१५।२८
विदेहदिग्णा	१५।१८, २६	विमोक्ख	१६।११	विरस	१।१३२
विदेहसुमाल	१५।२६	दियट्टत्ताए	२।२८, २९	विराल	१।५२; ३।५९
विद्धत्थ	१।१००	वियड	१।६३, २।१८, २।१,	विरालिया	१।१०६
विन्नु	१६।१, २	५४, ५।२४, ३२, ३४,		विरुद्धरज्ज	३।१०, १।१;
विपंचीसद्द	१।१२	३४, ६।२४, ३४, ३७,			१।११५; १।२।१२
विपरिक्कम	८।१७ से २०	७।१९, १३।७, १६,		विरुक्खन्न	१।२४, १।४३;
विपरिणामधम्म	४।८	२३, ३२, ४४, ५३,			२।२८, २९, ४१, ४२,
विपुल	१५।१२, १३	६०, ६९; १।४।७, १६			३।८, ९, २४, ४३, ५८;
विप्पजहिता	१५।२५	२३, ३२, ४४, ५३.			४।२।७, २८; ५।१४,
विप्पमुक्क	१५।२८गा०७	६०, ६९			६।१३, १।४, १।१।१
विप्परियासियभुय	१।३२	वियत्त	१५।२९, ३३, ३८		से १८, १।२।१ से १६
विप्पवसिय	५।४६, ४७,	वियागर		विरिग	
६।५४, ५५		-वियागरेज्ज	३।५।१, ५३	-विरिगोज्ज	६।१६
विफालिय	३।४०	-वियागर	२।४४	विरिप	
विभंग	१५।६५ से ६९,	वियागरेमाण	२।४४;	-विरिपेज्ज	१।३।८, १।७,
७२ से ७६		३।५।१, ५३			२४, ३२, ४५, ५४,
विभा		वियारभूमि	१।९, ३८,		६१, ६९; १।४।८
-विभाउ	४।१६	४०, ३।२, ३, ५।४३,			१।७, २।४, ३२, ४५,
विभुसिय	२।२४;	४५; ६।५।१, ५३			५४, ६१, ६९
१।१।१८, १।२।१५		वियोस		विलेवणजाय	१।३।८, १।७,
विमाण	१५।२६ गा० ५,	-वियोसेज्ज	३।२२, २६,		२४, ३२, ४५, ५४
१५।२।७, २८		४४, ५९ से ६१,			६१, ६९, १।४।८, १।७,
विमाणवासि	१५।९, १।१,	५।४८, ४९;			२४, ३२, ४५, ५४,
२।७, ४०		६।५।६, ५८			६१, ६९
विमुच्च		-वियोसेज्जा	६।५।७	विल्लसरडुय	१।१।१०
-विमुच्चइ	१६।९, १२	वियाहिय	२।४४	दिवग्घ	५।१५

विवन्न (पग) १।१३२;	विस्साण	विहार २।७६; ३।८ से
५।४८; ६।५३	-दिसजाणेति १।५।१३	१३; १।५।३६, ३८
विवेग ४।१	विम्साणिता १।५।१३,	विहारभूमि १।६, ३८,
विवेगभासि ४।३८	२६	४०; ३।२, ३; ५।४३,
विसमकखणट्टाण १०।१६	विह (दि०) ३।१२, ६०;	४५; ६।५।१, ५३
विमम १।२६, ५३:	५।४६; ६।५।७, १२।१	विहीय १।५।२८ गा० १७
२।१२, ७२, ७६;	विहग १।५।२८	विट्ठवण १।६६
८।१२, २६, ३०;	विहर	विड(नि)क्कंत ३।४, ५;
९।१२; १०।१७;	-विहग्ढ १।५।१५, ३८,	१।५।३, ५, ८
१।५।७२ मे ७८	३३	वीणासद्द १।१२
विमुज्ज	-विहरंति १।१।५५;	वोतिककममाण १।५।२७
-विसज्ज १।६।८	२।६७, ५।२।१,	वीय
विमुज्जंत १।५।२८ गा०	६।२०; ७।५।६;	-वीयति १।५।२८ गा०
१०	८।२।१	११
विमूड्या २।२।१	-विहरामि १।१।५।५:	वीर १।५।२६ गा० ६
विसोह	२।६७; ५।२।१;	वीस १।५।३
-विसोहेज्ज ३।२।६;	६।२०; ७।५।६;	वीहि १०।१।६
१।३।१०, ११, ३४,	८।२।१	वुक्कंत १।१।००
३५, ३६, ३८, ४७,	-विहरिन्साभो २।४।७;	वुच्च
६४, ७१ से ७३, ७५;	७।४ से ६, ८, २३,	-वुच्चड १।६।१०, ११
१।४।१०, ११, ३४ से	२५, ३२, ३६, ४६,	वुट्ट ४।१।७
३६, ३८, ४७, ६४,	४६	वुत्त १।१।२१; २।२।५, ३८
७१ से ७३, ७५	-विहरेज्जा २।६।५, ६६;	वेउच्चिय १।५।२८
-विसोहेहि ५।२।५:	७६; ३।२।२, ६१;	वेग १।५।२७
६।२।५	५।५।०; ६।५।८;	वेजयनिय ६।१।८
विसोहित्ता ५।२।५; ६।२।५	७।५।४, ५।५; ८।३।०	वेडिम १।२।१; १।५।२८
विसोहिय १।२	विहरमाण १।५।३७, ३८	वेणुसद्द १।१।४

शब्द-सूची

१३७

वेत्तग	१।११६	वोञ्क	१५।२८	संकाम	
वेद		वोसट्ट	८।२०;	-संकामेज्ज	१।८८,
-वेदेति	१३।७६; १४।७६		१५।३४ से ३६		२।१६, ४६, ७१;
वेद(य)णा	१३।७६;	वोसिर			८।२५
	१४।७६	-वोसिरामि	१५।४३,	संकुलि	१।४६
वेयावत्त	१५।३८		५०, ५७, ६४, ७१	संख	१५।१२, १३, २८
वेरञ्ज	३।१०, ११,	-वोसिरेज्जा	१०।२ से		गा० १६
	११।१५; १२।१२		२८	सख(पाय)	६।१३
वेरमण	१५।४६, ५६,	क्व	१६।३	संखवंघण	६।१४
	६३, ७०, ७७			संखडि	१।२६ से २६,
थलुय	१।११८	च			३१ से ३५, ४२, ४३
वेलोक्खिय	४।३१	स(तत्त)	१।२०, ५१,	संखसद्द	१।१४
वेवड्	४।१६		१०४, १११	संखाए	१।३२
वेसमण	१५।२६ गा० ३;	स(स)	२।२०, ३१, ४६,	संखोमिथ	१।३५
	१५।२६		६८; ५।२८, ३५,	सगतिय	६।१८
वेसिय	१।३३		६।२६; ७।१४,	संगाम	१६।२
वेसियकुल	१।२३		८।३०; १५।२८,	संगारक्खण	५।२२;
वेहाणसट्टाण	१०।१६		२८ गा० ८;		६।२१
वेहिम	१।२१		१५।२६, ३६	संघट्ट	
वेहिय	४।३१	स(स्व)	१०।२८	-संघट्टेज्ज	१।८८,
वोक्कत	१५।१३	सइं	१।६		२।१६, ४६, ७१;
वोक्कस		संक			८।२५
-वोक्कसाहि	३।१७	-संकति	२।३०	संघट्टिय	१।३५
-वोक्कसिस्सामो	३।१८	संकम		संघयण	४।२६; ५।२
वोक्कसित्ताए	३।१८	-संकमेज्जा	३।५६, ६०;	संवस	
वोच्चिण्ण(न्)	१।५;		५।४८, ४६;	-संघसेज्ज	१।८८, २।१६,
	३।३२; ७।२८, ३१,		६।५६, ५७		४६, ७१; ८।२५
	३५, ३८, ४२, ४५				

संघाड(ति)म	१२१; १५१२८	संजय ७३; ८२, ९, १३, १५, २६, २६; ६६,	संत ६२१ से २६, २६ से ३१, ४३, ४६, ५४ से
संघाडी	५३	११, १३, १५;	५६; ७२६ से ३१,
संचाय		१०२८; १६२	३३ से ३८, ४० से
-संचाएड	१३३	संणिकित्त ११४६	४५; ८१; ६१, २;
-संचाएज्जा	१३	संणिकिट्ट ३५६	१५२६
-संचाएति	११३६	संणिवेसं १५२६	संताण १२, ५१
-संचाएसि	३१८	संणिहिय ३५५	संताणग(य) १४२, ४३;
संचालिय	१३५	संठव	२१, २, ३१, ३२,
संचिज्जमाण	१३२	-संठवेज्ज १३३७, ७४;	५७ से ६१, ६८, ६९;
संजम	१५३६	१४३७, ७४	३१, ४, ५; ५१२८ से
संजय	१२, ३, २६, ३२, ३५, ४५, ५०, ५२, ५३, ५६, ६१, १२१, १३५, १३६; २१, ६, ११ से १७, २५, ३२, ३८, ४५, ४६, ६६, ७२ से ७६; ३१, ३, ५, ६, ७, ६, ११, १३, १५, २२, २६ से २८, ३०, ३२ से ३६, ३६ से ४४, ४७, ४६, ५० से ६१; ४३, ५, ३८; ५३६, ४८ से ५०; ६४२, ४४, ४५, ५६ से ५८;	संत ११, ४ से ७, १२ से १८, २१ से २५, ३६, ४१, ६३ से ८२, ८५, ८७, १०२, १०४, १०६ से ११६, १२१, १२३, १२८, १३३, १३६, १४१ से १४६, १५१ से १५४; २३६ से ४२, ४४, ४८, ५७ से ६१, ६३, ६४; ३६ से ८; ५१५ से १२, १४, १५, १७ से २०, २२ से २५, २८ से ३०, ४६ से ४८; ६४ से १६,	३०, ३५; ६२६ से ३१, ३३; ७२६ से ३८, ४० से ४५; ८१, २, २२, २३; ६१, २; १०२, ३, १४, २८
			संतारिम ३१४, २२, ३४ से ३६
			संति(अ) १५६५ से ६६, ७२ से ७६
			संतिकम्मंत २३६ से ४२; ३४७; ४२१, २२
			संतिय ५२६; ६२७
			संथड १४०, ६१; ५४५; ६५३

संथर	सपन्वइय	७३	संलिह
-संथरेज्जा १।२६, २।१२,७२; ८।१२, २६; ६।१२	संपाइ(ति)म १।४०; ३।१५; ५।४५, ६।५३		-संलिहेज्ज १।५१; ३।३१,३२,३६; ६।४८,४९
संथरमाण ३।८ से १३	सपिड्डिय ३।६०,६१, ५।४९,५०; ६।५७, ५८		सलिहिय १।४८
संथरेत्ता २।७३; ८।२७			सलिहणा १।५।२५
संथार २।४१,४२,४४; १।५।२५	संफास		संलोय १।५५,५६,६२
संथारग(य) १।२६; २।१२,५७ से ६४, ३।२,३; ७।७, ८।१२,२२,२३,२६ से २८; ६।१२	-सफासे १।३३,४६, ४९,५७,१२३,१२५ से १२७,१३० से १३२,१३८; ३।४०; ५।४७, ६।५५		संवच्छर १।५।२६,२६ गा० १,३
संथारग(भूमि) २।७३; ८।२६	संवधि १।५।१३,३४		सवड्डु -संवड्डुड १।५।१४
संधि १।६२	संभोइय १।१२७,१३६, ७।५,७		सवर १।५।३६
संनिरुद्ध २।४५	संभोएत्ता १।१०२		सवस
संपधूमिय २।१०, ५।१२; ६।६; ८।१०; ६।१०; १०।११	संभोज्जिय १।४६		-सवसति २।३४,३५
संपदा १।५।२६ गा० १	संमट्ट २।१०, ५।१२, ६।६; ८।१०; ६।१०. १०।११		-संवसे १।६।४
संपण १।५।७८	संमिस्स १।११६		-संवसेज्जा २।४८,६५, ६६, ७।५४,५५
संपराइय २।२५	समुच्छिय ४।१७		सवसमाण २।२१ से २५ २८,२९
संपरिहाव	संमेल १।४२,४३		सवहण ४।२८
-संपरिहावइ १।३३	संरंभ २।४१,४२		सवाह
संपवेव	सरक्खण १।५।२५		-संवाहेज्ज १।३३,१३, २०,२६,४०,५०. ५७,६६; १।४।३, १३,२०,२६,४०, ५०,५७,६६
-संपवेवए १।६।३			

संविज्जमाण	२।७६; ८।३०	सच्चामोसा	४।६, १०	सण्णिहि	१।२१, २४	
संवुड	१।१२१; २।२५, ३८	सज्ज	-सज्जेज्जा	११।१६;	सत्त	१।१२ से १७, ८८;
संवेदेडं	१५।७६		१२।१६; १५।७२ से		२।३ से ७, १६, ४६,	
संसत्त	१।१; १५।६६		७६		७१; ३।४६; ५।५ से	
संसार	४।३४	सज्जमाण	१५।७२ से ७६		१०, २२; ६।४ से	
संसीव		सड्डा	१।१२१, १।४३, १।५०;		६, २१; ७।४८, ५६;	
-संसीवेज्जा	५।३		२।३६ से ४२		८।३ से ८, २५;	
ससेइम	१।६६	सड्डि	२।२५		९।३।७६;	
संसेसिय	१।३।१, १।४।१	सणवग	१।०।२७		१।४।७६; १।५।४४,	
सकसाय	१।१०२	सणिय	१।५।२८, २६		४७, ४८	
सकिरिय	४।१०, १२, १।४,	सणग	३।१४	सत्तम	१।१।४७, ५।५।५	
	२१, २३, २५, २७,	सण्णि	१।५।३३	सत्थ	३।५।६, ६०; ५।४।८,	
	२६, ३१, ३३, ३५;	सण्णिणचय	१।२।१ से २४		४६; ६।५।६, ५।७	
	१।५।४५, ४६	सण्णिगुद्ध	८।२०	सत्थजाय	३।२।४;	
सक्क(शक्र)	१।५।२८	सण्णिणवइय	१।६।१		१।३।२।६।२।७, ३।३,	
गा०११; १।५।३१,		सण्णि(न्नि)वयमाण			३।४, ६३, ६४, ७०,	
३।२ गा० १८			१।४०; ५।४।५;		७१; १।४।२।६, २।७,	
सक्क(शक्य)	१।५।७२ से		६।५।३		३।३, ३।४, ६३, ६४,	
	७६	सण्णिणवात	१।५।६, ४०	सद्द	७०, ७१	
सक्करा	१।५।१	सण्णिणविट्ठ	१।४।१; ३।४।३	सदत्ति	१।१।३८	
सगड	३।४।३, ५।६;	सण्णि(न्नि)वेस	१।२।८,	सद्द	४।३।५, ३।६; १।१।१ से	
	१।१।१७; १।२।२४		३।४, १।२।२; २।१;		१।७, १।५।१।५,	
सगोत्त	१।५।३, ५।६		३।२, ३, ४।५, ५।७,		७।२; १।६।३	
सचक्क	३।४।३, ५।६		५।८; ७।२; ८।१;	सद्दसत्तिवक्य	१।१	
सवित्त	१।३।७८; १।४।७८		१।१।७; १।२।४;	सद्दहमाण	२।३।६, ३।७,	
सच्च	४।६, १०, ११		१।५।३, ५।६, २।७		३।६ से ४२	

सद्गुल	१५२८	समण	६८, ९, १९, २१ से	समहिट्टाय	२४७; ७४,
सद्धं	१३२		२६, ५४ से ५६, ५८,		६, ८, २३, २५, ३२,
सद्धिं	११८ से १०, ४६,		७१, २४; ८१७, ८,		३९, ४६, ४९
	४७, २११, २३ से		९१७, ८; १०८, ९,	समा	१५३
	२५, २८, २९, ३३३,		१५१, ३, ४, ७ से	समाण	११, ४ से ८,
	४९ से ५१; ७३		११, १३ से ३६,		११ से १७, २१, २३,
मपडिदुवार	१५५, ५६,		३८, ४० से ४२		२४, ३६, ४२, ४३, ४६,
	६२	समणाउस	१५१७		४९, ५०, ५२, ५३,
सप्वि	१११२	समणजाय	२४१		५५, ५८, ६१, ६२,
सभा	१०१२०; १११८,	समणिज्जमाण	१५१२९		८२ से ८४, ८७, ८९,
	१२१५	समणुजाण			९०, ९२ से ९४, ९६ से
सम	११२९, ५७, २१२,	-समणुजाणिज्जा			९९, १०१, १०२,
	७२, ७६, ८१२,		१५१५७, ७१		१०४ से ११९,
	२६, ३०; ९१२२;	-समणुजाणेज्जा	७२;		१२२, १२४ से
	१०११७		१५१४३, ५०		१२६, १२८, १३३,
समण	१११६, १७, २१,	-समणुजाणेज्जा			१३४, १३६, १३८,
	२४, ३२, ४२, ४३,		१५१६४		१३९, १४४, १४७,
	४९, ५५, ५७, ५८,	समणुण्ण(न्त)	१११२७,		१५१ से १५४;
	१०१, १२१, १२७,		१३६; ७५, ७		२१७०; ६१४६;
	१३०, १३५, १४७,	समगुन्नाय	११२८, १३६		८१२४, १५३४, ३७
	१५४; २१७, ८, २५,	समणुपत्त	१५३५	समायार	२१२७
	३६ से ४०; ३१ से	समगुसिट्ठ	१११३६	समारंभ	
	५, १७ से २१, २४,	समणोवासग	१५१२५	-समारंभेज्जा	१९१
	२५, ४४, ४५, ४९,	समतपइण्ण	१५१२६	समारंभ	२४१, ४२
	५१, ५३ से ५८, ६१;	समय	४१९; १५११, ८,	समारब्ध	११२ से १७;
	५१९, १०, २०, २२ से		२६, २९; १६१९		२३ से ८; ५५ से
	२४, ४६ से ४८, ५०;	समवाय	११२४		१०, २२;

समारम्भ	६।४ से ६, २१; ८।३ से ८ ६।३ से ७, १०।४ से ६	समिय	५।४०, ५१; ६।४३, ५६; ७।२२, ५८; ८।३१; ९।१७; १०।२६; ११।२०; १२।१७; १३।८०, १४।८०; १५।४४,	-समुपज्जेज्जा	१।३१, ३५, ३८ -समुपज्जेज्जा	२।२१
समालोक				समुपपण्ण(न्न)	१५।१, ३३, ३४, ३७, ३८, ४०	
-समालोकेति	१५।२८			समुवे		
समालोकेता	१५।२८		४७	-समुवेति	१६।१	
समावण्ण	१।३६; १५।४२	समियाए	२।४४; ४।३, ५, ३८	समोणय	१५।२८	
समावद				समोहण		
-समावदेज्जा	१५।५१ से ५५	समीरिय	१६।८	-समोहणति	१५।२८	
समाहि	१।१५५; २।६७; ३।२२, २६, ४४, ५६ से ६१; ५।२१, ४८, ४९; ६।२०, ५६ से ५८; ७।५६; ८।२१	समुग्घाय	१५।२८	समोहणित्ता	१५।२८	
		समुट्ठा		सम्मं	१।३१, १२८, १५५; २।६७; ५।२१; ६।२०, ७।५६; ८।२१; १५।३४, ३७, ४९, ५६, ६३, ७०, ७७, ७८	
		-समुट्ठेज्जा	३।२६, ४४			
		समुट्ठाए	७।१			
		समुदय	१५।२७			
		समुद्द	१५।२७, ३३			
		समुद्दिस्स	१।१२ से १७, १२८; २।३ से ८, ३६, ३७, ३९, ४१; ५।५ से १०, २२; ६।४ से ९, २१; ८।३ से ८; ९।३ से ७; १०।४ से ६	सम्मिस्सिभावा	१।३२	
समाहिय(समाख्यात)	१६।४			सय		
समाहिय(समाहित)	१६।५			-सयति	१।३८	
समिति	१५।३६			सय		
समिय	१।२०, ३०, ४१, ४८, ६०, ८६, १०३, १२०, १२६, १३७, १५६; २।२६, ४३, ७७; ३।२३, ४६, ६२; ४।१८, ३६;	समुद्ध्यय	१।४०; ५।४५; ६।५३	-सएज्जा	२।७३, ७४	
		समुपज्ज		सय(स्वक)	५।२२; ६।२१; १०।१; १५।२७	
		-समुपज्जिमु	१५।३७	सय(शत)	१५।२६ गा० ३; १५।२८ गा० १७	

सयं ११२५, १०१, १३१, १४१, १४७, १५१ से १५४; २६३, ६४, ३१६, २६, ६१, ५१७ से २०, ५०, ६१६ से १६, ५८; ७२, ५, ७, ६, १५४३, ५०, ५७, ६४, ७१	सया १०२६; ११२०; १२१७, १३६०, १४६० सर(सरस्) ३४८; ११५, १२२ सर(शर) १६२ सरक्क १५१ सरग ११४३ सरड्यजाय १११०	-सल्लङ्गवास ११०६ सवियार ८१७ से २०- सव्व - १२० सव्वओ - १५१ सव्वण्णु - १५३६ सव्वत्त १५१ सव्वसह १६४४ ससंधिय ५४६, ४७; ६५४, ५५-	सयण(शयन) ४२६ १५६६	सरण ३४६, ५६, ६०, ५४८, ४६, ६५६, ५७	ससरक्क १५१, ६६, ६७, १०२; २१७६;- ५३५; ६३८; ७१०; ८३०; १०१४	सयण(स्वजन) १५१३, ३४	सरपत्तिय ३४८; १११; १२२	ससणिद्ध ५३५, ७१० ससिणिद्ध १५१, ६५, ६६, १०२; ३३०, ३१, ३७, ३८; ६३८, ४७, ४८; १०१४	सयपाग १५२८	सरभ १५२८	ससीसोवरिय २१७३; ३१५, ३४; ८२७	सयमाण २१७४	सरमह १२४	सस्स ४१६	सयसहस्स १५२६ गा० २, ३; १५२८ गा० ६, १६	सरमाण १५६७	सह १५१६, ३७- -सहिस्सामि १५३४	सया १२०, ३०, ४१, ४८, ६०, ८६, १०३, १२०, १२६, १३७, १५६; २२६, ४३, ७७; ३२३, ४६, ६२; ४१८, ३६; ५४०, ५१, ६४३, ५६; ७२२, ५८, ८३१; ६१७;	सरसरपत्तिय ३४८; ११५; १२२ सराव ११४५, १५२ सरित्तए १५६७ सरीर २१८; १५२५ सरीसिव ३४६, ५४, ४२५, २६ सलिल १६१० सल्लङ्गपलंब ११०८	सहस्रा ३२६
---	---	--	----------------------	---	--	------------------------	---------------------------	--	------------	----------	---------------------------------	------------	----------	----------	---	------------	---------------------------------	---	--	------------

सहस्स	१५।२८	साइम	१।८५, ८७ से ९८,	-सातिज्जेज्जा	१।३२;
सहस्सपाग	१५।२८		१२१, १२३, १२७,		३।२९; ५।४६;
सहस्समालिणीया			१२९, १४१, १४२,		६।५४
	१५।२८		१४५, १४८, १४९,	सामग्गिय	१।२०, ३०,
सहस्सवाहिणी	१५।२८,		१५२; २।२८, ४८;		४१, ४८, ६०, ८६,
	२९		४।२, २३, २४;		१०३, १२०, १२९,
सहा	२।३६ से ४२;		६।२६; ७।५;		१३७, १५६; २।२६,
	३।४७; ४।२१, २२		११।१८; १२।१५;		४३, ७७, ३।२३,
सहिया	५।१४		१५।१३		४६, ६२; ४।१८,
सहिणकल्लाण	५।१४	साइय	१३।१ से ७८;		३९; ५।४०, ५।१;
सहिय	१।२०, ३०, ४१,		१४।१ से ७८		६।४३, ५९; ७।२२,
	४८, ६०, ८६, १०३,	सागर	११।५; १२।२		५८; ८।३१; ९।१७,
	१२०, १२९, १३७,	सागरमह	१।२४		१०।२९; ११।२०,
	१५६; २।२६, ४३,	सागरोवम	१५।३		१२।१७; १३।८०;
	७७; ३।२३, ४६,	सागार	३।३४		१४।८०
	६२; ४।१८, ३९;	सागारिय	२।२० से २५,	सामाइय	१५।३२, ३३
	५।४०, ५१; ६।४३,		४९; ७।१४	सामाग	१५।३८
	५९; ७।२२, ५८;	सागारियओग्गह	७।५७	सामुदाणिय	१।३३, ४७,
	८।३१; ९।१७;	सागवच्च	१०।२६		१२३
	१०।२९; ११।२०;	साळग	१५।२९	साय	
	१२।१७; १३।८०;	साण	४।१२, १४	-साएज्जा	२।२४
	१४।८०	साणय	५।१, १७	साय	३।३६
साइ	१५।२	साणुवीय	१।१११	सार	१५।२६
साइम	१।१, ११ से १७,	सातिज्ज		सावदेज्ज	१५।२६
	२१, २३ से २५, ३६,			साल	१५।३८
	४१, ४४, ४५, ५६,	-सातिज्जंति	५।४७;	सालि	१०।१६
	५७, ६३ से ८१, ८४,		६।५५	सालुय	१।१०६

सावग	४१३	साहर	सिग्घ	१५२७
सावज्ज	४११, १०, १२, १४, २१, २३, २५, २७, २९, ३१, ३३, ३५; १५१४५, ४६	-साहरइ(ति)	सिज्जा	१२९; २१२; ८१२, ९१२
सावज्जकड	४२२, २४	१६, ८१४; ९१४; १५५, ६, ३१	सिज्क	-सिज्कस्संति १५२५
सावज्जकिरिया	२४०	-साहरंति	सिणाण	१६२, २१२, ५३; ५२३, ३१, ३३, ६२३, ३३, ३६; ७१८
साविगा	४१५	१०१२		
सासवणालिय	११०६	-साहरिणमि		
सासिय	१४	१५१७		
साह	१५२८	-साहरेज्जा		
साहट्ट	३६	६४७		
साहट्ट	१५२८ गा० १२, १५३२ गा० १९	साहरिज्जमाण	१५१७, १४	सिणाव
साहम्मिणी	११४, १५; २५, ६, ५१७, ६६, ७, ८५, ६; ९३, ४; १०६, ७	साहरिय	१५११	-सिणावेति
साहम्मिय	११२, १३, १२७, १३०, १३६; २३, ४, ३३, ४७; ५५ से ८, ६४, ५; ७४ से ८, २३, २५, ३२, ३९, ४६ से ४९; ८३, ४, ९३, ४, १०१, ४, ५; १५६२	साहा	१९६	२५४, ७१९
साहम्मियओगह	७५७	साहारण	११३०	-सिणावेज्ज
		साहिय	१५२८	२१२
		साहु	६२६	सिणेह
		साहुकड	४२१, २३	३३२, ३९; ६४९
		सिग(पाय)	६१३	सित
		सिगववण	६१४	१६१७
		सिगवेर	११०७	सिद्ध
		सिगवेरचुण्ण	११०७	१५३२
		सिघाण	१५१, २ १८	सिद्धत्य
		सिघाडग	१११३	१५३, ५, १७
		सिच		सिद्धत्यवण
		-सिचति	२५४; ७१९	१५२८ गा० १५
		-सिचेज्ज	२१२१	सिय
		सिबली	११३३	२४४
		सिहासण	१५२८	सिया
				१५५२ से ५५, ६०, ६१, ६५, ६७
				सिगाल
				१५२, ३५९
				सिर
				१५३८
				सिला
				१५१, ८२, ८३, १०२, ५१३५, ३७

सिला	६३८,४०; ७१०, १२,५५; १०१४; १५१२,१३	सीस	१३५,८८; २१६, ४६,७१; ३२१; ८२५; १३७५;	सुण्हा	१२५,४६,६३, १२१,१२२,१४३; २२२,२५,३६ से
सिलिवय	४१६		१४७५	४२,५१ से ५५,६४;	
सिविया	१५२८; १५२८ गा०८; १५२६	सीसगपाय	६१३	५१८; ६१७;	
		सीसगवंवण	६१४	७१६ से २०	
सिहर	१५२८	सीह	१५२; ३४६,५६;	सुत्त	७२४
सिहरिणी	१४६		१५३,२८	सुदंसणा	१५२१
सिहा	१६५	सीहासण	१५२८; १५२८ गा०८, ११, १५२६	सुद्ध	२४४; १३७८; १४७८; १५८,३८
सिओ(तो)दय(ग)	११, ३५,६३,१०२; २१८,२१,४१,४२, ५४; ५२४,३२, ३४; ६२४,३४, ३७,४६; ७१६; १३१७ से १६,२३, ३२,४४,५३,६०, ६६; १४१७,१६, २३,३२,४४,५३, ६०,६६	सुद्ध	२२७	सुद्धवियड	११०१,१५१
		सुकड	४२१,२३	सुद्धोदय	१५२८
		सुकक	१५१	सुगस	१५१६
		सुककजभाण	१५३८	सुन्मि	११२५
		सुक्किल्ल	४३७	सुन्मिगंध	४३७
		सुच्चरिय	१५३६	सुभ	१५५,२८
		सुच्चिभूय	१५१३	सुमण	३२६,४४
		सुट्ट	६२६	सुय	५२२; ६२१;
		सुट्टुकड	४२१,२२		७५७; १११६; १२१६
		सुण		सुयतर	५२२; ६२१
		-सुणेइ	१११ से १६; १५७२	सुर	१५२८ गा० १२ से १५
सीतय	१५२८	-सुणेज्जा	४३५,३६		
सीय	४३७	सुणय	१५२; ३५६	सुरभि	११०५
सीया	१५२८ गा०७, १०	सुणिहवित	१५२८	सुरमिपलंब	११०८
		सुणिसंत	२३६,३७, ३६ से ४२	सुरूव	१५२८
सीलवंत	११२१; २२५,३८			सुलभ	२४४; ३२,३

सुवर्ण	२१२४; ५१२७, १५११२, १३, २६	सेज्जा	११२६, २११ से २५, २७ से ३२, ४४, ४६ से ५६, ७२ से ७४, ७६, ३१२, ३; ७७, ८२ से १५, २६ से २८, ६३ से १५	सेस	१५१३, ३५
सुवर्णपाय	६१३			सेमवती	१५१२४
सुवर्णगवंधण	६१४			मेह	२१७२; ८१६
सुवर्णसुत्त	१३१७६; १४१७६			सोउ	१५१७२
सुवर्त्य	१५१२६ गा०५			सोंडा	१३२
सुव्य	१५१२६, ३८	सेज्जा(भूमि)	२१७२; ८१२६	सोच्चं	१६१
सुसद्	४३५, ३६			सोच्चा	१३३, १२१.
सुसमदुसमा	१५३	सेडिया	११७६, ७७		१३५, २१५, ३=
सुसममुसमा	१५३	सेगा	३१४४, ५६, ५६, ६०, ५१४८, ४६, ६५६, ५७		४११; ५१२२ में २५, ४७; ६१२१, २५, ५५
सुसमा	१५३			सोणिय	१५११. २१६=, ४१२६; १३१११. २७, ६१, ७१
सुसाणकम्मंत	२३६ से ४२; ३१४७; ४१२१, २२	सेणागय	३१४८		१५१११, २७, ६८, ७१
सुस्समण	१६४	सेय	६११७, १३३५, ७२, ८०; १४३५, ७२, ८०	सोय	१५१७२
सुहाकम्मंत	२३६ से ४२; ३१४७; ४१२१, २२	सेयणवह	१०१२४	सोगट्टिया	११७७, ८=
सुहम	४१११; १५१४, ४३	सेल(पाय)	६१३	सोवत्तिय	१५३
सुई	७६	सेलवंधण	६१४	सोवीर	१११०६, १५१
सुणिय	४११६	सेलोवट्टाणकम्मंत	२३६ से ४२; ३१४७, ४१२१, २२	सोसिय	१५१७५
सूयरजाइय	१६१			सोह	
सूर	१५१२६ गा० १, २	सेव		सोह	१५१२८ गा० ६८, ६५
सूरिय	४११६	सेवति	२१४१, ४२	सोहण	१५१२८ गा० १० ६
सूव	११६६	सेवमाग	१५१६६		
से	११६३	सेवित्तए	१५१६६	हंत	२, ३०
सेज्ज	१५११७			हत्ता	११६६, ४३; ३१६६, ५१६८, ६१६.

हंद		हरिय	२११, २, १२,	हिस	
-हंदह	१११३८, १३६		१४, ३१, ३२, ५७ से	-हिसेज्जा	१८५
हंस	१५१२८, २६		६१, ६८, ६९, ३१,	हिद्विम	१३१४०
हड	२१३०		४, ५, ७ १३, ४०, ४२,	हित	१५१३२ गा० १६
हत्थ	१११, ३५, ६३ से		५५: ५१२५, २७ से	हिय	१५१२६ गा० ६
	८१, ८८, ९६, १३१,		३०, ३५; ६१२५,	हिरण	१५१२६
	१३५, १३६, १४१ से		२६, ३१, ३८, ४५;	हिरण्ण	२१०४; ५१२७,
	१४३, १४८, १४९;		७१०, २६ से ३१,		१५११२, १३, २६,
	२११८, १९, ४५, ४६,		३३ से ३८, ४० से		२६ गा० २
	७४; ३२०, २१,		४५; ८१, २, १२,	हिरण्णाय	६११३
	२७, ३५ ५०, ५२;		१४, २२, २३; ६११,	हिरण्णबंधण	६११४
	५३; ६१४६; ७१६;		२, १२, १४; १०१२,	हिरण्णवास	१५११०
	८१२५, २८		३, १२, १४, १५, २८;	हीरमाण	११४२, ४३, ४६
हत्थंकरवच्च	१०१२६	हरियाल	११६९, ७०	होलिय	१६१३
हत्थच्छिन्न	४११६	हरियावह	३१४०	हुरत्या	११३२
हत्थिय	११५२; ३१४५, ५६	हरिवंसकुल	११२३	हेउ	११५६, ८५, ९१, ९५,
हत्थियजुद्ध	११११२;	हसत	११११८, १२११५		१२३; २१९, २१
	१२१६	हम्स	४१२८	से २५, २७ से ३०,	
हत्थियट्टाणकरण	१११११,	हार	२१२४, ५१२७;	४६, ७१, ३६, ११,	
	१२१८		१३१७६; १४१७६;	१३, ४६; ५१२७;	
हत्थियुतर	१५११, ३, ५, ८,		१५१२८	६१२८, ४५; ८३५	
	२६, २९, ३८	हारपुड्ढाय	६११३	हेमंत	३१४, ५; १५१२६, २६
हम्मियतल	११८७,	हाग्पुड्ढबंधण	६११४	हो	
	२११८; ५१३८;	हालिद्द	४१३७	-होउ	१५११३
	६१४१; ७११३	हास	१५१५०, ५५	-होति	१५१२६ गा० ३
हयजूहियट्टाण	११११३;	हासणय	१५१५५	-होत्था	१५११, ४, ७, ९,
	१२११०	हासि	१५१५५		२५, २६, ४०
हरिओवय	१०१२७	हि	१११२१	-होहिति	१५१२६
हरिय	१११, २, २६, ४२,	हिगुलय	११७०, ७१		गा० १
	४३, ५१, १०२, १३५;	हिमोल	११४२, ४३	होल	४११२; १४

शुद्धि और आपूरक पत्र-१ आयारो शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२		अट्टिभिजा	अट्टिभिजा
३	अणुघम्मिय	६१११२	६११२
४	अणेलिस	६२	६२
४	अणेगरुव	८२,	—
४	अतिअच्च	६११६	६११६
६	अप्पाण		+१००,
६	-आडक्खामो	२१२३	४१२३
११	आय	६१४६	६१४१६
१६		कव्वड = ११०६, १०६	—
१७	काम	५१३	५१२
१७	कुसल	१२१	१७१
१८			+तावही ८२१ ७५
१९	गुरु	५१३	५१२
२०	छिद	-अच्छे ११२७ २८, ५०, ५१. ८१, ८२. ११०, १११, १३७, १३८, १६१, १६२	—
२१	-जाणई	११४७	११४७
२५		तिरियं	तिरियं
२६		दुक्खसह ६१३१२	—
२६	दुल्लह	४१४६	५१४६
२६	पडिलेहिय	६१	८१
२६	पन्नाणमंत	६१३, ०६	६१३, ७६
३०	परिघासेडं	८१३३	८१२३
३१		परिवदण	परिवंदण
३१	-परिवयंति	२१७६	२१७, ७३
३२	-परिहरति	२१०२	२१२०
३२	पवा	६१२११	६१२२

पृष्ठ	स्थल	अनुच्छेद	शुद्ध
३२	पसंसिअ	२।१६१	२।१०१
३३	पाण (प्राण)	८।७	८।८।७
३३		पाय (पात्र)	पाय (पात्र)
३५	बहिया	२।	१।
३५			+बहुतर ८।८।२३
३७	भो		+६।२४
४१		लूहदेसिया	लूहदेसिय
४४	-विहिंसति	१०२	१०१
४६	संपव्वयमाण	८६	६६
४६			+संवट्टेत्ता ८।१०५, १२५
४६		सवस	संवस
४६	सत्त (सत्त्व)	४।२०	४।१, २०
४७			+सत्थपरिणणा १
४७		सन्निचय	सन्निचय
४७	समणुन्न	३।७६	६।७६
४९	सयं	१०६	११६
४९		सययं	सयय
४९	सव्वतो	१७५	१७६
५०		सुब्भ (भट्ट) भूमि	सुब्भ (भट्ट) भूमि

शुद्धि और आपूरक पत्र-२ आचार-चूला शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
५७	अण्णत्तर (यर)	३६, ३६	३६ से ३६
५८	अण्णत्थ	२।१७	२।१८
५८		अत्तट्ठियं	अत्तट्ठिय
५९	अप्प (आत्मन्)	४६, ४६	४६ से ४६
६३	असण	३६ से ४१	३६, ४१
६४	आउस	२।३४, ४२	२।३४ मे ४२
६४	आउसंत	५।१३, २२	४।१३, ५।२२
६५		आगसह	आगस
६५		आविघ	आविघ
६८	इत्तरेतर	३।	२।
		उट्ट	उह
७०	-उह्वेति	से	,
७०		उदघट्टु	उह्वट्टु
७१	-उदक्खडेसु	६।२, ६	६।२६
७२		उवेहमाए	उवेणमाण
७२	-उव्वट्टेज्ज		+३।२१, ३६
७२	उसिणोदग	१।६२	१।६३
७३	एग	१४, १५।२६ गा० २	-
७३	एगंत	३।१४	३।१५
७३	एयप्यगार	२।२५, ३६	२।२५, ३८
७४		ओद्धट्टु	ओद्धट्टु
७५	कट्टु	१।२२	१।२२
७५	कठ्ठसिल्ला		+२।६६
७६		कणनूयल्लिय	कणनूयल्लिया
७६	कणुय	१।१४	१।१०४
७८	-किणोज्ज	३.१४	३।१४

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
७८	कीय	११२, १७	११२ से १७
७८		कंभीमुह	कुंभीमुह
७९	खंथ	७३८	५३८
८०	खाइम	१२१६	१२१५
८०		खड्डु	खुड्डु
८०		खड्डाय	खुड्डाय
८०		खुड्डिया	खुड्डिया
८०		-गच्छवेज्जा	-गच्छवेज्जा
८९	गण	१७	१५१
८९		गति	गति
९०	गाहावड्ड	२१२१, २५, ५०, ५५	२१२१ से २५, ५० से ५५
९१	चउत्थ १५१५४		+६१,
९२	चरित्त	१५३२; ३३ गा० १८; १९३३ १५३२ गा०	१८, १९; १५३३
९२		चिघ	चिघ
९२	-चिट्ठेज्जा	से	,
९४	-जएज्जासि	८२१	८३१
९४	-जाणेज्जा	४९ से ५२	४९, ५२
९६	णगर	३२३	३२, ३
९७			+णाणत्त ११३४
९७		णांति १४	णाति ३४
९७	णावा		+६५३
९७	णिगम	३२३	३२, ३
९८	णिरावरण	से	,
९८		णिजम्मभासि	णिसम्मभासि
९९		णिसीहियाखत्तिकय	णिसीहियासत्तिकय
९९		णीपूरपवाल	णीपूरपवाल
९९	तंजहा	३६, ४२	३६ से ४२

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१००	.	तकालिमत्थय	तकालिमत्थय
१००	तत्थ		+न५;६५
१००	तहप्पगार	२१४६,५६	२१४६ से ५६
१०१	तिरिक्खजोणिय	५४	६४
१०३		दम्म	दम्म
१०३	-देज्जा	१४८,१५२	१४८ से १५२
१०३	दाळं	५१२२,२४	५१२२ से २४
१०४		दुग्गध	दुग्गंध
१०४	दुण्णि (न्नि)क्खित्त	३६,४१	३६ से ४१
१०५	दोणमुह	३११ से ३	२११,३१२,३
१०६	-पडिगाहेज्जा	२१७४	२१६४
१०६	पडिगाहिय	२१२	११२
१०६	पडिया	५१४२ से ४५	५१४२,४५
११०		पडिवज्जमाण	पडिवज्जमाण
११०		पडुप्पवाइयट्ठाण	पडुप्पवाइयट्ठाण
१११	-पधूवेज्ज	१३१६२ से ६६	१३१६२, ६६
१११			+पमज्जमाण ११८५
११२	पयावेत्तए	२११६	२१२६
११२	परिएसिज्जमाण	११२१ से २४	११२१, २४
११३	परियारणा	२१५५	२१२५
११५	पससित्त	१५१३८	१५१२८
११५	पाण (पान) १११४५,		+१४८,
११८	पुव्व	गा० १,४१	गा० १.१५१४१
११८		पुव्व	पुव्वि
१२०	वहुसभूय	११	४१
१२१	-वेमि	१५५	१५६
१२२		भासिज्जभाणी	भासिज्जभाणी
१२४		भिल्लुग (य)	भिल्लुगा (या)

पृष्ठं	स्थल	अनुच्छेद	शुद्ध
१२४	भूय (त)	५१५ से १०	५१५ से १०, २२
१२५	भोयणजात (य)	१३५	१३४
		१४६	१४७
१२६		मडंवं	मडंवं
१२६	मण्ण (न्त)माण २।६१,		+६३,
१२६			+मल्लीण १५।१४
१२८	मिलक्खु	११।१८	११।१७
१२८	मुसावाय	१।५०	१।५०
१२९		रहकम्म	रहोकम्म
१२९	रुप्प	५।६८	१।६८
१२९	रुह	५।२८	१।२८
१३३			+वाइत्तवज्जा १।२।२
१३३	वास (वर्ष) १।५।३४,		+३६,
१३४	विउ (दु)	५।६।५	१।६।५
१३४	विचित्त	२।२।२८ गा० ११	१।५।२८ गा० ५
१३४			विज्जल १।५।३
१३५	वियड	५।३।४, ३४	५।३।४
१३६		विसमक्खणट्टाण	+विसमक्खणट्टाण
१३६	विसम	१।५।७२ से ७६	-
१३६			+विसय १।५।७२ से ७६
१३७		संखोमिय	संखोमिय
१३८	सजय	८।२।६, २९	८।२।६ से २९
१३८	संताणग (य)		+७।१०
१३९		सपव्वइय	संपव्वइय
१४०	सगड	१।२।२४	१।२।१४
१४०	सत्थजाय	१।३।२६।२७	१।३।२६, २७
१४३	सयं	१।४।१, १।४।७	१।४।१ से १।४।७
१४३		सल्लइपवास	सल्लइपवाण
१४५	साहम्मिय	७।४।६ से ४९	७।४।६, ४९

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

७

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१४५	सिया	६५, ६७	६५ से ६७
१४६		सिओ ७ से १६	सिओ ७.१६
१४७		सुइ	सूई
१४७		सुणिय	सूणिय
१४८	हरिय	६।२६, ३१	६।२६ से ३१
१४८		हिगुलय	हिगुलय
१४८		हिगोल	हिगोल
१४८	हेउ	वा३५	वा२५

नोट :—शब्द-सूची में पृष्ठ ७६ के स्थान पर ८६ छपा है और पृष्ठ १३५ के स्थान पर २३४। कृपया सुधार करें।